अगम वहै दरियाव- भाग 2

मोरी बारी उमर मोहें लागे शरम

मोटरसाइकिल की आवाज सुनकर प्रभाकर बहू ने बाहर झाँका। उनके भैया आए हैं। वे बाहर निकलीं। ओसारे में खड़ी चारपाई को बिछाकर भाई को बैठाया। पैर पकड़कर भेंटा। फिर मायके का हाल-चाल लेने लगीं।

"प्रभाकर जीजा कहाँ हैं?"

"कहीं निकले हैं?"

प्रभाकर बहू को भाई के आने से जितनी खुशी हुई, उतनी ही घबराहट भी। दरअसल प्रभाकर आज पहली बार खुद हल जोतने गए हैं। हलवाहे नगेसर हफ्ते-भर से बुखार में पड़े हैं। वृद्ध तो थे ही। कुआरी बुखार की चपेट में आ गए। बुआई के लिए आलू कोल्ड स्टोरेज से निकाली जा चुकी है। खेत की भराई हो चुकी है। जुताई होनी है। आलू में बड़े-बड़े अँखुए निकल आए हैं। तुरन्त बोना जरूरी है।

दूसरा कोई हल जोतने वाला मिला नहीं। दलितों की नई पीढ़ी तो हल जोतना जानती ही नहीं। ऐसे में प्रभाकर ने मन को पोढ़ किया और खुद ही हल-बैल लेकर जोतने निकल गए। इसमें पिता का भी मौन समर्थन रहा। पहले भी प्रभाकर शौकिया आड़े-ओटे हल की मुठिया थाम लेते थे।

प्रभाकर बहू नहीं चाहती थीं कि उनके भाई को प्रभाकर के हल जोतने की बात पता चले और उनके मायके वालों को कहने का मौका मिले कि पाठक का दामाद 'हरजोता' है। इस इलाके में किसी सवर्ण का हल की मुठिया थामना बहुत बुरा माना जाता है। यह काम जमाने से मेहनतकश जातियों के जिम्मे है।

प्रभाकर जाँघिया-बनियान पहनकर हल जोतने गए थे। भाई को लाई-चना

देकर प्रभाकर बहू ने पड़ोस के एक लड़के को पिछवाड़े बुलाकर उससे प्रभाकर का धोती-कुर्ता और चप्पल खेत में भिजवाते हुए भाई के आने की जानकारी देने को कहा।

प्रभाकर सावधान हो गए। बैलों को दूसरे के खूँटे पर बाँधा और नहर में नहाकर धोती-कुर्ता पहन घर लौटे। बाद में पड़ोस का एक लड़का बैलों को लाकर बाँध गया।

* क्वार महीने का बुखार।

पर शायद प्रभाकर के साले को इसका आभास हो गया। शाम को बातचीत का मुद्दा यही रहा कि अब जोताई के लिए हलवाहे नहीं मिलेंगे। सिंचाई भी अब पुड़ या रहट से नहीं हो रही है जिसमें बैलों की जरूरत पड़े। ऐसे में रबी और खरीफ की एक-एक महीने की जुताई के लिए बैलों को साल-भर बिठाकर खिलाने का क्या मतलब, सिर्फ गोबर के लिए?

बात तो सही है। दिन तेजी से बदले हैं। जबसे इस गाँव की प्रधानी पर दहबंगा बैठी है दलितों का व्यवहार कुछ ज्यादा ही बदल गया है। सूबे के मुख्यमंत्री के पद पर दलित महिला के बैठने के बाद तो इनका दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ गया है। तीन महीने के अन्दर दो-दो उबाल। कैसे पचे?

प्रभाकर ने अपने कान से सुना था। दहबंगा किसी औरत को बता रही थी कि सूबे की सबसे ऊँची कुर्सी अपनी बिरादरी की औरत को मिली है। जब से दुनिया बनी है, पहली बार ऐसा हुआ है। अब छोटी-बड़ी हर जाति के आदमी को उनका हुकुम मानना पड़ेगा। सामने पड़ने पर डीएम, एसपी तक को हाथ जोड़ना पड़ेगा।

समझने वाली कुछ समझ नहीं पा रही थी। कुरसी तो देखी है, लेकिन कितनी ऊँची? सूबे का तो नाम भी नहीं सुना कभी, देखने की कौन कहे ?

धान लगाने वाली मजदूरिनों ने नारा दिया है-

आठ बजे आना।
पाँच बजे जाना।
चालीस रुपैया, रस दाना।

यानी धान लगाने के लिए खेत में आठ बजे पैर रखेंगे और पाँच बजे निकल जाएँगे। दोपहर में रस और दाना-चबेना भी देना होगा।

अब अनाज लेने को कोई तैयार नहीं और नगद भी बीस रुपये से बढ़ाकर सीधे चालीस रुपये। गरज हो तो दीजिए नहीं तो-

अबकी बारी भादों में।
गोरी कलाई काँदो में।

यानी हमें चालीस रुपये नहीं देना है तो आपके घर की गोरी कलाई वाली बहुओं को धान लगाने के लिए कीचड़-काँदो में धँसना पड़ेगा।

झख मारकर चालीस रुपये दिया लोगों ने! वे मजदूरों से टकराने का हश्र उन्नीस साल पहले देख चुके थे। तब तीन किलो मजदूरी माँगने के विवाद में कत्ल हो गया था और आज चालीस रुपये देना पड़ रहा है, जिससे वे साढ़े तेरह किलो धान खरीद सकते हैं। तब तो मजदूरों पर कुछ दबाव भी रहता था, अब तो जमाना बिलकुल ही पलट गया है।

प्रभाकर के साले समझा रहे हैं-" अब ट्रैक्टर का ही जमाना आ रहा है।

अगम बहै दरियाव

उसी से जुताई, उसी से सिंचाई, उसी से मड़ाई! अपनी भी और दूसरे की भी। ट्रैक्टर जब चलेगा, तभी तेल खाएगा। बैलों को तो रोज खिलाना है। चलें चाहे बँधे रहें।" फिर हँसते हुए तर्क देते हैं-"हल की मुठिया थामने की मनाही की है पुरखों ने। ट्रैक्टर की स्टेयरिंग पकड़ने की मनाही थोड़े है!"

पाँड़े ही नहीं, हर किसान जानता है कि खेती में जितना नगद खर्च करने से

बच सकें, उतना सुखी रहेंगे। इसलिए कि खेती से तो लागत भी नहीं निकलती। पाँड़े का यह भी मानना है कि बैलों की जगह ट्रैक्टर नहीं ले सकता। ट्रैक्टर तेल पीता है जिसमें नगदी लगती है जबकि बैल चरी-भूसा खाता है जो खेत में पैदा होता है। यह जरूर है कि हलवाहों के भरोसे खेती का जमाना गया। तो खुद जोतिए। जमाने के साथ चलिए। अपने हाथ से खाते हुए नहीं लजाते तो अपने हाथ से जोतते हुए क्यों लजाते हैं?

पाँड़े का दूसरा तर्क है कि जितनी जमीन उनके पास है उसे तो ट्रैक्टर एक ही दिन में जोत डालेगा। तब बाकी समय में क्या करेगा?

"काम की कमी नहीं रहेगी, बाबू।" प्रभाकर के साले ने आश्वस्त किया-" साथ में ट्राली ले लीजिए और भट्ठे पर ईंट की ढुलाई में लगा दीजिए तो बारहों महीने काम रहेगा। अब गाँव में कच्चे मकान तो बन नहीं रहे हैं। सभी पक्का बनवा रहे हैं। गिट्टी, मिट्टी और मोरंग बालू पहुँचाने का काम पूरे साल लगा रहेगा। दिवाकर इधर-उधर घूमते हैं। साथ लग जाएँ। महीने-दो महीने के लिए एक ड्राइवर रखकर दोनों भाई चलाना सीख लें। आठ-आठ घंटे दोनों भाई चलावें। सोलह घंटे रोज चलेगा तो पैसा ही पैसा बरसेंगा।"

ट्रैक्टर की जोत जलाकर चले गए प्रभाकर के साले। प्रभाकर भी ट्रैक्टर खरीदने के पक्ष में हो गए।

"देखो भाई, अपने टेंट में पैसा होता तो जरूर खरीद लेते। लोन लेकर खरीदने में तो पूरी सीर की खतौनी गिरवी रख उठेगी। अभी तक इस घर की सूप-चलनी भी गिरवी नहीं रखी गई। क्या यह रवायत मेरे ही हाथों खतम होनी है?"

"तो क्या लकीर के फकीर बने रहेंगे?"

"देखो बेटा, पुरखे कहते आए हैं कि कर्ज लेने से खेत ही गिरवी नहीं होता, कर्जदार की देह भी गिरवी हो जाती है। तेज मर जाता है। वह सारी दुनिया से नजर बचाता चलता है। आधी रोटी कम खाकर गुजारा कर लो, लेकिन कर्ज-रेहन के डाँड़े मत जाओ।"

* कुल जोत।

315

राजधानी में पार्टी की महारैली आयोजित है। अपने समाज की ताकत, संख्या-बल और एकजुटता प्रदर्शित करने का सबसे कारगर तरीका। तूफानी को अपने ब्लॉक से दो बस लाने का जिम्मा दिया जा रहा था। बड़ी मुश्किल से वह इसे एक पर ला पाया।

रैली में भाग लेने वालों का टोटा नहीं है। शहर देखने का लालच ही ग्रामीणों को, खासकर औरतों को रैली में शामिल होने के लिए पर्याप्त है। चाहे चार बस भर लीजिए। दिक्कत खर्चे की है। दलित समाज में बस-मालिक तो कोई है नहीं। सवर्ण समाज के बस मालिक दलितों की रैली के लिए बस देने को जल्दी तैयार नहीं होते। हमारी ही बस में चढ़कर हमारे ही खिलाफ नारा लगाने जाओगे? लौटने के बाद हफ्ते-भर तक बस गंधाती रहेगी अलग। बहुत चिरौरी करने पर राजी होते हैं तो ड्योढ़ा पैसा माँगते हैं। सारा पैसा एडवांस पेमेंट करके जाओ। लौटकर आने के बाद खीस निपोर दिए तो?

एडवांस के बाद भी डर है कि ऐन मौके पर धोखा न दे दें। कहा था कि रात ग्यारह बजे तक गाँव के सामने सड़क पर बस लग जाएगी। एक बज गए हैं, बस का कहीं पता नहीं। अब सचमुच तूफानी को चिन्ता व्याप रही है।

तूफानी को अब दीवारों पर नारे लिखवाने के लिए या स्थानीय रैली में झंडा-बैनर लगवाने के लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती। जो पढ़े-लिखे हैं वे

तो उसकी बात समझते ही हैं, जो अँगूठाछाप हैं वे और ज्यादा समझते हैं। खास उसके बाबा झूरी और बगल के गाँव के उनके एक साथी रात-दिन के सिपाही हैं। पार्टी द्वारा रैली और सभाओं में प्रयोग की जाने वाली नीली झंडियों का रखरखाव इन्हीं लोगों ने सँभाल रखा है। कार्यक्रम के पहले झंडियों से कार्यक्रम स्थल को सजाना और बाद में उन्हें समेटकर वापस लाना।

नई पीढ़ी के चेहरे पर भी नए सबेरे की आशा झिलमिलाने लगी है। लेकिन आशा और उल्लास से ही तो रैली नहीं हो सकती। तूफानी नहीं मान सकता कि पैसा हाथ का मैल है। मैल है तो कुछ मैल हमें भी दे दीजिए भाई। अप-डाउन का डीजल नगद भराना है।

गाँव में चन्दा देने वाला कौन है? किसी की जेब से चवन्नी निकलना मुश्किल । बाजार के बनिये पाँच रुपया देने के पहले घंटे भर दिमाग चाटते हैं। कैडर के जो लोग नौकरी-चाकरी से लगे हैं, वे भी जेब में हाथ डालने के पहले दस बार काँखते हैं।

उसके वकालत के साथी समझाते रहते हैं कि शुरुआत में प्रैक्टिस को गम्भीरता से नहीं लोगे तो पूरे कैरियर में उसका खमियाजा भोगना पड़ेगा। सही कहते हैं, लेकिन 'मिशन' को भी तो कम गम्भीरता से नहीं लिया जा सकता ! एक ही तो जीवन मिला है। उसी में जीना भी है और समाज के गले का फंदा भी काटना है।

सबेरे तीन बजे बस ने हॉर्न बजाकर आने की सूचना दी तो तूफानी की जान में जान आई।

"जगो, उठो। दिशा-मैदान से निपटकर बस के पास पहुँचो।"

वैसे तो सभी ने दिन में खाने के लिए शाम को ही मोटी-मोटी रोटियाँ बनाकर रख ली हैं। दो दिन तक खाने की चिन्ता से मुक्त। लेकिन तूफानी ने भी एहतियातन एक बोरा लाई, चना, नमक, हरी मिर्च और पाँच किलो प्याज बोनट के पास रखवा लिया है।

'आगे के गाँवों से भी सवारी लेनी है, इसलिए सारे मर्द अभी से बस की छत पर चढ़ जाएँ। अन्दर सिर्फ औरतें बैठेंगी।"

"ए सुमेरा, तुम क्यों चलने को लबलबाई हो? तुम्हारी गोद का बच्चा कितने महीने का है? तीन महीने का? तब ? आगे मुश्किल होगी।"

"क्या मुश्किल होगी? मैंने दो दिन के लिए झोले में रोटियाँ रख ली हैं।"

"अरे, मैं इस बच्चे की बात कर रहा हूँ।"

"बच्चे के लिए तो मेरा दूध है ही।"

"कुछ समझो तो। उतनी भीड़ में बच्चा। नीचे उतरो।"

पर सुमेरा नीचे उतरने को तैयार नहीं। वह अपनी नेता को नजदीक से एक नजर देखना चाहती है। उनकी बोली सुनना चाहती है। अपने बच्चे के सिर पर उनका हाथ रखवाना चाहती है। किसी देवी-भवानी से कम थोड़े हैं वे।

बैनर और नीली झंडियों से सजी बस पेट्रोल पम्प से चली तो नारे गूंजने लगे -

बाबा साहब अमर रहें...
हमारा नेता कैसा हो?
तूफानी भइया जैसा हो।

और एक दिन बैंक मैनेजर तिवारी जी घर आ गए। साथ में उनके फील्ड अफसर रस्तोगी जी। दूर से ही हाथ जोड़कर पैलगी किया पाँड़े को। ऋण न लेने के पाँड़े जी के तर्क, प्रभाकर उन्हें बता चुके थे।

हँसते हुए कहा- "किस दुनिया में रहते हैं, चाचाजी। टाटा-बिड़ला हों कि अम्बानी, किसने नहीं लिया है लोन? जो जितना बड़ा आदमी उस पर उतना बड़ा लोन। कोई अपने पैसे से थोड़े बड़ा आदमी बनता है! सब सरकारी पैसे से बनते हैं। उद्योगपति लोग लोन के बल पर एक से दो, दो से चार फैक्टरियाँ खड़ी करते चले जाते हैं और आप दो-चार लाख लोन के लिए इतना आगा-पीछा सोच रहे हैं। खुद भारत सरकार ने विश्वबैंक से अरबों-खरबों का लोन ले रखा है।"

पाँड़े को अपने तर्कों पर कायम देख तिवारी जी के माथे पर पसीना आ गया। चाय पीने के बाद फिर समझाया - "देखिए, बेटी की शादी या मकान बनाने के लिए तो लोन ले नहीं रहे हैं। प्रोडक्टिव काम यानी दो पैसा कमाने के लिए ले रहे हैं तो कैसे नहीं वापस कर पाएँगे? सात-आठ साल के बजाय पूरे दस साल की किस्त बाँध देंगे। किस्त की रकम कम हो जाएगी। दो-दो जवान और लायक बेटे हैं। पढ़े-लिखे, समझदार हैं। जब वे खटने को तैयार हैं तो आपको चिन्ता करने की जरूरत क्या है? दोनों भाई कन्धे से कन्धा मिलाकर खटेंगे तो छमाही किस्त की रकम महीने-भर में कमा लाएँगे।"

जब खुद मैनेजर साहब कह रहे हैं तब तो डरने की बात नहीं होनी चाहिए। लेकिन मैनेजर साहब को क्या गरज पड़ी थी जो खुद चलकर आए ? प्यासा कुएँ के पास जाता है कि कुआँ प्यासे के पास ?

पाँड़े जी की शंका जानकर हँसे तिवारी जी- "जमाना बदल रहा है, महराज ! हमीं कुएँ हैं और हमीं प्यासे हैं। किसान देश का अन्नदाता है। सरकार चाहती है कि किसानों की माली हालत सुधरे। उसने लोन बाँटने का हमारा कोटा फिक्स कर रखा है। नहीं बाँट सके तो नौकरी पर बन आएगी। हम भी ऐसा आदमी खोजते हैं जो मानिंद हो। रसूखदार हो। शराबी-कबाबी न

हो। जिसको लोन दिया जाए तो डूबने का खतरा न हो, ऐसा अच्छा आदमी हमें आपसे बढ़कर कौन मिलेगा? खतौनी की नकल हो तो लेकर कल बैंक आ जाइए।"

प्रभाकर ने बताया- "उसमें थोड़ी समस्या है। हमारे बाबा पिछले माघ में अर्धकुम्भ स्नान के लिए प्रयागराज गए थे। लौटकर नहीं आए। बहुत खोजा गया। नहीं मिले। अब बप्पा के नाम जगह-जमीन की वरासत करा रहे हैं। वही हो जाय तो आते हैं।"

"कराकर आइए। हमारी तरफ से कोई देर नहीं होगी।"

अगम बहै दरियाव

आखिर तिवारी जी की मुस्कान और उनके आत्मीय व्यवहार के आगे पाँड़ेजी ने घुटने टेक दिए। यह बात तो सही है कि अब हलवाहे-चरवाहे नहीं मिलेंगे। मिले भी तो हम उतनी मजदूरी नहीं दे पाएँगे। अगर अपने हाथ से हल की मुठिया पकड़ने से बच भी जाएँ और काम भी न रुके तो इससे अच्छा क्या होगा?

बोले-"ठीक है। जानें प्रभाकर-दिवाकर दोनों भाई। ये अपने बल पर लेना चाहते हैं तो शौक से लें। मुझे जहाँ कहिएगा, दसखत कर देंगे।"

कॉलेज में लड़कियों का हॉकी मैच चल रहा है। सोना भी टीम में है, इसलिए बुल्लू मैच देखने पहुंचे हैं। खेल खत्म होने पर बुल्लू सोना के पास आकर शाबासी देते हैं

- "बहुत अच्छा खेलती हो।"

"थैंक यू!" सोना खिलखिलाती है।

"लेकिन मुझे डर लग रहा है।"

"क्यों? किससे?"

"तुम्हीं से। हारने से।"

"हारना-जीतना तो तब होगा, जब साथ खेलने की नौबत आएगी।"

"वह तो आएगी हो

"मुझे तो नहीं लगता।"

"क्यों?"

सोना चुप रह गई। बुल्लू की इच्छा हुई कि सोना का कन्धा पकड़कर झकझोरें।

वह ऐसा क्यों बोल रही है?

"माँ मेरी शादी मेरे जीजा के साथ पक्का कर चुकी हैं। साथ खेलना है तो अपने बप्पा को बात करने के लिए मेरे बप्पा के पास भेजो।" फिर उदासी ठेलकर मुस्कराई - " नहीं तो चिड़िया उड़ जाएगी। मेरे बच्चे जिन्दगी-भर तुम्हें मामा कहेंगे।"

पहलवान भोर में चार बजे ही गन्ना गोड़ने चले गए थे। पहर दिन चढ़े जलपान करने घर आए। फिर कुदाल उठाकर चलने वाले थे कि देखा सामने से कोई उनके घर की सीध में चला आ रहा था। मेहमान ?

इस समय मेहमान का आना उन्हें अच्छा नहीं लगा। गोड़ाई का काम टल जाएगा। मेहमान का स्वागत करने के लिए कम-से-कम घंटे भर तो रुकना ही पड़ेगा।

नाते-रिश्तेदार तो सभी के हैं, लेकिन पहलवान के घर मेहमान कुछ अधिक ही आते हैं। उनके बाप विद्रोही जी एक कहानी कहते हैं-

एक तौ बड़े बड़न में नाँव
दूजे सड़क किनारे गाँव
तीजे भये वित्त से हीन
पंचौ हमका विपदा तीन

यानी, एक तो बिरादरी के चौधरी हैं। बड़े-बड़े लोगों में नाम है। भेंट-मुलाकात है, उठना-बैठना है। दूसरे, सड़क के किनारे गाँव होने के कारण कोई भी आसानी से घर तक पहुँच जाता है, इसलिए आए-दिन मेहमान पहुँचते रहते हैं। स्वागत-सत्कार करना पड़ता है। यह सब न खलता, अगर साधन-सम्पन्न होते। लेकिन वित्त से हीन हैं। तंगी है। इसलिए यह तीनों संयोग विपत्ति की तरह उन्हें घेरे रहते हैं।

पास आने पर पहचाना। यह तो उनकी बड़ी बेटी के ससुर हैं। लगता है, भोर में ही चले हैं। पहलवान ने कुदाल रख दी और आगे बढ़कर राम-जोहार किया। ओसारे से चारपाई निकालकर नीम की छाँह में लाए और उस पर दरी बिछाते हुए कहा- "बैठिए। सब कुशल-मंगल तो है?"

"कुशल-मंगल ही तो नहीं है।" पाटी से लाठी टिकाकर बैठते हुए समधी बोले। सुनकर पहलवान थोड़ा चौंके। देखा, समधी के घुटनों तक धूल अटी पड़ी है। होंठ पपड़ियाए हैं। मूँछ के बालों तक पर धूल के कण हैं।

पूछा- "क्या हुआ?"

"बहुत बुरा हुआ। मेरी खतौनी लगाकर किसी ने ट्रैक्टर निकलवा लिया।"

"क्या मतलब?"

"मतलब कि किसी ने तहसील से मेरी खतौनी निकलवाई और उसे बैंक में बंधक रखकर ट्रैक्टर खरीदने के लिए लोन निकलवा लिया।"

"ऐसा कैसे हो सकता है? बिना आपकी मरजी के?"

"वही तो मैं भी नहीं समझ पा रहा हूँ, लेकिन परसों एक आदमी घर आया। बोला-' आजाद ट्रैक्टर के डीलर ने आपके नाम पर ट्रैक्टर बेचा है। आपकी खतौनी बंधक है।

पता करिए नहीं तो किसी दिन खेती-बारी नीलाम हो जाएगी।' मेरा तो खून सूख गया। पूछा- 'भइया आप कौन हैं? आपको कैसे पता?'

'यह सब जानकर क्या कीजिएगा। मुझे पता चला तो आपको बताना अपना फर्ज समझकर चला आया।' जिस समय वह आदमी बता रहा था, हमारी मलकिन और बहू भी मौजूद थीं। उस शाम चिन्ता के मारे चूल्हा ही नहीं जला। हमारी मलकिन ने कहा कि पहलवान को लेकर जाइए, पता लगाइए कि क्या मामला है?"

ऐसा कैसे हो सकता है? और अगर हुआ है तो उन्हीं को क्या पता कि क्या करना पड़ेगा? कहाँ जाना पड़ेगा? यह जरूर पक्का हो गया कि अब दो-चार दिन का अकाज होगा। बेटी के ससुर हैं, इसलिए साथ-साथ दौड़ना तो पड़ेगा।

अन्दर से पहलवानिन निकलीं। पहचानकर आधा घूँघट निकाला और बेटी, नाती, समधिन का हाल-चाल पूछने लगीं। फिर अन्दर गईं और हाथ-पैर धोने के लिए एक बाल्टी पानी और लोटा लाईं। जब तक समधी ने ने हाथ-पैर-मुँह हाथ धोए, वे मट्ठे का शिखरन बना लाईं।

गन्ने की गुड़ाई बहुत जरूरी थी। दो दिन की भी देर हो गई तो खेत ठनक जाएगा। गन्ने की पत्तियाँ गुड़ाई करने वाले के हाथ-पैर आरी की तरह

चीरती हैं, इसलिए गन्ने की गुड़ाई के लिए मजदूर आसानी से नहीं मिलते। पहलवान ने समधी से कहा कि वे लम्बा रास्ता चलकर आए हैं। थोड़ा आराम करके नहा-धो लें। तब तक एक-दो घंटा गुड़ाई करके आते हैं तो खाना-पीना किया जाए और सोचा जाए कि क्या करना होगा।

गुड़ाई करते-करते पहलवान सोचते हैं कि जिस डीलर से ट्रैक्टर खरीदा गया है उसी से पूछने पर खरीदने वालों का पता लग सकता है।

शहर जाना पहलवान को बिलकुल पसन्द नहीं है। शहर की सीमा में पहुँचने के कोस-भर पहले ही उन्हें शहर की बदबू महसूस होने लगती है। जब तक शहर में रहते हैं, यह बदबू उनका पीछा नहीं छोड़ती। इसलिए शहर जाने के नाम पर ही उन्हें जूड़ी चढ़ जाती है।

साथ चलने के लिए कोई तेज-तर्रार आदमी मिल जाए जो शहराती खुर्राटों से आँख में आँख डालकर बात कर सके तो अच्छा रहेगा, वरना सीधे-सादे आदमी को तो शहर के लोग पट्टी पढ़ा देते हैं।

सोचते-सोचते उन्हें रामनेवाज की याद आई। कहने को मुंशी हैं, लेकिन छोटे-मोटे वकीलों को खुद कानून पढ़ाते हैं। केस की मिसिल खुद तैयार कर लेते हैं। दायर कर देते हैं। बातचीत में उस्ताद हैं। उन्हें साथ लेकर चलना ठीक रहेगा। वहीं कचहरी में मिल भी जाएँगे।

आजाद ट्रैक्टर का डीलर पीठ पर हाथ ही नहीं रखने दे रहा था। कहता था-"हमें क्या पता, कौन असली रामलाल है कौन नकली ! बैंक ने हमें ड्राफ्ट दिया, हमने ट्रैक्टर दिया। असली-नकली पता करना मेरा काम थोड़े है!"

रामनेवाज ने उसे हड़काया-" आपको सब पता है। आपके दलाल ही लोनिंग के असामी खोजकर लाते हैं। वही बैंक में फाइल तैयार करवाते हैं। दोनों तरफ से कमीशन खाते हैं, इसलिए आप हमें नकली रामलाल की

असलियत कभी न बताएँगे, लेकिन यह तो बताइए कि रामलाल के नाम से ट्रैक्टर बिका कि नहीं? बिका तो कब बिका? किस बैंक का, किस ब्रांच का ड्राफ्ट मिला? ताकि हम बैंक तक पहुँचें। अपनी फाइल का मुआयना करें। असली मुल्जिम तक पहुँचने की राह खोजें। अगर आप यह भी नहीं बताते तो इसका मतलब हुआ कि मेरे खिलाफ साजिश में आप खुद शामिल हैं। एफ.आई.आर. में आपको भी मुल्जिम बनाना पड़ेगा। पुलिस का लट्ठ पड़ेगा तो चिल्ला-चिल्लाकर बताएँगे।"

तब उसने बताया कि रामलाल के नाम से डेढ़ साल पहले ट्रैक्टर बिका है। कांटीनेंटल बैंक की सिविल लाइन शाखा से चार लाख का ड्राफ्ट मिला है। क्रेता का पता वही है जो असली रामलाल का पता है।

इतनी जानकारी करते-करते दोपहर से साँझ हो गई। दूसरे दिन दोनों समधी रामनेवाज को साथ लेकर दस बजे ही बैंक पहुँच गए। पहलवान की लम्बी-चौड़ी कद-काठी, चौड़ा चेहरा, लम्बी मूँछें और लम्बा कुर्ता-धोती देखकर मैनेजर का ध्यान गया। शायद सोचा हो कि कोई लोनार्थी होगा जो पहली बार बैंक आकर अचकचाया है। उसके इशारे पर दोनों लोग अन्दर गए। पहलवान ने टुकड़े-टुकड़े में सारी बात बताई और कहा- "फाइल निकालिए तो पता चले कि कागजों में किसकी दस्तखत है, किसका फोटो है।"

"लेकिन थर्ड पार्टी को तो रेकार्ड दिखाने का कानून नहीं है।"

"अरे साहब, यही तो असली रामलाल हैं। इन्हीं की खतौनी बंधक रखकर आपने लोन दिया है। यह थर्ड पार्टी कैसे हुए? और कानून की बात करते हैं तो बताइए कि चार लाख का लोन आपने बिना जाँच-पड़ताल किए फर्जी आदमी को दे दिया, इसका कानून है? दस परसेंट पा गए तो आँख-कान सब बन्द हो गए! तब कानून चला गया तेल लेने। आपका फील्ड अफसर मौके की जाँच करने जाता है। लोन पास करने के पहले भी जाता है, ट्रैक्टर की डिलिवरी के बाद भी जाता है।

उसकी पकड़ में यह जालसाजी नहीं आई? मोटी गड्डी पा गया तो घर बैठे आँख मूँटकर रिपोर्ट लगा दिया। नकली रामलाल को असली मान लिया और असली को कह रहे हो थर्ड पार्टी।"

मैनेजर कुछ ढीला पड़ा। पूछा- "हम कैसे मानें कि असली रामलाल यही हैं।"

"मत मानिए, लेकिन अपने रेकार्ड से मिलाकर चेक तो कर लीजिए कि क्या इन्हीं का फोटो आपके कागजों में लगा है। इनका नहीं लगा तो किसका लगा है? क्या पता, फोटो देखकर पहचान में आ जाय कि जालसाजी करने वाला कौन है?"

लाभार्थी की फोटो देखी गई। फोटो किसी तीस-पैंतीस साल के नौजवान की थी और बहुत धुँधली थी। नाम, वल्दियत, सुकूनत रामलाल की दर्ज थी। रामलाल अँगूठा निशान लगाते थे। फाइल में दस्तखत थी। खतौनी रामलाल की थी। उसमें गाटा संख्या और रकबा रामलाल के खेतों का ही था। अभी लोन की कोई किश्त जमा नहीं थी। कायदे से अब तक नॉन पेमेंट का नोटिस भी जारी हो जानी चाहिए थी।

साफ हो गया कि ट्रैक्टर कोई भी ले गया हो, लेकिन भुगतान की जिम्मेदारी उन्हीं पर आएगी। इसलिए जितनी जल्दी हो इस जालसाजी के खिलाफ थाने में रिपोर्ट लिखा दी जाए।

पहलवान के समधी ने तो आज तक कभी थाने का मुँह तक नहीं देखा। पहलवान की पहलवानी भी थाने जाने के नाम पर पानी हो जाती है। सिपाही-चौकीदार तक गुर्राकर बोलते हैं। थाने के हाते में पैर रखते ही शरीर का बल आधा हो जाता है। किसी वजनी आदमी को साथ लेकर चलना ठीक रहेगा। उनके पास खेलावन सेक्रेटरी के अलावा वजनी आदमी कौन है? लेकिन सेक्रेटरी ने कहा कि कल तो उनकी मीटिंग है। परसों रविवार के दिन चल सकते हैं।

शाम को देर तक बैठकर, थाने में देने के लिए दरखास्त का मजमून बनाया

गया था, लेकिन आधी दरखास्त पढ़ते ही थाने का मुंशी उसे हवा में उड़ाते हुए गुर्राया- "यह क्या लिखकर लाए हो, किसी आदमी ने मेरी खतौनी लगाकर...। किसी आदमी से क्या मतलब? यह कोई दंगा-बलवा का केस है कि अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट लिखी जाएगी। जो ज्ञात है उसे तो पकड़ नहीं पा रहे हैं!"

"मुंशी जी, खोजने का काम तो पुलिस का ही है। पुलिस के हाथ-पाँव कितने लम्बे होते हैं, यह क्या आपको बताना पड़ेगा?" सेक्रेटरी ने मुंशी को ठंडा करना चाहा।

"कैसी बात करते हो? कोई तुम्हारी मार ले गया और तुम्हें पता नहीं चला तो हमें कैसे पता चलेगा? पता करके बताओ तो पुलिस चूतड़ पर चार डंडा मारकर अन्दर कर देगी। जिस मैनेजर ने बिना आईडी वेरीफाई किए लोन दे दिया, वह 'अज्ञात' है? जिस फील्ड अफसर ने झूठी रिपोर्ट दी वह 'अज्ञात' है? वे सब

'फोर्जरी' में बराबर के जिम्मेदार हैं। उनकी मिलीभगत है। उनके खिलाफ नामजद रिपोर्ट लिखाओ। उन्हें पकड़कर अन्दर भेजा जाएगा, तब न असली मुल्जिम का पता बताएँगे। 'किसी ने' को कहाँ खोजेंगे। तफतीस दस साल पेंडिंग पड़ी रहेगी।"

खेलावन सेक्रेटरी को भी लगा कि मुंशी सही राय दे रहा है।

दूसरी तहरीर लिखी गई। मुंशी ने पढ़कर रख ली और कहा- "जाइए।"

"रिपोर्ट की नकल भी तो चाहिए।"

"नकल का क्या अचार डालना है?"

"अरे साहब, हमारे हाथ में मुकदमा लिखाने का सबूत तो रहना चाहिए।"

"जाइए, एक महीने बाद आकर पता कर लेना।"

"अरे मुंशी जी, दुबारा न दौड़ाइए। दौड़ते-दौड़ते थक चुके हैं।"

"तो अर्जेंट नकल चाहते हो?"

"अर्जेंट ही समझ लीजिए।"

"हमको थोड़े समझना होगा कि अर्जेंट नकल का क्या दस्तूर है? अभी हमें आधा दर्जन रिपोर्ट लिखनी हैं। सब कुछ छोड़कर तुम्हारी रिपोर्ट..."

"समझ गए, लेकिन आप कुछ इशारा तो करें। हम लोग पहली बार आए हैं। जो भी नजराना-शुकराना..."

नजराना-शुकराना का दस्तूर निभाने में एक घंटा लग गया। मुंशी खुश हुआ।

बोला, "आज जाओ। एक हफ्ते बाद ले जाना।"

एक हफ्ते बाद रामलाल रिपोर्ट की नकल लेकर लौटने वाले थे कि एक सिपाही ने आकर कहा- "उधर छोटे दारोगा बैठे हैं। उनसे मिलते हुए जाना।"

रामलाल डरे। उधर भी कुछ नजराना-शुकराना ?

उन्होंने मुंशी की ओर देखा।

"वही तुम्हारे केस के जाँच अधिकारी बने हैं। तुम्हारा बयान लेंगे। दफा 161 सीआरपीसी में वादी का बयान होता है।"

जाँच अधिकारी के पास एक ही कुर्सी थी जिस पर वह बैठा था, इसलिए रामलाल को खड़े-खड़े ही बयान देना पड़ा।

"कब पता चला कि तुम्हारे साथ फोर्जरी हो गई? किसने बताया? किसी

आदमी ने? फाइल में 'किसी आदमी' की आवाज थोड़े नत्थी होगी? डाकूमेंटरी इविडेंस चाहिए।"

रामलाल उसका मुँह ताकते रहे।

"तुम्हारी खतौनी बंधक होगी तो तहसील के रेकार्ड में इसका इन्दराज होगा। किस बैंक के कितने रुपये लोन के लिए किस गाटा नम्बर का कितना रकबा बंधक है?

तहसील से अपनी खतौनी की पक्की नकल निकलवाकर जितनी जल्दी हो सके, दे जाना।"

कई दिन बाद एक शाम रामनेवाज पहलवान के घर पहुँचे।

शाम को मुंशी शहर से ही 'टुन्न' होकर लौटते हैं। टुन्न होने पर उनकी बुद्धि और ज्यादा खुल जाती है। उन्होंने कहा कि "रिपोर्ट लिखा दिया, यह तो ठीक है। लेकिन अब बैंक भी एक्टिव हो जाएगा। किस्त जमा नहीं हुई है इसलिए वह वसूली की कार्यवाही कर सकता है। खेत नीलामी की कार्यवाही कर सकता है। इससे कैसे बचोगे? इसके लिए हाई कोर्ट में रिट दायर करके वसूली और कुर्की नीलामी के खिलाफ स्टे लेना होगा। ऐसा आदेश कराना होगा कि जब तक लोवर कोर्ट में दाखिल मुकदमे का फैसला न हो जाय, बैंक वसूली की कार्यवाही न करे। इलाहाबाद चले जाइए। मेरे एक परिचित वकील हैं, मैं उनके नाम चिट्ठी लिख देता हूँ। पता

लिख देता हूँ। ग्यारह हजार फीस लगेगी। स्टे करा देंगे। स्टे लेकर चैन से घर बैठिए।"

"इसका मतलब थाने पर बेकार ही हम लोग नजराना-शुकराना दिए। सीधे हाई कोर्ट जाते।" पहलवान ने अफसोस जाहिर किया।

"नहीं, नहीं। सबकी अलग-अलग पावर है। जो पावर पुलिस को है, वह जज को थोड़े है। कोर्ट भी पुलिस की आँखों से देखती है। अगर जज के फैसले पर पुलिस रिपोर्ट लगा दे कि इसका अनुपालन करने से दंगा-बलवा हो जाएगा तो कोर्ट के आदेश का अनुपालन रुक जाएगा। कोर्ट मुल्जिम को पकड़ने थोड़े जाती है! पुलिस चाहे तो चौबीस घंटे में मुल्जिमों को पकड़कर सीखचे के पीछे कर दे। न चाहे तो पाँच साल लटका दे। फाइनल रिपोर्ट लगा दे। आप हाई कोर्ट किस आधार पर जाएँगे। रिपोर्ट की नकल ही तो रिट दायर करने का आधार बनेगी! नकल साथ लेकर जाइएगा।"

"एक वकील साहब की जानकारी तो मुझे है, जिन्होंने मेरे बप्पा का परधानी वाला केस लड़ा था।"

"हर वकील हर तरह का केस नहीं सँभाल सकता। मैं जिनका नाम बता रहा हूँ, वे फ्राड केस के एक्सपर्ट हैं।"

कागज के एक टुकड़े पर वकील का नाम-पता लिखकर मुंशी जी ने पहलवान को थमाया और लड़खड़ाते हुए अपने घर की राह पकड़ी।

दहबंगा परधानिन गाँव की दस-बारह औरतों के साथ फूलन को देखने जा रही हैं। बहुत दिनों से-पन्द्रह साल से- उनके मन में यह जानने की इच्छा है कि जिस लड़की के साथ सोलह-सत्रह बरस की उम्र में ही सबकुछ हो गया और जिसने इतने लोगों को लाइन में खड़ा करके भून दिया, वह देखने-बोलने में कैसी है?

इधर जब से उन्हें पता लगा कि फूलन मिर्जापुर से चुनाव लड़ रही है, उन्होंने दो बार तूफानी से कहा कि मोटरसाइकिल पर बैठाकर उन्हें दिखा लाएँ। चुनाव की सभा में आसानी से 'देख भी लेंगी, सुन भी लेंगी।

संयोग से पाँड़े बाबा ने जो ट्रैक्टर खरीदा है, उसे लेकर विंध्याचल देवी को नारियल-चुनरी चढ़ाने जा रहे हैं। पंडित टोले की तीन-चार औरतें भी देवी-दर्शन करने जा रही हैं।

तूफानी ने प्रभाकर से बात की और एक तरफ का डीजल खर्च देने की शर्त पर वे तैयार हो गए। औराई के पास, जहाँ फूलन की सभा होनी है, वे सबको उतारकर गंगा पार करके विंध्याचल चले जाएँगे और वापसी में सबको लेते हुए लौट आएँगे। सबेरे चलकर वे ग्यारह बजे सभास्थल पर पहुँच गए।

जैसे ही वह ट्रॉली से उतरी, माथा बाबा की बूढ़ी औरत ने दहबांग से कहा, "मुझे भी उतार दो, दहबांग।

प्रभाकर की अम्मा ने पूछा- "यहाँ क्यों? देवी-दर्शन करने नहीं चलोगी?" आज काली का दर्शन करने का मन हो रहा है।"

कुआँ है। बाग के किनारे आड़-भर का झाड़-झंखाड़ भी है। सुबिहित हो लो। हाथ-मुँह धो लो। सभा दो घंटे बाद शुरू होगी। तब तक साथ लाई रोटियाँ खा लो।

फिर पता चला कि एक घंटे में ही पहुँच रही है फूलन। इसलिए कि जिस गाँव में यहाँ से पहले वाली सभा होनी थी, उस गाँव तक फूलन पहुँच न

पाए इसलिए उस गाँव तक जाने वाली सड़क के आर-पार लोगों ने गहरी खाई खोद डाली। उस गाँव तक जाने का और कोई रास्ता नहीं है, इसलिए फूलन को बीच रास्ते से वापस लौटना पड़ रहा है।

अगम बहै दरियाव

भीड़ जुटने लगी। आदमी से ज्यादा औरतें। लगभग सभी कमेरी जाति की। कुछ लोग दो तख्त लेकर आए। एक रिक्शे पर बैटरी और माइक आ गया। तख्त जोड़ दिए। मंच बन गया। माइक फिट हो गया-"हेलो-हेलो। टेस्टिंग।"

एक सफेद पुरानी अम्बेसडर कार आकर मंच के पास रुकी। लाल प्रिंट की साड़ी और लाल ब्लाउज पहने बत्तीस-पैंतीस साल की फूलन कार के पिछले गेट से बाहर आई और भीड़ को हाथ जोड़ते हुए मंच पर चढ़ गई। भीड़ कम होने के कारण औरतों को पास से देखने का मौका मिल गया। वे आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगीं।

साँवला रंग, मझोला कद, बुझी-बुझी आँखें, धुआँ-धुआँ चेहरा ऐसा पथराया हुआ जैसे बचपन से सौतेली माँ का त्रास झेलती किसी नाजुक और शरमीली बच्ची का हो।

बहनो और भाइयो,

...मैं मुसीबत की मारी हूँ। चार साल गल में भटकी हूँ और

ग्यारह साल जेल काटी है।

फूलन रुक-रुककर बोल रही है। जैसे अगला वाक्य बोलने के पहले सोचना पड़ता हो। दाएँ-बाएँ देखती है, जैसे किसी खतरे की आशंका हो। मुस्कराने की कोशिश करती है, लेकिन विषाद की काली छाया तुरन्त उसके चेहरे को ढक लेती है।

...मेरा कसूर यही है कि मैं झोंपड़ी में पैदा हुई। दबी-कुचली जाति में पैदा हुई। ऊँची जाति के 'सामंतशाही' लोग हमें कीड़ा-मकोड़ा समझते हैं। उन अत्याचारियों ने मुझ बेबस पर जो जुल्म ढाया उसे बयान नहीं किया जा सकता।

फूलन की आवाज भरी जाती है। वह रुककर थूक घोंटती है। श्रोता औरतों के बीच से सिसकने और आँचल से आँसू पोंछने का दृश्य उभरता है।

.....जेल में मुझे यह कहकर पागलों के बीच रखा गया कि यह भी तो पागल है।

देखना और सुनना दोनों एक साथ हो ही नहीं पा रहा है औरतों से। सुनने लगिए तो दिखाई पड़ना बन्द हो जाता है और देखने लगिए तो सुनाई पड़ना।

....रावण ने सीता को चुराया तो उसे आज तक जलाया जाता है। आज के रावणों ने मेरे साथ उससे ज्यादा जुल्म किया। उस समय तक तो मैं बालिग भी नहीं थी। मैंने कई दफे सोचा कि फाँसी लगाकर जान दे दूँ।

फिर सोचा कि उससे क्या होगा? फाँसी तो सैकड़ों लड़कियाँ रोज लगाती हैं। उनके रावणों को कहाँ कोई जलाता है।

सन्नाटा। निश्चल और निःशब्द भीड़। चिड़ियों ने भी बोलना बन्द कर दिया है।

. ....जिन्होंने हमें सताया था, हमने उन्हें सबक सिखाया। हमने कोई गलत काम नहीं किया। हमने दबी-कुचली-सताई हुई औरतों का संकट दूर करने का 'संकल्प' लिया है। हमारा साथ दीजिए। हमारी 'पाटी' को वोट दीजिए।

कुछ क्षण चुप रहकर देखने के बाद फूलन हाथ जोड़ती है और तख्त से

नीचे उतर जाती है। भीड़ अभी भी स्थिर है। वापसी में ट्रैक्टर के शोर के बीच सब चुप हैं। बीच-बीच में कोई फूलन की किसी बात को दोहराकर सबको रोमांचित कर देती है।

दोनों समधी हाई कोर्ट से स्टे लेने निकले। रेलवे स्टेशन पर उतरते ही रिक्शेवालों से घिर गए-कहाँ चलेंगे? आइए, आइए। एक रिक्शेवाला कुछ सीधा दिखाई पड़ रहा था। पहलवान की नजर उससे मिली तो मुस्कराया और 'जैराम' भी किया। सीट झाड़ते हुए बोला - "आइए, बैठिए।" पहलवान बोले-"रविंदर बाबू वकील की कोठी पर चलना है। हाई कोर्ट के वकील हैं। जानते हो?"

"रविंदर बाबू को कौन नहीं जानता? पूरा इलाहाबाद जानता है। बैठिए, अभी दन्न से पहुँचाते हैं।"

"पहले किराया बताओ, नहीं तो बाद में झंझट करोगे।"

"रविंदर बाबू की कोठी दूर है। बीस रुपये दे दीजिएगा।"

"हमको देहाती भुच्च समझते हो क्या? दस रुपये देंगे।"

"आप तो पहले भी गए होंगे, दादा। सोचिए, कितनी दूर है।"

"पहले गए होते तो पैदल न चले जाते। इतना जानते हैं कि चैथम लाइन में है। दस रुपया लगता है।"

"बोहनी का समय है, खुद ही समझकर दे दीजिएगा। बैठिए।"

चलते-चलते रिक्शेवाले ने जानना चाहा- "किस जिले से आए हैं आप लोग?"

पहलवान का जवाब सुनकर बोला- "तब तो अपने ही जिला-जवार के ठहरे। बीस साल से यहाँ रिक्शा चला रहा हूँ। एक-एक वकील को जानता हूँ। बहुत सही बकील पकड़े हैं आप लोग। रविंदर बाबू और भास्कर तिवारी से बड़ा कोई वकील नहीं है इलाहाबाद में। ऐसी बहस करते हैं कि..."

बात पूरी होने के पहले ही वकील की कोठी आ गई।

"अरे, ये कौन-सी जगह ले आए?" गेट के बाहर भास्कर तिवारी एडवोकेट का बोर्ड देखकर पहलवान बोले।

"यही कोठी है, साहब। इसी में दोनों लोगों का चैम्बर है।"

चैम्बर नाम पहलवान ने पहले भी सुन रखा है। जहाँ बैठकर वकील लोग मुवक्किल से मिलते हैं।

रिक्शेवाले ने लपककर चैम्बर का दरवाजा खोला और कहा- " आइए, अन्दर बैठिए।" फिर जोर से आवाज लगाई "मुंशी जी, मुवक्किल आए हैं।"

पहलवान ने जेब से निकालकर दस रुपये का नोट रिक्शेवाले को दिया और तनिक हिचकिचाते हुए आगे बढ़े। उन्हें लग रहा था कि गलत जगह पर आ गए हैं। आखिर गेट पर रविंदर बाबू का नाम क्यों नहीं लिखा? चैम्बर के अन्दर जाने का मन नहीं हुआ। तब तक मुंशी बाहर आ गया। बोला- " आइए-आइए। अन्दर बैठिए।" लगभग घेरकर वह दोनों लोगों को अन्दर ले गया।

"हम रविंदर बाबू के पास अपना मुकदमा लेकर आए हैं। रामनेवाज मुंशी ने

भेजा है।"

"समझ गए, समझ गए। बैठिए।"

मुंशी बाहर रिक्शेवाले के पास गया। उसके हाथ में कुछ रखकर वापस लौटा और बताया- "मुंशी जी अपने खास-खास लोगों के मुकदमे यहीं भेजते हैं। बताइए, क्या मामला है?"

पहलवान ने आदि से अन्त तक सारी कहानी सुनाई।

"कोई बात नहीं। जब यहाँ पहुँच गए हैं तो चिन्ता फिकर करने की कोई जरूरत नहीं है। लीजिए, वकालतनामे पर दस्तखत कर दीजिए। वकील साहब की फीस इक्कीस हजार है। मुंशी का खर्चा हजार रुपये अलग। रामनेवाज ने भेजा है तो हजार कम करके इक्कीस हजार जमा कर दीजिए।"

"मुंशी जी ने तो मय खर्चा ग्यारह हजार बताया था।"

"इस मामले में तुरन्त स्टे लेना है, इसलिए दो वकील बहस करेंगे।"

"लेकिन इतना तो हम लाए नहीं हैं।"

"कितना लाए हैं?"

पहलवान ने कुछ सोचकर कहा- "दस हजार।"

"कोई बात नहीं। दस जमा कर दीजिए, बाकी एक हफ्ते बाद एडमीशन के दिन दे दीजिएगा। एडमीशन के साथ उसी दिन लगे हाथ स्टे की बहस भी करा देंगे।"

समधी जी दस हजार रुपये और रिपोर्ट की कॉपी मुंशी को देने लगे।

मुंशी ने कहा-" रखिए। वकील साहब आ रहे हैं। उन्हीं को दीजिए।"

तब तक काला कोट पहने वकील साहब आ गए। मुंशी ने उन्हें सारी बात बताई।

वकील को देखकर पहलवान को संशय हुआ। रामनेवाज मुंशी ने रविंदर बाबू को नौजवान वकील बताया था। यह तो साठ से कम के नहीं होंगे।

पूछा-" आप ही रविंदर बाबू हैं।"

"हमको और रविंदर बाबू को अलग मत समझिए। रविंदर बाबू आज बहस करने लखनऊ बेंच में गए हैं। आपके मामले में हम दोनों लोग मिलकर बहस करेंगे।"

"लेकिन वकील साहब, इतनी फीस हम नहीं दे पाएँगे। हम तो ग्यारह हजार जानकर आए थे।"

मुंशी बीच में बोल पड़ा-" इन्हें रामनेवाज मुंशी ने भेजा है। हमने बताया कि दो लोग बहस करेंगे। फीस रियायत करके बीस हजार बताया है। दस हजार लाए हैं।"

"चलिए, रामनेवाज का मामला है तो आपके लिए दो हजार और कम कर देते हैं। आठ हजार अगले हफ्ते दे जाइएगा।"

मुंशी बोला- "काम आपका हो जाएगा, यह पक्का समझिए। वकील साहब जज साहब के साथ रोज चिड़िया खेलते हैं।"

पहलवान ने दस हजार रुपये की गड्डी और रिपोर्ट की कॉपी वकील साहब के हाथ में दे दी।

रिपोर्ट पढ़ने के बाद वकील साहब ने कहा - "बैंक से आपको कोई नोटिस नहीं मिली?"

"बैंक से तो कोई नोटिस नहीं मिली।"

"जाकर बैंक से अपने नाम एक नॉन पेमेंट की नोटिस जारी करवा लीजिए। उसकी कापी लेकर अगले हफ्ते आइए। नोटिस रहने पर स्टे मिलने में आसानी होगी।"

चैम्बर से बाहर निकले तो दोनों लोग सन्तुष्ट दिखे। वकील तेज-तर्रार लग रहा है। अनुभवी है। काम कराएगा। दो वकील बहस करेंगे तो फीस ज्यादा लगेगी ही। फिर भी चालाकी से चार हजार कम करा लिया गया। बस रविंदर बाबू से भेंट नहीं हो सकी।

बारह बज गए और मुँह में पानी की बूँद तक नहीं गई। भूख-प्यास दोनों लग

अगम बहै दरियाव

आई थी। एक चाय की दुकान पर बैठकर दोनों लोगों ने दो-दो समोसे खाकर पानी और चाय पिया तो जान में जान आई।

मोरी बारी उमर मोहे लागे शरम
मोहे मारो न तिरछी नजरिया बलम

माठा बाबा की कोठरी के कपाट बन्द हैं और भीतर से गुलाब बाई की स्वर-लहरी प्रसरित हो रही है।

सबेरे-सबेरे बाबा दूध लेने गुरु टी स्टाल पर गए थे। दूध लेने के साथ टहलना भी हो जाता है और एक नजर अखबार पर भी डाल लेते हैं।

अखबार उठाते ही नजर पड़ी- नौटंकी की मलिका गुलाब बाई का निधन।

माठा बाबा के कलेजे से हाय निकल गई। लिखा है कि कई महीनों से बीमार चल रही थीं। उन्हें पछतावा होने लगा। कानपुर है ही कितनी दूर! कभी भी जाकर भेंट कर आते। गुलाब बाई अपने समय में पूरे हिन्दीभाषी समाज के दिल पर राज करने वाली कलाकार थीं। यही होता है। जब तक आदमी जीवित रहता है, हम सोचते हैं कि कभी भी चलकर मिल आएँगे। लेकिन वह 'कभी भी' आता नहीं और जाने वाला चला जाता है तो पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं आता।

बाबा दुखी मन लौट आए और पत्नी को बता दिया कि आज वे उपवास करेंगे।

अख्तरी बाई और गुलाब बाई को सुनने के लिए ही धन्नू बाबा ने सन् 1950 में रेकॉर्ड प्लेयर खरीदा था। सन् 1970 में जब पाँड़े ने नौटंकी कम्पनी खोली तो उसका उद्घाटन गुलाब बाई से कराना चाहते थे। तब अनारा की अम्मा की सिफारिशी चिट्ठी लेकर माठा बाबा ही पाँड़े बाबा को गुलाब बाई से मिलवाने कानपुर गए थे।

बेटा हमेशा के लिए जाकर ससुराल में बस गया तो उनका मन वीतरागी हो गया। तब उन्होंने रेकॉर्ड और रेकॉर्ड प्लेयर गट्ठर में बाँधकर टाँड़ पर चढ़ा दिया था।

दूध लेकर लौटे तो आज कई साल बाद धोती घुटने तक चढ़ाकर, सीढ़ी लगाकर टाँड़ पर रखे रेकॉर्ड प्लेयर का गट्ठर नीचे उतारा। उस पर पड़ी धूल और जाले साफ किये। जाँचने पर चार-पाँच गाने इस हालत में मिले जिन्हें प्लेयर पर सुना जा सकता था-

नदी नारे न जाओ...
मोहे मारो न तिरछी नजरिया...

नजरिया तोसे लागी... अ
केली डर लागे...
और बनारस राजा जइहो।

धन्नू बाबा उन्हें अदल-बदलकर सुनते रहे। धीरे-धीरे पूरे गाँव में खबर फैली। गुलाब बाई की कला की दीवानी तो पूरी पुरानी पीढ़ी थी। सब धीरे-धीरे माठा बाबा के दुआर पर जुटने लगे। पाँड़े बाबा आए। अनारा आईं। भूसी आए। विद्रोही आए। धौताल करिंगा आए। चारपाई, मोढ़े, तख्त, कुर्सी जो भी था-बाहर निकाला गया।

सब गम की दुनिया में डूब गए।

पाँड़े बाबा बता रहे थे कि सबसे पहले, जब वे दर्जा तीन में पढ़ते थे तो माठा बाबा के साथ ही सुल्तानपुर के चौक बाजार में गुलाब बाई की नौटंकी 'शाही लकड़हारा' देखने गए थे और लौटकर पिता की मार खाए थे। "यह सन् 1954-55 की बात होगी। नौटंकी के प्रति आकर्षण मेरे मन में उसी समय पैदा हुआ था। जिसने भारी विरोध के बावजूद मुझसे नौटंकी कम्पनी खुलवाई।"

सूरज की किरण रामलाल के दुआर पर बाद में पहुँची, जाँच अधिकारी की मोटरसाइकिल पहले पहुँच गई।

रामलाल ने मँड़हे से झाँककर देखा। वे चारपाई लेकर बाहर निकले और बिछाते हुए बोले-"बैठिए, हुजूर।"

दारोगा जी बैठे नहीं। चाभी उँगली पर नचाते हुए कहा - "आखिर पकड़ में

आ गया मुल्जिम। बहुत घाघ है। मुखबिर लगाया। सटीक सुरागरसी हुई तब भी दो महीने लग गए।"

खुश हो गए रामलाल। बोले- "बैठिए, हुजूर। हम 'चाह' बनवाते हैं।"

"चाय छोड़ो। हम तुम्हें यह बताने आए हैं कि ट्रैक्टर की लोकेशन पंजाब के भटिंडा जिले में मिली है। मुल्जिम ने रामपुर जिले के आदमी को बेचा था। उसने छह महीने बाद भटिंडा के आदमी को बेच दिया। चार्जशीट लगाने के लिए दस दिन ही बचे हैं। मुल्जिम और फोर्स के तीन आदमी, कुल चार लोगों का भटिंडा जाने-आने का किराया-भाड़ा और खुराकी खर्चा के साथ ट्रैक्टर में हजार किलोमीटर के लिए डीजल भी भराना होगा। कुल दस हजार का इन्तजाम करो।"

अगम बहै दरियाव

'साहेब', 'हुजूर' की रट लगा रहे रामलाल रुपये की बात सुनकर अचकचा गए। पूछा- " रुपये मुझे देने होंगे, सरकार?"

" और कौन देगा? वादी ही तो तफतीस का खर्च उठाता है। लाओ, मुझे फौरन रवाना होना है।"

"सरकार, ट्रैक्टर से हमें क्या लेना-देना? न हमने खरीदा, न हमने बेचा, न हमें उसकी जरूरत। हमें तो अपनी खतौनी छुड़ाने से मतलब है।"

"कैसी बात करते हो?" दरोगा बिगड़ गया- "ट्रैक्टर ही तो तुम्हारे मुकदमे का असली सबूत है। उसकी बरामदगी न होगी तो फोर्जरी कैसे साबित होगी? और फोर्जरी साबित नहीं हुई तो मुल्जिम छूट जाएगा। मुल्जिम छूट गया तो तुम्हारी खतौनी कैसे रिलीज होगी? या तो मुल्जिम छूटेगा या तुम्हारी खतौनी छूटेगी।"

रामलाल की समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करे? पहले पता होता तो किसी से राय-मशविरा कर लेते।

"क्या बताएँ, सरकार! हाथ एकदम खाली है।"

"क्या बकते हो? बेटा हर महीने मनीआर्डर भेजता है कि नहीं? अन्दर जाओ। घरवाली से बोलो।"

रामलाल अन्दर जाते हैं तो अन्दर के ही होकर रह जाते हैं। बाहर निकलने का मन ही नहीं हो रहा है। मनीऑर्डर की बात इसे किसने बताई? मनीआर्डर आया, यह तो सही है, लेकिन इधर आया और उधर वकील के घर पहुँच गया। कल ही तो उनके पास से स्टे की कॉपी लेकर लौटे हैं।

पत्नी सारी बात किवाड़ की आड़ से सुन रही थीं। वे जानना चाहती हैं कि आखिर हम लोगों ने ऐसा कौन-सा खून-कतल कर दिया है जो दुनिया हमें नोचने में लगी है। उधर वकील ने फिर पाँच हजार ठगा, इधर दस हजार के लिए सबेरे-सबेरे यह आ गया दुआर छेंकने।

देर होने लगी तो दारोगा ने आवाज लगाई - " भीतर जाकर सोने लगा क्या?"

फिर किवाड़ की कुंडी खड़खड़ाने लगा।

रामलाल कुर्ते की जेब से स्टे ऑर्डर निकालते हैं और बाहर आकर दारोगा को पकड़ाते हुए कहते हैं- "देखिए, इससे काम चल जाय तो चलाइए साहब।"

दारोगा ध्यान से पूरा आदेश पढ़ता है फिर वापस करते हुए कहता है-" यह जो स्टे मिला है, वह एफ.आई.आर. के चलते ही मिला है। इसके बल पर बहुत मत कूदो। स्टे ही मिला है, खतौनी नहीं छूटी। स्टे तभी तक है जब तक जिला अदालत का फैसला नहीं आ जाता। फैसला तभी आएगा जब हम चार्जशीट लगाएँगे। चार्जशीट तभी लगेगी जब तुम जेब ढीली करोगे। जेब ढीली नहीं करोगे

तो हम फाइनल रिपोर्ट लगा देंगे। फाइनल रिपोर्ट लग गई तो स्टे खतम, वसूली शुरू। फिर स्टे का कागज लेकर चाटते रहना।"

रामलाल की बुद्धि में कुछ घुस नहीं रहा है। जितने लोग उतनी तरह की बातें। वे घबरा गए हैं। दीनता से कहते हैं- "साहेब, रिश्ते-नातेदारों से समझने-बूझने की मोहलत दीजिए। विधायक जी भी रिश्ते में आते हैं। उनसे भी थोड़ा समझ लें।"

"देखो, नेतागिरी किए कि काम बिगड़ा। विधायक जी मेरा क्या कर लेंगे? ज्यादा से ज्यादा ट्रांसफर करा देंगे। तब भी अगर मैंने रवानगी के पहले फाइनल रिपोर्ट लगा दी कि 'ट्रैक्टर कबाड़ में कट गया। बरामदगी मुमकिन नहीं' तो विधायक तो छोड़ो, हमारा कप्तान भी कुछ नहीं कर पाएगा।"

रामलाल के हाथ-पैर ढीले हो जाते हैं। हाथ जोड़कर कहते हैं-" बस, चौबीस घंटे की मोहलत दीजिए, साहेब। हम आपकी हुकुमअदूली नहीं करना चाहते, पर मजबूरी है। घर में इस समय सौ रुपये भी नहीं हैं।"

"ठीक है।" दारोगा नथुने फुलाकर कहता है- "चौबीस घंटे में जितना कहा है, उतना लेकर हाजिर नहीं हुए तो तुम जानो तुम्हारा काम जाने।"

असफलता की खीज उसके चेहरे पर उतर हुए निकल जाता है। उतर आई है। वह मोटरसाइकिल धड़धड़ाते

फौजी महीने-भर की छुट्टी आया है। विवाह के समय तो सिर्फ दस दिन की छुट्टी मिली थी। ठीक से पत्नी का मुँह भी नहीं देख पाया था।

सोना चाहती है कि जितने पकवान वह बनाना जानती है, इस महीने-भर

की छुट्टी में बनाकर पति को खिला दे।

फौजी अपनी बेटी को गोद में लेकर दुलार रहा है।

सोना डायरी से पढ़-पढ़कर डोसा बनाने की तैयारी कर रही है। फौजी बेटी को गोद में लेकर वहीं पहुँच जाता है। सोना की डायरी को उलटता-पलटता है। सोना ने इसमें नाना प्रकार के व्यंजन बनाने की विधि, शेर-शायरी, गीत, लोकगीत लिख रखे हैं। मेहँदी लगाने का डिजाइन बना रखा है। फौजी की नजर एक पन्ने पर पड़ती है-

अगम बहै दरियाव

दिल में तुम्हें बसा के, कर लूँगी मैं बन्द आँखें।
पूजा करूँगी तेरी, हो के रहूँगी तेरी।

"अरे, वाह! बहुत अच्छा गीत है। किसके लिए लिखा है?"

* आपके लिए, और किसके ?"

"उल्लू मत बनाओ। मैं तब कहाँ था? पाँच साल पहले की तारीख पड़ी है इस पर।"

"जरूरी है कि कोई हो ही। होने वाले के लिए भी तो लिखा जा सकता है।"

"वही तो। कौन है वह होने वाला?"

"लिखते समय कहाँ पता था कि कौन है? गीत अच्छा लगा और लिख लिया। अब पता चला कि कौन था।"

"कौन था?"

"जो पूछ रहा है।"

"बुद्ध बना रही हो! फौजी की नजर बड़ी तेज होती है। अँधेरे में भी गन्ध से दुश्मन का पता लगा लेती है।"

"और दुश्मन न हो तो काल्पनिक दुश्मन भी खड़ा कर लेती है।"

सोना ने गरम डोसे की प्लेट सामने रखते हुए कहा- "चखकर बताइए, कैसा बना है। दुश्मन के बारे में बार्डर पर सोचा करिए।"

"बढ़िया।" फौजी खाते हुए कहता है।

फौज में जाकर वह छुरी-काँटे से खाना सीख गया है।

शाम को खा-पीकर लेटने के बाद फौजी कहता है- "तुम्हारी बहन ने एक बार बताया था कि तुम्हारी शादी की बात तुम्हारी बुआ के भानजे से चल रही थी।"

"हो सकता है। मुझे नहीं पता।"

"तुम भी तो उसे जानती हो। बाद में तो तुम्हारे साथ ही पढ़ता था।"

"मेरे साथ नहीं, मेरे कालेज में।"

"तब तो रोज ही भेंट होती रही होगी?"

"रोज कैसे होगी? वे दो साल सीनियर थे। उनकी क्लास अलग। उनका ब्लाक अलग।"

"तो कैसे मिलते थे?"

"मिलने की जरूरत क्या थी?"

"मैंने तो सुना है, वह तेरे पीछे पागल था।"

" ..."

'अच्छा, एक बात बताओ। तुम्हें मेरी कसम। सच-सच बताना। तुम्हारे मन में भी उसके लिए कुछ था?"

"बच्चों जैसी बातें क्यों कर रहे हैं? मेरे मन में क्या था, क्या नहीं था, उसको जानने से क्या फायदा?"

"कुछ तो रहा होगा?"

"बहुत कुछ रहा हो तो क्या? जहाँ आना था, आ गए। किस्मत में तो तुम थे, दूसरा कैसे मिल जाता?"

"मेरे साथ खुश हो न?"

"यह भी कोई पूछने की बात है! "

"दुख तो जरूर होगा, मन का साथी न मिलने का? दुहाजू के साथ ब्याहे जाने का। दूसरे की औलाद पालने का।"

"दुख होता तो मैं शादी ही क्यों करती ! कोई जबरन थोड़े ब्याह देता।"

फौजी थोड़ी देर तक चुप रह गया। फिर बोला- "अच्छा यह बताओ..."

सोना ने फौजी के मुँह पर हाथ रख दिया- "अब पूछना बताना बन्द।" फिर उसके पेट के निचले हिस्से में गुदगुदी लगाते हुए बोली- "मरे मुहूरत का किस्सा बाँचना बन्द। आपके दिमाग में जो चल रहा है, वह हमारा सुख-चैन उजाड़ देगा। कौन है आपके मन में शंका का भूत खड़ा करने वाला? वही बहादुर न? वह ठीक आदमी नहीं है।"

"अच्छा, बस एक बात..."

"अब कोई बात नहीं। इतने दिन बाद चार दिन की छुट्टी पर आए हो तो कुछ मन लगने वाली बात करो।"

सोना ने इस बार फौजी की काँख में गुदगुदाया।

फौजी के दिमाग पर युवा स्त्री-देह की गंध ने पकड़ बनाई। वह सोना को भुजाओं में जकड़कर चूमने लगा।

ये बहुजन की जय भीम बोली

संतोखी की स्टे वैकेशन की दरखास्त पड़ गई। काउंटर एफिडेविट लग गया, लेकिन छत्रधारी के वकील ने रिज्वाइंडर दाखिल करने में एक साल लगा दिया। अब केस सुनवाई पर लगा है।

अगम बहै दरियाव

चान्स की बात है कि लंच से पहले पुकार हो जाए। एक तो ऐसा बहुत

कम होता है और हो गया तो रेस्पॉन्डेंट का वकील सुनवाई से भागता है। कभी उनका जूनियर आकर कहता है कि वकील साहब सुप्रीम कोर्ट गए हैं, कभी कहता है, लखनऊ पीठ गए हैं। कभी कहता है, आज तबीयत खराब है। तारीख आगे बढ़ जाती है। आगे न बढ़े तो बढ़वाना पड़ता है। उनके वकील कहते हैं कि मुकदमा पैरवी माँगता है। आओ, पैरवी करो। तारीख लगवाओ। दो बार उनकी फाइल कोर्ट तक पहुँची ही नहीं। वकील साहब ने कहा कि मिसप्लेस है। वे इसका मतलब ही नहीं समझ पाए।

धीरे-धीरे सब पता लग रहा है। जल्दी सुनवाई के लिए लिस्टिंग अप्लिकेशन देनी पड़ती है। सेक्शन से फाइल भिजवाने में खर्चा लगता है। अगर चाहते हैं कि पेशकार ही फाइल पर अगली तारीख लगा दे तो उसमें भी खर्चा होता है। कदम-कदम पर पैरवी, कदम-कदम पर खर्चा। हर जगह पैसे का ही खेल है। इसी में कभी वकीलों की हड़ताल हो जाती है। कभी शहर में कर्फ्यू लग जाता है। एक बार तो वकीलों की हड़ताल तीन महीने चली थी। यही सब होते-हवाते तीन साल गुजर चुके हैं।

कहने वाले तो यह भी कहते हैं कि यहाँ मुकदमे का फैसला कानून और केस के तथ्यों के आधार पर उतना नहीं होता जितना इस आधार पर कि मुकदमे में वकील कौन है और केस सुनवाई के लिए किस बेंच में लगा है। फेवरेबल कोर्ट में केस की लिस्टिंग कराने या मनमाफिक अर्ली डेट दिलाने के लिए यहाँ फिक्सर काम करते हैं। लेकिन इसका खर्च आम आदमी की औकात से बाहर होता है।

संतोखी हौसला और धीरज बनाए रखने की कोशिश करते हैं, लेकिन पुराने मुकदमेबाजों के अनुभव सुनकर कभी-कभी दिल बैठने लगता है। बताते हैं कि स्टे वैकेशन की सुनवाई ही दस-दस साल तक लटकती है। मेरिट पर सुनवाई कब पूरी होगी, इसे भगवान भी नहीं बता सकते। पचीस-छब्बीस साल पहले दाखिल मुकदमे अब सुनवाई पर आ रहे हैं।

इस बीच छत्रधारी द्वारा कमिश्नरी में दाखिल अपील भी जीत गए संतोखी, पर पहली बार ऐसा हुआ कि इस जीत से बस नाम मात्र की खुशी हुई। इतने दिनों की मुकदमेबाजी से वे जान गए हैं कि जब तक टाइटिल सूट

का फैसला 'स्टे' है, समरी प्रोसीडिंग की जीत का कोई मतलब नहीं है। छत्रधारी इस फैसले के खिलाफ हाई कोर्ट में रिट दायर करेंगे ही। टाइटिल सूट के स्टे के आधार पर उन्हें इसमें भी आसानी से स्टे मिल जाएगा। कैविएट लगाने का भी कोई फायदा नहीं है, सिवा पैसे की बर्बादी के। पैसा हाथ में है ही कहाँ? वे बेटे के सामने दुबारा हाथ नहीं फैलाना चाहते। उन्हें पता है कि बेटा उनकी मुकदमेबाजी से खुश नहीं रहता। ठीक भी है। वह अपने बाल-बच्चे पाले, पढ़ावे-लिखावे, यही बहुत है।

337

माघ मेले में हर साल दूर-दूर से श्रद्धालु संगम क्षेत्र में कल्पवास करने आते हैं। इस बार घर में ताला लगाकर संतोखी दोनों परानी भी आ गए हैं।

माठा बाबा के परिचय से एक बाबाजी के आश्रम में टेंट मिल गया है। बड़े सबेरे दोनों परानी गाँठ जोड़कर संगम में स्नान करते हैं। भंडारा जगह-जगह चल ही रहा है। किसी भंडारे में खा लेते हैं। घूम-घूम कर प्रवचन सुनते हैं। संतोखी बहू का मन तो हर जगह लग जाता है। संतोखी के मन को कहीं चैन नहीं मिलता।

संगम क्षेत्र के लेटे हुए हनुमान जी का बड़ा माहात्म्य है। उनका 'प्रसाद' देने के बहाने संतोखी बीच-बीच में जाकर वकील साहब की दर पर मत्था टेक आते हैं। वकील साहब प्रसाद तो बड़ी श्रद्धा से लेते हैं, लेकिन स्वागत का जो भाव उनके चेहरे पर पहले रहा करता था, वह धीरे-धीरे तिरोहित होता जा रहा है।

कल्पवास खत्म करके दोनों परानी गाँव लौटे तो संतोखी बहू ने पाया कि कोई उनके सारे उपले ही उठा ले गई। गोबर बीन-बीन कर उन्होंने उपले

पाथे थे। अन्दाजा तो है कि कौन ले गई लेकिन पकड़ा नहीं तो कहें कैसे? नई-नई ब्याहकर आई थीं तो इतनी तीखी गालियाँ देती थीं कि शरीर से चिपक जाती थीं और छुड़ाए नहीं छूटती थीं। उम्र के साथ उनका तीखापन घटा है, लेकिन व्यंजना बढ़ गई है। उसी सन्दिग्ध के घर की ओर मुँह करके सराप रही हैं- " ले गई अपना बेटा-बेटी भँजने के लिए। उसके 'उसमें' कितना अमाता है कि पूरा 'भिटहुर' भर लिया। अब मैं चूल्हे में क्या जलाऊँगी, उसके बेटा-बेटी का हाथ-गोड़?"

गृहस्थी के काम निपटाने के साथ उनका गरियाना-सरापना जारी है।

तूफानी ने देर रात लौटकर सबको बताया कि कल दोपहर से रात तक टोले में उत्सव मनाया जाएगा। डेढ़ मन का घेंटा * कटेगा और झिलमिट कम्पनी का नाच होगा। जो भी अपने किसी नाते-रिश्तेदार को भोज खाने के लिए न्योता भेजना चाहे, भेज सकता है।

* नर सूअर

अगम बहै दरियाव

दिलदार आदमी हैं तूफानी।

फुलेसरी दोनों बहनों ने आज टीड़ी सिंह की सरसों काटने के लिए हामी भरी थी। वे सबेरे-सबेरे दोनों को समय से खेत में पहुँचने के लिए ताकीद करने टोले में पहुँचे तो नीम के पेड़ में बँधा लाउडस्पीकर गा रहा था-

ये बहुजन की जयभीम बोली
ऐसी वैसी ये बोली नहीं है।
दुश्मनों की गरज और तड़प से
ये हाली या डोली नहीं है।

सुनकर टीड़ी सिंह भुनभुनाए- "रोज किसी-न-किसी बहाने ससुरों का गाजा-बाजा चलता रहता है।"

"फुलेसरा बिटिया!"

आवाज सुनकर छोटी बहन निकली और सपाट जवाब दिया-" आज काम पर नहीं जाना। त्योहार मनाएँगे।"

"आज कौन-सा त्योहार है? होली तो परसों है।"

"आपको कुछ पता है? हमारी बिरादरी की नेता को दुबारा मुख्यमंत्री की कुर्सी मिली है। उसी का जशन।"

"वाह-वा! यह तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन जशन तो दिन में होगा। अभी धूप होने के पहले चलकर दो-तीन घंटे काट लो। धूप में तो वैसे भी नहीं काट सकते। हँसिये का झटका खाकर आधी सरसों खेत में ही झड़ जाएगी।"

लेकिन बात पूरी होने के पहले ही लड़की अन्दर चली गई।

अब क्या करें? चार दिन पहले काम करने की हामी भरी और ऐन मौके पर इनकार। दो साल पहले मजदूरी चालीस रुपये रोज थी। अब साठ रुपये हो गई। सबेरे तीन घंटे काम करके तीस रुपये नकद लेकर चली आएँगी। धान साढ़े तीन रुपये किलो बिक रहा है। तीस रुपये में साढ़े आठ किलो से ज्यादा हुआ। दोपहर भर में। यह अन्धेर है कि नहीं? कौन दे पाएगा इतनी मजदूरी! बावजूद इसके जब चाहा, काम करने से इनकार कर दिया !

औरतें सबेरे से ही टोले के दोनों हैंडपम्प पर नहाने-धोने के लिए भीड़ लगाए हैं। चार-पाँच नौजवान जीवित घंटे के पैर बाँस में बाँधकर उलटा लटकाए आग में भून रहे हैं और सलाख लाल करके छेद रहे हैं। उसकी चीत्कार मील-भर दूर तक वातावरण में थरथरी पैदा कर रही है।

दोपहर होते-होते झिलमिट बाबा अपनी धज में आकर खड़े हुए।

मृदंग, कसावर और चिमटे से समाँ बँध गया। घुँघरू गुँथा रंगीन घाघरा पहन नर्तकी ने कमर लचकाना शुरू किया-

कैसन आया हैजमाना ,
अरे बाप रे बाप !
जोन्हारी होइगै साबूदाना
अरे बाप, अरे बाप!

सही बात। सही बात। साबूदाना के भाव जोन्हरी बिकने लगी, इससे ज्यादा महँगाई और क्या होगी?

तभी तूफानी लपकता आया और बाबा पर चढ़ बैठा- "हर मौके पर रोने-कलपने वाला गाना ही रहता है आपके पास। खुशी का मौका है। खुशी का गीत गाइए।"

खुशी का मौका ? आज किस खुशी का मौका है? उन्हें तो किसी ने बताया नहीं। जिन्दगी-भर गमी का गीत गाते रहे। वही कंठ पर चढ़ा हुआ है।

लेकिन तूफानी को आज इतनी फुरसत कहाँ कि बैठकर खुशी की खबर सुनाए। अभी तक शामियाना ही नहीं आया।

लड़कों ने झिलमिट को बताया कि कल अपनी बिरादरी की नेता फिर से

मुख्यमंत्री की कुरसी पर बैठी हैं। उसी का जश्न है। याद है, पिछली बार बनी थीं तो कैसे डीएम, एसपी, कलक्टर, कमिश्नर तक को पानी पिला दिया था। उन्हीं की महिमा का कुछ बखान करिए।

झिलमिट बाबा ऐसा कोई गीत याद करने लगे। यह सब बात पहले से पता होनी चाहिए। गीत-गौनई कोई जेब में पड़ा पैसा तो है नहीं कि निकालकर खर्च कर दिया।

लेकिन अँगूठाछाप हैं तो क्या हुआ, आशु कवि तो हैं। इतना हुनर तो आता ही है कि मौके के अनुसार गीत में जोड़-घटाव करके काम बना लें।

"बजाओ भाई, बजाओ।" नर्तकी ने फिर शुरू किया-

रानी जल्दी थमा यूपी कै सासनवा
परनवा सबकाई गाढ़े मा पारा

"थाम लिया भाई, कल ही थाम लिया।"

"मालूम है। अब तो सबको ठीक ही कर देंगी। जब नहीं थामा था तब क्या हो रहा था, वह सुनिए-

अगम बहै दरियाव

सारे रक्षक बने थे भक्षक,
थाने बेचन पुलिस अधीक्षक
जब से त्याग किए शासन कै,
डीएम हो गए अपने मन कै,
एसपी पब्लिक का पिटवाएन बिना करनवा ।
परनवा सब कै गाढ़े माँ पारा ।

क्या बात है! अब फिर सारे डीएम, एसपी को सही कर देंगी।"

"दारोगा और सिपाही को भी सही करें। यही तो ज्यादा आग मूतते हैं। एक

बार चौराहे पर मुझे बिना बात के ही एक डंडा मार दिया था।"

नदीपार पहाड़ी का जंगल पलाश के फूलों से लाल हो गया है। नदी की धारा पतली और पानी पारदर्शी हो गया है। नीम, महुआ और पीपल अपने पुराने पत्ते झाड़ चुके हैं। नीम फूल रहा है। महुआ कूच रहा है और आम के बौर की खुशबू पूरे इलाके में फैल रही है।

करिया सिंह के दुआर पर टीड़ी सिंह की मंडली फगुआ गा रही है। ढोल की तड़तड़ाहट और झाँझ की सैंयक-सैंयक माइक से कई गुनी होकर पूरे गाँव में विस्तारित हो रही है। आधा गाँव करिया सिंह के दुआर पर उमड़ आया है।

रहिया कै चलना जुलुम होइगा दइया
नारी निक देखी राह रोकें कन्हैया
डारें गलियवा मा डा$$का $$
अरे, डारें गलियावा मा डाका कन्हैया
डारें गलियवा मा डा$$का $$

टीड़ी सिंह की आवाज इस उम्र में भी चाँड़ है। पिछले पचास साल से होली पर फगुआ गाते आ रहे हैं। वसंत पंचमी से फगुआ गाना शुरू होता था और होली के दूसरे दिन तक गाया जाता था। ब्राह्मण, ठाकुर, कायस्थ और बनियों के दरवाजे पर घूम-घूम कर मंडली गाती थी। जिसके दरवाजे पर मंडली पहुँचती वह पान,

सुपारी, बीड़ी से स्वागत करता था। अब भी कुछ लोग अपने दरवाजे पर मंडली का स्वागत करते हैं।

करिया सिंह की बात और है। पूरे गाँव को पता है कि करिया सिंह के दुआर पर छोटे-बड़े हर आदमी का स्वागत होता है। आइए, गुझिया खाइए। भाँग का गोला खाइए या ठंडाई पीजिए। पान, सुपारी, बीड़ी जितनी बार चाहें! दोपहर में ही सबके स्वागत के लिए जाजिम बिछ जाता है।

इस मामले में वे अपने पिता की परम्परा को कायम रखे हैं। सच पूछिए तो असली ठाकुर करिया सिंह ही हैं। छत्रधारी सिंह तो भट्ठा खोलने के बाद पूरे बनिया हो गए।

अपने टोले के चार-पाँच नौजवानों के साथ तूफानी भी पहुँचा है। वे लोग जाजिम पर बैठने जा रहे थे, तब तक करिया सिंह की नजर पड़ गई।

"अरे, उधर कहाँ तूफानी? इधर आओ, कुर्सी पर बैठो। हमारे ग्राम प्रधान बुलाकर कहा-" इन लोगों को गुझिया खिलाओ, ।" फिर अपने छोटे बेटे को फिर ठंडाई, पान, सिकरेट।"

इतनी मस्त फगुए की धुन !

तूफानी दाएँ-बाएँ सिर हिलाकर डए इस धुन का आनन्द लेता है और कुर्ते की ऊपरी जेब में रखे टेपरेकॉर्डर का बटन दबा देता है। जज साहब को सुनाएगा।

वकालत की प्रैक्टिस तो उसकी ठीक-ठाक चल ही रही है, दलित राजनीति भी करता है। अब परधानी का काम भी उसके जिम्मे आ गया है। उसके पास तो मूतने तक की फुरसत नहीं है, फिर भी परधानी की कुर्सी निष्कंटक बनी रहे इसके लिए सारे गाँव से रिश्ता बनाकर रखना जरूरी है। ऐसा नहीं कि तूफानी इन लोगों के मन की बात नहीं बूझता। बखूबी बूझता है। सबको तो नहीं कह सकता, लेकिन इस टोले के ज्यादातर लोगों को उसकी माँ का प्रधान की कुरसी पर बैठना पच नहीं रहा है। शपथ लेते देर नहीं हुई कि शिकायतों का अम्बार लगा दिया। रोज घंटे-भर तो उसका जवाब लिखने में ही लग जाता है।

मान लो, हम लूट भी रहे हैं तो आप किस मुँह से शिकायत कर सकते हैं! आप तो सन् सैंतालीस से लूटते आए हैं। अब हमारी बारी है तो क्यों छरछरा रहा है? क्यों आँख फूट रही है? लेकिन यह कहने की बात थोड़े है। जो सामने मीठा बोल रहा है, उससे तो मीठा बनकर ही मिलना होगा। हो सकता है, अगली परधानी दलित पुरुष के कोटे में आ जाए। इस नजरिए से भी हर छोटे-बड़े से व्यवहार बनाकर रखना होगा।

वह हँसकर गुझिया खाता है और दो भुरका ठंडाई पीता है।

अगम बहै दरियाव

कौन नहीं पहुंचा इस दरवाजे पर ! पाँड़े आए, तिवारी आए, भूसी आए, खेलावन आए। सभी आए। सिर्फ विद्रोही का परिवार नहीं आता इन दोनों भाइयों के दरवाजे पर, जब से परधानी में धोखा खाया।

कलिकाऽऽल! कलिकाऽऽल! कलिकाऽऽल!

अनोखा ढंग है फगुआ उठाने का। टीड़ी सिंह पर भाँग का असर हो गया है।

अरे, कलिकाल कठिन दुख डाऽराऽ
भलमनई कै नाही ना गुजारा
चमइनी के माऽराऽ
चमइनी के मा-आ-आ-राऽ

ऐं! यह क्या गाने लगे? यह तो गाली देना पास पहुँच गया। हुआ। तूफानी उठकर मंडली के

" आप लोग फगुआ गा रहे हैं कि गाली दे रहे हैं?"

गाना-बजाना रुक गया।

"इसमें गाली क्या है?"

"बिलकुल गाली है। हमारी जाति को गाली। हमारी औरतों को गाली। हमारी बिरादरी की मुख्यमंत्री को गाली। बाजा बजाकर गाली दे रहे हैं आप लोग।"

टीड़ी सिंह कहते हैं- "यह फगुआ तो हम पचास साल से गा रहे हैं।"
"पचास साल पहले हम पैदा नहीं हुए थे तो गाते रहे होंगे। हमारे सामने नहीं गा सकते। अपने दरवाजे पर बुलाकर गाली देंगे?"

"अबे, भाग भोसड़ी के," करिया सिंह का बड़ा बेटा दुर्गेश आकर तूफानी से भिड़ गया -"किसने बुलाया तुझे। भाग मेरे दरवाजे से।"

धरा-धरी हो गई। लोग बीच-बचाव करने लगे। करिया सिंह ने दुर्गेश को खींचकर अलग किया और तूफानी से बोले- "तुम बैठो तूफानी, गलत काम मेरे दरवाजे पर कैसे होगा?"

पर तूफानी रुका नहीं। पैर पटकता साथियों के साथ चल पड़ा।

करिया सिंह मंडली के पास जाते हैं-" का बाबू टीड़ी सिंह, जुग-जमाना ऐसा चल रहा है कि अगर वे मुँह पर गाली दे रहे हों तब भी नजर बचाकर हट जाने में भलाई है और आप हैं कि..."

उनको दुर्गेश के खून की इतनी गरमी पसन्द नहीं। लगता है, इस पर छत्रधारी सिंह की छाया पड़ गई है।

तूफानी टीड़ी सिंह को पहचानता है। जब उसने मोटरसाइकिल खरीदी तो यही टीड़ी सिंह कहते थे-" लगता है, तुफनिया की मोटरसाइकिल सड़क पर नहीं, मेरी छाती को रौंदते हुए दौड़ती है।... मैं इनको सबक सिखाकर रहूँगा।"

तूफानी काला कोट पहनकर तीन मोटरसाइकिलों पर गाँव के अन्य पाँच युवकों के साथ थाने पहुँचा है। आठ लोगों के खिलाफ तहरीर देकर हरिजन उत्पीड़न की दफा लगाकर रिपोर्ट लिखने और गिरफ्तारी करने की माँग पर अड़ा हुआ है।

थाना इंचार्ज समझा रहे हैं कि इसमें हरिजन उत्पीड़न की दफा कैसे लगेगी? न मारपीट हुई, न कोई रेप हुआ। गाली-गलौज तक तो हुई नहीं।

"अरे, क्या कहते हैं! चमाइन कहना, जातिसूचक शब्द से अपमानित करना नहीं है? यह हमारी जाति का, हमारी औरतों का, हमारी नेता का अपमान है। हमारी बिरादरी का मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठना इन लोगों को पचा नहीं तो फगुआ की आड़ में सौ लोगों के सामने खुल्लमखुल्ला अपमान किया! यह नान बेलेबल अफेंस है।"

"कोई गवाही है?"

"जितने कहिएगा, हाजिर कर दूँगा। पाँच लोग तो साथ ही आए हैं। गवाह ही नहीं, सबूत भी दूँगा। डाकूमेंटरी प्रूफ। नानी याद दिला दूँगा।... मुझे कचेहरी भी जाना है। एफ.आई.आर. की कॉपी दिलवाइए।"

बड़ी मुश्किल से थानाध्यक्ष ने तूफानी को इस बात पर सहमत किया कि कचहरी निपटाकर शाम को लौटो तो इधर से कॉपी लेते जाना। तब तक दर्ज हो जाएगी।

तूफानी के जाते ही थानाध्यक्ष ने छत्रधारी के पास खबर भिजवाई कि आपके गाँव के वकील तूफानी सिंह अम्बेडकर ने आठ लोगों के खिलाफ

दलित अत्याचार निवारण अधिनियम में मुकदमा दर्ज करने के लिए तहरीर दी है। सँभाल सकें तो सँभाल लीजिए, नहीं तो मुश्किल होगी।

छत्रधारी सिंह ने सन्देशवाहक से पूछा कि तहरीर में उनके भाई करिया सिंह या भतीजे का नाम है कि नहीं? यह जानकर उन्हें निराशा हुई कि उन दोनों का नाम नहीं है। लेकिन प्रगट में बोले- "यह सब चमार पासी को खोपड़ी पर चढ़ाने का नतीजा है। इंचार्ज साहब से कहना जो समझ में आए करें। हमें बीच में नहीं पड़ना।"

लेकिन टोले में खबर पहुँच गई और सारे आरोपित सोर्स-सिफारिश लेकर शाम तक थाने पहुँच गए।

उस शाम तो क्या, अगले दो दिन तक रिपोर्ट नहीं लिखी गई। तूफानी बीसों वकील और उत्तने ही सफेद कुर्ता-पायजामा वाले युवकों को लेकर पुलिस अधीक्षक के आवास पर पहुँचा।

"हमारी ही सरकार है और हमारी ही रिपोर्ट नहीं लिखी! इतनी अन्धेर?"

"जो भी न्यायोचित कार्यवाही होगी, की जाएगी।"

"आप कुछ नहीं करेंगे। कुछ कर ही नहीं सकते। जब उसने नीलामी में थाना खरीद रखा है तो वह आप से क्यों डरेगा? थाना बेचना बन्द करिए या बोरिया-बिस्तर बाँधकर 'कोल्ड स्टोरेज' में जाने के लिए तैयार हो जाइए। बताइए भला, सिटिंग मुख्यमंत्री की बेइज्जती की गई और आप कह रहे हैं कि देखेंगे। अभी तुरन्त एफ. आई. आर. नहीं लिखी गई और गिरफ्तारी नहीं की गई तो हमारा प्रतिनिधिमंडल रिजर्व टैक्सी लेकर मुख्यमंत्री से मिलने के लिए निकल पड़ेगा।"

इस मुख्यमंत्री का जलजला पिछले टेन्योर में ही सारी ब्यूरोक्रेसी देख चुकी है। एस.पी. साहब की स्पष्ट धारणा है कि औरतों के हाथ में पावर आती है

तो वे पुरुषों से कई गुना ज्यादा मुँहफट और जालिम हो जाती हैं।

एफ.आई.आर. लिखने का आदेश देना पड़ा।

उसके बाद का घटनाक्रम तेजी से घटित हुआ। तीन दिन में आठों आरोपितों को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। लोवर कोर्ट और सेशन कोर्ट से तो जमानत खारिज ही होनी थी। हाई कोर्ट में जमानत अर्जी लगाने पर दस दिन बाद की सुनवाई की तारीख मिलेगी और जमानत मंजूर होने के बाद दो दिन रिहाई आदेश बनने में लग जाएगा। यानी कदम-कदम पर मदद करने वाले खड़े हैं, फिर भी अठारह-बीस दिन जेल की रोटी खानी ही खानी है। तूफानी ने तूफान खड़ा कर दिया।

जेल के कैदी चाहते हैं कि जिस फगुआ के गाने के चलते उन लोगों को जेल आना पड़ा, उसे यहाँ भी सुना जाए। पर टीड़ी सिंह इसके लिए कोटि जतन तैयार नहीं हो रहे हैं। एक बार गाए तो तुफनिया ने यहाँ तक भिजवा दिया। दुबारा गाएँ तो पता नहीं कहाँ पहुँचा दे। सुनते हैं, तूफानी ने उनकी आवाज को मशीन में कैद कर लिया है। कितने खतरनाक हो गए ये ससुरे !

345

पाँड़े का ट्रैक्टर पलट गया। आज ट्रैक्टर लेकर दिवाकर निकले थे। दुर्गा यादव के खेत से छह इंच मिट्टी खोदने का काम मिला था। यह मिट्टी बाजार में बिक भी जाती है। दोनों तरफ से पैसा मिल जाता है। गन्ने की गोड़ाई भी करनी थी। दिवाकर का मन खेती के काम में कम लगता है, इसलिए पाँड़े ने कहा कि तुम ट्रैक्टर लेकर चले जाओ। प्रभाकर मेरे साथ गन्ने की गोड़ाई करा लेंगे।

नहर की पटरी से नीचे उतरते समय ढाल पर ब्रेक लगी तो ट्राली लहराकर दाहिनी तरफ पलट गई। सजीवन के दोनों लड़के राधे और बबलू ट्राली पर मिट्टी के ऊपर बैठे थे। ट्राली लहराई तो राधे बाईं ओर कूदा और बबलू दाईं। बबलू के कूदते ही उसके ऊपर ट्राली पलट गई। नहर की पटरी पर

घास छीलती औरतें चिल्लाई तो खेतों में काम कर रहे लोग दौड़े।

बबलू के एक हाथ का पंजा मिट्टी के ढेर के बाहर निकला छटपटा रहा था। दिवाकर का दाहिना पैर ट्रैक्टर के नीचे दबा था। दोनों को निकाला गया। बबलू बेहोश हो गया था। पाँड़े और प्रभाकर भी दौड़कर पहुँचे।

सड़क से गुजरती एक जीप को रोका गया। सजीवन और प्रभाकर के साथ पाँड़े दोनों घायलों को लेकर अस्पताल भागे। दिवाकर की बहू को बहुत देर से खबर मिली। उसे लगा कि दिवाकर अब इस दुनिया में नहीं हैं और उससे यह बात छिपाई जा रही है। वह पागलों की तरह बाल छितराए रोते-चिल्लाते सड़क की ओर भागी। सास-जेठानी उसे रोकने के लिए उसके पीछे-पीछे दौड़ीं।

दोनों घायलों को बेड मिल गया। मरहम-पट्टी हो गई। बबलू होश में आ गया है, लेकिन बोल नहीं पा रहा है। दिवाकर के पैर में कितना फ्रैक्चर है, यह सबेरे एक्सरे के बाद पता चलेगा।

अस्पताल में भाग-दौड़ करते पाँड़े एक ही चिन्ता में डूबे जा रहे हैं कि दिवाकर के पास ड्राइविंग लाइसेंस नहीं है। केस चला तो सजा हो सकती है। वे पुलिस या फौज में भर्ती होने के लिए हाथ-पैर मार रहे हैं। उनका सपना चूर हो जाएगा। फ्रैक्चर ज्यादा हुआ, पैर में भचक रह गई तब तो पुलिस-फौज में भर्ती की उम्मीद ही खतम। जिन्दगी बेकार हो जाएगी।

ट्रैक्टर का इन्श्योरेंस भी नहीं है। क्लेम अपनी जेब से देना पड़ जाएगा।

अगम बहै दरियाव

घोना ने सात माह के बेटे की फोटो फौजी के पास भेजी थी।

फोटो देखकर फौजी को लगता कि इस बच्चे की शक्ल हूबहू बुल्लू से मिलती है। छुट्टी पर आने के बाद जब भी बेटे को गोद में लेता है, उसका चेहरा गौर से देखता है।

सोना की ससुराल का एक लड़का बुल्लू के साथ ही बी.ए. कर रहा है। एक दिन उसी ने बुल्लू से कहा- "तुम्हें सोना भाभी ने बुलाया है।"

"सोना ने बुलाया है?"

"नहीं उसके आदमी-फौजी ने। कहा कि बुल्लू से कहना कि तुमको सोना ने मिलने के लिए बुलाया है।"

वैसे तो वह सोना के घर के सामने से होकर ही रोज कॉलेज जाता है। कॉलेज जाते समय सड़क के किनारे बाईं पटरी पर सोना का घर है। कभी-कभी सोना की अन्धी सास बरामदे में चारपाई पर बैठी दिख जाती है। उसकी नजर रोज ही उधर जाती है कि शायद कभी सोना दिख जाए - बरामदे में, ऊपर दालान की छत पर या बगल के कुएँ से पानी भरते हुए लेकिन कभी दिखी नहीं।

मिलने के लिए बुलाया है, वह भी तब जब उसका आदमी घर आया हुआ है और सन्देश भी उसका आदमी भेज रहा है! सोना से उसकी आखिरी मुलाकात कॉलेज में उसी समय हुई थी जब उसने अपना विवाह तय होने की खबर दी थी। तब से न कोई भेंट, न सन्देश। सोना के विवाह में भी सिर्फ फौजी से भेंट हुई थी। शायद सन्देश लाने वाले लड़के ने मजाक किया हो। वापसी में वह दूर से ही सोना के घर पर नजर गड़ाए हुए गुजरा, लेकिन कोई दिखा नहीं। उसने रुकना या आवाज लगाना ठीक नहीं समझा।

अगले दिन लड़के ने फिर कहा- "तुम आए नहीं। आज फिर बुलाया है।" आखिर फौजी मुझे क्यों बुला रहा है? आज रुककर पूछ ही लेता हूँ।

बुल्लू के गाँव का लड़का मोतीलाल भी उसी कॉलेज से एम.ए. कर रहा है। अक्सर दोनों साथ-साथ आते-जाते हैं।

सोना के घर के सामने पहुँचकर बुल्लू ने साइकिल धीमी की और मोतीलाल से कहा- "जरा रुकना।" फिर दस-पन्द्रह कदम आगे पहुँचकर

एक पैर जमीन पर रखकर दोनों खड़े हो गए। सोना के घर के बाहर नीम के पेड़ के नीचे दो प्लास्टिक की कुर्सियाँ पड़ी थीं। बरामदे में सोना की बूढ़ी अन्धी सास चारपाई पर बैठी थी। घर के किवाड़ बन्द थे।

मोतीलाल ने पूछा- "क्या बात है?"

बुल्लू कुछ बोला नहीं। सोना के घर की ओर देखते हुए वह सोच रहा था कि मुड़कर सोना के दरवाजे पर चले या आगे बढ़ जाए, तभी सोना के घर का दरवाजा खुला और आगे-आगे सोना का फौजी पति और उसके पीछे एक अन्य नौजवान बाहर आया। फौजी आगे बढ़ते हुए हाथ के इशारे से बुल्लू को बुलाने लगा-"आओ, आओ।"

इशारे के साथ-साथ दोनों की चाल तेज हो गई। तभी बुल्लू की नजर छत पर गई। वहाँ खड़ी सोना हाथ के तेज इशारे से भाग जाने का संकेत कर रही थी।

बुल्लू को खतरे का आभास हुआ। उसने साइकिल बढ़ा दी। साथ का लड़का भी भागा। फौजी और उसका साथी ललकारते हुए दौड़े।

बुल्लू ने तुरन्त स्पीड बढ़ाने के लिए बाएँ पैर का सारा भार जैसे ही पैडिल पर डाला, कट की आवाज के साथ चेन उतर गई। पकड़ से बचने के लिए बुल्लू साइकिल फेंककर खेतों की ओर भागा। खेतों में धान की फसल खड़ी थी। दोपहर में शायद बरसात हुई थी। बुल्लू की चप्पलें कीचड़ में धँस गईं। बुल्लू जान छोड़कर भाग रहा था कि सामने नाला आ गया। दस ग्यारह फीट चौड़े पानी भरे नाले को बुल्लू ने एक छलाँग में पार किया। दूसरे किनारे के कीचड़ में गिरा और फिर उठकर भागा। सामने दो-तीन चरवाहे उसका भागना और दो लोगों द्वारा पीछा किया जाना देख रहे थे।

फौजी चिल्ला रहा था- "चोर-चोर। पकड़ो-पकड़ो।"

चरवाहे उसे घेरने के लिए दौड़े। बुल्लू ने कावा काटकर रास्ता बदला, तब तक पीछे से कूदकर फौजी उसके ऊपर सवार हुआ और पैर में लंगी मार दी। दोनों दो-तीन पलटा खाए। तब तक फौजी का साथी भी पहुँच गया। दोनों ने मिलकर बुल्लू को दो-तीन बार पटका, ठेहुने से पेट में हुमचा, मुँह पर कई घूँसे मारे। बुल्लू पस्त हो गया तो दोनों उसे खींचते हुए लेकर चले।

"बहुत इशकबाज बनते हो भोसड़ी के। अभी तुम्हारी सारी इशकबाजी तुम्हारी गाँड़ में घुसेड़ता हूँ।"

"क्या कहते हो, भइया? मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।" बुल्लू मुँह से खून थूकते हुए गिड़गिड़ाया।

दरवाजे पर बैठी फौजी की बूढ़ी अन्धी माँ बार-बार पूछ रही थी- "कौन रो रहा है? किसको मार रहे हैं?"

फौजी ने डाँटा-" चुप कर।"

दोनों ने बुल्लू को दरवाजे से अन्दर खींचा और भीतर से कुंडी लगा ली। दूर खड़ा देख रहा बुल्लू का सहपाठी भाग चला। आसपास कई लोग इकट्ठा हो गए,

लेकिन किसी ने दरवाजा खटखटाने की हिम्मत नहीं की।

आँगन में लाकर फौजी ने पैंट की जेब से चाकू निकाला। खटका दबाया तो उसका लम्बा फाल बाहर आ गया। चाकू देखकर बुल्लू की आँखें फटी की फटी रह गई। मुड़कर उसने पीछे से जकड़ने की कोशिश कर रहे फौजी के साथी के पेट में जोर की लात मारी। साथी पीठ के बल दूर जा गिरा। बुल्लू वापस मुड़ा और फौजी की चाकू वाली कलाई को बाएँ हाथ

से ऊपर उठाकर दाहिने हाथ से उसकी नाक और चेहरे पर घूंसे बरसाने लगा। फौजी की नाक से खून बहने लगा। वह दर्द से तड़प उठा। तब तक फौजी के साथी ने बुल्लू को पीछे से जकड़कर खींचा तो फौजी की कलाई पर बुल्लू की पकड़ ढीली पड़ गई। फौजी हाथ छुड़ाकर लपका, लेकिन बुल्लू की लात की सधी चोट खाकर पीछे जा गिरा। खम्भे से टकराने से उसका सिर फट गया। इधर फौजी के साथी ने बुल्लू को झटका देकर पीछे गिरा लिया। नीचे साथी, ऊपर बुल्लू। दोनों चित। फौजी क्रोध में अन्धा होकर चाकू लहराते हुए दौड़ा। बुल्लू ने साथी की कलाई पर किचकिचाकर दाँत काटा और खुद को उसकी पकड़ से मुक्त कर लिया। लेकिन इसके पहले कि वह ठीक से खड़ा हो पाता, फौजी के हाथ का चाकू उसके पेट में घुस चुका था। बुल्लू के मुँह से घुटी-घुटी चीख निकली और उसने फौजी के चाकू वाले हाथ को पकड़ना चाहा। फौजी ने उसे पीछे ढकेल दिया और उतान गिरे बुल्लू के पैरों पर बैठते हुए साथी को ललकारा - "बहादुर, खींच इसके दोनों हाथ पीछे। साला गामा पहलवान बन रहा है।"

बहादुर ने बुल्लू के दोनों हाथ पीछे खींचे। फौजी ने दाँत किटकिटाते हुए फिर चाकू भोंका और बाएँ से दाएँ खींचकर पूरा पेट फाड़ दिया। बुल्लू के गले से एक करुण चीख निकली। सीढ़ियों के रास्ते छत से उतरती सोना चिल्लाई-" सुनीता के बाबू, यह क्या कर डाला?" वह फौजी और बुल्लू के बीच में समा जाने के लिए लपकी।

फौजी गरजा - " भाग साली, हट पीछे। खबरदार जो आगे बढ़ी। इसी के साथ तुझे भी जिबह कर दूँगा।"

उसने खून सना चाकू सोना की ओर लहराया। छटपटाते बुल्लू और फैलते खून को देखकर सोना की आँखें विस्फारित हो गईं। उसे चक्कर आ गया। वह सिर थामकर बैठ गई।

बुल्लू ने दोबारा उठने की कोशिश की, लेकिन ढह गया। पेट पर दबाव पड़ने से गुलाबी अँतड़ियों का संजाल बाहर निकल आया। बुल्लू खून के कीचड़ में पड़ा एड़ियाँ रगड़ता रहा। खून की एक पतली धारा ढलान पर

बहती हुई जाकर नाबदान के कीचड़ से मिल गई।

349

सोना का बेटा जग गया और चारपाई पर बैठकर आँख मींज-मींज कर रोने लगा।

धीरे-धीरे फौजी पर घबराहट तारी होने लगी... यह क्या हो गया... वह तो सिर्फ डराना चाहता था... चाहता था कि बुल्लू इस राह से आना-जाना बन्द कर दे। अब?

बूढ़ी अभी भी बाहर बैठी जानना चाहती थी कि कौन रो रहा था? कौन मार रहा था?

बुल्लू की कराह मन्द पड़ने लगी। बड़बड़ाहट शुरू हो गई। फौजी और बहादुर बाहर आ गए। किवाड़ की साँकल बाहर से चढ़ाकर दोनों ने हैंडपम्प पर हाथ-पैर में लगा खून धोया और साइकिल पर बैठकर निकल गए।

सचेत होते ही सोना बुल्लू के पास आ गई। बुल्लू की आँखों की पुतलियाँ गतिमान थीं। वह कुछ बुदबुदा रहा था। सोना को लगा, पानी माँग रहा है। वह गिलास में पानी लाई। सिरहाने पालथी मारकर बैठी और बुल्लू का सिर अपनी गोद में रखकर गिलास उसके मुँह से लगा दिया, पर केवल होंठ खुले। दाँती लग गई थी। उसने अपने आँचल से मुँह में लगे खून, थूक और गाज को साफ किया। उँगली से ऊपर-नीचे के दाँतों के बीच थोड़ी जगह बनाई और पानी पिलाने की कोशिश करने लगी। बुल्लू की हिलती पुतलियाँ स्थिर हुईं और आँखें कुछ ज्यादा खुल गईं।

"मेरी कोई गलती नहीं है। मैंने कुछ नहीं कहा।"

पुतलियाँ सोना के चेहरे पर स्थिर हुईं। फिर हिलीं- मानो कह रही हों- जानता हूँ।

"मैंने कोई सन्देश नहीं भेजा।"

सोना को लगा, बुल्लू सब सुन और समझ रहे हैं।

उसने झुककर बुल्लू के होंठों को चूमा। एक बार, दो बार, तीन बार। बुल्लू की पलकें बन्द होने लगीं। उसका मन विगत में विचरने लगा। मामी के घर, नदी के किनारे, कॉलेज में, खेल का मैदान, झुरमुट में सोना के पैर में पायल पहनाने की कोशिश... फिर बचपन में पीछे... और पीछे...

फौजी के जाने के बाद वहाँ जुटे लोग दरवाजे तक आ गए। क्या हुआ उस लड़के का जिसे पीटते हुए दोनों घर के अन्दर ले गए थे? किवाड़ की झिरी से झाँकने पर कुछ पता नहीं चला तो एक औरत ने साँकल उतारकर किवाड़ चौपट खोल दिए। भीड़ ने देखा कि बुल्लू का सिर सोना की गोद में है। सोना का बेटा रोये जा रहा है। सोना भी बुल्लू के चेहरे पर हाथ फिराते हुए रो रही है। भीड़ को समझते देर न लगी कि माजरा क्या है !

फौजी अपने साथी के साथ वापस लौटकर घर में घुसा। किवाड़ की कुंडी अन्दर से बन्द की और आँगन में आ गया। लोगों ने फिर किवाड़ की झिरी में आँख लगाई। उन्हें एक और चीख उभरने का इन्तजार था।

अगम बहै दरियाव

अब तक सोना ने बुल्लू का सिर अपनी गोद से उतारकर नीचे रख दिया था और बगल में बैठकर अपने बच्चे को आँचल से ढककर दूध पिलाने लगी थी। वह किसी से आँख मिलाने को तैयार नहीं थी।

फौजी उसके ऐन सामने आकर खड़ा हुआ और समझाने के स्वर में बोला-"देख, जो होना था वह हो गया। अच्छा तो नहीं हुआ। तुझे भी अच्छा नहीं लगा, जानता हूँ। लेकिन अब आगे का सोचना होगा। तभी जान बचेगी, मेरी भी तेरी भी। इसलिए मैं थाने जाते-जाते लौट आया कि पहले तुझे समझा दूँ। तुझे पुलिस के सामने यही बयान देना होगा कि इस आदमी की मुझ पर बुरी नजर थी। बहुत पहले से। मेरे मायके से ही। सोचा था कि अब मेरा ब्याह हो गया है तो इससे पिंड छूट जाएगा, लेकिन

आज मैं आँगन में बैठी अपने बेटे को दूध पिलाते हुए सब्जी काट रही थी कि यह धड़धड़ाते हुए अन्दर घुस आया। मेरे बेटे को छीनकर बगल की चारपाई पर फेंका और मुझे घसीटकर कोठरी में ले जाने लगा तो मैंने अपनी इज्जत बचाने के लिए हाथ का चाकू उसके पेट में भोंक दिया। फिर भी नहीं छोड़ा तो फिर भोंका।"

"मैंने भोंका! क्या कह रहे हो? उसकी मुझ पर कभी बुरी नजर नहीं थी। आप पर शंका का भूत सवार है जो बेगुनाह की जान ले ली।"

"वह सब छोड़ो। जेल जाने से बचने के लिए यही कहानी काम आएगी वरना जेल में औरतों की क्या गत बनाते हैं, मालूम है? एक उतरा नहीं कि दूसरा चढ़ जाता है।"

"मैं क्यों जेल जाऊँगी?"

"तो मैं जाऊँगा। दिन-दहाड़े का मर्डर है। किसी-न-किसी को तो जाना ही पड़ेगा।"

सोना चुप हो गई। फौजी भी थोड़ी देर खड़ा सोचता रहा फिर बुल्लू के पास तक चला आया। बुल्लू का मुँह खुल गया था। उसके मुँह पर और बाहर निकल आई अँतड़ियों पर मक्खियाँ भिनक रही थीं। आँगन में शाम उतरने लगी थी। फौजी वापस मुड़कर बोला- "अच्छा, जाने दे। जो मैंने किया, उसे अपने सिर लेता हूँ। तुझे बस यह कहना होगा कि मैं आँगन में बैठी सब्जी काट रही थी, तभी यह बुरी नीयत से घर में घुसा और मुझे पकड़ लिया। मैं घबराकर चिल्लाई तो शोर सुनकर मेरा आदमी दौड़कर अन्दर आया और मुझे उसकी पकड़ से छुड़ाने के लिए उससे भिड़ गया। काबू नहीं कर पा रहा था तो अपने बचाव के लिए थाली में रखा चाकू उठाकर उस पर चला दिया। इसमें तो तुझे कोई दिक्कत नहीं है?"

"लेकिन आपने ऐसा किया क्यों? एक बेगुनाह की जान ले ली। अब मुझसे झूठ बुलवाओगे।"

"आज पहली बार झूठ बोलेगी क्या?" फौजी दहाड़ा- "मुझसे तूने कम झूठ बोला है? ज्यादा सती-सावित्री बनने की कोशिश की तो अभी इसी वक्त तुझे भी गोदकर इसी के बगल में सुला दूँगा।"

बहादुर फौजी को शान्त करने लगा। वह समझ गया कि इस झमेले में उसका भी फँसना तय है। फौज में भर्ती कराने का जो सपना फौजी ने दिखाया था, वह सपना ही रह जाएगा।

फौजी धीरे-धीरे आगे बढ़ा। खून में सना चाकू बुल्लू के पैरों के पास पड़ा था। फौजी ने उसे उठाकर अपने पैंट की जेब में डाला फिर लपककर रसोई में घुसा। प्याज की टोकरी में रखा चाकू लेकर बाहर आया। चाकू के फाल को बहते हुए खून में उलट-पलटकर साना और बुल्लू के बगल में फेंक दिया। थोड़ी देर कुछ सोचता रहा फिर शान्त आवाज में बोला- "चल, यह सारा झूठ मैं अपने जिम्मे लेता हूँ। तेरे बोलने की नौबत नहीं आएगी। बस, तू इसी दम गूँगी बन जा। इतना खून-खराबा देखकर तेरे अन्दर दहशत समा गई। तुझे इतना सदमा लगा कि तेरी बोलती ही बन्द हो गई। तेरे मुँह से वाक् ही नहीं फूट रहा है। आगे मैं देख लूँगा, ठीक! अब तू जल्दी से अपनी साड़ी बदल ले। हाथ-पैर में लगा खून धो डाल और दोनों बच्चों को लेकर बहादुर के साथ मायके निकल जा। समय बिलकुल नहीं है। और वहाँ भी ध्यान रखना कि तू गूँगी हो गई है, हमेशा के लिए...

...बहादुर भाई, तुम इसे लेकर फौरन निकल लो।" सोना के निकलते ही पुलिस आ गई।

बुल्लू की हत्या की खबर सुनते ही विद्रोही बहू चीखते हुए दौड़ीं।

"अरे या मोरे भइया... कौनी कोठरिया लुकान्या मोरे पुतऊ..."

दस कदम पर ही लड़खड़ाकर गिरीं और बेहोश हो गईं। तब से अब तक अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो पाईं। किसी के सहारे उठती-बैठती हैं। सिसकते-सिसकते अचानक जोर से रोने लगती हैं। वातावरण गमगीन हो जाता है।

एक पंक्ति में बैठकर तिलांजलि देने के बाद परिवार और खानदान की सारी

औरतें समूह में सिर से सिर जोड़कर मृतक के गुण, रूप और स्वभाव को याद करते हुए विलाप करती हैं।

उस दिन कॉलेज जाते समय बुल्लू ने उनसे किसी काम के लिए दस रुपये बाँगे थे। संयोग से उनका हाथ खाली था। बोलीं- "कमाकर दिए हो क्या? जाओ अपने बाप से माँगो।"

बुल्लू की उसी समय की छवि उनकी आँखों में बसी है। और इसी बात को याद कर-करके उनकी रुलाई फूट निकलती है। उनकी बड़ी साध थी, गया-जगन्नाथ जी दर्शन करने जाने की, पर जानती थीं कि विद्रोही जी का तीरथ व्रत में विश्वास नहीं है। वे लेकर नहीं जाएँगे। बुल्लू कहते थे- "मैं पढ़-लिखकर कमाने लगें तो खुद साथ चलकर आपको सारे तीरथ करा लाऊँगा।"

वही बात अब रुदन में फूट पड़ती है-

तू त कह्या दुखवा घटाउब दुखवा बढ़ाइ भाग्या पुतऊ कह्या जगन्नाथ जी पठाउब बहियाँ छोड़ाइ भाग्या पुतऊ

रुपये न पाकर निराश मन कॉलेज जाने और बाँह छुड़ाकर भागने का बिम्ब बुल्लू की माँ के कलेजे को बार-बार मथता है और उनकी हिचकियाँ बँध

जाती हैं।

"तुम मँझधार में छोड़कर चले गए, बाबू। हम रोते-रोते आँधर हो जाएँगे।"

मृत्यु के दसवें दिन सारे नाते-रिश्तेदार और परिवार के पुरुष, शोक प्रगट करने के लिए पंक्तिबद्ध होकर मुंडन करा रहे हैं। सिर, मूँछ, दाढ़ी और बूढ़े लोगों के भौंह के बाल तक। शोक के मूर्तिमान रूप। पहलवान और विद्रोही की लम्बी-लम्बी मूँछों के कटने के बाद वीरान हुआ चेहरा और भावशून्य आँखें शोक की दुखान्तिकी रच रही हैं। यह दृश्य देखकर बुल्लू की माँ का विलाप फिर शुरू हो जाता है-"क्या सुख मिला मेरे बेटे को? रामफल की बेटी मेरे बेटे को खा गई।"

"ऐसा मत कहो माँ। उस बेचारी का क्या दोख?"

ट्रैक्टर के केस में पाँड़े को राहत मिल गई। पैसा तो पुलिस ने अच्छा निचोड़ा लेकिन सजीवन को अर्दब * में लेकर समझौता भी करा दिया। पुलिस के अलावा वह ससुरा किसी और के काबू में आ ही नहीं सकता था। बार-बार एक ही रट कि एक लाख से कम नहीं लेंगे। टाँग टूटी है बेटे की। आप अपने बेटे की टाँग तुड़वा लीजिए। एक लाख देने को मैं तैयार हूँ।

कुछ भी हो, अभी भी पुलिस बड़मनई का साथ देती है। बबलू से लिखवा लिया कि वह केस नहीं लड़ना चाहता। ट्राली से कूदने के कारण वह घायल हुआ। इसमें उसकी ही गलती है। उसे ट्रैक्टर मालिक से कोई शिकायत नहीं है। ट्रैक्टर मालिक उसके इलाज व दवा का खर्च दे रहे हैं और आगे भी देंगे।

केस चलता तो कुछ भी हो सकता था। सजा भी हो सकती थी। सरकारी नौकरी का सपना, सपना ही रह जाता। खुशी की बात है कि दिवाकर साफ बच गए।

लेकिन यह खुशी थोड़े दिन ही रही। खर्च हुए रुपयों का दर्द इस खुशी पर हावी हो गया। चालीस हजार गल गए। ट्रैक्टर की मरम्मत और दवा का खर्च अलग। ट्रैक्टर महीने-भर थाने में खड़ा रह गया। छूटा भी तो उसकी बैटरी बदली हुई थी। धक्का मारकर स्टार्ट करना पड़ा।

समझौते के लिए बाजार के संतलाल बनिया से चालीस फीसदी सालाना ब्याज पर कर्ज लेना पड़ा।

दिवाकर अभी कुछ दिन ट्रैक्टर नहीं चला पाएँगे। प्रभाकर को खेती के काम से ही फुरसत मिलना मुश्किल है। इसलिए ट्रैक्टर चलाने के लिए किसी ड्राइवर का इन्तजाम करना पड़ेगा। सबसे ज्यादा परेशानी की बात यह है कि जून में देय किस्त का भुगतान रुक गया।

बुल्लू की हत्या ने विद्रोही जी को अन्दर से तोड़ दिया है। उसकी सूरत रह-रहकर आँखों के आगे कौंध जाती है। किसी काम में मन नहीं लगता। जहाँ बैठ जाते हैं, बैठे ही रह जाते हैं।

विद्रोही जी ने सोच रखा था कि खेती-बारी का काम पहलवान सँभाल ही लिए हैं, वे बुल्लू को पढ़ा-लिखाकर अफसर बनाएँगे। जिस दिन बुल्लू चार चक्के की

* दबाव

ताड़ी पर चढ़कर दुआर पर आएँगे, उनकी आत्मा जुड़ा जाएगी। लेकिन

विधाता को मंजूर नहीं था।

ऐसे में एक दिन आठ-दस लोग उनके दुआर पर आए। बताया कि गन्ने का चकाया भुगतान करने के लिए मिल मालिकों पर दबाव बनाने के उद्देश्य से सूबे की राजधानी में धरने का कार्यक्रम बनाया गया है। आपको चलना है।

" अब मेरा मन कहीं जाने का नहीं करता।"

"आपका दुख हम समझते हैं; लेकिन भाई, मरने वाले के साथ कोई मर थोड़े जाता है! जब तक जिन्दगी रहेगी, जिन्दा रहने का धरम निभाना पड़ेगा। गन्ना किसानों का बकाया बढ़ते-बढ़ते दो अरब सत्तर करोड़ हो गया है। बिना माँगे मिलता तो हम क्यों दौड़ते? आप तो हमेशा आगे-आगे चले हैं। चलिए, हम लोगों का हौसला बढ़ाइए।"

बाँह पकड़कर उठाए गए तो विद्रोही जी उठकर खड़े हो गए। और राजधानी गए तो जैसे वहीं के होकर रह गए। दस दिन बाद वापसी हुई।

इस बार चुनकर आए विधायकों में से कई ऐसे थे, जिन्होंने पहली बार विधानसभा का मुँह देखा था। उनमें आम जन से जुड़ाव की चाहत अभी शेष थी।

उनको आवंटित आवास के हॉल में बिछी दरी पर जो चाहे आकर रात में सो जाए। चाहे जहाँ नहा-धो ले। परिचित विधायक से कूपन लेकर रियायती दर से खाना खा ले।

अब विद्रोही जी राजधानी आते हैं तो अपने परिचित विधायक के फ्लैट में डेरा डालते हैं। विधायक जी अपने लिए एक कमरा बन्द रखते हैं और बाकी क्षेत्र की जनता के लिए खुला छोड़ दिया है। रहते-रहते विद्रोही जी की आसपास के लोगों से काफी जान-पहचान हो गई है। जाने कितने संगठनों के कार्यालय हैं। किसानों के संगठन, जातियों के संगठन, राजनीतिक संगठन। रोज किसी-न-किसी धरना-प्रदर्शन या सभा-जुलूस में शामिल होने का न्योता मिलता है। इतनी गहमा-गहमी, इतनी जानकारी,

इतनी उत्तेजना, इतने सपने कि गाँव की जिन्दगी यहाँ की तुलना में एकदम रेंगती हुई-सी लगती है।

शुरू में विद्रोही बहू कुढ़ती थीं कि इतने जतन से पाल-पोसकर इनको आदमी बनाया और अब ये हाथ से निकले जा रहे हैं। घर-गृहस्थी का इतना जंजाल फैलाने के बाद बार-बार भागते हैं। तब एक बार उन्होंने पत्नी को समझाया - "देखो पहलवान की अम्मा, सबसे बड़ा दुख - जवान पुत्र की मौत - हम लोग झेल चुके हैं। लेकिन इसके अलावा जो गृहस्थ जीवन के पाँच महादुख हैं, उनमें से एक भी हमें नहीं व्यापे। घाघ कवि कहते हैं कि-

नस्कत पन्ही, बटकट जॉय।
जौ पहिलौठी बिटिया होय ।
गादर बैल बौरहा भाय।
घाघ कहै दुख कहाँ समाय।

"गृहस्थ का एक महादुख यह है कि उसकी पनही एड़ी काटती हो, दूसरा, उसकी पत्नी उसकी बात काटती हो। तीसरा, उसकी पहली संतान बेटी हो जाय। बेटा होता तो उनकी चालीस-पैंतालीस की उम्र होते-होते वह जवान हो जाता और हल की मुठिया थाम लेता। बेटी तो हल जोतेगी नहीं। जब तक बाद में पैदा होने वाला बेटा जवान नहीं होगा, बाप को ही लम्बी उम्र तक हल जोतना पड़ेगा। उसका चौथा महादुख यह है कि उसका बैल गादर निकल जाए। हल जोतने के काम ही न आ सके और पाँचवाँ कि उसका भाई बौरहा - मन्द बुद्धि- हो जाय। मैं इन पाँचों महादुखों से बचा हुआ हूँ। मेरा बेटा लायक है और जवान हो गया है। गृहस्थी का बोझ सँभाल लिया है। अब मुझे मुक्त कर दो कि समाज के काम आऊँ।"

विद्रोही बहू ने देखा कि जब से विद्रोही जी बाहर आने-जाने लगे, उनके चेहरे पर छाई विषाद की कालिमा धीरे-धीरे छँट रही है। चेहरे की उजास लौट आई है। उन्हें और क्या चाहिए! जहाँ भी रहें, खुश रहें।

विधायक निवास के पास चक्कर काटते हर आदमी के पास ऐसी आत्मकथा है, जिसे सुनकर मन द्रवित हो जाए। विद्रोही जी धैर्यवान श्रोता हैं, इसलिए उन्हें ऐसी कहानियाँ राह चलते मिलती रहती हैं। यहाँ आकर पता चलता है कि दुनिया में कितनी तरह के दुख हैं। किसी बूढ़े सुराजी को बेटे-बहू ने घर से निकाल दिया है। वह अपनी पेंशन बहाल कराने के लिए अपने क्षेत्र के विधायक को खोज रहा है। कोई किसी अफसर का स्थानान्तरण कराने आया है। कोई नौकरी की खोज में आया है।

यहाँ एक कोपभवन भी है। इसमें 'भवन' जैसा कुछ नहीं है। विधायक आवास से सचिवालय को जोड़ने वाली जो आधा किलोमीटर लम्बी सर्पिल सड़क है, जिसके दोनों ओर अशोक, अमलतास, गुलमोहर के ऊँचे घने पेड़ हैं, उन्हीं के नीचे पूरे प्रदेश के दुखियारे धरने पर बैठे रहते हैं। यही दुखियारों का कोपभवन है। अपनी-अपनी विपत्ति-गाथा अपने पीछे टँगे बैनर में लिखकर न्याय पाने की आशा में जाड़ा, गर्मी, बरसात, रात-दिन किसी मुक्तिदाता का इन्तजार करते रहते हैं। किसी बूढ़ी विधवा के जवान बेटे का कत्ल हो गया। अपराधी पकड़े नहीं गए। किसी की बेटी का अपहरण हो गया। बलात्कार और हत्या हो गई। रिपोर्ट नहीं लिखी गई। किसी की बेटी जलाकर मार डाली गई। कहीं सुनवाई नहीं हो रही। ये महीनों से,

अगम बहै दरियाव

कोई-कोई सालों से इस उम्मीद में बैठे हैं कि एक दिन सरकार इनकी सुनेगी। सारे विधायक और मंत्री इसी रास्ते से विधानसभा जाते हैं। कभी तो इन पर नजर पड़ेगी।

ये भिखारी नहीं हैं, लेकिन चूँकि न्याय माँगने आए हैं और कुछ भी माँगने वाला भिखारी हो जाता है इसलिए इन्हें भिखारी मान लिया गया है। कभी-कभार पुलिस भारपीट कर भगा देती है। एक-दो दिन बाद ये फिर अपनी जगह पर बैठे दिखाई देते हैं। कभी कोई पत्रकार इनकी व्यथा-कथा अखबार में प्रकाशित करता है। तब ये अखबार की उस कटिंग की

इनलार्ज फोटो कॉपी कराकर बैनर में चिपका देते हैं।

अपने पीछे जमीन खोदकर और ईंट जोड़कर इन्होंने चूल्हे बना लिये हैं। शाम को यह सड़क धुएँ वाली गली में बदल जाती है।

वैसे तो ये लम्बी लड़ाई का हौसला सँजोकर बैठे हैं, लेकिन कभी-कभी हिम्मत हार जाते हैं। गुलमोहर की मोटी डाल पर फंदा डालकर लटक जाते हैं। तब दो-चार दिन तक इन्हें अखबार के पन्ने पर जगह मिल जाती है। सरकार ने इन आत्महत्याओं के लिए गुलमोहर के पेड़ को दोषी मानते हुए उसे काटने का आदेश दे दिया था, लेकिन कोपभवन के दुखियारों द्वारा इसका मुखर विरोध करने पर इस आदेश में संशोधन करते हुए केवल उस डाल को काटना पर्याप्त माना गया जिस पर आत्महत्या करने वाले फंदा डालते थे।

कितनी सरकारें आईं-गईं, लेकिन कोपभवनवासियों का दुख कम नहीं हुआ। विद्रोही जी इनके दुख से दुखी होते हैं। आखि हैं। आखिर सरकारें इनका दुख क्यों नहीं सुनतीं?

कई महीने बाद आज हाई कोर्ट जा रहे हैं संतोखी।

मई में तारीख थी, लेकिन नहीं जा सके। तीन दिन पहले एक रिश्तेदार के बेटे की बारात गए थे। वहाँ कलेवा में रात की बासी दाल खिला दी गई। शायद वह खराब हो गई थी, इस कारण या जेठ की तपती धूप में दुपहरिया-भर पश्चिम दिशा में पैदल चलते रहे इसके कारण, घर पहुँचते-पहुँचते उनका मुँह-पेट दोनों चलने लगे। संतोखी बहू तीन दिन तक भुने आम के पने का घोल पिलाती और सारी देह में लेपती रही, तब जाकर चेतना लौटी। इसी में तारीख निकल गई। फिर गर्मी में कोर्ट की बन्दी हो गई।

इधर सोच रहे थे कि किसी दिन चलकर अगली तारीख का पता करें। अगली तारीख पड़ी भी कि नहीं? नहीं पड़ी होगी तो चलकर लगवानी पड़ेगी। यह तो पता है कि होना-हवाना कुछ नहीं है। पड़नी तारीख ही है; जैसे सात माल से पड़ रही है, लेकिन तारीख पड़ती रहे इसके लिए भी पैरवी करते रहना होगा। तारीख पड़ती जा रही है यानी मुकदमे की साँस चल रही है। मुकदमा जिन्दा है। तभी रक्षाबंधन पर नन्हे गाँव आया। उसने बताया कि एक दिन वकील साहेब छोले-टिक्की खाने आए थे तो पूछ रहे थे कि तुम्हारे बाबा कहाँ चले गए, उनको बुलाओ।

"कुछ बताया नहीं कि क्या बात है?"

"नहीं, उन्होंने बताया नहीं और झूठ क्यों बोलूँ, मैंने पूछा भी नहीं।"

ट्रेन दो घंटे लेट हो गई, इसलिए वकील साहब से हाई कोर्ट में ही भेंट हो सकी। देखते ही पूछा- " थक गए लड़ते-लड़ते?"

"बीमार पड़ गए थे, सरकार।"

"तीन महीने से स्टे वैकेट कराकर बैठे हैं। तुम गए तो लौटे ही नहीं।"

यह क्या सुन रहे हैं! सपना है कि हकीकत ? उनकी आँखों से झारोझार आँसू बहने लगे। उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाया और वकील साहब के पैरों पर रख दिया।

खडा वि वकील साहब ने उन्हें उठाकर खड़ा किया और पीठ थपथपाकर आगे बढ़ते हुए कहा- "मुंशी जी को खर्चा देकर नकल ले लो और जाकर कब्जा लेने की कार्यवाही कराओ। अब चाहे बीस साल बाद फैसला हो।"

संतोखी को लगा कि उनके पूरे शरीर में हाथी का बल प्रवेश कर रहा है। सिर और भुजाओं के पके-अधपके बाल परपराकर खड़े होने लगे। कमर

सीधी हो गई। आँखें दीप्त।

मुंशी ने कहा- "ऐसे ही मिल जाएगी नकल ? पहले जाकर हाई कोर्ट वाले हनुमानजी को लड्डू चढ़ाओ देशी घी का। फिर एक किलो हम लोगों के लिए लाओ।"

"बिलकुल, बिलकुल।" संतोखी चल पड़े। यह तो अच्छा हुआ कि तारीख लगवाने के लिए पैसे का इन्तजाम करके घर से निकले थे, नहीं तो आज आँख चुरानी पड़ती।

वापसी में दो-तीन स्टेशन पार होने के बाद याद आया कि लेटे हुए हनुमानजी का दर्शन करना तो छूट ही गया। फिर यह सोचकर दिल को तसल्ली दी कि हाई कोर्ट में तो हाई कोर्ट वाले हनुमानजी का ही ज्यादा जोर चलता होगा।

अगले दिन सबेरे-सबेरे दीवानी वाले वकील साहब के घर पहुँचे। फैसला

पढ़कर उनका मुँह खुला का खुला रह गया। बोले-"सचमुच आसमान से तारे तोड़कर ले आए, संतोखी! "

"असली काम तो अब आपको कराना है, सरकार। जितनी जल्दी हो, कब्जा दिलाइए। मेरे प्राण उसी में अटके हैं। क्या फिर से इजरा की कार्यवाही करानी होगी?"

"बिलकुल करानी होगी। अगर मजिस्ट्रेट इसके लिए तैयार हो जाए। आजकल हाई कोर्ट का नाम जुड़ा देखकर मजिस्ट्रेट टालना चाहते हैं।"

"आप हैं तो सब करा देंगे। साहब लोगों के लंच की व्यवस्था तो आप ही करते हैं।"

वकील साहब ने संतोखी को घूरकर देखा- "तुम्हें कैसे पता?"

"सबको पता है। जिस भड़भँजे की दुकान से लंच का लाई-चना आता है, वही कह रहा था। उसी की दुकान से तो मैं भी लाई-चना खरीदता हूँ।"

वकील साहब और कुछ न पूछने लगें, इसलिए तुरन्त हाथ जोड़े - " मैं चार-छह दिन में आपकी फीस का इन्तजाम करके लौटता हूँ।"

लौटते हुए संतोखी सोच रहे थे कि इतनी जल्दी हजार रुपये का इन्तजाम कहाँ से होगा। कल पाँच सौ लेकर गए थे। इस समय जेब में चालीस रुपये बचे हैं। भड़पूँजे का तीन दिन का उधार भी चुकाना है। विद्रोही जी स्टे वैकेशन की खबर पाकर खुश होंगे। उनसे उधार मिल सकता है।

उनके अन्दर बार-बार आवाज उठ रही है- " गजब हो गया। गजबै हो गया। कैसे हो गया? जिसकी कोई उम्मीद नहीं थी, वह हो गया। हे प्रभू!"

थाना मा बैठे दुःशासन

पहलवान बाजार से लौट रहे थे। अभी भीड़ से बाहर निकले ही थे कि एक काला रोयेंदार हाथ उनकी साइकिल के हैंडिल पर पड़ा।

पहलवान दोनों पैर जमीन पर टिकाकर रुक गए।

पूछा- "क्या है, चैतू?"

"अमीन साहब बुला रहे हैं।" चपरासी ने उँगली से इशारा किया।

अमीन उन्हीं की ओर ताक रहा था। वे साइकिल से उतरकर चपरासी के साथ चल पड़े।

इस बकाया के लिए दो साल से वसूली आई है। पहले साल तो पहलवानिन

ने ही डाँटकर चपरासी को भगा दिया था- "कोई बकाया नहीं हमारे ऊपर। जाओ, सही आदमी का पता लगाओ।"

दूसरे साल फिर चपरासी पीछे पड़ा तो वे पता लगाने निकले। पता चला कि कई साल पहले भैंस खरीदने के लिए लोन लिया गया था। उसका छह हजार रुपये अदा नहीं किया गया। वह रकम ब्याज जोड़कर दूनी हो गई है।

उन्हें ऐसे किसी कर्ज की याद नहीं थी। उन्होंने बाप से पूछा। विद्रोही जी को याद करने में दो दिन लग गए। बताया कि छह हजार रुपये भारती ग्रामसेवक को जमा करना था। लगता है धोखा दे गया।

फिर यह भी पता लगा कि उसके चार्ज में चार गाँव थे। हर गाँव से ऐसे कांड की जानकारी मिल रही है।

पहलवान समझ तो गए कि बिना जमा किए इससे मुक्ति नहीं मिलने वाली लेकिन इन्तजाम ही नहीं हो पा रहा है। एक पैसा आए, उसके पहले दो पैसे का खर्च सिर पर सवार हो जाता है।

चैतू ने रास्ते में ही बता दिया कि बिना बेबाकी के आज छूटना मुश्किल है। अमीन साहब भी क्या करें? बेबस हैं। तहसीलदार साहब सारे वसूली स्टाफ को डंडा किए हुए हैं। अमीन साहब की नियुक्ति सीजनल है। पूरी तरह अस्थायी। हर महीने वसूली का टारगेट फिक्स है। टारगेट पूरा न करने वाले का बस्ता रखवा लिया जाता है। बड़ी मरन है।

अमीन लाले बनिया की चक्की के बाहर बने टिनशेड के नीचे बड़ा-सा रजिस्टर खोले चारपाई पर बैठा था। साइकिल स्टैंड पर खड़ी करके पहलवान ने उसे नमस्कार किया। अमीन ने सिर उठाया।

"तीन साल से आपकी आर.सी. घूम रही है। आज बेबाकी करने के बाद ही घर जा सकते हैं।"

"बेबाकी तो करेंगे ही। गाँव छोड़कर भाग थोड़े जाएँगे।"

"हम तुम लोगों की नस-नस पहचानते हैं। जब तक एक ही कोठरी में खाना-हगना साथ-साथ नहीं कराया जाएगा, बेबाकी नहीं करोगे।"

"ऐसा नहीं है, अमीन साहब ! बस दस-पाँच दिन की मोहलत दीजिए। इन्तजाम कर रहे हैं।"

"मोहलत तो तहसीलदार साहब ही देंगे। अभी आने वाले हैं। बैठो उधर। भागना नहीं।"

पहलवान बैठने के लिए आसपास देखने लगे। कोई बेंच, तखत, पत्थर-

पटिया? कुछ नहीं। तो आगे बढ़कर कुएँ की जगत की धूल अँगोछे से झाड़कर बैठे।

अगम बहै दरियाव

सारे बाजार में हल्ला हो गया- पहलवान पकड़े गए। लोगों ने पहलवान को बाल लैंगोटा पहने अखाड़े में घूम-घूम कर कुश्ती का जोड़ा खोजते देखा था। विपक्षी को चित करने के बाद अँगोछा फैलाकर दर्शकों से इनाम की राशि बटोरते देखा था। लम्बी कूद का चैम्पियन बनने के बाद माला से मालामाल होते देखा था। पकड़कर बैठाए गए बेबस श्रीहीन पहलवान को देखने का पहले कोई मौका नहीं मिला था। कैसे लगते होंगे? देखने के लिए भीड़ उमड़ी चली आ रही थी।

पहलवान सिर झुकाकर बैठे थे।

अमीन तहसील के उत्तरी क्षेत्र से बदलकर जल्दी ही इधर आया था। वह पहलवान की लोकप्रियता से परिचित नहीं था। भौचक था कि एक बकाएदार को बैठा लेने भर से इतनी भीड़ क्यों उमड़ी आ रही है!

तब तक भीड़ को चीरकर सफेद तहमद लपेटे एक नौजवान प्रकट हुआ।

उसके पीछे अपनी भारी-भरकम गद्देदार कुर्सी को दोनों हाथों से सिर के ऊपर उठाए पास के हेयर कटिंग सैलून का नाई था।

15

पहलवान ने पहचाना - पड़ोस के गाँव के लल्लन पहलवान, जिन्हें बचपन में उन्होंने कुश्ती के दाँव सिखाए थे।

लपककर पहलवान का पैर छूते हुए नौजवान ने कहा- "हम लोगों के रहते आप जैसे उस्ताद को इस तरह पकड़कर बैठाना पूरे इलाके की हतक है। अमीन साहब को शायद पता नहीं कि आपकी हस्ती क्या है!"

उसने अपने अँगोछे से कुर्सी को झाड़ते हुए कहा - "आइए, विराजिए।"

और पहलवान के के 'न-न' 'न-न' करते हुए भी कई हाथों ने उन्हें उठाकर कुर्सी पर बिठा दिया।

भीड़ में जोरदार ताली बजी।

अमीन को यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने लल्लन पहलवान को पास बुलाकर कहा- "यह आदमी सरकारी बकाएदार है। सरकारी हिरासत में है। हिरासत के आदमी को जहाँ बैठाया जाएगा, वहीं बैठना पड़ेगा। जिसको कुर्सी या सिंहासन पर बैठाना हो, वह बेबाकी के बाद अपने घर ले जाकर बैठाए।"

"क्या बात करते हैं! बकाएदार कोई चोर-डकैत होता है कि आप उसकी तौहीन करेंगे? आपको सिर्फ बकाया वसूलने का अधिकार है, बेइज्जत करने का नहीं। हमको नहीं पता कि पहलवान कितने के कर्जदार हैं, लेकिन ये इजाजत दें तो अभी इसी बाजार में इनके नाम पर चार-छह हजार मिनटों में झड़ जाएँगे।"

"अरे, ऐसी बात क्यों कर रहे हैं लल्लन बाबू!" पहलवान उन्हें रोकते हुए बोले-" पब्लिक से इनाम-इकराम लेना दूसरी बात है लेकिन कर्जा चुकाने के लिए

चन्दा माँगना तो कफन के लिए चन्दा जुटाने जैसा होगा।"

"नहीं, एक बात कह रहे हैं।" फिर अमीन की ओर देखकर कहा- "जिसे पकड़कर गामा पहलवान बन रहे हो, वो अभी पाद दे तो उड़ जाओगे। मूत दे तो उसी की धार में बह जाओगे। कहीं हाथ डालने के पहले समझा-बूझा जाता है।"

अमीन की समझ में नहीं आया कि क्या बोले।

बकाएदार को जमीन पर बिठाने या खड़ा रखने का उद्देश्य उसे उसकी हीनदशा महसूस कराना रहता होगा। जमींदारी के जमाने में तो जेठ की धूप में मुर्गा बनाया जाता था। कोड़े से पिटवाया जाता था। बकाएदार को कुर्सी पर बिठाना! जबकि खुद अमीन को मामूली-सी चारपाई पर बैठकर अपनी अमीनगिरी की इज्जत बचानी पड़ रही हो। उस पर ऐसी लगने वाली बात! बर्दाश्त से बाहर । अमीन की समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करना चाहिए।

पप्पू की अम्मा को खबर लगी तो परेशान हो गईं। लपककर खेलावन के घर गईं। लेकिन वे ड्यूटी पर गए थे। अब किसके पास जाएँ? कौन है जो पहलवान को छुड़ा सके? सामने से पी.सी.एस. आता हुआ दिखा। पप्पू की अम्मा ने आवाज देकर उसे रोका। बताया।

पी.सी.एस. ने दिलासा दिया- "मैं अभी जाकर देखता हूँ।"

"मैं भी चलूँ?"

"क्या जरूरत है!"

"मन नहीं मान रहा है। अच्छा, पप्पू के बाबू के कान में धीरे से कहना कि मेरे पास चार सौ रुपये रखे हैं। चाहें तो किसी को भेजकर मँगवा लें।"

भीड़ ने चारों तरफ से अमीन की चारपाई को घेर लिया है। एक आदमी कहता है-"पकड़कर बैठाने से क्या होगा? किसान कोई सेठ-साहूकार है

कि तिजोरी से नोट निकालकर बेबाकी कर देगा।"

गाँव-गाँव पैदल घूमकर चून-पान बेचने वाला बगल के गाँव का बूढ़ा सम्पत भीड़ से निकलकर एकदम अमीन के मुँह से तर्जनी सटाकर बमकता है- "बड़ी-बड़ी मिलों, फैक्ट्रियों पर सिर्फ बिजली का ही लाखों का बकाया है, उनसे वसूलने की हिम्मत तुम्हारे बाप की भी नहीं है। सारा कानून किसानों-मजदूरों के लिए है?"

फिर एक हाथ से कान ढककर और दूसरी तर्जनी अमीन की ओर उठाकर भाने लगता है-

जिसके पास एक लाख रुपये बचे हों, उसका लंड अभी भी चाटा जाता है।

ऐसी गाली! अमीन को लगा कि उसे नंगा कर दिया गया। उसने डाँटना शुरू किया- "क्या चाहते हो तुम लोग? बलवा करने का इरादा है? कानून अपने हाथ में लोगे? लेते समय मीठा लगता है, चुकाते समय तीता? अभी तहसीलदार साहब फोर्स लेकर आ रहे हैं। उन्हीं को दिखाना यह फुटानी।"

लेकिन अन्दर-ही-अन्दर वह डर गया। बकाए का रजिस्टर मोड़कर झोले में डाल लिया। भीड़ का क्या ठिकाना ! रजिस्टर ही छीनकर जला दे। उसकी निगाहें अपने चपरासी को खोज रही हैं। पता नहीं कहाँ गायब हो गया! आज कुछ हुआ तो इसको खड़े-खड़े बर्खास्त करवाएँगे।

"पहलवान की बेज्जती इलाके की बेज्जती है।" भीड़ से आवाज आती है।

पहलवान कुर्सी से उतरते हैं और हाथ जोड़कर भीड़ से कहते हैं-" इसमें कैसी बेइज्जती, भाइयो ! खाए हैं तो चुकाना ही पड़ेगा। बस थोड़ी मोहलत चाहिए।"

प्रकट होने के पहले एक मिनट तक पीछे रुककर माहौल का जायजा लेता है पी.सी.एस. ।

सदैव प्रथम श्रेणी में पास होने वाला लड़का रहा है राजेश्वर उर्फ पी.सी.एस. । एम.ए. में फिलॉसफी में टॉप किया है। उसके बाप रघुनन्दन राय का अरमान था कि आई.ए.एस. नहीं तो गाँव के दूसरे लड़कों की तरह पी.सी.एस. तो बने उनका बेटा। लेकिन पता नहीं किस कु-घड़ी में उसे छात्र-राजनीति का रोग लग गया। सरकारी नौकरी सरकार की गुलामी लगने लगी। अब वह दुनिया-जहान को दुख, अन्याय और भ्रष्टाचार के समुन्दर से उबारने की तमन्ना लिये भटकता रहता है। उसका एक पैर गाँव में रहता है तो दूसरा दिल्ली, लखनऊ, इलाहाबाद में। शुरू में मजाक में लोगों ने उसे पी.सी.एस. कहना क्या शुरू किया, अब गाँव में उसका यही नाम चल पड़ा है।

"हटिए सब लोग, एक किनारे। क्या बात है?" वह धड़धड़ाकर भीड़ के केन्द्र में पहुँचता है और अमीन की आँख में आँख डालकर पूछता है- "लैंड रेवेन्यू एरियर की वसूली का प्रोसीजर तो पढ़ाया गया होगा ट्रेनिंग में? कि बिना ट्रेनिंग के ही बस्ता पकड़ा दिया गया?

एकबारगी कैसे पकड़ लोगे? पहले साइटेशन नोटिस जारी करोगे कि नहीं? हफ्ते-दस दिन की मोहलत दोगे कि नहीं? कब दिया नोटिस? किसको दिया? काका, आपको कोई नोटिस मिली है?"

पहलवान से कुछ बोलते नहीं बना। उन्होंने धीरे से इनकारी में सिर हिलाया। "पहले साइटेशन नोटिस दिखाइए। फिर अरेस्ट वारंट दिखाइए। तब पकड़ने की बात सोचिए।"

अमीन भीड़ देखकर ही डर रहा था। अब यह कानूनी भतीजा भी आ गया। नोटिस जारी करने का कानून तो बना दिया अफसरों ने, लेकिन नोटिस देने की कार्यवाही कहाँ तक कर सकता है कोई! बड़ी मुश्किल से तो

बकाएदार पकड़ में आता है। कब, कहाँ, कौन पकड़ में आ जाए, तब उसे पकड़ेंगे कि नोटिस जारी कराने भागेंगे। लेकिन बात फँसती है तो ऊपर के अधिकारी सारी गलती मातहतों की ही निकालते हैं। वक्त की नजाकत को देखकर वह स्थिति को सँभालने की कोशिश करता है-" आप तो पढ़े-लिखे आदमी लगते हैं। आप ही बताइए कि...।"

"बता तो रहा हूँ।" राजेश्वर रुखाई से बोलता है- "हिन्दुस्तान सन् 1947 में आजाद हो चुका है। आप अंग्रेजों के नहीं, हिन्दुस्तानी अवाम के नौकर हैं। अवाम के नौकर होकर अवाम को गैरकानूनी तरीके से परेशान करेंगे?"

"इसमें गैरकानूनी क्या है? कर्ज लिये हैं, यह सच है कि झूठ? हमारा हरकारा एक दर्जन बार दरवाजे तक जाकर तगादा कर चुका है। यह सही है कि झूठ? फिर भी हम कहते हैं कि हवालात में बन्द करने का हमें कोई शौक नहीं है। आज बेबाकी नहीं कर सकते तो अभी तहसीलदार साहब खुद आ रहे हैं। र के सामने दो आदमी जमानत ले लें कि हफ्ते-दस दिन में मूल-सूद अदा हो जाएगा तो छोड़ देंगे।"

"अरे, जब पकड़ ही गैरकानूनी है तो जमानत देने और छोड़ने की बात कहाँ से पैदा हो गई?" पी.सी.एस. ने पहलवान की बाँह पकड़कर उठाते हुए कहा- "चलिए, काका।"

पहलवान सुनते आए थे कि कानूनी जोर के आगे शरीर का जोर काम नहीं आता। कानून की माया अपरम्पार होती है। इसलिए डर रहे थे। लेकिन पी.सी.एस. को कानून से ही अमीन को परास्त करते देख उठ खड़े हुए। जाते-जाते अमीन से बोले- "बकाया तो देना ही है, अमीन साहब। जुगाड़ नहीं लग पाया। खर्चे पर खर्चा लगा रहा। इसलिए अदा नहीं कर पाए। अब आगे कहना नहीं पड़ेगा। जैसे भी होगा पहले सरकारी कर्जा पटाएँगे।"

पहलवान चले तो पब्लिक ने हर्षनाद किया - "बोलो, सियावर रामचन्द्र की जै।"

पहलवान को अपने शरीर में इतनी ताकत नहीं महसूस हो रही थी कि साइकिल पर बैठ पाते। पैदल ही पैर घसीटते, साइकिल का सहारा लिये हुए गाँव तक पहुँचे। पहलवानिन सड़क के मोड़ पर ही इन्तजार करती खड़ी थीं। पहलवान का चेहरा स्याह और सूना था। पानी पीने के, पप्पू की अम्मा के आग्रह को अनसुना करके वे भड़हे में पड़ी चारपाई पर गिर पड़े।

पप्पू की अम्मा को उन्होंने इशारे से बता दिया कि उन्हें चुपचाप पड़े रहने दें।

वे जानते कि इस तरह बेइज्जत होने की नौबत आ जाएगी तो पत्नी का एकाध धान गहना बेचकर ही अदा कर देते। इधर तीन-चार साल में ऐसा कोई साल नहीं गुजरा, जब वे किसी बड़े खर्चे की चपेट में न आए हों। यह कर्ज तो जबरन गले पड़ गया। बाप की सिधाई और ग्रामसेवक की ठगी से।

उनके पिता विद्रोही अपने पिता के बारे में बताते थे। पचास-साठ साल पहले की घटना कि एक बार बाबा आँगन के ओसारे में बैठकर दोपहर का भोजन कर रहे थे तो दादी के मना करते-करते पिता के छोटे भाई ने अन्दर आकर बताया-मालगुजारी वसूलने वाले आए हैं। बाबा के हाथ का कौर छूटकर थाली में गिर गया। आगे खाया नहीं गया। उठ गए। हाथ-मुँह धोया और वहीं ओसारे में पड़ी चारपाई पर पड़ गए।

दादी ने पहले बेटे को डाँटा- "यही समय था ऐसी खबर देने के लिए। दो कौर चैन से खा लेने दिये होते।" फिर कहा- "कोई पूछने आए तो कह देना, नहीं हैं। रिश्तेदारी गए हैं। कब आएँगे, पता नहीं।"

बाबा शाम तक, जब तक पता नहीं चल गया कि जिलेदार वापस चला गया, बाहर नहीं निकले।

बताते थे कि चार-छह रुपये ही देना होता था, लेकिन इतनी छोटी रकम भी नहीं जुटती थी। गाली-गुफ्ता, मारपीट सुनना-सहना पड़ता था। वह जमींदारी का जमाना था। आज इतने दिनों बाद भी किसान की जिन्दगी में

बहुत कुछ नहीं बदला।

औंधे मुँह पड़े पहलवान करवट हुए तो सामने छूहे की खूँटी पर टँगी अपनी फोटो पर नजर पड़ी। रामनगर मेले के दंगल में हरियाणवी पहलवान को चित करने पर विधायक जी ने इनाम में उन्हें चाँदी की यह गदा भेंट की थी। उसी गदा को विधायक जी के हाथ से प्राप्त करते हुए खींची गई फोटो। उनकी रानें, जंघाएँ, कितनी मजबूत थीं! सीना कितना चौड़ा था! आज उन्हें उनसे एक हाथ छोटे मरियल-से अमीन ने ऐसा चित किया कि वे कराह भी नहीं पा रहे हैं। अखाड़े में सीखे सारे दाँव जिन्दगी के रणक्षेत्र में बेकार साबित हो गए !

पड़े-पड़े शाम हो गई। चिड़ियों की चहचहाहट मन्द पड़ गई। अँधेरा घिर आया।

365

पहलवान के मन में घिरा अँधेरा बाहर के अँधेरे से भी ज्यादा घना था। उन्हें लगा कि चारपाई नाव बन गई है और धीरे-धीरे डोल रही है। चारपाई ही डोल रही है या मड़हा भी?

साल-भर के अन्दर कब्जा दिलाने का आदेश हो गया।

आज फिर कब्जा लेने जा रहे हैं संतोखी - चार दिन कम आठ साल बाद। सबेरे नौ बजे जीप लेकर कोर्ट अमीन के क्वार्टर पर पहुँच गए। चपरासी फतेह मोहम्मद वहीं हैं। अमीन बदल गए हैं। फतेह मोहम्मद ने बताया कि जब तक अमीन साहेब तैयार हो रहे हैं, दौड़कर पानी की चार सीलबन्द ठंडी बोतलें ले आओ। ये वाले अमीन गाँव-देहात का खुला पानी नहीं

पीते।

थाने से फोर्स लेकर बाजार में राजेश डुगडुगी बजाने वाले को लेने के लिए रुके। संतोखी ने सबसे चाय पीने का आग्रह किया। बताया कि आगे कुछ नहीं मिलेगा।

संतोखी को देखकर राजेश उठकर खड़ा हो गया- "राम-राम, चाचा। इस बार बहुत गल गए हैं!" जश उठ

"गलेंगे नहीं तो क्या अब पैरा से डाभी होंगे बच्चा! तुम्हें कितना देना होगा?" उन्होंने कुर्ते की जेब में हाथ डाला।

"इस बार आपसे पैसा नहीं लेंगे, चाचा। आप हाथी की पीठ लगा दिए, मामूली बात है? पिछली बार आपको जानता नहीं था।"

"अरे नहीं भाई, जो वाजिब हो वह तो देना ही है।"

ठीक यही बात कल कल्लू कसाई ट्रैक्टर मालिक ने कही थी- " आपने पहाड़ पछाड़ दिया। इस बार डीजल का पैसा भी मत दीजिए।"

जीप से उतरकर सब खेत की ओर चले तो चार बजने वाले थे।

ढन-ढनाढन ढन-ढनाढन ढन...

तासे की आवाज सुनकर गाँव के लोग निकलने लगे। उसी बबूल के पेड़ के नीचे कल्लू का लाल ट्रैक्टर खड़ा था। आज आसमान में बादल छाये थे। बीच-बीच में धूप खिल जाती थी। बरसात अच्छी हुई थी। पुरवा हवा झूमकर चल रही थी।

खेतों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर हल चल रहे थे।

अगम बहै दरियाव

बाग के उस पार एक ट्रैक्टर भड़भड़ा रहा था। पास के एक खेत में आठ-

दस औरतें रंग-बिरंगी साड़ी पहने गाती हुई धान लगा रही थीं-

जाबै बद्दिरीनाथ, डोरिया लगाया हो रामा !

कहते हैं, पहले बद्रीनाथ की चढ़ाई बहुत खड़ी, बहुत कठिन थी। यात्रा पैदल थी। चक्कर खाकर कोई गहरी खाई में न गिर जाए इसलिए खाई की ओर रास्ते के समानान्तर डोरी बाँध दी जाती थी। सहारा भी, सुरक्षा भी। पीढ़ियों बाद पैदा हुई मैदानी स्त्रियों के कंठ पर वह गीत आज भी सुरक्षित है।

छत्रधारी सिंह के आने का इन्तजार किया गया। देर होने लगी तो राजेश ने तासा बजाकर तीन बार खेत पर संतोखी को कब्जा देने का ऐलान किया-

"हर आम-ओ-खास को मालूम हो कि..."

तभी दूर से छत्रधारी के भतीजे अकेले और खाली हाथ आते दिखे। उन्होंने आकर बताया कि चाचा जी को बुखार है। मुझे भेजा है। जहाँ कहिए, दस्तखत कर दूँ।

ट्रैक्टर ड्राइवर ने खेत की जुताई शुरू की।

संतोखी बहू ने कह रखा था कि इस बार वे पहले से बीज लेकर नहीं आएँगी। जब जोताई होने लगेगी तो लाएँगी। वे पीली साड़ी पहने सिर पर बीज की बोरी लेकर आईं। संतोखी खेत की मिट्टी माथे से लगाकर बीज छीटने लगे।

फाइल पर हस्ताक्षर करके छत्रधारी का भतीजा लौट गया तो संतोखी ने कब्जा पार्टी को जीप तक पहुँचाकर विदा किया। गाँव के हर घर में संतोखी के कब्जे की चर्चा थी-महाबली की पीठ लगा दी बहादुर ने। बुखार उखार कहीं कुछ नहीं। शरम के मारे नहीं निकले। क्या मुँह दिखाने आते?

सुबह होते ही संतोखी अपने खेत पर पहुँच जाते हैं। तभी उन्हें लगता है कि यह सपना नहीं, हकीकत है। अट्ठाईस साल बाद उन्होंने अपना खेत खुद बोया है। कब धान में अंकुर निकले, कब डाभी हरियराई, इसके एक-एक क्षण की गवाह उनकी आँखें हैं। हफ्ते भर में उन्होंने चारों तरफ की मेंड़ से अन्दर की ओर लटकी

घास को छील दिया। पौधे चार-पाँच अंगुल के होते ही निराई शुरू कर दी। इतने छोटे पौधों के बीच बैठकर निराना तो सम्भव न था। पौधे दब जाते। इसलिए वे झुके-झुके निराते रहे। इस उम्र में घंटे भर भी झुके रहना कितना मुश्किल काम है, लेकिन उन पर जुनून सवार था। हफ्ते भर में पूरा खेत निरा डाला।

वैसे तो संतोखी 'छिटुआ' बोना ही नहीं चाहते थे। बेरन लगाना चाहते थे। लगाने पर छिटुआ बोने की तुलना में ड्योढ़ा पैदावार होती है। निराई की जरूरत भी नहीं रहती। पर इस साल सरकारी अमले के सामने बो लेना जरूरी था। अगली साल बेरन लगाएँगे।

वे सोचते हैं कि स्टे खारिज न होता तो क्या पता, फैसले के समय तक वे जीवित भी रहते कि नहीं? फैसला होने में पन्द्रह-बीस साल तो लग ही जाएँगे। इस साल वे सत्तर पार कर गए हैं। उनके समौरी एक-दो लोग तो ऊपर भी चले गए। बिना कब्जा लिये मर जाते तो मरकर भी चैन न मिलता।

वे सोच रहे हैं कि धान काटने के बाद खेत के एक-तिहाई हिस्से में मटर बोएँगे। हरी मटर का निमोना इस इलाके का खास व्यंजन है। उसमें थोड़ी

कोहँड़ौरी और एकाध आलू काटकर डाल दीजिए तो मामला और गँठ जाता है। जाड़े के डेढ़-दो महीने हर गृहस्थ रोज निमोना खाने का सपना पालता है। खरीदकर मटर खाने की तो समवाई है नहीं। उसी के साथ दो क्यारी धनिया और दो क्यारी लहसुन। और अगर गुंजाइश बने तो दो क्यारी गोभी भी लगाएँगे।

आज वे बाजार आए हैं, यूरिया और जिंक खरीदने। यूरिया पड़ जाने से पौधों में हरियाली आ जाएगी। बाढ़ भी तेज हो जाएगी। जिंक डाल देने से रोग नहीं लगेगा। कब्जे की कार्यवाही में फँस जाने के कारण महीने भर से लाई-चना बेचने भी नहीं निकल पाए। हाथ एकदम खाली है। आज शाम खाद डाल दें तो कल से निकलें।

घर से तो निकले थे आठ बजे ही, लेकिन जो भी मिलता है, उनकी दास्तान सुनना चाहता है। संतोखी भी बार-बार बताने से नहीं ऊबते। बस उन्हें संक्षेप में बताने की कला नहीं आती इसलिए देर लग जाती है। लौटते-लौटते ग्यारह बज गए। अभी घर तक पहुँचे भी नहीं थे कि खबर मिली - छत्रधारी ने आपका खेत उलट दिया। अब उसमें अपना धान लगवा रहे हैं।

संतोखी को एकबारगी समझ में ही नहीं आया कि क्या कहा जा रहा है। समझे तो फसल के बीच से अपने खेत की ओर दौड़े। उनके खेत में पानी चमक रहा था। छत्रधारी का ट्रैक्टर बबूल की छाया में खड़ा था। झारखंड की भट्ठे वाली सात-आठ पथेरनें एक पंक्ति में झुकी हुई धान लगा रही थीं। दो आदमी बेरन ढोकर ला रहे थे। छत्रधारी की ट्यूबवेल से अभी भी खेत में पानी आ रहा था। छत्रधारी

का भतीजा दुर्गेश कन्धे पर एक नाली बन्दूक टाँगे मेंड़ पर खड़ा था। उनका भानजा लाडी लेकर दूसरे कोने पर खड़ा था। संतोखी बहू खबर पाकर पहले पहुँच गई थीं। इनके तेज-तेज बोलने की आवाज आ रही थी।

"यह क्या कर रहे हैं, लम्मरदार? इतनी सरहंगई? कोर्ट-कचेहरी का आडर

भी नहीं मानेंगे?" संतोखी थोड़ी दूर थे, तभी बोलने लगे। दौड़ने के कारण वे हाँफ रहे थे।

"भाग, साले।" दुर्गेश ने बन्दूक उठाकर इस तरह फायर किया कि संतोखी निशाने पर भी न आएँ और डर भी जाएँ।

फायर की आवाज सुनकर संतोखी ठिठक गए। बारूद की गन्ध हवा में तैरने लगी। नाल से धुआँ निकल रहा था।

सबको लगा कि अब कुछ अघटनीय घटकर रहेगा। कई लोग चारों तरफ से बोच-बचाव के लिए दौड़े। पहलवान भी अपने खेत पर थे। वे भी लपके।

दुर्गेश ने बन्दूक लहराते हुए ललकारा - " यह बन्दुखिया देख रहा है? यह सारी कोर्ट-कचेहरी के ऊपर है। भागता है कि गाँड़ से धुआँ निकालूँ तेरे?"

वह नाल तोड़कर दूसरा कारतूस भरने लगा। संतोखी को जैसे दौरा पड़ गया। खेत में घुसकर तुरन्त-तुरन्त रोपी गई बेरन को उखाड़कर इधर-उधर फेंकने लगे। छत्रधारी के भानजे ने पीछे से जाकर उनके चूतड़ पर इतने जोर से लात मारी कि वे औंधे मुँह कीचड़ में गिर पड़े।

तब तक पहलवान पहुँच गए। एक-दो लोग और पहुँच गए। उन्होंने संतोखी को उठाया और वहाँ से चले चलने के लिए खींचने, मनाने लगे।

संतोखी का चेहरा, दाढ़ी, बाल, कुर्ता, धोती सब कीचड़ में सन गए थे। वे खेत से हटने के लिए तैयार नहीं थे। संतोखी को खींचकर ले जाते हुए पहलवान दुर्गेश को लक्ष्य करके बोले- "यह काम अच्छा नहीं हुआ। अगर कोर्ट-कचेहरी का फैसला नहीं माना जाएगा तब तो जंगलराज आ जाएगा, जो किसी के लिए अच्छा नहीं होगा।"

दुर्गेश उन्हें घूरता रहा। बोला नहीं।

संतोखी के मुँह से 'हाय-हाय' जैसी आवाज निकल रही थी। वे खींचकर

आगे ले जाए जा रहे थे और मुड़-मुड़ कर पीछे देख रहे थे। अचानक वे पागलों की तरह चीखने और हाथ-पैर झटकने लगे।

उन्हें लाकर मड़हे में बिछी चारपाई पर लिटा दिया गया। वे आँखें बन्द करके निस्पंद लेट गए। बहुत लोग आए-गए, पर न उनकी आँख खुली, न उन्होंने करवट बदली। दोपहर से शाम और शाम से रात हो गई। शरीर और कपड़ों में पुता कीचड़ धीरे-धीरे सूख गया।

369

संतोखी बहू चारपाई के बगल में जमीन पर कथरी बिछाकर लेट गईं। आधी रात के बाद संतोखी उठे और पत्नी को जगाते हुए बोले- "सुनती हो? चलो, यही यूरिया घोलकर दोनों लोग पी लें। 'मुक्ती' मिल जाय।"

संतोखी बहू कच्ची नींद में झझककर जगी थीं। तुरन्त कुछ समझ नहीं पाई। समझीं तो कहा- "यूरिया काहे पी लेंगे? क्या जिनके पास एक धूर खेत भी नहीं है, वे सब यूरिया पी लेते हैं?"

वे उठीं और यूरिया की गठरी ले जाकर गड़ही में फेंक आईं।

संतोखी उठे अगले दिन, घंटा-भर दिन चढ़ने के बाद। संतोखी बहू उन्हें लेकर कुएँ पर गईं। कीचड़ सने कपड़े उतरवाकर बाल्टी भर-भरकर उनके सिर पर डालती रहीं। साबुन का एक टुकड़ा घर में कहीं पड़ा था, लेकिन आज खोजने पर मिला नहीं। मिल जाता तो दाढ़ी-बाल की मिट्टी अच्छी तरह साफ हो जाती। छाती-पीठ मल-मल कर उन्होंने साफ किया।

संतोखी ने अरहर दाल की खिचड़ी खाने की इच्छा व्यक्त की। कहा कि उसमें एक खटाई भी डाल देना। संतोखी बहू को झोंपड़ी के कोने में एक आलू मिल गया। उन्होंने एक प्याज भी खोज निकाला। चोखे का इन्तजाम हो गया।

संतोखी खिचड़ी खाकर फिर सोए तो अगली सुबह ही उठे। परसों लात की चोट बहुत तेज लगी थी। कमर में हल्का-हल्का दर्द अभी भी महसूस हो रहा था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि कहाँ जाएँ? क्या करें?

वे दीवानी के अपने वकील के पास गए। सारी बात सुनकर उन्होंने कहा- " उनका भतीजा ठीक कह रहा था। आज भी बन्दूक सारी कोर्ट-कचेहरी से ऊपर है। इसी को नीचे रखने के लिए थाना पुलिस बनाई गई है। फिर थाने जाओ। वहाँ सुनवाई न हो तो डिप्टी कलेक्टर के पास जाओ। मुकदमा कायम कराओ।"

"जजी से कुछ नहीं होगा?"

"जजी से आपको कब्जा दिला दिया गया। प्रकरण समाप्त हुआ। फाइल कन्साइन हो गई।"

संतोखी थाने जाने से बचना चाहते थे। उसी शाम तहसील के वकील साहब के घर पहुँचे। वे संतोखी को देखकर खुश हुए। कई साल बाद देख रहे थे। यह

कनकर और भी खुश हुए कि उन्होंने कानूनी तरीके से कब्जा हासिल कर लिया था।

"लेकिन वकील साहब, हम तो फिर वहीं पहुँच गए जहाँ से अट्ठाइस साल काले चले थे।" उन्होंने पूरी घटना बताई। फिर पूछा- "इस जबरदस्ती का क्या इलाज है?"

"इसका असली इलाज तो धाने के पास ही है। वहाँ सुनवाई न हो तो आओ, एसडीएम की कोर्ट में मुकदमा दर्ज कराया जाएगा।"

"फिर मुकदमा? मुकदमा लड़ते-लड़ते तो बेदम हो गए हैं। कचेहरी में पैर रखने का मन नहीं करता।"

"बात तो ठीक कहते हो। पहले एक बार थाने जाओ। विधायक जी के किसी परिचित को साथ लेकर उनसे भी फोन कराओ। मैं दो दरखास्त लिख देता हूँ। एक सौधे धानाध्यक्ष को दे आओ। दूसरी विधायक जी को दे दो कि अपनी सिफारिश लिखकर मुहर लगाकर एस.पी. को भेज दें। दरअसल, असली ताकत तो पुलिस के पास ही होती है और पुलिस हमेशा ताकतवर के पक्ष में खड़ी होती है। पीड़ित हमेशा कमजोर होता है। हम लोग तो रोज ही यह सब देखते हैं। लगता है, अन्याय के अलावा दुनिया में और कुछ हो ही नहीं रहा है।"

"गजब बात है। इसका मतलब कोर्ट, कचेहरी, थाना, पुलिस सब बेकार बनाए गए हैं।"

"इतनी जल्दी हिम्मत मत छोड़ो। ये दरखास्तें लेकर जाओ।"

वकील साहब ने उन्हें आश्वस्त किया- "इससे काम न बने तो फिर आना। कुछ और सोचा जाएगा।"

अगले दिन बड़े सबेरे संतोखी विधायक जी के घर पहुँचे। विद्रोही जी के घर पर कई साल पहले मुलाकात हुई थी। बताते ही पहचान गए। चाय पिलाई। दरखास्त लेकर पढ़ी। उस पर कुछ लिखा। मोहर लगवाई। फिर बोले-" मैं इसे एस.पी. को भेजवाता हूँ। वहाँ से थाने जाएगी। मेरे क्षेत्र में इतनी नाइंसाफी थोड़े चलेगी। जाओ।"

संतोखी उनका पैर छूकर लौट आए। कई दिन इन्तजार किया कि थाने से कोई आएगा। नहीं आया तो एक दिन हिम्मत करके थाने गए।

अच्छा संयोग था। सीधे थानाध्यक्ष से सामना हो गया। कहीं जाने को तैयार थे। वर्दी पहन चुके थे। टोपी सही कर रहे थे। एक होमगार्ड उनकी बुलेट पोंछ रहा था। संतोखी हाथ जोड़कर सामने खड़े हो गए।

"अब क्या हुआ?"

"सरकार, छत्रधारी ने मेरी फसल उलटकर अपना धान लगवा दिया।"

"अभी तो छोटे दारोगा कब्जा दिलाकर आए थे।"

"हाँ सरकार, उसके दस दिन बाद।"

थानाध्यक्ष मोटरसाइकिल पर बैठ गए।

"सरकार हम हर अदालत से जीते हुए हैं। वे नाजायज कर रहे हैं। एक बार हमारे ऊपर और दया करें, हुजूर।"

"ताकि वह फिर उलट दें तो हम फिर कब्जा दिलाने चलें। बस यही करते रहे साल-भर?"

"नहीं सरकार। इस बार अगर वे न माने तो हम अपने ऊपर मिट्टी का तेल डालकर उसी खेत में जल मरेंगे।"

"तो अभी इसमें क्या दिक्कत आ रही है?"

होमगार्ड ने उन्हें सामने से खींचकर बगल में किया। बुलेट हड़हड़ाई और धक-धक करती गेट के बाहर निकल गई।

थाने से निकलकर संतोखी फिर विधायक जी के घर पहुँचे। पता चला कि विधायक जी मानसून सत्र में भाग लेने राजधानी गए हैं। आज रात आएँगे। संतोखी विधायक जी के घर के बाहर रखी बेंच पर लेटकर उनका इन्तजार करने लगे।

रात में विधायक की पत्नी ने नौकर के हाथ से चार रोटी और उस पर आलू-बैगन की सूखी सब्जी भिजवा दी थी। वही सब्जी इन लोगों के घर पहुँचकर कितनी स्वादिष्ट बन जाती है। कितनी दूर से महक रही है। ... लेकिन बड़े लोग कितना कम खाते हैं। जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, खुराक घटती जाती है। दो रोटी और मिल गई होती तो पेट भर जाता।

सबेरे जनता से मिलने के लिए विधायक जी निकले तो संतोखी भी हाथ जोड़कर खड़े हो गए।

"दारोगा तो कह रहा था कि छत्रधारी ने तुम्हारे खेत पर कब्जा करने की बात को झूठ बताया है। कह रहा था कि वह तो कब्जा देने के बाद उधर मूतने भी नहीं गया।"

"अरे सरकार, मुझे पागल कुत्ते ने थोड़े काटा है कि हम झूठ-मूठ गली-गली रोते घूमेंगे।"

"चलो, इस बार हम एस.पी. से बात करेंगे।"

"सरकार, एक बार आप हमें लेकर थाने पर चले चलते तो बात बन जाती।"

"क्या चाहते हो, विधायक जी तुम्हारा परसनल झगड़ा अपने सिर ले लें? तुम्हारे दो वोट के लिए उनके पचास वोट से हाथ धो लें?" विधायक जी की बगल में बैठा एक दाढ़ी वाला युवक गुर्राया।

"नहीं-नहीं, यह बात नहीं है। बात चलने से नहीं, लिखा-पढ़ी से बनेगी। वह मैं करूँगा। तुम्हें जानता हूँ। थोड़ा धीरज रखो।"

निराश होकर फिर तहसील वाले वकील साहब के पास गए संतोखी। वकील साहब ने दो-तीन घंटे की मेहनत से एक बड़ी दरखास्त तैयार की।

उसमें अलग-अलग लोगों को सम्बोधित किया- जिलाधिकारी, कमिश्नर, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, चीफ जस्टिस सुप्रीम कोर्ट, चीफ जस्टिस हाई कोर्ट, पुलिस महानिदेशक, घानवाधिकार आयोग, जिला जज और पुलिस कप्तान। इनमें सारे फैसलों की नकल और हाई कोर्ट के स्टे वैकेशन के आदेश की नकल नत्थी करके लिफाफे में भरकर पता लिखकर संतोखी को दिया कि कल रजिस्ट्री से भेज दें। ऊपर से आख्या माँगी जाएगी तो जरूर कुछ-न-कुछ होगा।

जेब में जितना पैसा था, सब रजिस्ट्री करने में खत्म हो गया।

रजिस्ट्रियाँ भेजने के बाद संतोखी फुरसत में हो गए। अब वे कहाँ भटक रहे हैं, किससे मिल रहे हैं, कब सो रहे हैं, कब जग रहे हैं- उन्हें होश ही नहीं रह गया।

कार्तिक में धान काटकर छत्रधारी ने गेहूँ बो दिया। एक दिन संतोखी की बुलाहट थाने पर हुई। उन्हें देखते ही इंचार्ज साहब फुफकारने लगे। उनके हाथ में एक मोटी फाइल थी। उसे मेज पर फैलाते हुए उन्होंने संतोखी से जानना चाहा कि यह सब क्या है? संतोखी ने देखा, उनके द्वारा अफसरों को भेजी गई दरखास्तें थीं।

"क्या करूँ इस कूड़े का ? अचार डालूँ? सभी ससुरों को तो आख्या देने के लिए थाना ही दिखाई देता है। तू एक दरखास्त और लिख, कप्तान साहेब के नाम कि सिर्फ तुझे कब्जा दिलाने के लिए एक थाना और खोलवा दें।" फिर एक कागज मेज पर रखते हुए बोले- "कर, यहाँ दस्तखत कर। ले, कलम पकड़।"

"कैसी दस्तखत, साहेब?"

"थाना खोलवाने के लिए।"

"इस पर तो कुछ लिखा नहीं है।"

"तू लिखेगा।"

"लिखूँगा नहीं, लेकिन सादे कागज पर दस्तखत भी नहीं करूँगा।" संतोखी पिछड़ते हैं।

"तू भी एक ही हरामी है। हाथ-पैर तोड़ना पड़ेगा क्या?"

"गरीब के लिए आप लोगों के बाजू में जोर बहुत बढ़ जाता है।" कहकर संतोखी लौट पड़ते हैं। मुड़-मुड़कर पीछे देख लेते हैं कि कोई पकड़ने तो नहीं आ रहा।

भूसी चौधरी महुए के पेड़ के नीचे कमरी बिछाकर बैठे हैं। थोड़ी दूर पर गोंइठा के अहरे पर खिचड़ी पक रही है। धुआँ उठ रहा है। पकती खिचड़ी की सुगन्ध आसपास हवा में तैर रही है। भूसी का कुत्ता गोंइठे से थोड़ी दूरी पर बैठा खिचड़ी की महक सूँघकर आनन्दित हो रहा है। खिचड़ी की सुरक्षा का भार उसी पर है। किसी बन्दर ने आकर खिलवाड़ में गोंइठे को खींच लिया तो खिचड़ी की भदेली पलट सकती है।

भेड़ें दूर तक फैलकर चर रही हैं। दो भैंस थोड़ी दूरी पर खड़ी हैं। एक भैंस के सींग पर बैठा कौआ उसकी बरौनियों से किलनी निकाल रहा है। भैंस ने मुदित होकर पलकों को हल्के से झपका लिया है। आनन्द से उसकी पूँछ तनिक उठ गई है।

भूसी उन्हीं को एकटक देख रहे हैं।

कौआ कूदकर दूसरी भैंस के सींग पर बैठ गया। पहली भैंस थूथन उठाकर

कौए के पास ले गई और नाक से दो बार सूँ-सूँ किया। यानी फिर मेरे पास आ जा। इस पर दूसरी भैंस ने गुस्से की मुद्रा बनाई और कान खड़े कर दिए, ताकि कौआ वापस न जाकर कान की किलनियाँ निकाले।

भूसी जोर से हँसे।

"अरे, अकेले-अकेले हँसे जा रहे हैं।"

माठा बाबा पास आ गए थे।

'आइए महराज, आइए।" भूसी हाथ जोड़कर कमरी से नीचे उतर आए।

"पहले बताइए कि आपका गामा तो आसपास नहीं है?"

"गामा तो कब का बैकुंठ सिधार गया, महराज !" फिर तनिक हँसकर पूछा- "गामा अभी तक याद है आपको?"

"मरने के दिन तक नहीं भूलेगा, ससुरे ने प्राण ही ले लिया था।"

बहुत पहले की बात है। अपनी जवानी में भूसी ने एक सिंघाड़ा भेड़ा पाला था। उसी का नाम था गामा। मेले-ठेले और भोज-भात के जुटान में उसे लड़ाने का शौक था। एक बार बाबा चकरोड पकड़े जा रहे थे। गामा पास के खेत में भेड़ों के झुंड में चर रहा था। अचानक उसे जाने क्या सूझा कि बेखबर चले जा रहे बाबा के पीछे दौड़कर एक ठोकर मार दी। सिंदूर और कड़ुवे तेल से सिझाए गए उसके मुर्रीदार काले सींग पूरे फौलाद थे। बाबा मुँह के बल गिर पड़े। गामा चार कदम पीछे खड़ा उनके उठने का इन्तजार करता रहा। जैसे ही उठे, फिर एक ठोकर

बाबा आतंकित हो गए। पता नहीं उठना भूल गए कि डर के मारे नहीं उठे। लेटे-लेटे ही जान बचाने के लिए गुहार लगाते रहे।

हाथी की याद आ रही है बाबा को।

आइए, बिराजिए। आज जंगल में कैसे चरण पड़े?"

कमरी पर पालथी मारकर बिराजते हुए बताया बाबा ने-" आज औरतें महामाई के धाम पर कड़ाही चढ़ाएँगी। हमारी पंडिताइन ने हुकुम दिया कि पूड़ी छानने के लिए आम की सूखी लकड़ी और दोना-पत्तल के लिए ढाक के पात चाहिए। तब हमें आपकी याद आई।"

भूसी ने आवाज देकर रेवड़ के दूसरे सिरे पर खड़े लड़के को बुलाया और इसे लकड़ी और पत्ते लाने को कहा।

"तब तक कुछ 'सतसंग' सुनाइए महराज।" भूसी सामने सूखे पत्तों पर बैठते हुए बोले।

"क्या सुनेंगे?"

"कुछ ज्ञान-ध्यान-भगवान की बात। सुख-दुख की बात।"

माठा बाबा थोड़ी देर सोचते रहे फिर बोले-अच्छा दुख सुनिए-- अच्छा सुनिए, भगवान का

पुर ते निकसीं रघुबीर बधू
धरि धीर दिए मग में डग द्वै।

यानी जंगल में चलते-चलते थककर सीता महारानी रामजी से पूछती हैं कि अभी और कितनी दूर चलना पड़ेगा। आज पर्णकुटी कहाँ बनाएँगे?

"आह ! भगवान को भी इतनी विपत्ति।" शाम होने से पहले बाँस-काँस काटकर झोंपड़ी खड़ी करें तभी आराम कर सकते हैं। भूसी हाथ जोड़कर आँखें मूँद लेते हैं-"इसी से आप हमारी विपत्ति का अन्दाजा लगाइए, महराज ! भगवान तो चौदह बरस भटककर छुट्टी पा गए। हमारी भटकन तो जिन्दगी भर के लिए है।"

"वाह, चौधरी वाह। बढ़िया जोड़ी है। खैर, झुंड चराना भी कम मुश्किल

नहीं है।"

चरवाही करना हल चलाने से ज़्यादा मुश्किल है। वह कहते हैं:

हर जोते घर बारह कोस।
पैना गिरे अठारह कोस।

यानी हल जोतने के बाद खेत से घर तक की दूरी बारह कोस लगती है। और अगर हाथ का पैना गिर जाए, उसे झुककर जमीन से उठाना पड़े तो लगेगा कि पैरों में अठारह कोस चलने की थकान भर गई।

चरवाही में तो दिन-भर चलते ही रहना है। अब तो फिर भी कुछ आसान हो गया। इलाके से भेड़िए खतम हो गए नहीं तो रात-दिन रखवाली भी करनी पड़ती थी।

भूसी अतीत में चले गए।

"जब मैं जवान था तो इस जंगल में एक बिगवा* था, जिसका नाम था- खैरा। खैरा बाई आँख का काना था और अकेला था। मेरी तरह उसकी जोड़ीदार भी नहीं थी। उसे अकेले शिकार करना पड़ता। वह इतना चालाक था कि कुत्ते, चरवाहे सबको गच्चा दे देता। पहले वह अँधेरे में भेड़ों के झुंड के पास सामने से प्रकट होता। उसके पैर की हड्डियों से निकलती चट-चट की आवाज से चरवाहे सतर्क हो जाते। कुत्ते भँकते हुए दौड़ते तो भाग खड़ा होता। अभी कुत्ते उसी दिशा में भैंके जा रहे हैं, तब तक वह पीछे से प्रकट होता और भेड़ का बच्चा मुँह में दबाकर सुरक्षित निकल जाता। कुत्ते इस धोखे को बर्दास्त न कर पाते। अपनी हार पर शर्मिन्दा होते और देर तक उसी दिशा में मुँह उठाकर भँकते रहते।"

"सुनते हैं, तब आप इतने तेज दौड़ाक और हिम्मती थे कि बिगवा* के मुँह से भेड़ का बच्चा छीन लाए थे। उसी खैरे के मुँह से?"

"वह बच्चा लेकर भागा, हम पीछा किए। वह शिकार लेकर कभी नाक की सीध में नहीं भागता था। पीछा करने वाले को गच्चा देने के लिए कावा काटकर भागता था। मैं उसका ठीहा जानता था। पता था कि यह शिकार लेकर वहीं पहुँचेगा। मैं सीधे दौड़कर उससे पहले वहाँ पहुँचा और जैसे ही आकर उसने शिकार जमीन पर रखा, मैंने जोर से डाँटा - 'धर सारे !' और लाठी तानकर दौड़ा तो वह पीछे हट गया।

"मैंने पास जाकर देखा। बच्चे के गले पर दाँत धँस गए थे। उसे मर ही जाना था। खैरा दस कदम दूर खड़ा ताक रहा था। मैंने सोचा कि इसने इतना जोखिम उठाकर अकेले दम शिकार किया है। इसके मुँह का कौर छीनना ठीक नहीं। बच्चे को छोड़कर लौट आया।"

भूसी थोड़ी देर तक खैरा की याद में खोये रहे। फिर बोले- " सब खतम हो गए। वे भी होते तो दुनिया और सुन्दर होती।"

"आपकी दुनिया अभी भी सुन्दर है, चौधरी! छल-कपट से दूर, पेड़-पौधों की छाँव में, मूक निश्छल पशुओं के बीच। समझिए, जीते-जी स्वर्ग में हैं।"

भूसी, माठा बाबा की आँखों में सीधे झाँकते हुए मुस्कराए- "स्वर्ग में?"

"और क्या! एक कवित्त सुनाता हूँ, किसी आप जैसे चरवाहे ने लिखा होगा कभी कि स्वर्ग क्या है-

*भेड़िया

अगम बहै दरियाव

कालउ कम्बलु अवनि चट्टू।
छाछहीन भरिहौ दीवड़ पट्टू
रेवड़ पड़ियउ नीलइ झाड़ि।
अवर कि सरगह सिंग निलाड़ि ॥

मतलब, चट्ट पथरीली जमीन पर बिछाकर बैठने के लिए काला कंबल हो। वह आपके पास है ही। पीने के लिए छाछ यानी मट्ठे से भरा हुआ बर्तन हो। वह है ही। रेवड़ हरी-हरी झाड़ियों में चर रहा हो। वह चर ही रहा है। तो यही स्वर्ग है। और क्या स्वर्ग के सींग-पूँछ होती है! सब कुछ जैसे आपके लिए ही लिखा गया है।"

हँसे भूसी-" यानी भगवान जंगल में भटकें तो विपत्ति और भूसी भटकें तो स्वर्ग। वाह महराज ! "

थोड़ी देर बाद निराश स्वर में बोले- "स्वर्ग तो थी दुनिया, लेकिन छत्रधारी जैसे लोग इसे नरक बनाए हुए हैं। कचेहरी में जाकर देखा, 'झूठ' दारोगा बनकर 'सच' को आँख दिखाता है। पैसा उसे कठघरे में बन्द कर देता है... अगर हमें भगवान कहीं मिल जाएँ तो उनसे पूहूँ कि सारे, तोहरे भगवान भये से का फायदा, अगर गरीब-दुखिया के गाढ़े में काम नहीं आते?"

"बड़े-बड़े बुता गए, छत्रधारी भी बुता जाएँगे। तुलसी बाबा कहि गए हैं- जो फरा, सो झरा, जो बरा, सो बुताना।"

"बुताएँगे जरूर, लेकिन इतनी जल्दी नहीं। न खल मरै, न खंडहर गिरै।"

"नहीं, भूसी भगत। खल भी एक दिन मरते ही हैं। खंडहर भी एक दिन गिरते ही हैं। तुम्हें कवि परधान का एक पद सुनाता हूँ, कि कैसे-कैसे लोग बुता गए -

जिनकी दुनिया में चलीं हुकमें
महिमंडल में न अड़ी कहुँ अड़ी
सोने औ चाँदी की कौन कहै
घर में मुक्ता मणि माणिक गाड़ी
भाखें परधान पयान समै
घर के गज बाजि रहे सब ठाढ़ी
चाँदी के बासन गाड़े पड़े
मरे पीपर टाँगी छदाम की हाँड़ी

सोने-चाँदी के बर्तन घर में गड़े पड़े रह जाएँगे, लेकिन मरने पर पानी पीने के लिए पीपल के पेड़ में जो घंट बाँधा जाएगा, वह मिट्टी का ही होगा।"

"बात तो सही है, लेकिन आदमी वक्त रहते समझने को तैयार नहीं होता।"

"जो वक्त से नहीं समझते, उनको बाद में वक्त ही समझाता है।" कहते हैं-

नर तन पाइ के तू अति न करौ ऐ भाय।
अति के करैयन की होत बुरी गति है।

लड़का, लकड़ी का गट्ठर और पलाश के पत्ते लेकर आ गया। "वाह बेटा, वाह!" माठा बाबा लड़के को शाबासी देते हुए उठ खड़े हुए। भूसी उनको जाते देखते रहे और सोचते रहे कि ज्ञान की इतनी बातें करते हैं और गाँव के कोइरी लोगों के खेत पर छत्रधारी का चक बैठवाने के लिए मामा मारीच की तरह छल करने से नहीं चूके। यही बात मुँह पर कह देते तो बोलचाल बन्द हो जाती।

संतोखी निराशा में डूब गए हैं। पस्त हिम्मत। किसी के सामने पड़ने में घबराहट होती है। घर के बाहर नहीं निकलते। सुबह-शाम अँधेरा रहते दिशा-मैदान हो आते हैं। फिर अँधेरी झोंपड़ी में पेट के बल पड़े रहते हैं। उजाले से बचना चाहते हैं।

जाड़े में घुटने गठिया की जकड़ में आ गए। हाथ से धरती का सहारा लिये

बिना उठ नहीं पाते। लाठी के सहारे चलने लगे हैं। उसी समय कोई बता देता कि कोर्ट-कचहरी करने से हाथ कुछ नहीं आने वाला तो आधी जिन्दगी माटी क्यों करते? आसपास कोई नहीं रहता, तब भी कभी उन्हें जोर से हँसने की आवाज सुनाई पड़ती है, कभी बन्दूक दगने की।

संतोखी बहू ने बेटे के पास चिट्ठी भिजवाई थी। बेटे ने पाँच सौ रुपये भेजे और चिट्ठी में लिखा कि अम्मा, आप बप्पा को समझाइए। क्यों प्राण दे रहे हैं? हर जगह छत्रधारी जैसे लोग ही बैठे हैं। कुछ हासिल नहीं होने वाला। आप दोनों लोगों के खाने-भर का पैसा मैं भेज दिया करूँगा।

दुनिया देख चुके पड़ोसियों ने संतोखी बहू को समझाना शुरू किया- नंगा खुदा से बड़ा होता है। संतोखी को समझाओ कि संतोख कर लें। छत्रधारी को ही राजा बन जाने दें। लगता है वे जमीन साथ लेकर जाएँगे।

संतोखी बहू संतोखी के कान तक एक-एक बात पहुँचाती हैं, लेकिन संतोखी का मन संतोख करने को तैयार नहीं हो पाता। यह जबरदस्ती उनके कलेजे में रह-रह कर हूल मारने लगती है।

अगम बहै दरियाव

बेटे की कमाई पर गुजर करना भी उन्हें मंजूर नहीं है।

संतोखी बहू अपने स्तर से संतोखी की हिम्मत बढ़ाने की कोशिश करती हैं। वे चाहती हैं कि संतोखी कुछ कमाकर लाएँ चाहे न लाएँ, पर दस आदमी के बीच उठें-बैठें। हँसें-बोलें। दो आदमी का पेट तो मजदूरी करके वे पाल ही लेंगी।

जाड़े की डेढ़-दो महीने की पस्ती के बाद एक दिन संतोखी बड़े सबेरे उठे। व्हावा, धोया, खाया और लाई चने का झोला कन्धे पर टाँगकर निकल पड़े।

लम्बे समय बाद लोगों ने देखा, मजमा वाले चौराहे पर संतोखी फार* बजा-बजाकर गा रहे हैं-

जेकर नोट वही कै शासन
थाना मा बइठे दुस्सासन
मारैं डाका पीटि के ढोल
गाँव देश के रंगमंच पै
छत्तर नाचें धोती खोल,
हर गंगा!

तूफानी उर्फ तूफान सिंह को अपनी माँ दहबंगा की कद-काठी मिली है। चार हाथ लम्बे, दोहरे बदन पर बन्द गले का काला कोट बहुत जँचता है। तूफानी को लगता है कि अगर चेहरा थोड़ा और भर जाता तो उनका मुखमंडल बिलकुल बाबा साहब जैसा लगने लगता।

कचहरी में उनका तख्ता जिस आम के पेड़ से सटाकर रखा गया है, वहाँ जरूरत पड़ने पर आठ-दस कुर्सियाँ रखने की जगह बन जाती है। उनके बस्ते पर आने वालों में जितनी संख्या मुवक्किलों की होती है, उससे ज्यादा पार्टी कार्यकर्ताओं की होती है। वकालत भी ठीक-ठाक चलने लगी है। दो जूनियर रख लिये हैं, दो मुंशी हैं। कचहरी परिसर में घुसते ही सामने आम के तने पर कील ठोंककर लगाई गई नेम प्लेट दूर से ही ध्यान आकर्षित करती है- एडवोकेट तूफान सिंह, बी.ए., एल.एल.बी. (फौजदारी और सिविल मामलों के एक्सपर्ट)।

* वाद्ययंत्र

यह बहुत अच्छी बात है कि मान्यवर और बहन जी, दोनों उन्हें बहुत मानते हैं। उन्हें जिला को-आर्डिनेटर बनाया है। पास-दूर की हर रैली में वे पहुँचते हैं। पहले तो दूर की रैली में कई लोगों के साथ जाना होता था तो बस के बजाय ट्रक से जाते थे। ट्रक में बस का आधा किराया लगता था। बाकी

आधे से चाय-पानी का काम चल जाता था। अब एक पुरानी एम्बेसडर कार खरीदकर उसी को सफेद रंग से पेंट करा लिया है। खरीदना भी नहीं पड़ा। एक दिन देसी शराब के ठेकेदार राधेलाल की कोठी पर चन्दा लेने गए थे। बाहर निकले तो देखा कोठी के कोने में एक धूल-धूसरित ढाँचा खड़ा है।

पूछा- "सेठ जी, इसे बेचना है।"

"बेचना क्या है, चाहें तो ले जाइए। डेंट-पेंट कराकर चढ़िए। टायर-ट्यूब बदलवाना होगा।"

वही किया। आज सूबे की राजधानी अपनी उसी कार से जा रहे हैं। साथ में पार्टी के जिला अध्यक्ष, एक जूनियर और एक मुंशी। कार की साइड में पार्टी का नीला झंडा लग जाने पर उसकी शान ही और हो जाती है। मोटरसाइकिल पर झंडा लगाने से वह बात नहीं आती।

इधर अम्बेडकर पार्क में 'पेरियार' की मूर्ति लगाने के मुद्दे पर राजनीति गरमाई हुई है। पार्टी मूर्ति लगाने पर अड़ी है और रामवादी पार्टी कह रही है कि रावण लीला करने वाले रामद्रोही की मूर्ति लगी तो उनकी पार्टी समर्थन वापस ले लेगी। तूफानी के पास निर्देश पहुँचा है कि कल सुबह राजधानी में मौजूद रहना है। इसका मतलब कल मूर्ति लग सकती है।

बाबा साहब अम्बेडकर के बारे में तो वे वकालत की पढ़ाई के दौरान जान गए थे, लेकिन महात्मा फुले और पेरियार के बारे में सच पूछिए तो वे अब तक नहीं जानते थे। और जानते कैसे? कभी इनका नाम ही सुनने को नहीं मिला। दर्जा छह, सात और आठ में 'हमारे पूर्वज' नाम की जो किताब चलती थी, उसमें भी राम, कृष्ण, भीष्म, ध्रुव और प्रह्लाद का पाठ तो था, लेकिन इन लोगों का नहीं। पहली बार पार्टी की सरकार बनने पर मान्यवर ने पेरियार मेले का आयोजन किया था लेकिन तब भी पेरियार के बारे में ज्यादा कुछ वे नहीं जान पाए। इधर फिर नाम चर्चा में आया तो उन्हें लगा कि उनके बारे में कुछ जान लेना चाहिए। नहीं तो कार्यकर्ता पूछेंगे तो वे क्या बताएँगे? मान लीजिए मूर्ति स्थापना के समय उनसे भी 'दो शब्द'

बोलने को कहा गया तो क्या बोलेंगे?

जल्दी-जल्दी में जितना पता लग पाया, उसके अनुसार ई.वी. रामास्वामी नायकर, जिन्हें आदर से पेरियार - पूज्य - कहा जाता है, तमिलनाडु के रहने वाले

अगम बहै दरियाव

राजनीतिज्ञ और क्रान्तिकारी विचारों वाले समाज सुधारक थे। वे नास्तिक थे। भगवान का अस्तित्व नहीं मानते थे। उनका मानना था कि ईश्वर को धूर्तों ने बनाया, गुंडों ने चरवाया और मूर्ख उसे पूजते हैं। वे जातिवाद, ऊँच-नीच और छुआछूत के विरोधी थे और जाति प्रथा को जड़ से समाप्त करना चाहते थे। उनका कहना था कि जो धर्म तुम्हें नीच ठहराता है, तुम उसे लात मार दो। सामाजिक परिवर्तन के लिए उन्होंने लम्बे समय तक आन्दोलन चलाया था।

पेरियार के विचारों को जानने के बाद तूफानी को वे अपने सगे लगने लगे। उन्होंने यह भी पता किया कि पेरियार ने तमिल भाषा में एक किताब लिखी, जिसका अंग्रेजी अनुवाद 'रामायण: ए ट्रू रीडिंग' के नाम से हुआ और जिसका हिन्दी अनुवाद उत्तर भारत के पेरियार कहे जाने वाले ललई सिंह यादव ने 'सच्ची रामायण' के नाम से किया है। इस पर सरकार ने रोक लगा दी थी जिसे हाई कोर्ट ने खत्म कर दिया और सरकार पर तीन सौ रुपये हरजाना लगाया था। सुप्रीम कोर्ट ने भी इस आदेश का समर्थन किया था। इधर कई दिनों से तूफानी 'सच्ची रामायण' खोज रहे हैं। पढ़ा तो जाए कि उसमें क्या लिखा है? पर एक भी किताब कहीं मिल नहीं पाई। लौटकर आते हैं तो फिर खोजेंगे। उनका पूरा साहित्य पढ़ना है।

समय से पहुँच गए तो शाम को, नहीं तो सबेरे विद्रोही जी से भी मिलने की कोशिश करेंगे। हो सकता है उनसे ही 'सच्ची रामायण' की जानकारी मिल जाए।

विद्रोही जी अब किसान यूनियन के दफ्तर में रहने लगे हैं। विधायक जी का फ्लैट तो न छोड़ते, लेकिन वहाँ आने वाली भीड़ से परेशान हो गए थे।

देहात से आने वाली भीड़ निबटान के बाद कभी-कभी फ्लश खींचने तक की जरूरत नहीं समझती थी। एक बट्टी लाइफबाय साबुन से वे आराम से साल भर नहाते थे, लेकिन यहाँ साल-भर में तीन बट्टी साबुन चोरी हो गया। गोमती के किनारे से महीने-भर के लिए बबूल की दातून तोड़कर लाते थे। भीड़ आ जाती थी तो एक दिन में खतम कर देती थी। कोई सन्दूक या अलमारी तो थी नहीं कि ताले में बन्द करके रखते। लोग खूँटी पर टँगे झोले से चबेना निकालकर चबा जाते थे। सूखने के लिए धूप में डाला गया लँगोट तक गायब हो जाता था।

किसान यूनियन के लोगों से जान-पहचान बढ़ी तो उन लोगों ने अपने दफ्तर में आकर रहने का न्योता दिया। यूनियन के ऑफिस में पर्चा छपवाने, खबर देने, चिट्ठी लिखने और फोन करने का काम सँभालते हैं। रहने के लिए दफ्तर के आँगन की एक कोठरी मिल गई है। बिजली का हीटर है। बिजली का बिल यहाँ किसी को देना नहीं पड़ता। अक्सर तो बाहर ही खाना-पीना हो जाता है। वक्त-जरूरत कुछ पका भी लेते हैं।

तूफानी इधर एक साल से चिड़ियाघर के सामने बने एक लॉज में ठहरते हैं। चिड़ियाघर के सामने चाय की दुकान चलाने वाले मोहन सिंह ने दुकान के ऊपर ही दूसरी मंजिल पर चार कमरे बनवा दिए हैं- अमन लॉज। पश्चिम के रहने वाले हैं और अपनी बिरादरी के हैं। उन्होंने कहा, "आप महीने-दो महीने में एक बार ही तो आते हैं। हमारे गेस्ट हाउस में ही ठहर जाया करिए। पैसा क्या लेंगे आपसे ? सबेरे की एक चाय भी मेरी ओर से।"

कमरे में एक डबल बेड पड़ा है जिस पर आड़े-तिरछे होकर चार लोग अच्छे से अँट जाते हैं। जरूरत पड़े तो चार-पाँच लोग फर्श पर भी सो सकते हैं।

सबेरे चाय पीते-पीते तूफानी की नजर अखबार के पन्ने पर पड़ी तो उनका जी धक्क से हो गया। मोटे अक्षरों में शीर्षक था-

'पेरियार प्रतिमा लगाने का कोई इरादा नहीं'

मुख्यमंत्री की ओर से कहा गया था कि सरकार का पेरियार की प्रतिमा लगाने का कोई इरादा नहीं है। यह गलतफहमी मीडिया की वजह से हुई है।

सबका मन खट्टा हो गया। इतनी निराशा छाई कि तूफानी बिना विद्रोही जी से मिले वापस लौट पड़े। गाड़ी में सब चुप बैठे हैं।

तूफानी को दर्जा आठ में पढ़ा कबीर का एक दोहा याद आ रहा है-

चींटी चाउर लै चली, बीच में मिल गई दाल।
कह कबीर दोउ ना मिलै, एक ले दूजी डार।

मुँह तो चींटी का एक ही है। चावल ले जाना हो तो दाल छोड़नी पड़ेगी, दाल ले जानी हो तो चावल।

विचारधारा और कुर्सी दोनों में से एक को बचाने के लिए दूसरे की बलि देनी थी। वे तय नहीं कर पा रहे हैं कि उनकी नेता ने सही किया या गलत ?

तारीख नोट करके रामलाल अदालत से बाहर निकले तो सोचा कि रामनेवाज मुंशी से मिलते चलें। रामनेवाज उनसे नाराज हैं। हर बार मिलने पर अपनी नाराजगी जाहिर करते हैं। उनकी शिकायत है कि जब उन्होंने हाई कोर्ट से स्टे लेने के लिए

अगम बहै दरियाव

रविंदर बाबू के पास भेजा था तो वे लोग भास्कर तिवारी के पास क्यों चले गए? शमलाल हर बार बताते हैं कि ऐसा रिक्शेवाले की धोखाधड़ी के कारण हुआ, लेकिन रामनेवाज कुछ सुनने के लिए तैयार नहीं होते। रामलाल कहते हैं- "वहाँ तो जो होना था हो गया। अब यह बताइए कि यहाँ से कैसे पिंड छूटेगा।"

"रविंदर बाबू के पास गए होते तो यहाँ आकर धूल फाँकने की जरूरत ही न पड़ती। वे खाली स्टे कराकर चुप थोड़े बैठ जाते! बैंक से लोन की फाइल मँगवाकर इन्धक जमीन को रिलीज कराने का आदेश करा देते।"

यह जानते हुए कि आज भी मिलते ही रामनेवाज अपनी नाराजगी जाहिर किए बिना नहीं मानेंगे, रामलाल बिना उन्हें चाय पिलाए वापस नहीं जा सकते। वे जानते हैं कि ऐसे गुनी आदमी से मेल-जोल बनाए रखेंगे तो कभी भी कोई काम का पॉइंट मिल सकता है।

रामलाल के पड़ोस के गाँव के एक पंडित जी बहुत परेशान थे। एक बार गाँव में बाढ़ आई और दलितों के घर ढह गए तो पंडित जी ने अपने हलवाहे और उसके दो भाइयों को अपने बाग में झोंपड़ी बनाने की इजाजत दे दी। माना जा रहा था कि बाढ़ उतर जाने के बाद वे अपने टोले में वापस चले जाएँगे। लेकिन वापस जाना टलता रहा और धीरे-धीरे बाग में चार से बढ़कर दस झोंपड़ियाँ हो गईं। तब दलितों ने बाग छोड़कर जाने से इनकार कर दिया और गरमागरमी बढ़ी तो उनकी हलवाही भी छोड़ दी।

पंडित जी ने बाग खाली कराने के लिए मुकदमा दायर कर दिया, लेकिन वकीलों की राय थी कि ऐसा करा पाना सम्भव नहीं होगा, क्योंकि जिस जमीन पर कोई दलित काबिज है उसे हटाया नहीं जा सकता। लेकिन रामनेवाज ने कहा कि अगर आप पाँच बोतल अंग्रेजी दारू दे जाएँ तो उसके एक महीने बाद वे ऐसा नुक्ता बता देंगे जिससे उन्हें सफलता मिल जाएगी।

दारू पाने के एक महीने बाद रामनेवाज ने पंडित जी को हाई कोर्ट की एक रूलिंग दी जिसमें होल्ड किया गया था कि उपरोक्त प्रतिबन्ध बाग की आराजी पर लागू नहीं होगा।

पंडित जी का बाग खाली हुआ तो उन्होंने फिर रामनेवाज को पाँच बोतलें लाकर दीं।

रामनेवाज के बस्ते तक पहुँचने के पहले ही रामलाल को संतोखी मिल

गए। कुशल-क्षेम की बात चली तो रामलाल ने बताया कि छह साल से सिर्फ तारीख ही पड़ रही है। मुल्जिम जमानत पर बाहर हैं और ट्रैक्टर थाने में सड़ रहा है। छूटने की कोई राह सुझाइए, भइया।

"अब उसे छुड़ाने का क्या फायदा? जंग खाया लोहे का ढांचा भर बचा होगा।"

"ट्रैक्टर की नहीं, अपने छूटने की राह पूछ रहा है। अब तो पेशी के नाम पर जूड़ी चढ़ जाती है।"

"हम क्या राह सुझाएँगे चौधरी ! हम तो खुद ही तीस साल से लड़ते-लड़ते पस्त हो गए हैं। हर जगह से जीतकर हारे हुए हैं। इस भरी दुनिया में कमजोर के साथ खड़ा होने वाला कोई नहीं है। पूरी दुनिया में अन्याय का राज चल रहा है।" फिर आगे बढ़ते हुए कहते हैं-" जाइए। मेरी बात से निराश होने की जरूरत नहीं है। डटे रहिए।
जब तक स्वाँसा, तब तक आशा।"

संतोखी दस बजे रात वाली गाड़ी से उतरते हैं और अँधेरी सड़क पर गाते हुए आगे बढ़ते हैं।

ई कानून लुवट्ठे जाय।

पुलिस प्रशासन भट्ठे जाय ॥
निमरा कै केहु ना सुनवइया।
चाहे संसद तक चिल्लाय,
हर गंगा ॥

उसी ट्रेन से माठा बाबा भी उतरे हैं। गए थे हाइड्रोसील का ऑपरेशन कराने के लिए। उसका आकार इतना विशाल हो गया है कि चलते समय दोनों जाँघों पर दाएँ-बाएँ डोलता रहता है। ऑपरेशन की तारीख दो दिन बाद की मिली है। संतोखी की आवाज पहचानकर पूछते हैं- "कौन? संतोखी! "

"हाँ बाबा, पायलागी।"

"जियत रहा। जियत रहा। का गावत हो?"

"का गावैं बाबा? अब रोवै-गावै मा हमारे लिए कौनों फरक तौ रहि नहीं गवा। बाकी यही गा रहे हैं कि इतने दिन लड़ने के बाद इस कायदा-कानून से हमें क्या मिला? यह पुलिस प्रशासन गरीबों की रक्षा के लिए नहीं, उनका मांस नोचकर खाने के लिए है। यह सब हमारे ठेंगे पर।"

"बात तो सही कहते हो, संतोखी।"

अगम बहै दरियाव

"हमारे लिए सारे रास्ते बन्द हो गए, बाबा। अब हम कैसे जिएँ?"

"सारे रास्ते तो कभी बन्द नहीं होते, संतोखी।"

"तो क्या रास्ता है, बाबा? आप ही बताइए।"

"रास्ता तो क्या बताऊँगा, एक किस्सा सुना देता हूँ। सभी यह किस्सा जानते हैं।"

थोड़ा रुककर बाबा सुनाना शुरू करते हैं-"समुद्र के किनारे टिटिहरी ने अंडे

दिए थे। एक दिन समुद्र की लहर में उसके अंडे बह गए। टिटिहरी को संतोष कर लेना चाहिए था। लेकिन वह चुप नहीं बैठी। उसने सारे पक्षियों को बुलाकर अपना दुखड़ा सुनाया। सबने गरुड़ पर दबाव बनाया कि वे विष्णु के वाहन हैं। विष्णु से कहकर समुद्र पर दबाव बनावें और टिटिहरी के अंडे वापस दिलावें। विष्णु को ऐसा करना पड़ा। उन्होंने समुद्र पर दबाव बनाकर टिटिहरी के अंडे वापस दिलाए।"

थोड़ी देर तक दोनों लोग चुप रहे।

"क्या समझे?"

"मेरी बुद्धि इतनी दूर तक नहीं तैर पा रही है, बाबा। दुख से कुंद हो गई है।"

बाबा ने आवाज धीमी करके कहा- "जब वे नियम-कानून नहीं मान रहे हैं

तो तुम्हीं क्यों मानो?"

"लेकिन करें क्या?"

"जंगू का नाम सुना है?" बाबा फुसफुसाए।

"हाँ, बाबा। गजाधर का बेटा!"

"वह पूरे इलाके के गरीब-गुरबों को न्याय बाँट रहा है कि नहीं? आततायियों को सजा दे रहा है कि नहीं?"

"दे रहा है, बाबा।"

"तो तुम्हें नहीं देगा? छत्रधारी के लोगों ने ही उसे लँगड़ा किया। उसके बाप की जान ली। उसे गाँव से भागने पर मजबूर किया। उसे भूल गया होगा?"

"नहीं बाबा। सही कह रहे हैं।"

"जाओ, खोजकर उससे मिलो। अब वही तुम्हें न्याय देगा। लेकिन देखो मेरा नाम कहीं नहीं आना चाहिए।"

पहलवान थककर भोर में लौटे और ओसारे में बिछी नंगी चारपाई पर आड़े-तिरछे लेट गए।

घुटने तक कीचड़ में सने होने के कारण पैरों को जमीन पर ही टिके रहने दिया।

धान लगाने के लिए खेत में पानी भरना जरूरी था। बिजली का रोस्टर रात दस बजे से सुबह छह बजे का था। बिजली कई बार आई गई। चली जाती तो उसके आने का इन्तजार करते। आ जाती तो खेत से ट्यूबवेल पर आकर स्टार्टर का बटन दबाना पड़ता। फिर खेत में जाते। यही आना-जाना रात-भर लगा रहा। आखिरी बार चार बजे गई तो फिर लौटकर नहीं आई। कुछ देर तक इन्तजार करने के बाद वे घर लौट आए। पसीने से लथपथ बनियान निकालकर निचोड़ा और उसी से छाती के श्वेत-श्याम बाल रगड़कर खुजलाने लगे। छाती के बाल घने तो थे ही, सिर के बालों की तरह लम्बे भी थे। जब गीले रहते थे तो इन्हें रगड़कर खुजलाना बहुत सुकून देता था। चारपाई पर तो यह सोचकर बैठे थे कि बीड़ी पी लें तो हाथ-पैर में लगा कीचड़ धोएँ, लेकिन आँखों में इतनी नींद भरी थी कि खटिया पर पड़े तो कब आँख लग गई, पता ही नहीं चला।

लगता था कि इस साल बरसात ही नहीं होगी। आषाढ़ बीतने वाला था और आसमान के किसी कोने में बादल का एक टुकड़ा तक नहीं दिख रहा था। गर्मी से जीव-जन्तु, पशु-पक्षी सब बेहाल थे। तभी चार दिन पहले शाम को पूरब से काले बादलों के पहाड़ गरजते-चमकते आए और सारे आसमान पर छा गए। रंग बदलकर भूरे हुए और सारी रात झमाझम पानी बरसाते रहे। दुनिया निहाल हो गई। सब सारी रात बरसते पानी का संगीत सुनते रहे। मेढकों ने आधी रात से ही गाना शुरू कर दिया-बीगों-बीगों! टर्र-टर्र !

सबेरे सब कुछ जलमय था। ताल तलैया आधी भर गई थीं। जिन खेतों की मेंड़ सलामत थी, उनमें लबालब पानी था। जिनकी मेंड़ें टूट गई थीं, पानी बह गया था, उनके मालिक पछता रहे थे। दोपहर तक बादल गायब हो गए और गर्मी से तपी धरती शाम होते-होते सारा पानी पी गई। पहलवान की धान की बेरन तैयार थी। अगली बारिश पता नहीं कब हो, इसलिए जरूरी था कि ट्यूबवेल से खेत भरकर धान लगा दिया जाए। बिजली आने का रोस्टर रात का था तो मजबूरन रात-भर जगना पड़ा।

पहलवानिन ने किवाड़ खोलकर बाहर झाँका। देखा, पहलवान की एक मुट्ठी में बीड़ी का बंडल है। खर्राटे तेज हैं। मूँछ के बाल आती-जाती साँसों से हिल रहे हैं। सूखे कीचड़ के छोटे-छोटे झुनझुने घुटने के नीचे पैर के रोयों से लटक रहे हैं। चारपाई के बगल में कीचड़ सना फावड़ा रखा है।

सामने से पड़ोसी खेलावन आते दिखे तो पहलवानिन दुविधा में पड़ गईं कि जगा दें या सो लेने दें।

अगम बहै दरियाव

तब तक खेलावन की आवाज कान में पड़ी "बधाई हो, भौजी। भैया से कहिए, अब नोट रखने के लिए तिजोरी खरीद लें।"

पहलवान की नींद इतनी गाढ़ी थी कि उन्हें लगा, खेलावन की आवाज सपने में सुन रहे हैं।

"आज सबेरे-सबेरे कहीं गाँजा-वाँजा पी लिये हैं क्या, अजय के बाबू?" पहलबानिन ओसारे से निकलते हुए बोलीं- "देश-दुनिया में सूखा पड़ने के लच्छन हैं। ऐसे दुर्दिन में तिजोरी?"

" आपके दुर्दिन अब गए भौजी।" मुँह से दातून निकालकर एक तरफ थूकने के बाद वे बोले-"मुँह मीठा कराइए।"

"पहले बात तो बताइए। बुझौवल काहे बुझा रहे हैं? क्या गन्ने का बकाया मिलने वाला है?"

"बकाया तो साल-दो साल में मिल जाय तो गनीमत।"

"तो क्या नहर में पानी आ गया?"

"उसका भी सपना मत देखिए।"

"तो क्या बिजली की सप्लाई आठ घंटे से बढ़कर बारह घंटे हो गई?"

"अरे नहीं, भौजी। इन सबकी उम्मीद मत करिए।"

"तभी तो कहती हूँ कि जरूर कहीं से गाँजा पीकर आए हैं जो तिजोरी खरीदने की सलाह दे रहे हैं।"

"अपने जोगी इंजीनियरिंग की प्रवेश-परीक्षा दिए थे न, उसमें चुन लिये गए।"

"कैसे पता चला?" पहलवानिन अपनी खुशी छिपाते हुए थोड़ी देर तक खेलावन का मुँह देखती रहीं, फिर ओसारे की ओर मुँह करके बोलीं-"अरे, जोगी के बप्पा! तनी सुना, अजय के बाबू का खबर लाए हैं?"

पहलवान आँखें मींजते हुए बाहर निकल आए।

"रात ही तो रेजल्ट आया। अजय के पास अपने जोगी का रोल नम्बर था। उसी ने लिस्ट देखकर बताया।"

सुनकर पहलवान के चेहरे पर खुशी झलकी।

बोले-"मुँह धो लीजिए तो चाय पिलाकर मुँह मीठा कराते हैं।"

पप्पू को नीम के पेड़ के नीचे चारपाई बिछाने के लिए आवाज देकर पत्नी से बोले-" बाल्टी ले आइए तो भैंस लगा दें।"

चाय पीते हुए खेलावन बोलते रहे-" आज के जमाने में जब गाँव के लड़के आवारा और पियक्कड़ निकल रहे हैं, जोगी ने पहले ही प्रयास में इंट्रेंस निकाल लिया, यह मामूली बात थोड़े है।"

उन्होंने आसपास के कई लड़कों को याद किया जो माँ-बाप के सपनों को पूरा नहीं कर पाए। फिर अपनी निराशा व्यक्त की- "हम भी तो चाहते थे कि हमारे अजय बी.ए., एम.ए. करते, लेकिन वे खुद ही धनुहा-बान रख दिए तो किसे दोष दिया जाय ! "

"आप तो उसे कहीं-न-कहीं हिल्ले से लगा ही देंगे।" पहलवान ने तसल्ली दी-"सुना, सिपाही की भर्ती निकलने वाली थी।"

"अभी निकली तो नहीं, लेकिन हल्ला तेज है। पाँच हजार भर्तियाँ हैं। पी.ए.सी. में अलग डेढ़-दो हजार की वैकेंसी है। निकले तो कुछ जुगाड़ खोजा जाय।"

"जहाँ देखिए, वहीं सुबह-सुबह सड़क किनारे लड़कों के झुंड दौड़ का अभ्यास करते नजर आते हैं। जिसके घर में बेरोजगार जवान लड़का है, उसने हर मंगल हनुमानजी को परसाद चढ़ाना शुरू कर दिया है।"

"हनुमानजी के वश का है कि सेलेक्शन करवा दें? सिर्फ गांधी बाबा की चलेगी। अभी वैकेंसी नहीं निकली और दस दिन के अन्दर घूस की रकम एक लाख से बढ़कर डेढ़ लाख हो गई। खेती की जमीन का रेट माटी के भाव हो गया। जिसे देखिए, वही बेचने को तैयार और खरीदार कहीं ढूँढ़े नहीं मिल रहे।"

चाय पीकर खेलावन चले गए तो पहलवान दोनों परानी ने एक-दूसरे को तसल्ली दी- "ऊपर वाले की मेहरबानी जो इतना होनहार लड़का अपने घर में पैदा हुआ। खेलावन तो नौकरी कर रहे हैं। तीस दिन बीतते ही लक्ष्मी

घर में आ जाती हैं। महीने के महीने। न उसमें सूखे का डर, न बाढ़ का। घूस देकर भर्ती करा देंगे। हमें करना पड़ता तो कहाँ से करते? दस हजार भी जुटाना पहाड़ हो जाता।"

थोड़ी देर में सारे गाँव में खबर हो गई। लोग खुशी जताने आने लगे तो पहलवानिन ने पप्पू को भेजकर एक किलो चीनी मँगवाई। पहलवान से बोलीं- " आज दूध बेचने के लिए न ले जाइए। जो भी दरवाजे पर आए, उसे चाय तो पिला ही दिया जाय।"

अगले तीन दिन पहलवानिन किसी-न-किसी काम के बहाने गाँव-भर में घूमीं और औरतों की बोली की मिठास व दिल की जलन की थाह लेकर संतुष्ट होती रहीं।

चिन्ता व्यापी दस दिन बाद जब जोगी इलाहाबाद से आए और बताया कि साल-भर की फीस साठ हजार एडमीशन के समय ही जमा करनी होगी। एडमीशन फीस पाँच हजार और रहने-खाने का खर्च इसके अलावा।

चारों साल इतनी रकम लगेगी? कहाँ से आएगी इतनी रकम? अगर हम साल-भर का पैदा किया हुआ सारा अनाज बेच दें तो भी लागत घटाने के बाद 60 हजार रुपये बच पाना कठिन है।

"कोई उपाय सोचिए।"

" उपाय यही है कि जोगी इंजीनियरिंग पढ़ने का सपना भूल जाएँ। बी.एस-सी. करके कहीं मास्टरी खोजें।"

"जब पढ़ाने की हिम्मत नहीं थी तो इम्तहान देने के लिए क्यों ललकारे?"

"मैं तो यही जानता था कि साल भर में पाँच-छह हजार फीस लगती है। पहले इतनी ही लगती थी। अब इतनी बढ़ गई, यह कहाँ पता था?"

"लेकिन जब बेटे ने पास करके दिखा दिया तो हम पढ़ाने से कैसे पिछड़ सकते हैं!"

"तो क्या खेत बेचकर पढ़ाएँ?"

"खेत नहीं, मेरे गहने बेच दीजिए। अब गहने पहनने की उमर ही कहाँ है मेरी? शादी-ब्याह में कभी-कभी पहन लेते थे। नहीं पहनेंगे तो क्या छोटे हो जाएँगे?"

पहलवान बिना कुछ बोले उनके सामने से हट गए। पहलवानिन दिमाग दौड़ाने लगीं। गाढ़े समय में नाते-रिश्तेदार ही काम आते हैं। जोगी के मामा जोगी की पढ़ाई-लिखाई में रुचि लेते हैं। अच्छा नम्बर लाने के लिए ललकारते रहते हैं। अभी तीन महीना पहले इंटर की परीक्षा में जोगी फर्स्ट पास हुए तो इतने खुश हुए कि आकर सबको मिठाई खिला गए। इंटर कॉलेज में पढ़ाते हैं।

जोगी की माँ ने जोगी को कहा- "जाकर मामा को यह खुशखबरी दो और उनसे यह भी कहो कि फीस ज्यादा होने के कारण घरवाले इंजीनियरिंग पढ़ाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। क्या करूँ?"

मामा ने अगले दिन बैंक से दस हजार निकालकर देते हुए कहा- " पढ़ना हर हाल में है। हिम्मत न हारो।"

फिर पहलवानिन ने जोगी को पहलवान की बुआ के घर भेजा। पहलवान के फुफेरे भाई तीरथ भी अच्छे आदमी हैं। तीरथ ने भी पाँच हजार रुपये यह कहते हुए दिए कि लौटाने की जरूरत नहीं है। जब इंजीनियर बन जाना, कमाने-धमाने लगना तो किसी जरूरतमन्द की मदद कर देना। समझना मुझे वापस कर दिया।

बैठकर हिसाब लगाया गया। अगर क्वार में नई फसल तैयार होने तक के लिए खाने-भर का अनाज रखकर घर का सारा अनाज बेच दिया जाए तो बीस-बाईस हजार रुपये मिल जाएँगे।

दूसरे रास्ते ढूँढ़े गए। छह हजार का बाँस बेचा गया। आठ हजार रुपये में प्रिय गाय लछिमिनिया को बेचना पड़ा जो महीने भर में बच्चा देने वाली थी।

विद्रोही बहू को पता लगा कि फीस भरने के लिए बेटा पतोहू के गहने बेचने जा रहा है तो वे एक कपड़े की थैली लाईं और पहलवान के हाथ में देते हुए बोलीं- "देखो, इसमें कितना है?" पहलवान ने थैली को एक थाली में उलटकर

गिनना शुरू किया। मुड़े-तुड़े नोट, अठन्नी-चवन्नी। कुछ वे सिक्के जो अब चलन में नहीं थे। दो चूरन वाले नोट भी। सारी रकम सात हजार छह सौ बयालीस रुपये हुई।

रात में पहलवानिन ने आश्वस्त किया- अब परेशान न हों। अनाज बेचने के बाद जो थोड़ा-बहुत कम पड़ेगा, वे पूरा कर लेंगी।

पहलवान चुप हो गए। औरतें घर के मुखिया से छिपाकर कुछ-न-कुछ चोरौधा रकम रखती हैं। उसी की ओर संकेत कर रही होंगी। वही चोरौधा रकम उनकी माँ ने दिया। वही ये देंगी। डाँवाँडोल गृहस्थी वाले परिवार में ऐसे ही गाढ़े वक्त पर स्त्रियाँ अन्नपूर्णा की भूमिका निभाती आ रही हैं।

कहाँ खोजें जंगू को?

"क्यों मिलना चाहते हो जंगू से? उसके गैंग में भर्ती होना है क्या?" पूछने वाला मुस्कराता है।

सुनते हैं बालू ठेकेदार से कनेक्शन है जंगू का। ठेकेदार का मेठ माधोसिंह बालू के ट्रकों से जंगू के हिस्से की रॉयल्टी भी वसूलता है। संतोखी की बात सुनकर माधोसिंह हँसने लगा -"पुलिस तो अभी तक जंगू की परछाईं भी नहीं पा सकी। अब तुम निकले हो जंगू को खोजने? वही निहाद है, बाँड़ी बिस्तुइया बाघ से नजारा मारै।"

इस बीच छत्रधारी ने फिर उनके खेत में धान लगा लिया।

संतोखी आज पूरे दिन बेचैन रहे। नहर की पुलिया से बाजार के बीच घूमते रहे। थकने पर कभी पुलिया पर बैठ जाते, कभी गुड़ मंडी के कुएँ की जगत पर। हर रोबीले चेहरे को घूरकर देखते और पहचानने की कोशिश करते।

शाम को निराश-उदास घर लौट रहे हैं। पूरब में पहाड़ी के ऊपर सोने के थाल जैसा पूर्णिमा का चाँद उदित हुआ है। वे रुककर थोड़ी देर टकटकी लगाकर चाँद को देखते हैं, फिर उसी दिशा में चल पड़ते हैं। छाती-भर पानी में घुसकर नदी पार करते हैं और आगे बढ़ जाते हैं।

वर्षा ऋतु में जंगल हरा-भरा हो गया है। गर्मी में नंगी हो चुकी झाड़ियों में नई पत्तियाँ निकल आई हैं। पथरीले रास्ते पर लाठी ठकठकाते नीमअँधेरे में वे इंसाफ की तलाश में जंगल में धँसते जा रहे हैं। जंगली लताएँ कदम-कदम पर उनके पैर

अगम बहै दरियाव

हाम ले रही हैं। रात गहराने के साथ उनकी कातर पुकार बियाबान में गूंजने लगी-

जंगू रा-जा ऽऽऽ
इंसाफ दो ऽऽऽ
जंगल के रा-जाऽऽऽ

इंसाफ दो ऽऽऽ

सबेरे बनराज को साथ लेकर जब संतोखी बहू उन्हें खोजते हुए जंगल में घुसीं हो संतोखी एक गूलर के पेड़ की जड़ के पास सोए पड़े मिले। उनके कपड़े अभी तक गीले थे और कुर्ता कँटीली झाड़ियों में फँसकर कई जगह फट चुका था। गूलर के पके फल रह-रहकर उनके शरीर पर टपक रहे थे। एक काली जंगली बिल्ली अपने तीन बच्चों को लेकर थोड़ी दूर पर बैठी थी। वह अपने बच्चों को 'आदमी' दिखाने ले आई थी।

पत्नी सहारा देते हुए उन्हें लेकर घर आईं।

एक हफ्ते बाद। संतोखी नीम के नीचे सोए हैं। घुप्प अँधेरा है। चुहचुइया की सीटीनुमा तेज झनकार हवा में गूँज रही है। कहते हैं, चुहचुइया झनकारना शुरू करती है तो वर्षा बुलाकर ही चुप होती है।

मच्छरों से बचने के लिए संतोखी ने सिर से पैर तक धोती ओढ़ ली है।

एक डबल बैरल बन्दूक की नाल उनके चेहरे से धोती पलट देती है।

"संतोखी बाबा!" एक भारी आवाज।

"कौन?" झझककर उठते हैं संतोखी।

"हम हैं बाबा, जंगू।"

"जंगू?" संतोखी झट चारपाई से उतरकर खड़े हो जाते हैं। उनकी नजर कुछ दूर पर अँधेरे में खड़ी दो अन्य मूर्तियों पर भी पड़ती है।

"बैठो बाबा, बैठो।"

"आप बैठो, भइया।"

जंगू पायताने की ओर पाटी पर बैठ गया तो संतोखी भी दूसरी ओर की पाटी पर बैठे।

"हम बहुत दिन से आपको खोज रहे थे, बाबू।"

"आप हमें कहाँ पाते? इसलिए पता चला तो मैं खुद आ गया। बताइए।"

"बाबू, छत्रधारी का अहंकार पहाड़ से ऊँचा हो गया है। जिसने इनके साथ नेकी की, उसे इन्होंने बदी दिया। आपके बप्पा गजाधर भइया पन्द्रह-सोलह साल इनका भट्ठा सँभाले। बदले में क्या दिया? धोखा! उनकी जान भी ले ली और उनके परिवार को गाँव से खदेड़ भी दिया। हमारा खेत चार सौ बीसी से हड़पा। हम तीस साल तक लड़े। हर अदालत से जीते। वै हर अदालत से हारे। अदालत ने डुग्गी पिटवाकर हमारा कब्जा बहाल किया, लेकिन उनकी नंगई के आगे मेरी हर जीत बाँझ हो गई। मेरी बोई फसल उलट दिया। इनका भतीजा कहता है कि बाँसकोट हाई कोट से ऊपर होता है।"

"तो आपको बाँसकोट से कब्जा दिलाएँगे। अब सोइए। जोहार।" जंगू अँधेरे में गायब हो गया तो संतोखी बहू पास आ गईं।

"तुम कब आईं?"

"आप चौंककर जंगू का नाम लिये तो मेरी आँख खुल गई। आकर सुनने लगी। अब पछता रही हूँ कि उसको खाने के लिए भी नहीं पूछा। एक मोटी रोटी बची थी।"

"तब याद नहीं आई तो अब पछताकर क्या करोगी?"

"याद तो आई, लेकिन देते किसमें? थाली उसे छुआ नहीं सकते थे और हाथ पर देते हुए अच्छा न लगता।"

संतोखी गुर्राए-"जो मुँह में आता है, गचर-गचर बोल देती हो। दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच गई, तुम जहाँ की तहाँ रह गईं।"

फिर चेतावनी के स्वर में कहा- "खबरदार जो किसी से साँस ली!"

"हमको क्या जरूरत है?"

छत्रधारी के दरवाजे पर जंगू की चिट्ठी मिली। प्लास्टिक की थैली में रखी गई थी। रात कोई फेंक गया। सबेरे कहाइन बर्तन धोने आई तो उसने देखा।

दो दिन तक असमंजस में रहने के बाद छत्रधारी ने उसे टोले के मानिंद लोगों के सामने पेश किया। उनके दालान में बैठकर विचार-विमर्श हो रहा है। सबके चेहरे पर तनाव है। चिट्ठी एक हाथ से दूसरे हाथ में जा रही है। एक लाइन की चिट्ठी---

'सुधर जाओ नहीं तो अंजाम बुरा होगा।'

अगम बहै दरियाव

पहले इल्जाम लिखा था। उसको काटकर अंजाम बनाया गया है। नीचे

मुहर लगी है- जन सेवक- जंगबहादुर ।

" अंजाम? क्या मतलब? डकैती डालेगा या पैर तोड़ेगा?"

संतोखी का नाम नहीं है, लेकिन साफ है कि इशारा उसी तरफ है।

"चिट्ठी यहाँ तक पहुँची कैसे? कोई बाहरी आदमी आधा गाँव पार करके यहाँ तक आता तो किसी-न-किसी की नजर जरूर पड़ती। इसका मतलब जंगू का आदमी गाँव में ही है। सबसे खतरनाक बात तो यही है। वह भेदिया कौन है?"

"कोर्ट के आदेश के बाद कब्जा दे देने में कोई बेइज्जती नहीं थी, लेकिन इस हरामजादे की चिट्ठी के बाद तो बेइज्जती ही बेइज्जती है।"

"क्या पता था कि मामला ऐसा मोड़ ले लेगा।"

"जो भी मोड़ ले, मुझसे उस चमरपिल्ली के सामने सरेंडर करने को मत कहिए।"

"सरेंडर करने को कौन कह रहा है! उसी का तो रास्ता खोजना है कि सरेंडर भी न करना पड़े और संकट भी टल जाए। शत्रु-पक्ष प्रबल है, इसलिए बहादुरी के साथ पीछे हटने में ही बहादुरी है। सुलह-सपाटे का रास्ता निकालकर खतरे को टाला जाय।"

"जंगुआ से सुलह की बात कहाँ आती है?"

"जंगुआ से नहीं, संतोखिया से।"

"वह अब सुलह क्यों करेगा? कोर्ट से जीत चुका है।"

"बुलाकर पुचकारा जाय कि भाई हम भी लड़ते-लड़ते थक गए, तुम भी थक गए। हम तुम्हारे ठाकुर, तुम हमारी परजा। न तुम हारे, न हम जीते। आओ सुलह कर लेते हैं।"

"किस बात की सुलह?"

"उससे कहा जाएगा कि ग्यारह रुपया नजराना लेकर पैरों पर झुक जाओ। उसी से उऋण कर देंगे। मूल-ब्याज सब माफ। शिकवा-शिकायत खतम।"

"मैं तो नहीं कहने जाऊँगा उससे यह सब।"

"आप क्यों कहेंगे? उसे यहीं बुलाकर हम लोग कहेंगे। फिर हम उसी के सामने आपको मनाएँगे। कहेंगे कि आपकी परजा है। दरवाजे पर आया है। आपस की लड़ाई शोभा नहीं देती। मान जाइए। आप मान जाइएगा। इलाके में प्रचारित कर दिया जाएगा कि संतोखी ने जुरमाना भरकर माफी माँग ली। झगड़ा खतम।"

"देखो भाई, गोली-बन्दूक जान ले सकती है, लेकिन जान बचा नहीं सकती।

अहं अच्छा है, लेकिन उतना ही जितने से दबदबा बना रहे। बोझ बन जाने पर तो साँप भी केंचुल छोड़कर भाग खड़ा होता है। अहंकार भी केंचुल है।"

"जुग-जमाना बदल चुका है। इस बात को मान लेने में ही भलाई है।"

"सरकार से तो लड़ सकते हैं, लेकिन डाकू से कैसे लड़ेंगे?"

छत्रधारी अपने को कमजोर नहीं दिखाना चाहते। नहीं तो अभी यहाँ से निकलने के बाद यही लोग बात बनाना शुरू कर देंगे। वे कहते हैं- "बेटे से भी पूछना पड़ेगा कि क्या करना ठीक रहेगा। मैं आज उसके पास यह चिट्ठी भेजवाता हूँ। रही बात डाकू से मुकाबला करने की तो टोले में मेरी बन्दूक शामिल करके पाँच बन्दूकें हैं। इसी चिट्ठी के आधार पर मैं एक राइफल का लाइसेंस भी ले लेता हूँ। सब लोग एक होकर साथ दीजिए। पहली बात तो यह कि जहाँ इतने असलहे हैं, वहाँ कोई बदमाश आने की

हिम्मत ही नहीं करेगा। और अगर रात-बिरात आता है तो मुकाबला किया जाएगा। कारतूस खतम हो तो खरीद लीजिए। उसकी कीमत मुझसे लीजिए।"

तय हुआ कि जंगू की चिट्ठी और इस मीटिंग की बात बाहर नहीं जानी चाहिए। लेकिन अगले दिन ही पूरे गाँव को पता चल गया। छत्रधारी को भरोसा नहीं है कि जंगू आ गया तो टोले के लोग बन्दूक लेकर दौड़ ही पड़ेंगे। उनका मानना है कि जितनी गई-गुजरी जाति उनकी है, उतनी कोई दूसरी नहीं। डरपोक हैं सब। चार साल से तो बन्दूक की नाल नहीं साफ किए होंगे।

इन्द्राणी हाउस की दूसरी मंजिल बनकर तैयार है। अमेरिका-इराक युद्ध में अमेरिका के दबदबे से वे इतने प्रभावित हुए हैं कि अपने घर का नाम बदलकर 'ह्वाइट हाउस' रख दिया है। जान-माल की हिफाजत को ध्यान में रखते हुए अब वे नीचे के बजाय ऊपर बनी कोठरी में सोने लगे हैं। कोठरी की दोनों खिड़कियों के पल्ले उखड़वाकर, ईंट की चिनाई कराकर उन्हें बन्द करवा दिया है। पिछवाड़े को जो पतला रास्ता जाता था, जिससे होकर घर की महिलाएँ दिशा-मैदान के लिए जाती थीं, उसे काँटेदार झाँखर से रुँधवा दिया है। अब उधर से रात-बिरात किसी का आना सम्भव नहीं है। सोने की कोठरी में माइक फिट करा लिया है। उसका भोंपू नीम के पेड़ पर काफी ऊँचाई पर बँधवाया है। माइक का स्टैंड ठीक अपने पलंग के सिरहाने रखवाया है। खतरा होने पर लेटे-लेटे भी गोहार लगा सकते हैं-दौड़ो गाँव वालो, जंगू आया!

एक रात माइक की बैटरी ऑफ करना भूल गए तो उनका खर्राटा पूरा गाँव सुनता रहा-

फोंय-फुस्स फोंय ! फोंय-फुस्स-फोंय!

अगम बहै दरियाव

जब लछिमिनिया ने रँभाकर अपने लौटने की सूचना दी तो पप्पू की अम्मा भीतर रसोई लीप रही थीं। लछिमिनिया के स्वागत में भैंस और बछिया भी रँभाई।

घर से थोड़ी दूरी पर थी, तभी उसने झटका देकर पगहा छुड़ा लिया और दौड़ते हुए जाकर अपने खूँटे पर खड़ी हुई। आज उसके हौदे में भीतर की ओर से कजरी भैंस बँधी थी। कजरी की आँखों में स्वागत का भाव था, लेकिन लछिमिनिया ने थूथन मार-मारकर उसका मुँह हौदी से बाहर कर दिया और खाली हौदी चाटने लगी।

मौका पाकर महीने-भर का चितकबरा बछड़ा उसका दूध पीने में जुट गया। पप्पू की अम्मा बाहर निकलीं तो देखा, दूध पीते बछड़े के मुँह के दोनों किनारों से सफेद झाग के बुन्दे जमीन पर गिर रहे थे और बंशी थोड़ी दूर पर हाथ में डंडा लिये खड़ा था।

"क्या हुआ, बंशी? यह कैसे भाग आई?"

"भाग नहीं आई भौजी, हम खुद ही इसे लौटाने आए हैं। यह दूध चुराती है। इतना खिलाते-पिलाते हैं, लेकिन दुहने जाइए तो दूध 'झन्न' कर लेती है। जब तक इसके पास रहिए, अपने बछड़े तक को मुँह नहीं लगाने देती। हट जाइए तो ओगर जाती है और घंटों उसे चाट चाट कर पिलाती है। महीने भर हो गए बच्चा किए हुए, अगर एक दिन भी ढंग से ओगरी हो तो कहिए। पाव-आध सेर दूध दुह पाना पहाड़। हार गए तो आज लौटाने आना पड़ा।"

"अरे भइया, खूँटा बदलता है तो कोई-कोई जानवर 'झनक' जाता है। बैल हल में चलने से इनकार कर देते हैं। भागते हैं या खेत में ही बैठ जाते हैं। मारिए तो सिर नीचे गड़ा लेते हैं। गायें लात मारने लगती हैं या दूध चढ़ाने

लगती हैं। खाने-पीने का दुख न रहा तो धीरे-धीरे पुराने गोसैंया को भूल जाते हैं। नए खूँटे पर रम जाते हैं। सब ठीक हो जाता है।"

"खाने-पीने का कोई दुख नहीं है, भौजी। सब करके देख लिया। हार गए तब लेकर आए। नहीं तो कितने शौक से ले गए थे कि बेटा दूध-भात खाएगा!"

"बिलकुल खाएगा। ले जाइए, भाड़ा देकर लगाइए, लगने लगेगी। भाड़ा नहीं जानते? गाँव में रहते हैं और भाड़ा नहीं जानते? जो जानवर अपने-आप नहीं ओगरते उन्हें ओगारने के लिए दुहने के पहले उनकी हौदी में उनकी पसन्द का रातिब देना पड़ता है

-चूनी, चोकर, खली, पशु आहार वगैरह। जानवर खुश होकर उसे खाने में जुट जाता है। उसकी तनी हुई नसें ढीली पड़ जाती हैं। उसी समय बछड़े को खोल दीजिए। वह पीने लगेगा तो दूध अपने-आप ओगर आएगा। बछड़े को उसके मुँह के सामने बाँध दीजिए। वह उसे चाटती रहे या भाड़ा खाती रहे। आप हीक भर दुहिए। एक बार पेन्हा गई तब थोड़े वापस खींच पाएगी!"

बंशी दुविधा में पड़ा खड़ा रह गया।

"इतना तो वह भी जानती है कि आप उसके बछड़े का दूध हड़प रहे हैं। थोड़ा पुचकार दीजिए, सहला दीजिए, झूठा ही सही, प्यार जता दीजिए। खुश हो जाएगी। कितनी गायें तो लात मार-मार कर दुहनी फोड़ देती हैं, दुहने वाले का मुँह तोड़ देती हैं। उसके लिए भी तो पुरखे समझा गए हैं कि दुधारू गाय का चार लात सहना पड़ता है। यह दूध ही तो चुराती है। लात तो नहीं मारती।"

बंशी चुप था लेकिन उसके हाव-भाव से लग रहा था कि वह कुछ सुनने

को तैयार नहीं है। अब पप्पू की अम्मा ने अपना तेवर कड़ा किया- "जब खरीदकर ले गए थे तो कोई करार हुआ था कि दूध चुराएगी तो वापस लेना पड़ेगा। पैसा तो सब खर्च हो गया। अब कहाँ से लौटाएँ? ले जाइए। हम पहलवान से कह देंगे कि एक-दो दिन खुद जाकर दुह दें। लगने लगेगी।... और नहीं तो जाइए, जब पहलवान घर पर हों तो आकर बात कर लीजिएगा। अभी रिश्तेदारी में गए हैं।"

बंशी के जाने के बाद वे लछिमिनिया के पास आईं। उसने थूथन आगे करके हूँ-हूँ किया तो उसके गले लगकर उसकी ललरी सहलाते हुए बोलीं- "का महरानी! कंगाली में आटा गीला करने के लिए लौट आईं?"

बछड़ा दूध पीकर मस्त हो गया था। दुआर के इस सिरे से उस सिरे तक कुलाँचें मार रहा था।

बोलीं- "किसलिए इतना मगन हो रहे हो बाबू? अब तो तुम्हें कोई माटी के मोल भी पूछने वाला नहीं है। बछिया बनकर आते तो भी कुछ पूछ होती।"

नागपंचमी उर्फ गुड़िया का त्योहार ! फीके पड़ते त्योहारों के बीच सावन के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाने वाला यह त्योहार अभी जीवंत है। पंचमी के चार-पाँच दिन पहले से ही हर टोले में झूले पड़ जाते हैं। आधी रात तक कजरी की तान

अगम बहै दरियाव

गूँजती रहती है। ज्यादातर नवब्याहताएँ मायके चली जाती हैं और बेटियाँ अनवारों का इन्तजार करने लगती हैं।

मायके पहुँचना जरूरी है। साल भर की बिछुड़ी बचपन की सहेलियों से

मिलने का यही मौका है।

टोले के अलावा सड़क के किनारे महामाई के थान पर विशाल बरगद की शाखाओं पर भी झूले पड़ते हैं। तीन दिशाओं में जाती शाखाओं पर तीन झूले। मोटी-मोटी रस्सियों के नीचे लम्बे-लम्बे पटरे लगाकर। एक-एक झूले पर झूलने और जुलाने वालों को लेकर पाँच-छह लोग। कोकिल कंठों से झरते कजरी के बोल-

झूला परा कदम की डारी, झूलें राधा प्यारी ना।

आसमान में घटाएँ घिर आई हैं। नदी उमड़ आई है। खेत, बाग, वन-सब हरियाली से लदे हैं।

नागपंचमी के दिन गाँव की सारी स्त्रियाँ महामाई के थान पर ही झूलने के लिए आती हैं। मेला लग जाता है। पुरुष दंगल देखने चले जाते हैं। औरतें ही झूलने वाली, औरतें ही झुलाने वाली। दोपहर से घंटा-भर रात बीतने तक। पश्चिम तरफ गाँव के सीमान्त पर आम के बाग में कुश्ती और लम्बी कूद का दंगल होता है। यहाँ का अखाड़ा सरनाम है। चार-पाँच गाँव के लोग जुटते हैं। हर विजेता को छत्रधारी सिंह इनाम देते हैं। सीनियर कुश्ती विजेताओं को बनियान, अँगोछा या तौलिया और जूनियर विजेताओं को कॉपी, कलम या पेंसिल। जूनियर कुश्ती में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले को 'सोहराब' का खिताब और एक सौ रुपये नगद। सीनियर कुश्ती में 'रुस्तम' का खिताब और ढाई सौ रुपये नगद। लम्बी कूद के जूनियर विजेता को एक सौ रुपये और सीनियर विजेता को ढाई सौ रुपये नगद। इनाम के लालच में अनगिनत छोटे बच्चे कुश्ती लड़ने के लिए उतर पड़ते हैं। चार-चार, पाँच-पाँच जूनियर कुश्तियाँ एक साथ लड़ानी पड़ती हैं। तीन बजे से शुरू दंगल अँधेरा होने तक चलता है। नौजवान दर्शक आसपास के आम की डालियों पर जम जाते हैं। सीटी बजा-बजाकर भीड़ और लड़ते जोड़ों को नियंत्रित किया जाता है। छत्रधारी सिंह कई साल से दंगल कराने और पुरस्कार बाँटने का काम करते आ रहे हैं। लोग साल-भर इस दंगल का इन्तजार करते हैं।

सूरज डूबने को है। महामाई के थान पर तीनों झूले आसमान छू रहे हैं। कोकिल-कंठी ध्वनि गूँज रही है। रंग-बिरंगे आँचल हवा में फहरा रहे हैं। जितनी झूलों पर हैं उससे बहुत ज्यादा अपनी बारी की प्रतीक्षा में हैं। मुद्दत बाद मिली सखियाँ अपने दूल्हा और ससुराल का बखान करने में लगी हैं। छत्रधारी सिंह की पोती शकुन्तला भी ससुराल से आई है।

सखियों के साथ हँसी-ठिठोली करते हुए वह भी अपनी बारी का इन्तजार कर रही है।

तभी एक मोटरसाइकिल पर सवार दो नवयुवक धीमी रफ्तार से झूलों के पास आते हैं। एक नौजवान थोड़ी दूर खड़ी शकुन्तला के पास आते हुए इशारे से उसे अपने पास बुलाकर पूछता है-" शकुन्तला तुम्हीं हो?"

शकुन्तला के 'हाँ' करते ही वह उसका हाथ पकड़कर खींचता है और उठाकर मोटरसाइकिल पर बिठा लेता है। लड़की चीखती है। मोटरसाइकिल चल पड़ती है। नवयुवक मुड़कर चिल्लाता है- "छत्रधारी से कहना, जंगू के आदमी ले गए।"

जंगू का नाम सुनकर शकुन्तला की घिग्घी बँध जाती है। झूले रुक जाते हैं। भगदड़ मच जाती है।

नदी के घाट तक आकर दोनों अपहरणकर्ता मोटरसाइकिल छोड़ देते हैं और वहाँ बँधी छोटी डोंगी में बैठकर नदी पार जंगल में उतर जाते हैं।

कुश्ती लड़ा रहे छत्रधारी के पास आकर एक आदमी उनके कान में बताता है। उनके हाथ से सीटी छूट जाती है। वे भीड़ को चीरते हुए कीचड़-काँदो भरे खेतों के बीच से महामाई के थान की ओर भागते हैं। पम्प जूते कीचड़ में धँसकर पीछे छूट जाते हैं।

महामाई के जंगल में सन्नाटा है। तीनों खाली झूले धीमे-धीमे हिल रहे हैं। वे बदहवास नदी के घाट की ओर दौड़ लगाते हैं। भीड़ उन्हें नदी में घुसने

से रोक लेती है। घर की ओर ले आती है। अँधेरा होने लगा है।

वे अपनी नई खरीदी गई राइफल और कारतूस का पट्टा लेकर ह्वाइट हाउस की छत पर चढ़ जाते हैं। धम-धम करते इधर से उधर दौड़ते हैं। फायर करते हैं। दारोगा बेटे का नाम लेकर चिल्लाते हैं- "रे अपरबला। लानत है तेरे अपार बल पर। तेरी बेटी को गजधरा का बेटा उठा ले गया रे! कूद जा बन्दूक लेकर जंगल में। जंगू चाहिए, जिन्दा या मुर्दा।"

फायर की आवाज से भीड़ छँट गई है। पता नहीं कब राइफल की नाल उनकी ओर मुड़ जाए। सब आड़ से झाँक रहे हैं।

रात-भर चिल्लाते हैं। चिल्लाते-चिल्लाते गला बैठ जाता है। सबेरे उनकी पत्नी समझा-बुझाकर नीचे लाती हैं। रात-भर में उनकी आँखों के नीचे की कालिमा गहरी हो गई है। आँखों के नीचे सूजन आ गई है। गाल का चमड़ा लटक गया है। जैसे रात-भर में दस साल बूढ़े हो गए हों!

वे पेशाब करने के लिए दीवार का सहारा लेकर पिछवाड़े की ओर जाते हैं। कदम लड़खड़ा रहे हैं। कन्धे लटक गए हैं। उकड़ें बैठते हैं। निवृत्त होने के बाद उठने का प्रयास करते हैं, लेकिन उठ नहीं पाते।

असहाय होकर इधर-उधर देखते हैं। कोने से झाँक रहे दो लड़के आते हैं। काँख में हाथ डालकर उन्हें उठाते हैं।

दाहिना पैर थम नहीं रहा है। होंठ दाहिनी तरफ खिंच गए हैं और कोने से राल चू रही है। बोली साफ नहीं निकल रही है।

"फालिज मार गया!" कोई कहता है।

उन्हें चारपाई पर लिटाया जाता है।

"फौरन अस्पताल ले चलो।"

न दारू पिया, न जुआ खेला

कहते हैं, हरा रंग आँखों की ज्योति बढ़ाता है। मन को ठंडक पहुँचाता है। पाँड़े के दरवाजे से देखिए तो तीन तरफ फसल ही फसल लहलहाती दिखती है। इस समय भादों लगा है। उँचास के खेतों में कहीं-कहीं गन्ना, मक्का या सनई बोयो गई है, बाकी पूरी सिंवार में धान ही धान। पाँड़े दिशा-मैदान के लिए गाँव के पश्चिम रेलवे लाइन पार करके बड़ैला ताल के उत्तरी सिरे के भीटे पर आते हैं। भीटे के किनारे-किनारे घनी झाड़ियाँ हैं। इत्मीनान से दिव्य निपटान होता है। हरे-भरे खेतों का दर्शन होता है और टहलना भी। पास में ही मदरहवा वाला खेत भी है।

यह हरियाली ही किसान को जीवित रखती है। फसल तैयार होने में कितनी लागत आई? कितना लाभ होगा? इसका हिसाब वह नहीं लगाता। पीढ़ियों से हिसाब लगाने की परम्परा नहीं है। इसलिए नहीं कि वह हिसाब लगा नहीं सकता। इसलिए कि हिसाब लगाने बैठा तो दुखी हो जाएगा। वह जानता है कि हिसाब में हमेशा घाटा आएगा। खेती है ही घाटे का पेशा। बाप-दादा ऐसा कहते आए हैं। इधर जैसे-जैसे खेती में नगदी पर निर्भरता बढ़ रही है, घाटा भी बढ़ रहा है।

इस साल धान की फसल अच्छी है। हवा के झोंके पर पौधों का लहराना।

खुश होने के लिए इतना ही काफी है। इस खुशी के पीछे चोर दरवाजे से जो संकट झाँक रहा है, वह मन को दुखी न करे। कम-से-कम अभी न करे।

अभी मन को इस झूमती हरियाली का सुख ले लेने दो। मेंड़ की घास और धान की पत्तियों पर पड़ी ओस की बूँदों से पैर भीग गए हैं। धोती घुटने के ऊपर * सिवान तक गीली हो गई है।

उस पर अनगिनत तिनके और कीड़े चिपक गए हैं। कहीं-कहीं गड्ढों के सूखते पानी में छोटी-छोटी मछलियाँ झलमला रही हैं। घोंघे के बच्चे गड्ढों से बाहर निकलकर रेंग रहे हैं।

निपटान के बाद पाँड़े भीटे के पीपल के नीचे खड़े होकर सूर्योदय देख रहे हैं। लाली आई। पूरा गोला ऊपर आया फिर किरणों के तीर चले। उनके हाथ जुड़ जाते हैं। नजर आसमान की ओर जाती है। आसमान एकदम साफ नीला। अपवाद स्वरूप दो-चार सफेद बादल के टुकड़े। मन में न चाहते हुए भी चिन्ता की लकीर प्रवेश कर जाती है। आठ-दस दिन से एक बूँद पानी नहीं बरसा। आसमान को ढके रखने वाले काले-भूरे बादलों के पहाड़ जाने किस अनजाने देश की ओर उड़ गए! दो-तीन दिन से पछुवाँ बहने लगी है। आसमान में ऊँचाई पर तैरते सफेद बादलों के टुकड़े इस पछुवाँ के साथ उड़ते हुए वापस बंगाल की खाड़ी की ओर भागे जा रहे हैं। बड़े-बूढ़े कहते हैं- पछुवाँ का ररना। माने विलाप करना। क्यों विलाप शुरू कर दिया इस पछुवाँ ने? किस विपत्ति का पूर्वाभास? सूखे का? भादों बीत रहा है। धान की बालियाँ पौधों के गले तक आ गई हैं। इक्का-दुक्का फूटने भी लगी हैं। ऐसे में पछुवाँ!

धान की फसल पककर किसान के घर तक पहुँचे, इसके लिए जरूरी है कि इस समय कम-से-कम एक बार इतना पानी बरसे कि मेंड़ के ऊपर से बह जाए। वरना इस एक पानी के बिना सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा। पछुवाँ की जगह पुरवाई बहने लगे तो बादलों के पहाड़ वापस आ

सकते हैं।

जौ पुरवा पुरवाई पावै।
ओरी क पानी बँड़ेरी चढ़ावै।

लेकिन लगता है, इस साल पूर्वा नक्षत्र के लिलार में पुरवाई नहीं लिखी है। पाँड़े को याद पड़ता है, तीस-पैंतीस साल पहले इन्हीं दिनों एक बार नौ दिनों तक लगातार चौबीस घंटे पानी बरसता रहा था। दिशा-मैदान जाने-भर को, घंटे-आधे घंटे के लिए भी बन्द नहीं हुआ। मिट्टी के कितने घर गिर गए थे। जानवर भूखे बँधे रह गए थे। तब इतना पानी बरसता था कि इन दिनों में मेंड़ की ऊँचाई के बराबर पानी भरा रहता था। धान की फसल पककर लेट जाती थी। बालियों का धान खेत में भरे पानी में भीगकर अंकुरित होने लगता था। लेभा छानने की नौबत आ जाती थी। कटी फसल मेंड़ पर सुखाई जाती थी। कहाँ चले गए वे दिन ? कहाँ चला गया सारा पानी?

* पानी भरे खेत में धान काटने

अगम बहै दरियाव

पाँड़े की नजर ताल की ओर गई। यह पूरा भरा होता तो इसके पानी से चालीस-पचास बीघे धान की सिंचाई हो जाती, लेकिन अभी तो लगता है इसमें घुटने से बोड़ा ही ऊपर पानी होगा। कल तक इसमें रोज के रहने वाले पचास-साठ भूरे बगुले ही दिखते थे। एक टाँग पर खड़े, ध्यानावस्थित। धैर्य की मूर्ति ! यहीं शिकार किया और यहीं बबूल के पेड़ पर बसेरा ले लिये। जो मिल गया, उसी में संतोष करने वाले। सारसों का कभी एक और कभी दो जोड़ा सबेरे आता था, शाम को उड़ जाता था। लेकिन आज सूरज निकलने के साथ इसमें लम्बी टाँग, पीली लम्बी चोंच और काली पीठ वाली अठारह-बीस चिड़िया और इतने ही सफेद बगुले आ जुटे। इनका भी कोई नियम है क्या? दिन-वार साधकर शिकार के लिए उतरती हैं? आज इस ताल में तो कल उस तलैया में? आज का दिन इस तालाब की मछलियों का आखिरी दिन होगा। पूर्वा नक्षत्र बरस गया होता

तो इनको माघ-पूस तक जीवनदान मिल जाता। इनकी दुनिया कुछ दिन और आबाद रहती।

सबेरे सिंवार में निकलते हैं पाँड़े तो अपने सारे खेतों की मेंड़ तक जाते हैं। दूसरे के खेत में अच्छी फसल दिखती है तो वहाँ तक भी जाते हैं। अगर गंगा-स्नान के लिए संगम या हनुमानगढ़ी दर्शन के लिए अयोध्या जाते हैं तो भी रास्ते में पड़ने वाली फसल को देखते और उस पर अपनी राय देते चलते हैं।

नहर महीने भर से सूखी पड़ी है। धान की लगवाही के समय देर से पानी आया। जब तक बरसात होती रही तब तक नहर भी भरकर बहती रही। अब वह भी पेंदे में बह रही है। इसके पहले कि फसल सूखने लगे, पानी छोड़ने के लिए नहर की कोठी पर सारा गाँव चलकर ओवरसियर की खुशामद करे। लिखा-पढ़ी करके बात ऊपर तक पहुँचाने में ही हफ्ते-दस दिन लग जाएँगे।

दूर कहीं से पम्पिंग सेट चलने की पुक-पुक धुन शुरू हुई। किसी ने बादलों की आशा छोड़कर सिंचाई की शुरुआत कर दी।

आज जल्दी घर लौटने का मन नहीं कर रहा है पाँड़े का। दिवाकर की जिद ने उनके मन का चैन छीन लिया है। मन कर रहा है कि इसी पीपल के नीचे अँगोछा बिछाकर लेटे रहें। दिवाकर ने अपनी माँ के माध्यम से कहा है- "सिपाही की भर्ती होने वाली है। उन्हें भर्ती होना है। इसके लिए एक लाख घूस देना पड़ेगा।"

"तो तुमने क्या कहा?"

"मैंने कहा कि घर की आमदनी तो तुम देख ही रहे हो। घर में एक लाख हो तो खुशी से ले जाओ।"

"फिर?"

"फिर क्या? वे कुछ सुनने को तैयार नहीं हैं। एक ही रट है कि एक लाख चाहिए। खेलावन ने एक लाख में भर्ती कराने के लिए हामी भरी है। अपने बेटे को भर्ती करा रहे हैं।"

"जानती हो, कितना होता है एक लाख?" उन्होंने उलटे अपनी पत्नी से पूछा-" इतना रुपया अपनी आँख से देखा है कभी? सपने में कभी देखा हो तो भी बता दो। पूरे सौ हजार इकट्ठा हों तब बनता है एक लाख। घर का सारा गल्ला बेच डालो तब भी बीस-पचीस हजार से ज्यादा नहीं मिलेगा।"

दिवाकर कभी अपने बाप से सीधे कुछ नहीं कहते। माँ को माध्यम बनाते हैं। माँ-बेटे के बीच कई दिनों से चल रही है यह रस्साकसी। पाँड़े को भी पत्नी के माध्यम से अपना पक्ष रखना निरापद लगता है। आमने-सामने तकरार करने से दोनों लोग बचना चाहते हैं।

"क्या दिवाकर को नहीं पता कि ट्रैक्टर के लोन की किस्त निकालने में कितना नाकों चने चबाना पड़ रहा है। दो किस्त की देनदारी अभी भी खोपड़ी पर चढ़ी है। उसको नहीं सोच रहे हैं! इनको चाहिए कि बड़े भाई के साथ खटें। किस्त भुगतान करने की चिन्ता करें। वह तो नहीं सोचते, ऊपर से एक लाख चाहिए।"

"खट तो रहा ही था। चोट खा गया तो हिम्मत छूट गई। गाँव देहात में कहाँ इतना काम है कि रातों-दिन ट्रैक्टर चलेगा! "

"नहीं है तो खोजें। जुताई खोजें, मिट्टी ढोएँ। भाड़ा खोजें।"

'आप भी अन्धेर पादते हैं दिवाकर के बाबू! जोताई, मड़ाई, मिट्टी सीजन में 44 मिलेगी कि सावन-भादों में?"

"जब सावन-भादों में चूल्हा जलाना है तो काम भी खोजना होगा। सावन-भादों में बैंक ब्याज लेना बन्द कर देता है क्या? जब तक सीर-भर की खतौनी बैंक में बन्धक है, नींद नहीं आनी चाहिए। सो तो नहीं सोचेंगे।

ऊपर से एक लाख नगद चाहिए।"

दिवाकर की अम्मा पाँड़े जी की बात को तुरन्त नहीं काटतीं। उनकी बात के ताप को ठंडा होने देती हैं; फिर आजिजी से, जैसे माफी माँग रही हों, अपनी बात रखती हैं।

"दिवाकर कहते हैं कि जब तक ट्रैक्टर का लोन अदा होगा, तब तक तो उनकी नौकरी पाने की उमर निकल जाएगी।"

"यह क्यों नहीं कहते कि बी.ए. कर लेने के बाद उन्हें बत्ती-पंखे के नीचे छाँहे-छाँहे बैठने के सपने आने लगे हैं।"

"तो इसमें खराबी क्या है? पढ़ा-लिखा है तो पढ़े-लिखों वाली नौकरी खोजेगा ही।"

"शौक से खोजे, लेकिन उसके लिए हमारे जैसे गरीब किसान से एक लाख रुपये वसूलने की उम्मीद न करें।"

"हम बस यह चाहते हैं कि कोई रास्ता निकले। घर में शान्ति बनी रहे। दिवाकर के जिद्दी स्वभाव से डर लगता है। रूठे हुए हैं। कल शाम से खाना नहीं खाए। शिवाले पर लेटे हैं। जाइए, मना लाइए।"

पाँड़े मनाने गए। समझाया - "आखिर अन्न से क्या बैर?"

"मुझे पैसा चाहिए। खेती करके देख लिया। खेती से गुजारा नहीं हो सकता।"

"सारी दुनिया का गुजारा खेती से ही तो हो रहा है!"

"इसको गुजारा कहते हो? पिछले साल आलू बोया गया दस रुपये किलो का बीज खरीदकर। पैदा होने पर बिका तीन रुपये किलो। बोवाई, खोदाई,

खाद और सिंचाई का दाम जोड़ दीजिए तो लागत आती है छह रुपये किलो। कैसे गुजारा होगा? प्याज का बीज खरीदा हजार रुपये किलो। धूप में निराई, गोड़ाई, खोदाई, सिंचाई करते हाँड़ गल गया। लागत आई आठ रुपये किलो और बिका पाँच रुपये किलो। कैसे गुजारा होगा? टमाटर माटी के मोल भी नहीं बिका। दो रुपये किलो भी नहीं। कूड़े की तरह बाजार में फेंककर चले आए। कैसे गुजारा होगा?... खेती में हाड़ गलाना गाँड़ मराने के बराबर है। जिसको शौक हो मरावे। मैं नहीं मराऊँगा।"

पाँड़े पल-भर के लिए चुप रह जाते हैं। फिर कहते हैं-

"मैंने कोई दरखास्त तो दिया नहीं था कि किसान के घर में पैदा करो। किस्मत गाँड़ू थी तो पैदा हो गए। अब भागकर कहाँ जाएँ? तुम्हें कोई गली सूझती हो तो बताओ।"

"हमें पैसा चाहिए, बस।"

"तुम्हीं बताओ, कहाँ से लाएँ?"

"मदरहवा वाला खेत बेच दीजिए।"

"खेत तो सब बैंक के पास बंधक है।"

"मदरहवा वाला बंधक नहीं है। जब लोन लिया गया तो मदरहवा गाँव का रेकार्ड सीज था। खतौनी की नकल जारी नहीं हो रही थी, इसलिए बच गया। हमें सब पता है।"

पाँड़े दिवाकर का मुँह देखने लगे। फिर बोले - " अच्छा घर चलो। तुम्हारी अम्मा परेशान हैं। खेत कोई गाजर-मूली नहीं कि जब चाहा बेच दिया।"

पाँड़े दिवाकर का हाथ पकड़कर दालान तक लाए। दिवाकर वहीं चारपाई पर लेट गए। बाप के साथ खाना खाने नहीं बैठे। पाँड़े खाना खाकर कुछ देर आराम करना चाहते थे, लेकिन दालान में फिर दिवाकर से सामना होगा, यह सोचकर गाँव की ओर निकल गए।

दो-एक घरों में जोताई का बकाया था। योचा, मिले तो वही वसूल लाएँ। लौटे तो अँधेरा उतरने लगा था। गाय-भैंस अभी बाहर ही बैंचे थे। नौद में झाँककर देखा। खाली थी। अभी तक इनका चारा-पानी नहीं हुआ!

ट्राली के एक पहिए की बेयरिंग फूट गई थी। प्रभाकर उसी को बनवाने बाजार गए थे। चारे-पानी का जिम्मा दिवाकर का था।

दालान और ओसारे के बीच की जगह पर खड़े होकर पाँड़े एक-दो बार खाँये। प्रत्युत्तर में छोटी बहू हाथ में लालटेन लेकर निकली और दालान के छप्पर में लटकी लटकन में टाँग दिया। फिर पास से झाड़ू उठाकर पूजा की जगह बुहारने लगी।

तब तक अन्दर से लोटे में पानी लेकर दिवाकर की अम्मा निकलीं। उन्होंने बहू के हाथ से झाड़ू लेते हुए टोका- "तुम्हें हजार बार मना किया बहू कि अँधेरा होने के बाद झाड़ू लगाना दोख है। उजाले में क्यों नहीं लगा लिया?"

बहू बिना कुछ बोले घर के अन्दर चली गई। बहू की पायल की झनकार और बाल्टी की खनक सुनकर हाथ-मुँह धोने जा रहे पाँड़े ने अनुमान लगाया कि बहू बाल्टी लेकर कुएँ की ओर जा रही है। यानी यानी नाँद में उसे ही पानी भरना है।

"दिवाकर कहाँ गए?"

"हम क्या बताएँ।"

"बहू को तो पता होगा?"

"बहू को भी नहीं बताया।"

उनके रहते बहू का नाँद में पानी भरना ठीक नहीं। वे लालटेन लेकर कुएँ की ओर बढ़े। साथ ही बिजली विभाग को भुनभुनाकर कोसने लगे - "रात में दस बजे बिजली देंगे जब सारा गाँव सो जाएगा।"

बहू से कहा - "बाल्टी छोड़ो, जाकर भूसा-खली लाओ।"

जब तक पाँड़े ने नाँद में पानी भरा, सानी चलाई और जानवरों को अन्दर बाँधा-दिवाकर की अम्मा ने संध्या-स्थल पर हवा करके काल्पनिक धूल को उड़ाया। लोटे का पानी लेकर आसपास कच्ची फर्श पर छिड़का। फिर कुशासनी बिछाकर उस पर अगरबत्ती, माचिस, शंख, कमरी आदि छूहे के ताखे से निकालकर रखा। पाँड़े आकर संध्या वंदन करने बैठे, स्त्रोत पढ़ा, शंख बजाया। फिर उसे धोकर कमरी में लपेट दिया। इस बीच पत्नी बिना बोले धैर्यपूर्वक पास में बैठी रहीं। उनके न बोलने से पाँड़े अधीर होने लगे। बैठी हैं तो जरूर कुछ कहने के लिए बैठी हैं। तो कहती क्यों नहीं?

"बोलो।" पाँड़े ने इशारे से कहा।

अगम बहै दरियाव

"सोच रहे हैं कि कोई रास्ता निकालना होगा। बेटा पराया न हो जाय। कहीं धागे-छौड़े नहीं।"

* भागना चाहेंगे तो कोई बाँधकर थोड़े रख लेगा! बच्चे तो हैं नहीं।"

पत्नी उनका मुँह देखती रहीं।

"कहीं नहीं भागेंगे। और भागे तो फिर लौटकर यहीं आएँगे। जैसे दो बार भागकर लौटे हैं। कहीं ठेकाना लगा? बाभन के लड़के को कहीं ठेकाना नहीं लगेगा। उसके लिए बभनाहट भूलना पड़ता है।"

"आप तो दुश्मन की तरह बोलते हैं।... एक सूरत और निकल सकती है। बहू कह रही थी कि अगर आप उसके बाप से चर्चा चलाएँ तो वे कुछ मदद

कर सकते हैं। नौकरी मिलने पर धीरे-धीरे वापस कर दिया जाएगा।"

"लेकिन मैं उनसे किसी कीमत पर ऐसा नहीं कह सकता। जब विवाह तय करते समय मैंने अपना मुँह नहीं खोला तो अब खोलूँगा? और वापसी की बात भी झूठ है। बेटी के घर गया पैसा कहीं वापस आता है! बहू अपने बाप से कहना चाहे तो कहे, मैं नहीं कह सकता और न चाहूँगा कि दिवाकर वहाँ माँगने जाएँ।... और तुम भी गजब हो, दिवाकर की अम्मा! जैसा सुन लेती हो, वैसा गाने लगती हो। अरे, घूस देकर नौकरी वह खरीद सकता है जिसके घर में घूस का पैसा आता हो। खेलावन सरकारी आदमी हैं। उनकी कमाई के दस रास्ते होंगे। वे एक क्या, दो लाख देकर अपने बेटे को भर्ती करा देंगे। तुम्हारा बेटा उनके बेटे की बराबरी कैसे कर सकता है?"

"देने वाले तो खेत बेचकर भी दे रहे हैं।"

"जो मुँह में आवै, वही नहीं बोल देना चाहिए। बाप-दादा की सम्पत्ति बढ़ा तो पा नहीं रहे हैं, उसे बेचने की कैसे सोच सकते हैं, चाहे फाँसी लगने की ही नौबत क्यों न आ जाय ! मान लो, मुझे किसी जुर्म में फाँसी की सजा हो जाय और वकील कहे कि सब बेच-बाँच कर लाओ, ऊपर से छुड़ा लूँगा, तो क्या मैं फाँसी से बचने के लिए खेत बेच दूँगा?"

सन्नाटा लम्बा खिंचता है...

आखिर इसे पाँड़े ही भंग करते हैं।

"मेरे लिए घूस खाना और खिलाना गुह खाने के बराबर है।"

"दुनिया तो उसी को खाने के लिए लपकी जा रही है।"

"जिसको खाना हो, वह लपके। मेरी तो न खाने की औकात है, न खिलाने की।"

405

उस रात जंगल में छोटी पहाड़ी के ढाल पर बने छपरे में बैठी शकुन्तला रोटी की थाली परे ठेलते हुए कहती है- "मुझे रोटी नहीं, गोली खानी है। मुझे गोली मारो।"

"खा लो। बहुत दूर से बनकर आई है।"

"नहीं, जंगू भइया को बुलाओ।"

आखिर जंगू सामने आता है।

"मुझे क्यों उठाकर लाए जंगू भइया ? बेइज्जती करोगे? कब की दुश्मनी निकाल रहे हो?"

"दुश्मनी तुमसे नहीं, तुम्हारे बाबा छत्रधारी से है। अब उन्हें पता चल रहा होगा कि बेइज्जती झेलना, जुल्म सहना कितना खलता है।"

"तो क्या छत्रधारी मर गए कि गाँव छोड़कर भाग गए जो मेरी जिन्दगी नरक करने की सोच लिये? जंगू की पकड़ में एक औरत के रात गुजारने का मतलब जानते हो? मेरी दुनिया - नैहर, ससुराल दोनों जगह अँधेरी हो जाएगी। यही सोचकर रुक गए होते कि बचपन में जाने कितनी बार तुम्हें खाने के लिए कुछ-न-कुछ देती रही हूँ। जब मेरे टोले के लड़के तंग करते थे तो मैं ही छुड़वाती थी। दीदी-दीदी कहते पीछे-पीछे घूमते थे, दीदी कहने की ही लाज रखते !"

जंगू को सब याद है। बचाव भी और जब-तब खाने को मिला कुछ-कुछ फल और पकवान भी। सबसे ज्यादा तो उस कम्पट के स्वाद की याद है

जो उसने जिन्दगी में पहली बार खाया था।

जंगू सोच में पड़ जाता है- बाप का बदला बेटी से! यह तो मर्द का काम नहीं।

"सुना था कि किसी लड़की की बेइज्जती करने पर तुमने अपराधी की नाक काट ली थी। अब खुद उसी राह पर उतर आए।"

वह तनिक हटकर साथियों से बातचीत करता है, फिर लौटकर कहता है- " पास के गाँव में तुम्हारी केवला बुआ ब्याही हैं। चलो, तुम्हें उनके घर पहुँचा देते हैं।"

अगले दिन दस बजे खबर फैलती है कि शकुन्तला ने जंगू के गिरोह को धता बताकर खुद को छुड़ा लिया। एक तो ठकुराइन, दूसरे दारोगा की बेटी। जरा-सी गफलत में देखा तो झट एक डाकू की बन्दूक छीनकर गिरोह पर तान दी। सबकी सिट्टी-पिट्टी गुम। बोली, खबरदार जो किसी ने पीछा किया। झम्म से नदी में कूदी और उस पार। जंगुआ हाथ मींजता रह गया।

अगम बहै दरियाव

इसी बात पर डाकुओं के बीच लड़ाई हो गई। सबसे कमाल की बात कि शकुन्तला इज्जत-आबरू बचाकर सही-सलामत लौट आई।

लेकिन किसी को इस कहानी पर विश्वास नहीं हो रहा है। बेइज्जत नहीं करना था तो क्या डाकू उसे पूड़ी छनवाने के लिए ले गए थे?

दिवाकर शाम से ही खेलावन सेक्रेटरी के दालान में बैठकर उनका इन्तजार कर रहे हैं।

बैठे-बैठे सोच रहे हैं कि खेती-किसानी करने की उपमा गाँड़ मराने से देकर उन्होंने अपने बाप का मुँह बन्द कर दिया।

अब वे जरूर उनके लिए कुछ सोचेंगे। यह उपमा उन्हों यह उपमा उन्होंने अपने बचपन में सुनी थी। धौताल चमारों के नाच में करिंगा* का पार्ट करते थे। वे दर्शकों से एक सवाल पूछते। पूछने के पहले कहते- "एक भद्दा सवाल पूछना पड़ रहा है। सिर्फ खेतिहर मर्दों से पूछना है। वही यह सवाल सुनें। बहन-बेटियों और बच्चों के सुनने लायक नहीं। वे अपने कान में उँगली डाल लें।"

पूछते-" चौधरी लम्बरदार लोग, पाँड़े-तिवारी लोग, यादव-पटेल लोग जिन्होंने दुनिया देखी है; बताएँ- गाँड़ मराने से ज्यादा घटिया काम क्या है दुनिया में?"

दिवाकर उस समय बच्चे थे। कान में उँगली डाल लेते थे, लेकिन उतनी ही जितने से सुनाई पड़ता रहे।

करिंगा एक बार फिर अपना सवाल दुहराते। सब चुप। फिर खुद ही कहते-"नहीं मालूम? मैं बताता हूँ। गाँड़ मराने से ज्यादा घटिया काम है खेती-किसानी करना।"

सारे अनुभवी बुजुर्ग हँसते हुए सिर हिलाकर समर्थन करते - "ठीक बात! ठीक बात!"

तब साथी नर्तकी पूछती - " तो ऐसा घटिया काम क्यों करते हो, उस्ताद?"

"क्या कहती हो, लौंडिया? हम ऐसा घटिया काम कर सकते हैं? कोई

मुफ्त में दस बीघे दे दे, तब भी न करें।"

"तुम तो मजदूरी करते हो, खेती-किसानी से भी घटिया काम।"

*मसखरा

407

"क्या बकती हो! मजदूरी, खेती-किसानी से लाख दर्जे अच्छी है। दिन-भर चाहे जहाँ खटो, रात में जोरू से चिपककर सुख की नींद सोओ। और किसानी? बिजली आती है रात में। जाड़े-पाले की रात में सिंचाई में नधो। नीलगाय खेत बरबाद करने आते हैं रात में। रात-भर चौकीदारी करो। दैवाई, मड़ाई, ओसाई सब रात में। जन-बच्चों सहित सालों-साल रात-दिन खटकर भी मजदूरी के बराबर न पाओ। ऐसा बेलज्जत काम करें ये चौधरी, ये लम्बरदार, ये यादव जी, ये पंडित जी। मैं क्यों करूँ?"

"ठीक बात! ठीक बात!"

खेलावन लौटते हैं दस बजे रात। दिवाकर उन्हें आश्वस्त करते हैं- " रुपये का इन्तजाम हो रहा है, चाचा। आप मेरा नाम अपनी डायरी में दर्ज रखिए। इस बार पुलिस की वर्दी पहनने का जुगाड़ लगा दीजिए।"

घर लौटने का मन नहीं हो रहा है दिवाकर का। वे अपने चक की ओर निकल जाते हैं। अँधेरी रात में तारों-भरे आकाश के नीचे वे खेत की मेंड़ पर खड़े हैं। सहसा दोनों हाथ आसमान की ओर उठाकर चिल्लाते हैं- "सुनो गाँव वालो, सुनो। मेरा मदरहवा का खेत बिकाऊ है। बयाना एक लाख अभी। बैनामा भगवत पाँड़े की मौत के फौरन बाद। सुनो गाँव वालो, सुना।"

बत्तीस साल बाद आज संतोखी अपने खेत पर काबिज हो रहे हैं।

पोती के अपहरण से पहले छत्रधारी इसमें धान लगवा चुके थे। इलाज के लिए बेटे के पास गए तो अभी लौटकर नहीं आए। धान पककर खेत में ही झड़ गया। दोनों फरीकों में से कोई काटने नहीं गया। संतोखी खेत पर कब्जा करने की सोचते फिर ठंडे पड़ जाते। महीने-भर आगा-पीछा करने के बाद उन्होंने अपना मन पोढ़ा किया और कल्लू कसाई का लाल ट्रैक्टर फिर आकर खेत के बीचोबीच खड़ा हुआ।

यह अजगुत देखने आधा गाँव उमड़ आया। कुछ लोग दूर से और कुछ एकदम मेंड़ तक आकर अपनी बातों से संतोखी की पीठ ठोंकते रहे।

संतोखी बहू ने संतोखी के हाथ से कुदाल ले ली और खुद कोन गोड़ने में जुट गईं।

अगम बहै दरियाव

आधे खेत में मटर बोयी गई और आधे में गोभी लगाई गई। लहसुन-धनिया बोने के लिए जगह छोड़ना भूल गए।

संतोखी देर तक खेत की मेंड़ पर बैठे बीड़ी पीते रहे। घर जाने का मन ही नहीं कर रहा था। जैसे डर रहे हों कि उधर वे घर जाएँ और इधर छत्रधारी के आदमी उनका खेत ही लेकर भाग जाएँ तो?

पांडे बाजार जाने के लिए निकले थे।

बड़ी बहू ने बताया कि खली-चूनी दोनों खतम हैं। प्रभाकर ट्रैक्टर लेकर कहीं निकले थे। बहू ने दिवाकर को बताया तो वे मुँह घुमाकर कहीं चले गए। पाँड़े को पता है कि खली-चूनी न मिली तो भैंस लात उठा देगी यानी दूध देने से मना कर देगी। इसलिए साइकिल के कैरियर पर बोरी दबाकर निकले।

आधे रास्ते पहुँचे थे कि सामने से मोटरसाइकिल पर रघुनन्दन आते दिखे। रुकने का इशारा किया। पाँड़े साइकिल से उतर गए।

मोटरसाइकिल खड़ी करके रघुनन्दन पास आए। पैर छुए, फिर फुसफुसाकर कहा- "ट्रैक्टर की किस्त रुक गई है क्या, चाचा? मैनेजर ने सन्देश देने को कहा है। पन्द्रह दिन में किस्त न जमा हुई तो ट्रैक्टर खिंचवा लेगा।"

रघुनन्दन तो कहकर आगे बढ़ गए। लेकिन पाँड़े जहाँ खड़े थे, वहीं खड़े रह गए। ट्रैक्टर खिंच जाने का इतना ही मतलब नहीं होता कि वह उनके दरवाजे से हटकर बैंक या तहसील के अहाते में खड़ा हो जाएगा। इसका मतलब होता है इज्जत-आबरू का लुट जाना, पूरे इलाके में नंगे हो जाना। उन्हें लगा, जैसे बाजार के प्रवेश-द्वार पर ही बैंक मैनेजर उनका इन्तजार करता हुआ खड़ा है। सारे बाजार को पता चल गया है कि पाँड़े का ट्रैक्टर खिंचने वाला है। उनके पैर जड़ हो गए।

उन्हें यह बात ज्यादा खल रही थी कि मैनेजर ने ट्रैक्टर खिंचवाने की धमकी रघुनन्दन के माध्यम से क्यों भिजवाई? भले गाँव के पद से भतीजा लगता है और सामने पड़ने पर पैर भी छूता है, पर मन में तो गाँठ रखता ही है। इस खबर से उसे कितनी खुशी हुई होगी, इसे क्या वे नहीं जानते? अब वह हँस-हँस कर दस जगह इस बात को फैलाएगा।

सामने से एक युवती गोद में बेटा लिये आ रही थी। पास आने पर पहचाना-

बस्ती और खेतों की सन्धि पर रहने वाली उनकी पड़ोसन कबुतरी थी। बोली-"ए बाबा। तनी हमरे बेटौना क टोना झारि देव।"

कोई और समय होता तो माँ की कमर पर लदकर नन्ही हथेली से दूध-भरे स्तनों की रखवाली करते, काजल लगाए, राल चुआते बच्चे के गुलगुले गालों में उँगली गड़ाकर, टिटकोरी मारकर वे उसे हँसाते और 'मौज करो' का आशीर्वाद देते, लेकिन इस समय थोड़ा रुखाई से बोले-" इस कुबेला में टोना झारा जाता है क्या? शाम को दिया-बत्ती के समय ले आना।"

कबुतरी आगे बढ़ गई। लेकिन उसे बाबा का व्यवहार अजीब लगा। ऐसे तो नहीं थे बाबा। कितने खुशदिल और मजाकिया थे! गाँव के पद से वे उसके ससुर लगते हैं और उससे मजाक करने का कोई मौका जाने नहीं देते थे।

उसे याद आया, चार-पाँच साल पहले एक दिन वह अपने खेत में उग आई घास काट रही थी तो मेंड़ से गुजर रहे बाबा ने पूछा था- था-' "तेरा खेत अभी तक परती क्यों पड़ा रह गया रे कबुतरी?"

"क्या करें, बाबा? वे परदेस से लौटे नहीं और किसी से चिरौरी करिए तो सुनता नहीं। कहता है, पहले अपना जोतँ कि तेरा।"

"कोई अभागा ही होगा जो तेरा खेत जोतने से इनकार कर दे। मुझसे कहा होता। मैं नए फार से जोत देता।"

अब तक कबुतरी ने पाँड़े के होंठों पर फैल रही झीनी स्मित रेखा को लक्षित कर लिया था। जान गई कि बाबा उससे मजाक कर रहे हैं। उसने भी मुस्कराते हुए चोट की-"हटिए बाबा। पचास साल पुराने फार को नया बताते हुए मुँह से बास नहीं आती? मेरा खेत जोतना आपके बस का नहीं है।"

साथ ही नहले पर दहला जमाया- "फूफा न लगते तो एक्कौ गति बाकी न

लगाती।"

पाँड़े रिश्ते में ससुर हुए तो पाँड़े की बहन उसकी बुआ हुईं। पाँड़े को फूफा कहने का मतलब हुआ कि उसने पाँड़े को उन्हीं की बहन का पति बना दिया। इससे ज्यादा चिपकने वाली गाली किसी मर्द-मानुष के लिए और क्या हो सकती है? कबुतरी के दहले की चोट खाकर पाँड़े खुलकर हँसे- "बड़ी बुद्धिमती है रे तू तो! मैंने नया ट्रैक्टर खरीदा है, पगली। उसकी बात कर रहा था।" फिर बात को हकीकत की जमीन पर लाते हुए बोले- "जब खेत बरक जाय तो बताना। प्रभाकर आकर जोत-बो देंगे। हर्ज गर्ज बताया करो।"

ऐसे खुशदिल और हँसलोल बाबा का ऐसा रूखा व्यवहार ! उसे क्या पता कि दूसरों का टोना झारने वाले बाबा को खुद टोना लग गया है।

अगम बहै दरियाव

साइकिल मोड़कर पाँड़े एक पेड़ के नीचे आए। साइकिल स्टैंड पर खड़ी करके कैरियर के नीचे दबी दोनों बोरियों को निकालकर पेड़ के नीचे बिछाया और लिर को पेड़ की जड़ से सटाकर लेट गए। चेहरे पर अँगोछा डाल लिया। आँखें बन्द कर लीं।

पहले चाहे जितनी व्यस्तता हो, पाँड़े बाजार जाने का समय निकाल लेते थे। बाजार जाने से लेकर वापस लौटने तक का समय उन्हें दिन का अनमोल समय लगता था। रास्ते में, फिर बाजार में 'बाबा गोड़ धरूँ', 'पाँड़े पाँय लागी' जैसे अभिवादन सुनकर आत्मा तृप्त हो जाती थी। प्रत्युत्तर में 'खुश रहौ, बच्चा', 'मौज करौ, लम्मरदार', 'जियति रहौ, मलकिन', 'पसेरी भर कै बेटवा होय, दुलहिन' जैसे आशीर्वाद मुक्त कंठ से लुटाते चलते थे। लगता, अपने आशीर्वाद से दुनिया भर को सुख-चैन बाँटते चल रहे हैं।

पाँड़े कहते हैं कि पैलगी मिलने पर जिस परमानन्द की अनुभूति होती है और आत्मा पर उसका जो नशा चढ़ता है, वह गाँजा भाँग के नशे से बहुत ऊपर, बहुत ऊँचे पाये का होता है। जब दस-बारह साल के ब्राह्मण लड़के को पचास साल का अधेड़ गैर-ब्राह्मण 'पाँय लागूँ' कहता है तो उस ब्राह्मण

लड़के को लगता है कि जरूर उसमें देवता का अंश है। बचपन से इसकी लत लग जाती है। यही कारण है कि जब ब्राह्मण बालक अपने इलाके से बाहर जाता है और उसको मिलने वाली प्रणाम-पाती बन्द हो जाती है तो वह कुम्हलाने लगता है। पाँड़े अपने बेटे प्रभाकर का उदाहरण देते हैं कि दो-दो बार लुधियाना और सूरत गए, लेकिन कहीं जम नहीं पाए। बैरंग लौट आए। जबकि इसी गाँव के पिछड़ों और दलितों के लड़के उन्हीं शहरों में कमा-कमा कर घर भर दे रहे हैं।

पहले पाँड़े बाजार जाते थे तो बैंक जरूर जाते थे। तब बैंक मैनेजर तिवारी जी थे। उम्र में उनसे छोटे थे। उन्होंने ही ट्रैक्टर का लोन दिया था।

अपनी कुर्सी से उठकर हाथ जोड़कर प्रणाम करते थे और केबिन में बैठाते थे। बिना चाय पिलाए आने नहीं देते थे। जबकि पाँड़े जी को चाय पिलाने में झंझट थी। वे या तो मिट्टी के भुरके में चाय पीते थे या धातु के गिलास में। प्लास्टिक या चीनी मिट्टी के कप या काँच के गिलास में नहीं पीते थे। उन्हें अशुद्ध मानते थे। यह संयोग ही है कि उधर नया मैनेजर आया और इधर इनकी किस्तें रुकीं। नया मैनेजर ब्राह्मण भी नहीं है। नाम में 'कुमार' लगाता है। पता नहीं चलता कि किस जाति का है। ब्राह्मण होता तो नाम के साथ जाति जरूर लगाता। पाँड़े एक बार मिलने गए तो प्रणाम भी नहीं किया। यद्यपि पाँड़े बिना प्रणाम का इन्तजार किए ही हाथ उठाकर आशीर्वाद देने लगे - कल्याण हो, मंगल हो।

लेकिन उसकी आँखों में स्वागत का भाव न पाकर बुझ गए। बैठने तक के लिए नहीं कहा। समझो, जबरदस्ती बैठे।

पेड़ के नीचे लेटे-लेटे पता नहीं कब उन्हें नींद आ गई! जगे तो शाम उतर रही थी। वे वहीं से घर लौट पड़े।

छत्रधारी सिंह की चाल में थोड़ी-सी लड़खड़ाहट बची रह गई है, लेकिन छड़ी के सहारे चलने लगे हैं। बोली अभी पूरी तरह साफ नहीं निकलती, लेकिन ध्यान से सुनने पर बात समझ में आ जाती है। डॉक्टर ने कह दिया है कि अब वे घर जा सकते हैं। दवाई खाते रहना होगा।

बहू भी चाहती है, जितनी जल्दी हो, वे चले जाएँ। उनका कहीं भी खखारकर थूक देना, घिन से गिनगिना देता है।

मन तो छत्रधारी सिंह का भी भट्ठे में ही अटका है। भट्ठा बन्द पड़ा है, लेकिन क्या मुँह लेकर जाएँ? अवाँ अनल इव दहकै छोती। उनका बैरी अभी तक जिन्दा है।

"उसका इन्तजाम हो रहा है, बाबू।"

"कब होगा? तुम खुद ही राइफल लेकर जंगल में क्यों नहीं कूद जाते? मुझे जंगू का कटा हुआ सिर चाहिए, जिसे मैं अपने जूते की ठोकर से उछाल सकूँ।"

"ऐसा ही होगा, बाबू।"

सत्ताधारी पार्टी के सारे ठाकुर विधायकों ने मुख्यमंत्री से मिलकर दबाव बनाया है कि जंगू का सफाया जल्द से जल्द किया जाए।

सिपाही भर्ती की सूची जारी हो गई। दिवाकर को कई दिन से इन्तजार था। आधी रात में जारी हुई और थोड़ी देर बाद ही उन्हें खबर मिल गई। वे साइकिल लेकर शहर की ओर भागे।

परेड ग्राउंड की चारदीवारी पर कई पन्नों की सूची दूर तक चिपकाई गई थी।

अगम बहै दरियाव

अभी पूरी तरह उजाला नहीं हुआ था। लड़के टॉर्च या लाइटर जलाकर अपना नाम खोज रहे थे। अपना नाम पढ़कर मारे खुशी के दिवाकर की आँखों से आँसू निकल आए। आँसू पोंछकर एक बार फिर पढ़ा। फिर जोर से पढ़ा। देखते-देखते भीड़ बढ़ गई। धक्का-मुक्की होने लगी। वे बचते-बचाते भीड़ से बाहर आ गए। उनकी साइकिल गायब थी। ताला तो मारा था। चाभी उनकी जेब में थी। खोजते-खोजते परेशान हो गए। ऐसा कैसे हो सकता है? पुलिस लाइन में दिन-दहाड़े चोरी।

सगुन के साथ-साथ असगुन !

दिवाकर का मन हुआ कि लौटने के पहले एक बार अपना नाम फिर पढ़ लें। लेकिन अब तक लिस्ट चिन्दी-चिन्दी हो चुकी थी। बाद में आए लड़के दूसरी लिस्ट चिपकाने के लिए शोर मचा रहे थे।

चयन सूची जारी होने के साथ ही उसकी निष्पक्षता पर सवाल उठने लगे। पहले भागकर ज्वाइन करो। बहुतेरे ऐसे थे जिन्होंने लेन-देन किया था, लेकिन चयन सूची में उनका नाम नहीं था। वे बदहवास थे। हल्ला-गुल्ला कर रहे थे। रकम तो गई अजगर के पेट में।

खेलावन राहत की साँस ले रहे थे। उन्होंने जितने लोगों का जिम्मा लिया था उन सबका नाम चयन सूची में शामिल था। किसी का रह गया होता तो वह उनकी खोपड़ी का एक-एक बाल नोच लेता।

पाँड़े परिवार प्रसन्न हो गया। बहुत दिन बाद परिवार में खुशी का मौका आया है। सारा गाँव दबाव डाल रहा है कि खुशी में भागवत कथा कराइए या अखंड रामायण पाठ।

भागवत कथा में तो कई दिनों की फसंत हो जाएगी। अखंड रामायण पाठ यानी रामचरितमानस का अखंड पाठ कराना ही ठीक रहेगा।

उसके बाद ज्यादा नहीं तो कम-से-कम अपने नाते-रिश्तेदारों और जवार के ब्राह्मणों का भोज।

आजकल शुद्ध और अखंड पाठ करने वालों की टोली मिल जाती है। आठ लोग रहते हैं और ठीक चौबीस घंटे में पाठ पूरा कर देते हैं। चार हजार रुपये और अंगवस्त्र देना पड़ता है।

413

पहलवान सरकारी क्रय-केन्द्र पर धान बेचने निकले हैं। मड़ाई तो कई दिन पहले हो गई थी। ट्राली आज मिल पाई।

केन्द्र से एक किलोमीटर पहले बाजार का सेठ नथमल काँटा लगाकर खड़ा है। ट्रैक्टर देख पटरी के पास आकर रुकने का इशारा करता है।

"राम राम, पहलवान भइया। धान बेचने निकले हैं? लाइए, हमें ही दे दीजिए।"

नथमल पहलवान का मिडिल स्कूल का सहपाठी है। पहलवान ने इंटरवल में नथमल की दालपूड़ी कई बार खाई है। क्लास में भगवंत-जसवंत जुड़वाँ भाई थे। महा बदमाश। क्लास में उसे तंग करते थे। उसके फूले-फूले, नरम, गोरे गालों को बेरहमी से मसल देते थे। तब पहलवान उसके रक्षक बनते थे। अकेले दोनों भाइयों से भिड़ जाते थे। उसकी माँ की बनाई नरम गुलाबी पूड़ियों का स्वाद अभी तक याद है। भुने हुए जीरे की खुशबू !

"नहीं सेठ, सेंटर पर देंगे। कहते हैं, बनिया लूटै जाने का, ठग लूटै अनजाने का। तुम रेट में भी लूटोगे, तौल में भी। वैसे तुम क्या रेट खरीद रहे हो?"

"दुनिया के लिए चार सौ सत्तर, आपके लिए दस रुपये बढ़ाकर।"

"यानी सरकारी रेट से सीधे-सीधे नब्बे रुपये कम?"

"सरकारी रेट तो दिखाने के दाँत हैं, पहलवान भइया। हमारे यहाँ न कोई कटौती है, न घटतौली। पैसा फौरन नगद नारायण।"

'अब आप जैसे बिचौलियों से नहीं लुटवाना, नथमल। बहुत लूट चुके।"

'अच्छा, एक बात बताइए, पहलवान ! गेहूँ के साथ हर साल खेत में गेहूँ का मामा जमता है न? गेहूँ के हिस्से का खाद-पानी लेता है न? आप बचपन से उससे पीछा छुड़ाने में लगे हैं। - छुड़ा पाए? बचपन से अपनी चारपाई के खटमलों को खतम करने में लगे हैं न? - कर पाए ? उनकी खुराक ही खून है। वे दूध तो पी नहीं सकते। जिस दिन खटमलों से पिंड छुड़ा लेंगे, उसी दिन नथमल से भी छूटेगा।

उसके पहले नहीं।" मुस्कराया नथमल।

"सरकारी खरीद होने लगी है। अब छूट जाएगा।"

"जाइए। वहाँ डाकू मिलेंगे।"

ट्रैक्टर आगे बढ़ा तो नथमल ने पीछे से आवाज लगाई - " आपके लिए पाँच रुपये और बढ़ा देंगे।"

ट्रैक्टर नहीं रुका।

सेंटर पर कई ट्रालियाँ पंक्तिबद्ध खड़ी थीं। सामने मैदान में धान के छोटे-बड़े कई ढेर लगे थे। बरगद के पेड़ की छाया में पन्द्रह-बीस लोग जुटे थे। कहा-सुनी हो रही थी। पहलवान भी ट्रैक्टर लाइन में लगवाकर पेड़ की छाया में आ गए।

कहा-सुनी इस बात पर हो रही थी कि पाँच-छह लोगों का माल खरीदने के

कर तौलाई बन्द क्यों कर दी गई?

कामदार कुबेरे पुराना आदमी है। साँवला-ठिंगना, पचास की उमर वाला। बिगड़ ही बात को सँभालने का अनुभव है। वह कहता है कि बोरे खतम हो गए। टोकन से लॉजिए। बोरे आ जाएँगे तो खरीद शुरू होगी।

" बोरे का इन्तजाम करना किसान का काम है कि सेंटर का? जब महीनों खरीद कलनी है तो बोरे हर चौथे पाँचवें दिन कैसे खतम हो जाते हैं? हम टोकन लेकर खुले आसमान के नीचे माल गिराकर दिन-रात उसकी रखवाली करें! इतनी फुरसत * किसान के पास? क्वार-कातिक में काम के मारे नाक में दम है।"

"सेंटर बोरा नहीं बनाता। ऊपर से आता है।"

"यह सब किसानों को टरकाने का बहाना है, ताकि हमें मजबूरन अपना माल माटी के मोल आढ़तियों को बेचना पड़े और ये उसी माल को सरकारी रेट पर खरीदकर मुनाफे का आधो-आध बँटवारा करें। जेब कटे किसान की और कोठी खड़ी हो सेंटर इंचार्ज और बिचौलियों की।"

सेंटर इंचार्ज दूर बैठे देर से यह बहस सुन रहे थे। अपना उल्लेख सुनकर उठकर पास आते हुए गुर्राए- " मुँह में लगाम । दो। दो। हम हम इज्जत बेचकर नौकरी करने नहीं आए हैं।"

"इज्जत? खुलेआम लूट रहे हो और इज्जत को मरते हो? सच कहने पर मिर्ची लग रही है। चार दिन पहले पल्लेदारों के न आने से खरीद रोकी गई थी। आज बोरे की कमी बताकर रोक दी गई। एक दिन खरीद होती है तो चार दिन रुकी रहती है। पल्लेदारों को मजदूरी नहीं दोगे तो वे भूखे रहकर कितने दिन काम करेंगे?"

किसानों ने सेंटर इंचार्ज के गिर्द घेरा कस दिया।

"जब सरकार हैंडलिंग चार्ज देती है तो आप किसानों से पल्लेदारी क्यों वसूलते हैं?"

"कितना देती है? पाँच-छह रुपये कुंटल के रेट में कौन ठेकेदार इस महँगाई में पल्लेदार सप्लाई कर सकता है? तौलाई, भराई, बोरे की सिलाई, ट्रक पर लदवाई-मामूली काम है? किसान से वसूला जाता है किसान की सहूलियत के लिए। ताकि पल्लेदार टिके रहें। खरीद बन्द न हो।"

"तब उनका भुगतान क्यों नहीं हुआ? वे भागे क्यों ?"

"और जो दस रुपये कुंटल 'दस्तूरी' काटते हैं, वह किसकी सहूलियत के लिए?"

"करिए नेतागिरी।" सेंटर इंचार्ज भुनभुनाते हुए वापस लौट गए।

"क्या किया जाय?" कुछ लोग माल गिराकर टोकन लेने को तैयार हो गए। कुछ

माल लेकर वापस जाने लगे। पहलवान इतनी देर तक चुपचाप सारी बातें सुन रहे थे। बड़ी मुश्किल से ट्राली का इन्तजाम हुआ था। सोच नहीं पा रहे थे कि क्या करें?

तभी एक बड़ी-सी ट्राली में लदकर साठ-सत्तर बोरा धान आया। ड्राइवर उतरकर सीधे सेंटर इंचार्ज के पास गया और उसके पैर छूकर सामने की कुर्सी पर बैठ गया। पाँच-छह किसान अभी भी पेड़ के नीचे खड़े थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि आने वाला माल आढ़तिये का होगा। देखा जाए कि सेंटर इंचार्ज क्या करता है?

आधे घंटे तक बातचीत होती रही फिर कामदार सेंटर इंचार्ज के पास गया और लौटकर पल्लेदारों को काम पर लगा दिया। तौलाई-भराई शुरू हो गई।

किसानों के दल ने आकर सेंटर इंचार्ज को घेरा - "यह क्या हो रहा है? हमें

टोकन देकर टरका रहे हैं। और अभी आए माल की तौलाई शुरू हो गई।"

"अभी तो कहा जा रहा था कि बोरा नहीं है। इनके लिए बोरा भी पैदा हो गया!" कामदार ने आकर सफाई दी - " इस माल का टोकन पहले से जारी था।"

"क्या मतलब? जब माल अभी आ रहा है तो टोकन पहले कैसे जारी हो गया? क्या बिना माल आए ही टोकन जारी कर देते हैं?"

"ऐसा करते हैं तो बहुत अच्छी बात है। सबके साथ ऐसा करिए। टोकन लेकर जाएँ और जब नम्बर आए तो माल लाकर तौलवा दें। यहाँ माल रखकर चौकीदारी न करनी पड़े। रात-भर मच्छर से कटवाने का शौक किसे है?"

पहलवान गरजे-"हमारी आँखों में धूल मत झोंको, कुबेरे! यह आढ़तिये का माल है। आधे घंटे तक इंचार्ज के साथ मोल-भाव हुआ है। सौदा पट गया, तब तुम्हें अनलोड करने का इशारा हुआ है।"

एक किसान तौले जा रहे धान से एक मुट्ठी धान लेकर आया और मुट्ठी खोलते हुए बोला- "यह किसान का माल हो ही नहीं सकता। देखिए, कितनी किस्में मिली हैं इसमें। लम्बी, छोटी, पतली, मोटी। पंचमेरा।"

"इस तरह पब्लिक को भड़काओगे? अफवाह फैलाओगे? इस पर पाँच किसानों का माल लदा है। पाँचों की खतौनी लगी है।"

"कौन पाँच लोग हैं? कहाँ हैं? किस गाँव के हैं?"

इस बीच जाकिट वाला आदमी कहीं गायब हो गया।

"ऐसा बहुत हो रहा है। सीधे-सादे किसानों को फुसलाकर, उनकी खतौनी लेकर उसी पर अपना माल बेच रहे हैं आढ़ती। किसान इतना गऊ होता है कि अपने खाते में आया आढ़तियों का पैसा ईमानदारी से निकालकर उन्हें सौंप देता है। उसे इतना भी नहीं पता कि वह अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी

मार रहा है।"

"गऊ है तभी तो जो चाहे उसे दुहने लगता है।"

अगम बहै दरियाव

सेंटर इंचार्ज अन्दर से घबरा रहा है, पर आवाज में दृढ़ता लाकर कहता है-" पहले बता दो कि धान बेचने आए हो कि दंगा करने?"

पहलवान आगे आ जाते हैं।

"अपनी बात कहना दंगा करना होता है? एक तो सरकार समर्थन मूल्य इतना कम तय करती है कि किसान की लागत तक नहीं निकलती। फिर आप मनमानी कटौती करके लूटते हैं। सेंटर जब अपनी जेब भरने के लिए दस रुपये कुंटल हमसे लेता है तो फिर पाँच-छह किलो की कटौती क्यों करता है?"

दस लोगों के बीच मुँह पर सीधा आरोप लगने से सेंटर इंचार्ज का मुँह लाल हो गया।

"कहाँ है जी इनका धान? लाओ, देखते हैं।" उसने एक पल्लेदार को आवाज देकर पहलवान की ट्राली से धान का नमूना लाने के लिए कहा। नमूने के दो-तीन धान दाँत के नीचे दबाकर ऊँचा, फिर थू-थू करके बोला" एक दम पानी। लगता है पानी में भिगोकर लाए हैं।"

"पानी में भिगोकर तो लाता है अढ़तिया। दिन-भर खरीदे गए धान के ढेर पर शाम को पाँच बाल्टी पानी छिड़कवाता है और सबेरे लाकर आपके सेंटर पर तौलवा देता है। उसमें आपको पानी नहीं दिखता, क्योंकि वह आपकी लेंड़ी तर कर देता है।"

"इधर देखिए, इधर।" सेंटर इंचार्ज ने बुरा-सा मुँह बनाया और गदोरी पर रखे धान में ऐसी फूँक मारी कि आधा धान उड़ गया।

"देखो भाई, नेताजी का धान। गाँव-भर की पइया भिगोकर भर लाए हैं और चाहते हैं कि बिना कटौती के खरीद हो जाय। वह भी तुरन्त । कितनी रिकवरी होगी इस पइया से?"

"इतनी तेज फूँक में धान तो क्या, कुत्ते का पिल्ला भी उड़ जाएगा।"

"कहो तो पंखा लगाकर ओसाई करा दूँ। आँख में धूल झोंकना और किसे कहते हैं? सरकार ही मिली है चूना लगाने के लिए ! इसमें कुंटल पीछे नौ किलो की कटौती होगी। तैयार हों तो बोलिए, पहले आप ही की खरीद कर लें।"

कहने के साथ इंचार्ज अपनी कुर्सी की ओर बढ़ गया। पहलवान ने इधर-उधर देखा। उनके गाँव के दो दलित भी पल्लेदारों में थे। पहलवान को लगा कि उनको डाँट खाते देख वे मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं।

तभी कुबेरे कामदार ने पीछे से पहलवान का कुर्ता खींचा और उन्हें एक तरफ ले जाकर फुसफुसाया-" इस समय साहब के मुँह लगने से अपना ही नुकसान होगा। आइए, मैं टोकन दे देता हूँ, लेकर जाइए। कल-परसों तक नम्बर लग जाएगा। तब

तक मैं साहब को 6 केजी की कटौती के लिए मना लूँगा। साहब नए हैं, लेकिन मैं तो आपको पहचान रहा हूँ।"

पहलवान ने आसपास देखा। उनके गाँव का एक भी किसान यहाँ होता तो अभी वे इस इंचार्ज को पटककर बल-भर कूटते। दूसरे गाँव के लोग बात बढ़ने पर साथ नहीं देंगे।

कामदार टोकन लेने चला गया तो पहलवान आकर चबूतरे पर बैठे और सोचने लगे कि क्या करना ठीक होगा।

टोकन लेकर जाने का मतलब सचमुच का जाना नहीं होता। या तो ट्राली

दो दिन खड़ी रखिए तो उसका भाड़ा दीजिए या माल खुले आसमान के नीचे गिराकर उसकी रखवाली कीजिए। एक आदमी दोनों जून घर से खाना लेकर आवै। जितनी मेहनत पैदा करने में नहीं हुई, उससे ज्यादा बेचने में। कुँचाई से लिलाई गाढ़।

इसी बीच कामदार उनके हाथ में टोकन दे गया। पहलवान को सोच में पड़ा देखकर तसल्ली देने लगा- "किसान की कमाई में ही सबका हिस्सा होता है, भइया। चूहा, चिरई, सूअर, सांगड़ी से लेकर प्यादा, हाकिम तक का। यही दुनिया का चलन है।"

पहलवान ने जेब से डायरी और कलम निकालकर हिसाब लगाना शुरू किया।

छह किलो के बजाय अगर पाँच किलो की कटौती ही हो तो कुंटल पीछे 35 रुपये का घाटा होगा। दस रुपये कुंटल दस्तूरी। दस रुपये पल्लेदारी। कुंटल पीछे एक-डेढ़ किलो घटतौली। ट्राली रोककर रखें तो उसका भाड़ा। यानी कुंटल पीछे सत्तर-बहत्तर रुपये की कटौती। एक बार चेक लगाने बैंक में जाएँ, फिर पैसा निकालने। बैंक तो उनके लिए है जिनको लम्बे समय तक बैंक में पैसा रखना हो। यहाँ तो पैसा आता है बाद में और खर्चा मुँह बाए पहले आकर सामने खड़ा हो जाता है।

कई साल से देख रहे हैं, ऐसा कभी नहीं हुआ कि सीजन में पन्द्रह-बीस दिन से ज्यादा कभी खरीद हुई हो। उसमें भी आधे से ज्यादा आढ़ती का माल खरीदा जाता है, फिर दबंग और सिफारिशी का। अगर अलग-अलग जोर लगाने के बजाय सब मिलकर आवाज उठाते तो मनमानी कटौती और दस्तूरी रोकी जा सकती थी पर अभी तो बनिया नब्बे-सौ रुपये कुंटल कम पर खरीद रहा है। सेंटर की खरीद बन्द होते ही वह भी रेट गिराकर आधा कर देगा।

जेब में डालने के पहले उन्होंने हाथ के टोकन का नम्बर पढ़ा - 86, फिर उसे हाथ में ही लिये रह गए।

सब कुछ जोड़ने-घटाने पर उन्हें यही ठीक लगा कि

चार सौ पचासी रुपये के रेट से नथमल को ही दे दिया जाए। उन्होंने ट्रैक्टर ड्राइवर से कहा-"यह लेकन कामदार को दे आओ। जब मुड़वाना ही है तो खटमल क्या बुरा है! अपना इनास फेलो है।"

खेलाजन ने सबेरे उठते ही बेटे को साइकिल लेकर दौड़ाया - " जाकर सबको याद ला आओ।"

दो गाँव के दस ट्रैक्टर वाले किसानों को उन्होंने प्रदर्शन के लिए शहर चलने को तैयार किया है। सबको अपनी ट्राली में कम-से-कम पन्द्रह प्रदर्शनकारी लेकर दस बजे तक सगरे पर पहुँचना है। ग्यारह बजे तक प्रदर्शन के लिए शहर कूच कर जाना है।

वे सगरे के भीटे पर झाड़ू लगवा रहे हैं। एक जाजिम बिछा दिया जाए। कृच के पहले घंटे-आधे घंटे की बैठकी करनी होगी। कार्यक्रम की रूपरेखा बनानी होगी।

वैसे तो किसानों की समस्याएँ अनंत हैं- बिजली न मिलने की, पानी न मिलने की, खाद न मिलने की, गन्ने का बकाया न मिलने की, अनाज की सही कीमत न मिलने की, लेकिन यह सनातन समस्याएँ हैं और किसान इनका आदी हो गया है। पर अब तो गिरफ्तारी की नौबत आ गई है। सुनाई पड़ रहा है कि नहर काटने के जुर्म में दोनों गाँवों के पन्द्रह-बीस लोगों के खिलाफ थाने में रिपोर्ट दर्ज करा दी गई है। दबाव बनाकर इसे रद्द कराना होगा या जमानत कराना और मुकदमा लड़ना होगा।

नहर काटने का आरोप सरासर गलत है।

दरअसल, सीजन की शुरुआत में तो नहर में पानी आया नहीं। कुछ बरसात हो गई थी और कुछ अपने पम्पिंग सेट और ट्यूबवेल से लोगों ने धान की लगवाही पूरी की। करीब दस दिन बाद नहर में पानी आया और आया तो इतनी तेजी से बढ़ा कि नहर की पटरी कट गई। बनकट और मदरहवा दोनों गाँवों की सिंवार रात-भर में डबाडब भर गई। लगाए गए धान की फसल डूब गई। डूबी हुई फसल के नुकसान की भरपाई के लिए सिंचाई विभाग से मुआवजा माँगने की आवाज उठने लगी। उसी माँग की काट के लिए नहर विभाग ने किसानों के खिलाफ नहर काटने का मुकदमा लिखा दिया है।

हुआ यह कि पिछली गर्मी में न तो नहर के पेटे में जमने वाली सिल्ट की सफाई की गई न पटरी की मरम्मत की गई। फर्जी बिल बनाकर पेमेंट ले लिया गया। जब ओवर फ्लो से पटरी कट गई तो अपनी गर्दन बचाने के लिए नहर विभाग गाँव वालों के खिलाफ कार्यवाही कर रहा है।

कई साल पहले सन् 1968 के सूखे के समय फसल बचाने के लिए गाँव वालों ने सचमुच नहर की पटरी काट दी थी। काट क्या दी थी, ज्यादा पानी पाने के लालच में मोटी पाइप डालने के लिए पटरी काटने लगे तो पानी का बहाव इतना तेज था कि सँभाला नहीं जा सका। पानी की धार से पटरी कटती चली गई। उस समय जो मुकदमा गाँव वालों के खिलाफ दर्ज किया गया, वह बीस-बाईस साल चला। तारीख पर तारीख। फिर पूरे गाँव पर सामूहिक जुर्माना हुआ। उस समय तो गाँव वालों की कुछ गलती भी थी। नहर चढ़ी होने के दौरान पाइप डालने का काम नहीं करना चाहिए था। लेकिन इस बार तो नहर विभाग गाँव वालों को फँसा रहा है। सरासर झूठा आरोप लगा रहा है।

इसलिए तय हुआ कि इस ज्यादती के खिलाफ धरना-प्रदर्शन करके ज्ञापन दिया जाए। माँग की जाए कि जल्दी से जल्दी नहर में मौजूद सिल्ट और

पटरी की टेक्निकल जाँच कराई जाए, ताकि बिना सफाई-मरम्मत कराए फर्जी भुगतान लेने और फर्जी मुकदमा दर्ज कराने की बात सिद्ध हो सके। वरना फिर पूरे गाँव को बिना कसूर फर्जी मुकदमा झेलना पड़ेगा।

सामूहिक हित के लिए एकजुटता पैदा करने के काम के लिए खेलावन अगुआ की भूमिका निभाने को तैयार रहते हैं। सेक्रेटरी का क्या तो ओहदा और क्या पावर! लेकिन इसी पद पर काम करते हुए वे ब्लॉक, तहसील और जिला स्तर के अधिकारियों, कर्मचारियों से रब्त-जब्त बनाकर रखते हैं। सरकार द्वारा लागू की जा रही योजनाओं-अनुदान, छूट आदि की जानकारी गाँव वालों को देते रहते हैं। सामाजिक आदमी हैं। समाज का काम करके उन्हें खुशी होती है।

लेकिन गाँव के आदमी की सोच निराली होती है। वह सोचता है कि जरूर इसमें इस आदमी का कोई फायदा है। और नहीं तो यही कि नेता बनना चाहता है। नहीं तो दूसरे के लिए इतनी फाँय-फाँय क्यों करता?

नन्दू अपनी नगड़ची लेकर आए। जाजिम बिछाया गया और नन्दू नगड़ची बजाने लगे।

नन्दू पहले विद्रोही जी के साथ फरवाही नाच में नगाड़ा बजाते थे, फिर पाँड़े की नौटंकी कम्पनी में बजाने लगे। अब बेरोजगार हैं। नगाड़ा फूट गया, लेकिन नगड़ची बचाए हुए हैं। औरतें देवी माँ की पूजा के लिए महामाई के थान तक जाती हैं या

अगम बहै दरियाव

शादी-ब्याह में ताल पूजने जाती हैं तो नन्दू नगड़ची बजाते हुए आगे-आगे चलते हैं। किसी वृद्ध की मृत्यु पर भी शवयात्रा में आगे-आगे नगड़ची बजाने का कुलौजा आ जाता है। खेलावन नगड़ची का उपयोग बटोर करने के लिए कर रहे हैं। इसकी आवाज सुनकर लोग घर से निकलेंगे।

नगड़ची के बोल -

तघुड़ी घुड़ी मा जाय...
बरदा उखुड़ी मा जाय...

खेलावन सोचते हैं कि निराशा पूरब के किसानों का स्थायी भाव है। ज्यादातर लोग मानते हैं कि धरना-प्रदर्शन से क्या होने वाला है। धान की फसल डूबने का हरजाना माँगने की बात उठी तो दबाव बनाने के लिए नहर काटने का मुकदमा गले में डाल दिया गया। अब और कोई चिल्ल-पों की गई तो फिर कोई मुसीबत गले पड़ जाएगी। पश्चिम का किसान ज्यादा जागरूक है। इतनी बात पर वहाँ अब तक प्रदर्शनकारियों का मेला लग गया होता। एक बार टिकैत के आवाहन पर महीने-भर किसान दिल्ली पर घेरा डाले रहे। सरकार को नानी याद आ गई।

दस बज गए। अभी तक एक आदमी नहीं आया। घंटे भर नगड़ची बजाकर नन्दू वापस जा रहा है। खेलावन कहते हैं- "घंटे भर में नहा-खाकर लौट आओ। इस बार प्रदर्शन में भी बजाने चलो।" लेकिन नन्दू डर रहा है। नगड़ची उसे प्राणों से ज्यादा प्रिय है। वहाँ सिपाही होंगे। सिपाही बड़े ऐबी होते हैं। उसकी नगड़ची फोड़ दिये तब ?

सबसे पहले मदरहवा के राधेश्याम मास्टर का ट्रैक्टर आया। ट्राली में आठ-दस लोग। फिर राघव प्रजापति का ट्रैक्टर। ट्राली में दस-बारह लोग। फिर लल्लू सिंह आए। बताया, ट्रैक्टर लेकर ड्राइवर आ रहा है। डीजल भराने गया है।

पाँड़े जी का ट्रैक्टर खराब होकर खड़ा है। वे पहलवान के साथ खेतों के बीच से पैदल चलते हुए आए।

"अभी छत्रधारी सिंह का ट्रैक्टर नहीं आया। सबसे ज्यादा जोत वाले किसान हैं। छत्रधारी तो अभी बेटे के पास से लौटे नहीं। भतीजे को लाना चाहिए था। टाल गया होगा।"

लल्लू सिंह कुढ़कर बोले-"सब साले जनाना पैदा हुए हैं। सिपाही चौकीदार तक से डर जाते हैं।"

"यह दो-चार लोगों का कारण हो सकता है, काका। ज्यादातर ठाकुर-बाभन इसलिए नहीं आए, क्योंकि इस प्रदर्शन का कार्यक्रम मेरे जैसे पिछड़ी जाति वाले की अगुआई में बनाया गया है।"

421

"अरे, मैं नहीं आया तुम्हारी अगुआई में चलने के लिए?" लल्लू सिंह ने सान्त्वना दी-"ऐसी बात मत सोचो।"

"आपकी बात दूसरी है, काका। दस ट्रैक्टर आने थे, चार ही आए। क्या इसके पीछे कोई राजनीति नहीं है कि ठाकुरों में सिर्फ आपका ट्रैक्टर आया। बाकी तीन नहीं आए। और कुर्मी व प्रजापति के आए। हीरा सिंह के बेटे लल्लन ने तो डीजल भराने के नाम पर कल ही दो सौ रुपये एडवांस ले लिये थे। आज सबेरे कह रहा था कि ट्रैक्टर सीज हो गया तो रिलीज कराने में चार-पाँच हजार खर्च हो जाएगा। दस दिन थाने में बन्द रहेगा। इसका हर्जा-खर्चा कौन देगा? भला बताइए, यह बात सोचनी थी तो एडवांस लेने के पहले सोचते। हम दूसरा इन्तजाम कर लेते।"

"इस तरह की सोच हो तब भी उसको उभाड़ने से कोई फायदा नहीं होगा, खेलावन।" पाँड़े ने समझाया - "फिर सबको जोड़ा जाएगा।"

"जानते हैं, ज्ञापन लिखने का काम शीतला पंडित को सौंपा गया था। पता चला कि उनकी ड्यूटी मतदाता सूची बनाने में लग गई। लग गई तो लग गई। लेकिन भले आदमी को ज्ञापन का मसौदा तो सौंपकर जाना चाहिए था।"

लल्लू सिंह मास्टर कहते हैं- " धरना-प्रदर्शन की जरूरत सभी समझते हैं, लेकिन देश के किसानों को हजारों साल से इतना लूटा और निचोड़ा गया है कि- हूणों-शकों ने लूटा, मुगलों-अंग्रेजों ने लूटा, देसी राजे-रजवाड़ों ने लूटा, जमींदारों-तालुकेदारों ने लूटा। घर खोदकर और फसलें जलाकर लूटा। बहन-बेटियों को लूटा- हमारी छाती पर इन सबका बोझ है। हमारे दिलों में इन सबके घाव हैं। उदासीनता और जड़ता हमारा स्थायी भाव हो गया है। हमें जगाने के लिए बहुत ज्यादा झकझोरने की जरूरत है।"

बारह बज गए। अब तो किसी के आने की उम्मीद नहीं। चार ट्रैक्टर और तीस-बत्तीस आदमी से कौन-सा जुलूस बनेगा? खेलावन सलाह लेने के लिए कहते हैं- "क्या किया जाय काका? नारे लगाने के लिए भी सौ-पचास आदमी चाहिए।

चार ट्रैक्टर शहर की भीड़ में कहाँ बिला गए, कुछ पता ही नहीं चलेगा।"

"बात तो सही है।" लल्लू सिंह सहमत होते हैं।

पाँड़े कहते हैं-" आज का कार्यक्रम मुल्तवी करना ही ठीक रहेगा। लोग थोड़ी फुरसत में हो जायँ तो आठ-दस गाँवों की पंचायत बुलाकर प्रदर्शन का प्रस्ताव पास किया जाय। कम-से-कम ढाई-तीन सौ लोग और पन्द्रह-बीस ट्रैक्टर रहें तो कुछ ताकत दिखाई देगी।"

खेलावन के चेहरे पर निराशा उतर आई। बोले- "यह जातिवाद का जहर हमें कदम-कदम पर फेल करेगा, महराज।"

अगम बहै दरियाव

"इस मुद्दे को इतना तूल मत दो, खेलावन। बात सच है तो भी मत दो। हाँ तो यह हमें और बाँटेगा। अगली बार सबको जोड़ा जाएगा। पूरी ताकत दिखाई जाएगी।"

खेलावन महसूस करते हैं कि इतनी पढ़ाई-लिखाई करने और देश-दुनिया घूमने के बाद भी गाँव का आदमी सामूहिक हित के काम के लिए एकमत होने के मुद्दे पर जाति-पाँति की भावना से उबर नहीं पाता। उन्होंने एक अखबार में पढ़ा था कि जिनकी नीतियों और षड्यंत्रों के कारण किसान का जीवन दूभर हो रहा है, उनसे लड़ना तो दूर किसान को उनकी पहचान तक नहीं है। गाँव के लोग झबिया में बन्द उन मुर्गों की तरह हैं जो बेचने के लिए शहर लाए जा रहे हैं। रात होते-न-होते इन्हें किसी-न-किसी मांसाहारी के पेट में समा जाना है, लेकिन इन्हें अपनी जान पर मँडराते इस खतरे का

रंचमात्र एहसास नहीं है। छुरी तेज करके इन्तजार में बैठे कसाई के बारे में इन्होंने कभी सुना ही नहीं है। झबिया के भीतर वर्णवाद और नस्लवाद का घमासान चल रहा है। लाल सुनहरे पंख वाले, लम्बी कलंगी वाले उन्नतिशील प्रजाति के मुर्गे, देसी मुर्गों को हेय दृष्टि से देखते हुए उन पर अपनी शक्ति और श्रेष्ठता का रोब झाड़ रहे हैं। उनको लतिया रहे हैं। नोच-खसोट रहे हैं। उनके लेखे झबिया के अन्दर विजय मिल गई तो समझो विश्वविजय कर लिया। एकदम ठीक लिखा था अखबार ने ! जातिवादी अलगाव न होता तो कितनी एकता होती गाँव में। फौलाद जैसी एकता !

वे कहते हैं-"अचानक किसी दिन गिरफ्तारी शुरू हो जाएगी। तब सभी अलग-अलग जमानत कराने दौड़ेंगे। दो-चार हजार खर्च करेंगे, लेकिन अभी..."

पहलवान ने चरी का बोझ चारा मशीन के पास पटका तो पास में सोया कुत्ता चौंककर भौंकते हुए भागा। सिर से अँगोछा उतारकर उन्होंने चेहरे का पसीना पोंछना शुरू ही किया था कि ललिया के हुंकारने और चितकबरे के फुफकारने की आवाज एक साथ आई।

"सबर करो। सबर करो।" उन्होंने बैलों की तरफ देखते हुए कहा।

भूखे-प्यासे होने पर दोनों बैल अलग-अलग तरह से ध्यान आकर्षित करते हैं। ललिया थूथन उठाते हुए गले से हू-हू की आवाज निकालता है और चितकबरा

गर्दन नीचे झुकाकर नाक से फों-फों की आवाज निकालकर गुस्सा दिखाता है। थोड़ी दूर पर बँधी लछिमिनिया, बछड़ा और भैंस उठकर खड़े हो गए। लछिमिनिया खूँटे के चारों तरफ चक्कर काटने लगी। ओसारे से बाल्टी उठाकर वे कुएँ की ओर जाने लगे तो घर से बाहर आती पत्नी बोलीं-" इतने तड़पे नहीं जा रहे हैं। अभी बिटिया आ रही है तो पिलाएगी। आपको लम्बे रास्ते जाना है। धूप तेज होने से पहले नहा-खाकर निकल जाइए।"

पहलवान ने जैसे सुना ही नहीं। कुएँ के कुंड से पानी निकाल-निकालकर सारे जानवरों को पिलाया, फिर अलगनी से धोती लेकर नहाने चले।

पत्नी महसूस करती हैं कि इधर कुछ दिनों से पहलवान के मन का बोझ धीरे-धीरे बढ़ रहा है। सयानी हो रही बेटी के लिए साल-भर से वर खोज रहे हैं, लेकिन कामयाबी नहीं मिली। पिछले साल तो किसी तरह बेटे की इंजीनियरिंग की फीस भर दी गई। इस साल कोई रास्ता नहीं दिखता। गन्ने का बकाया नहीं मिला। हर दूसरे महीने ट्यूबवेल के बिजली बिल की तलवार सिर पर लटक जाती है। बेटी का विवाह कहीं तय भी हो जाए तो उसके खर्च का इन्तजाम कहाँ से होगा? पहले इनका अट्टहास बीघा-भर दूर से सुना जा सकता था। अब हँसी निकलती भी है तो बेआवाज।

उन्होंने ओसारे से आवाज दी-" खाना तैयार है। नहा लीजिए तो रोटी सेंकें।"

पहलवान खड़े-खड़े कुछ सोचने लगे थे। पत्नी की आवाज से सचेत हुए। लोटे में पानी भर-भर कर सिर पर डालने लगे-

हर-हर गंगे पार्वती।
पाप न रहि जाय इक रती .

सुनकर पत्नी मुस्कराईं- जाने किस जन्म में कौन सा पाप किए हैं जो रोज-रोज धोने के बाद भी नहीं छूट रहा है। जो सचमुच रात-दिन ठगी, बेईमानी, घटतौली जैसे पाप-कर्म में लगे हैं, वे भी क्या कभी उसे धोने की सोचते होंगे?

पत्नी ने आँगन में छाँह की तरफ पीढ़ा रख दिया था। वे आकर बैठे। पत्नी ने परसी हुई थाली लाकर उनके सामने रखी। भात के सफेद गोले के ऊपर ताजी सिंकी फूली हुई रोटी देखकर अच्छा लगा। पकी रोटी की सोंधी गन्ध मन मुदित कर गई।

लोटे का पानी हथेली पर उड़ेलकर उन्होंने थाली के चारों तरफ अर्पित किया और तर्जनी के नाखून से लोटे को दो बार बजाया - टन्न ! टन्न ! पत्नी एक हरी मिर्च और ताजी धुली लम्बी मूली थाली में रख गईं। वे चुपचाप खाने लगे। इधर कुछ

देवों से खाते समय उन्होंने बोलना बन्द कर दिया है। पूछने पर जरूरत के अनुसार हाँ थान में सिर हिला देते हैं।

अगली रोटी के साथ पत्नी एक गिलास मट्ठा भी दे गई। फिर एक-एक रोटी लेककर थाली में डालती रहीं। पहलवान सिर झुकाकर खाते रहे। अभी चार-पाँच साल पहले तक घर में कोई न रहे तो ये खाने की थाली हाथ में लेकर चूल्हे तक बले आते थे। उनकी देह से देह सटाकर उकहूँ बैठते और उन्हें अपने हाथ से एकाध कौर खिलाने की कोशिश करते। अब धीरे-धीरे पुरखा बनते जा रहे हैं।

एक हाथ में लोटा और दूसरे में कुत्ते के लिए कौरा लेकर पहलवान बाहर निकले। कौरा देकर हाथ धोया और सींक से दाँत खोदते हुए थोड़ी देर तक बेटी को चारा मशीन चलाते हुए देखते रहे। झुककर चरी का घान उठाती और चारा मशीन में ठेलती हुई बेटी उन्हें पहले से ज्यादा हृष्ट-पुष्ट लगी। वे खखारते हुए मड़हे में बिछी अपनी चारपाई पर आकर बैठ गए। पत्नी हुक्का भरकर ले आईं। वे लेटकर हुक्का पुड़काने लगे। पत्नी पायताने बैठकर उनके पाँव दबाने लगीं। नेपथ्य से आती चारा मशीन की खचर-पचर उनकी आँखों में नींद उतारने लगी। पत्नी ने हुक्का पकड़कर दीवार के सहारे खड़ा कर दिया। पहलवान के खर्राटे बजने लगे। पहलवानिन ने

लोगों को कहते सुना है कि आदमी चिन्ता में होता है तो नींद गायब हो जाती है। कम-से-कम पहलवान के साथ अभी यह स्थिति नहीं आई है।

अचानक खर्राटे बन्द हो गए। उन्हें जगा जानकर पत्नी बोलीं- "उठिए, नहीं

तो देर हो जाएगी।"

पहलवान ने आँखें खोलीं।

पत्नी उठकर अन्दर गईं और एक हाथ में उनका कुर्ता-जाकिट तथा दूसरे में पम्प जूता लेकर लौटीं।

कुर्ता-जाकिट अलगनी पर टाँगकर वे पुराने कपड़े से जूता साफ करने लगीं। आज वे अपने फुफेरे भाई तीरथ के गाँव में बेटी के लिए वर देखने जा रहे हैं।

वे उठे। बंडी पहनी। धोती खोलकर नए ढंग से पहनी। साइकिल निकालकर पोंछी। दोनों टायर दबाकर हवा का अन्दाज लगाया। कुर्ता-जाकिट पहना। तलवे की धूल झाड़कर जूता पहना। पत्नी ने बालों में तेल लगाकर कंघी पकड़ा दी। उन्होंने बालों में लगा तेल पोंछकर चेहरे और मूँछ पर मला और छूहे में टँगे शीशे में झाँककर कंघी करने लगे। अँगोछा गले में डालकर एक बार फिर शीशे में देखा। खुद को अच्छे लगने लगे। पत्नी को देखा। पत्नी उन्हें ही देख रही थी। मुस्करा दीं। वे मुस्करा तो नहीं पाए, लेकिन आँखों के फैलने से लगा कि उनके अन्दर भी थोड़ी हरियाली उतर आई। उन्होंने कंबल लपेटा और बाहर आकर साइकिल के कैरियर में दबाने लगे।

पत्नी भी बाहर निकल आईं। पहले ऐसा नहीं होता था। इतना एकान्त होने पर कहीं जाने के पहले वे उन्हें अवश्य ही बाँहों में भरकर चूमते। शरीर के कोमल अंग पर वे उनके पंजों का दबाव महसूस करतीं।

आँचल के खूँट से दस का नोट खोलकर पति के हाथों में पकड़ाते हुए बोलीं- " रख लीजिए। कहीं पंचर-वंचर हो जाए... और अपने भैया से कहिएगा कि वही समझदारी से सारी बात करें। उन्हीं को बोलने देना। खुद आगे-आगे मत हाँकिएगा नहीं तो बनता काम बिगड़ जाएगा।"

वे भड़क गए- "मैं बिगाड़ लूँगा तो तुम्हीं क्यों नहीं चली जातीं बड़का साफा बाँधकर।"

पत्नी हँसते हुए बोलीं- "मेरा मतलब, बेटी के बाप बनकर जाइए। रुस्तम पहलवान बनकर नहीं। काम बनता है थोड़ा दबकर बोलने से।"

"तो क्या मैं झगड़ा करने जाता हूँ?"

पत्नी को पछतावा होने लगा कि जाते समय क्यों ऐसी बात छेड़ दी ! फिर मानो सन्धि-प्रस्ताव किया- " धूप तेज हो गई है। सिर में अँगोछा बाँध लीजिए।"

वे चल पड़े। लम्बा कुर्ता हवा से फरफराने लगा। पत्नी उन्हें जाते हुए देखती रहीं।

चेहरा जरूर सँवरा गया है, लेकिन सज-धज लेते हैं तो अभी भी आँखों में बस जाते हैं। लम्बा शरीर। बोलती आँखें। बड़ी-बड़ी मूँछे ! घर-गृहस्थी का जंजाल ही ऐसा है कि बड़े-बड़ों को कजरी-कबीर भूल जाती है। उन्हें अपने बाबा द्वारा गाए जाने वाले गीत की एक कड़ी याद आ गई-

महँगी के मारे बिरहा बिसरि गा , भूल गई कजरी कबीर ।
देखिके गोरिया कै उमड़त जोबनवा , उठै न करेजवा मा पीर ।

अर्थात्, महँगाई ने ऐसा मारा है कि कजरी-कबीर भूल गई। अब तो गोरी का उमड़ता यौवन भी कलेजे में पीर नहीं पैदा कर पाता।

बहुत दिनों बाद इस रास्ते पर आना हो रहा है। जब बुआ जीवित थीं तो अक्सर आना-जाना होता था। मकर संक्रान्ति के दिन खिचड़ी पहुँचाना तो उन्हीं के जिम्मे रहता था। बुआ उन्हें देखकर कितनी खुश हो जाती थीं। यह खुशी और वात्सल्य

अगम बहै दरियाव

इनके रोम-रोम से प्रकट होता था। कहतीं- " आज सबेरे से ही नीम के पेड़ पर कौआ बोल रहा था, तभी समझ गई कि मेरा दुलरुआ भतीजा आ रहा है।" कितना खिलाती-पिलाती थीं! दो-तीन दिन से पहले आने नहीं देती थीं। फुफेरे भाई तीरथ इनसे दो साल बड़े थे। लाग-डाट में सेरों दूध पिला देती थीं।

जहाँ आज पक्की सड़क है, वहाँ पहले कच्ची लीक थी। बड़े सबेरे पैदल चलने पर कहीं दोपहर तक आठ कोस जमीन तय होती थी। बीच में एक-दो जगह किसी बाग में रुककर सुस्ताते थे या किसी कुएँ-तालाब पर हाथ-पैर धोकर थकान उतारते थे। पानी पीते थे।

यह जो आम और महुए के चार-पाँच बूढ़े पेड़ दिखाई पड़ रहे हैं, जिनकी जड़ों के आसपास की मिट्टी कटकर बह गई है, यहाँ बहुत बड़ा बाग था। बीच में ताल और किनारे-किनारे भीटे पर पेड़। अब ताल भठ गया है। भीटा समतल हो गया है।

यहाँ एक साधु की कुटी थी। पानी पीने के लिए जो भी राहगीर कुटी पर रुकता, बाबा उसे दो बतासे देते थे। कब के मर-खप गए होंगे। कुटी की जमीन सड़क में समा गई है। टूटी छूहियों वाला कुआँ अभी भी पटरी के किनारे तिरस्कृत खड़ा है। यहाँ से शुरू होता था बेलसौना वाला महाऊसर

जो शिवगढ़ तक फैला था।

अरे, महुए का वह विशाल छतनार पेड़ भी नहीं है! इस महाऊसर के रास्ते में उस पेड़ के अलावा मील-डेढ़ मील तक दूसरा कोई पेड़ नहीं था। धूप में तपकर आते राहगीर मन-ही-मन तय करते थे कि किसी तरह उस महुए तक पहुँच जाएँ तो उसकी छाया में बैठकर सुस्ताएँ। यहीं एक काला मरकहवा साँड़ रहता था। रास्ते में मिलने पर मारने के लिए दौड़ा सकता था लेकिन महुए के नीचे मिलने पर नजर उठाकर ताकता तक न था। मस्ती में बैठा पागुर करता रहता था। आसपास के गाँव वाले गर्भाधान के लिए अपनी गायें हाँक कर उसके पास लाते थे। कभी वह तुरन्त गाँववालों की मनोकामना पूरी करने लगता, कभी बाल ब्रह्मचारी की तरह बिना गायों की ओर नजर उठाकर देखे उनसे दूर किसी दिशा में चल पड़ता। गाय वाले परेशान हो जाते। पता नहीं, कब कैसे मरा होगा?

नहर की क्रासिंग आ गई। यहाँ से नहर की पटरी पकड़ना था। कच्ची पटरी पर जो सर्पिल लीक बन जाती है, उस पर साइकिल चलाने का अपना अलग ही मजा है। नहर में पानी चल रहा था। इसके किनारे खेतीबारी का काम तेजी पर था। खेत की दशा देखकर ही पता चल जाता है कि इसका मालिक आलसी है या मेहनती। खुद जुटता है या हलवाहों के भरोसे रहता है।

एक किसान खेत में डेंगा चला के पानी दे रहा था , उसकी घरवाली लाल साड़ी पहन के कुदाल से कोन मोड़ रही थी। उसका तीन साल का नंग धढंग बेटा डेंगा के पीछे पीछे पैर पटकता-ठुमकता चल रहा था । शायद बाप से डेंगा पर बैठने की जिद कर रहा हो ।
उस पर बैठने का आनन्द उस के लिऐ ऐसा ही था जैसे बच्चों के लिए पहली-पहली बार मोटर, रेल क्रूज या हवाई जहाज में बैठने का होता है। लेकिन बाप ने उसे सख्ती से डांट दिया होगा। तनिक सी असावधानी के चलते डेंगा के नीचे गिर जाने का जोखिम कौन बाप उठाएगा। लड़के की

कमर में काले भूरे सूती धागे की करधनी बंधी थी। करधनी की लटकन के सिरे पर लगी लाल भुंडी * उसके बाल-लिंग पर हल्के-हल्के उठ-गिर रही थी। उन्हें बच्चे की माँ की समझदारी पर खुशी हुई। बच्चा छुन्नी की बजाय इस भुंडी को ही खींचता-नोचता रहे, इसकी व्यवस्था।

बैलों के पले शरीर और चमकते रोएँ से झलक रहा था कि यह औरत अपने हाथ से बैलों की सानी-पानी करती होगी। सहसा उन्हें अपने दाहिने बैल की याद आई। उसके पिछले बाएँ खुर में भादों से ही कीड़े पड़े हैं। दो बार कम्पाउंडर बुलवाकर बीस-बीस रुपये फीस देकर उन्होंने दवा डलवाई, लेकिन अभी तक उसका लँगड़ाना पूरी तरह बन्द नहीं हुआ। पता नहीं कैसी दवा डाला? हर चीज में नकल घुस गई है।

सहसा पटरी के किनारे दौरी में रखी यूरिया के झक्क सफेद दानों को देखकर उनकी चिन्तनधारा बदल गई। गेहूँ की बोआई एकदम सिर पर है। उन्हें खाद खरीदने के लिए कम-से-कम दो हजार रुपयों की तुरन्त जरूरत है। इन्तजाम न हो पाने के चलते सरसों और बरसीम तो बिना खाद डाले ही बोना पड़ा। जिस परिवार में बाहर से नगदी की आमदनी नहीं है, उसका आज के जमाने में गुजर होना मुश्किल है। जैसे गड्ढे से खोदी गई मिट्टी उसी गड्ढे को भरने के लिए पूरी नहीं पड़ती, वैसे ही खेती-किसानी की आमदनी खेती-किसानी के खर्चे-भर को भी नहीं अटती। और कहाँ से अटे! डीजल, बिजली, खाद, कीटनाशक, जोताई, मड़ाई, मजूरी-सबका रेट तो हर साल दस-पाँच रुपये बढ़ जाता है। नहीं बढ़ता तो किसान की पैदावार का दाम। पहलवान को लगता है कि जैसे नहर के पेटे में सिल्ट भरती है, किसान की तकदीर में भी साल-दर-साल सिल्ट भरती जा रही है।

सोचा था, इस साल वरुणा सरसों बोएँगे। कहते हैं, बड़ी अच्छी पैदावार होती है, लेकिन मौके से हाथ में पैसा न आ पाने के चलते नहीं बो सके।

* गोली

आलू का बीज खरीदने के लिए पैसा जुटाना पहाड़ हो गया। दस रुपये किलो का बीज खरीदकर बोए हैं। डर है कि तैयार होने तक आलू का रेट गिरकर दो रुपये किलो से भी नीचे न चला जाए। आषाढ़ बीतते-बीतते जैसे ही किसान के घर से निकलकर बाजार में पहुंचा, फिर दस रुपये किलो बिकने लगती है। सारे हालात तो मर जाने के हैं। जिन्दा कैसे रहा जाए!

वे मन-ही-मन तत्काल खोपड़ी पर सवार खर्चों का हिसाब लगाने लगे। ट्यूबवेल का बिल सवा चार सौ रुपये। इंजीनियरिंग पढ़ रहे बेटे का मासिक खर्च डेढ़ हजार रूपये। खाद के लिए दो हजार रुपये। बैल का खुर ठीक न हुआ तो ट्रैक्टर से खेत की जुताई के लिए हजार-बारह सौ रुपये। मोटा-मोटी पाँच हजार रुपये। एक तो सरकारी रेट से कम पर नथमल को धान बेचना पड़ा, दूसरे जो मिला उससे ज्यादा का खर्च सामने मुँह बाए खड़ा है। बछड़े को वे जेठ से ही बेच रहे हैं। छह हजार का धन है, लेकिन उन्होंने मन में सोच रखा है कि पाँच हजार से ऊपर जितना भी मिल जाएगा उतने में दे देंगे। अभी न बिका तो फिर जेठ-आषाढ़ तक बैठाकर खिलाना पड़ेगा। बैलों को आजकल पूछता कौन है! लोगों के खूंटे से बैल तेजी से गायब हो रहे हैं। बछड़ा नहीं बिका तो अगले महीने बेटे की खुराकी कहाँ से भेजेंगे?

पता नहीं धूप से, साइकिल चलाने से या खर्चों का हिसाब करने से दिमाग गर्म हो जाने के कारण उन्हें आँखों के आगे लाल-पीले चकत्ते नजर आने लगे। लगा, जैसे चक्कर आ रहा है। थोड़ा आगे पटरी के किनारे ही आम का घना पेड़ था। बगल में ट्यूबवेल चल रहा था। वे छँहाने और पानी पीने के लिए वहीं उतर पड़े। साइकिल स्टैंड पर खड़ी करके जमीन से थोड़ा ऊपर उभरी पेड़ की मोटी साफ जड़ पर बैठ गए। सिर में टक-टक की आवाज हो रही थी। कुर्ता पसीने से भीग गया था। सिर से अँगोछा उतारकर उन्होंने पसीना पोंछा। ट्यूबवेल की पाइप से पानी की मोटी धार गिर रही थी। पानी सामने के खेत में जा रहा था। खरीफ से खाली हुआ खेत रबी की बुआई के लिए भरा जा रहा था। एक आदमी नंगे बदन, धोती को लँगोटी की शक्ल दिये झुककर फावड़े से पानी के आगे बढ़ने की राह

आसान कर रहा था। आठ-दस सफेद बगुलों का झुंड उस आदमी के आसपास दाएँ-बाएँ होता हुआ खेत से निकलते कीड़ों-पतंगों को चुगने में व्यस्त था।

थोड़ी देर सुस्ताने के बाद पहलवान उठकर ट्यूबवेल तक गए। पेट-भर पानी पिया! फिर लौटकर, जड़ के दोनों तरफ घुटने के पास से पैर मोड़कर, अँगोछे का सिरहाना बनाकर लेट गए। धीरे-धीरे बह रही हवा उन्हें सहलाने लगी। थोड़ी देर के लिए आँखें झपीं तो क्या सपना देखते हैं कि तहसील के वसूली अमीन को अपनी तरफ आता देखकर वे भागकर भूसे के ढेर में छिप रहे हैं।

अमीन रावण की तरह अट्टहास करता हुआ लाठी के हुरे से जगह-जगह भूसे के ढेर को कोंचता है। अचानक लाठी का हुरा उनके पेट में इतनी जोर से लगता है कि वे दर्द से चिल्ला पड़ते हैं। चिल्लाने के साथ ही वे पेड़ की जड़ से गिरते-गिरते बचे। एक बार फिर पसीने से सराबोर। अँगोछे से पसीना पोंछकर वे उठकर खड़े हो गए। दिल अभी तक धड़-धड़ धड़क रहा था।

चार साल से ज्यादा हो रहे हैं जब अमीन ने उन्हें बाजार में पकड़कर बैठाया था। वह कर्ज उन्होंने जमा भी कर दिया, लेकिन साल-छह महीने में वह अमीन उनके सपने में आ जाता है। अचानक सपने में उसका चेचक के दाग वाला छेनहा चेहरा प्रकट होता है और धीरे-धीरे बड़ा आकार लेने लगता है। लाल आँखें, बड़े-बड़े छितरे दाँत और जमीन से आसमान तक गूँजता उसका भयावह अट्टहास।

पहलवान ने फिर साइकिल सँभाली।

यहाँ से नहर की पटरी छोड़कर खड़ंजे पर उतरना होगा। अपनी पकड़ याद करते-करते कब इतनी दूर निकल आए, पता ही नहीं चला। तीरथ का घर नजदीक आने के साथ-साथ उनका मन फिर घबरा रहा है। पता नहीं कैसे होंगे लड़के वाले! कैसा व्यवहार करें! पत्नी को बात-व्यवहार की उनकी

योग्यता पर विश्वास नहीं।

पिछली बार जहाँ लड़के की देखुआरी करने गए थे, वहाँ की असफलता से भी उनका आत्मविश्वास कम हुआ है। लेकिन पिछली बार तो उन्होंने अपनी ओर से जुबान तक नहीं खोली। जो कुछ लड़के वाले पूछते रहे, वे बताते रहे। पता चला था कि लड़के वालों का संयुक्त परिवार है। भट्ठा है, ट्रैक्टर है। खाते-पीते लोग हैं। लड़का भी परिवार के कारोबार में हाथ बंटाता है। बेटी सुखी रहेगी। जाने पर सब लोग बड़े प्रेम से मिले। खूब स्वागत-सत्कार भी हुआ, लेकिन रात में बातचीत के दौरान जब लड़के वालों ने उनकी माली हालत का अनुमान लगा लिया तो सबेरे-सबेरे फैसला सुना दिया। बल्कि सीधे-सीधे फैसला भी कहाँ सुनाया, लड़के के चाचा और बड़े भाइयों के बीच होने वाली कहासुनी के दौरान कान में पड़े शब्दों से ही उन्हें फैसले की जानकारी हो गई।

"क्या है इनके पास जो बाबूजी इस तरह लट्टू हुए जा रहे हैं। न कोई कोटा-परमिट न कोई कालेज-भट्ठा, न कोई टरक-ट्रैक्टर न कोई ठेका-पट्टा। कहाँ से सँभालेंगे पाँच सौ लोगों की हमारी बारात ? शादी का बजट कितना है? कौन-सी गाड़ी देंगे? साफ-साफ बात होनी चाहिए।"

सुनकर वे बिना मुँह धोये ही चल पड़े। किसी ने यह भी नहीं कहा कि एक कप चाय पीकर जाइए। गाँव के बाहर चाय की दुकान पर रुके तो पता चला कि भट्ठा दो साल से बन्द है।

अगम बहै दरियाव

ट्रैक्टर बिक गया। बस, पक्का मकान-भर देख लीजिए। कई साल से कोई मोटी मुर्गी तलाश रहे हैं कि फँस जाए तो हलाल कर डालें।

सुनकर उनका मलाल कुछ कम हो गया था।

यह रहा सामने बुआ का घर। घर के पिछवाड़े वाला गूलर का पेड़ अभी भी जस का तस खड़ा है। बगल वाले घर की लड़की सतनी गिलहरी की तरह इस पर चढ़कर गूलर तोड़ती थी। गूलर को फोड़ने पर अन्दर से सैकड़ों मच्छर निकलते जिन्हें वह फूंक मारकर उड़ाती और अपने हाथ से उन्हें पके गुलाबी गूलर खिलाती थी। पता नहीं अब वह कहाँ और कैसी होगी! कितनी मोह लेने वाली हँसी थी उसकी ! मौका मिला तो उसके दरवाजे तक जाएँगे। क्या पता, मायके आई हो तो भेंट हो सकती है!

तीरथ भैया ने मड़हे की जगह पक्का दालान बना लिया है। बैलों की नाँद पक्की करा ली है। बैल शायद खेत जोतने गए होंगे। एक छोटी बछिया बँधी है अर्थात् घर में दूध होता है। दुआर लम्बा-चौड़ा, साफ-सुथरा है। नीम के नीचे सुतली के बाध से बुने दो पलंग पड़े हैं। कोई दिख नहीं रहा। वे साइकिल खड़ी करके पलंग पर बैठ गए।

छोटा भाई कई साल पहले मिलिटरी में भर्ती हो गया था। वही जो यूरिया लूट के फर्जी मामले में पकड़ा गया था। तीरथ खेती-बारी सँभालते हैं। दोनों भाइयों में सुमति है, इसलिए परिवार की मरजाद बनी हुई है। जिस दिन कुमति पैठी, भाई-भाई में फूट पड़ी, सब ढह जाएगा। यही घर-घर का लेखा है।

तीरथ का बेटा अन्दर से निकला। पहचानकर पैर छुए और अन्दर जाकर माँ को बताया। फिर तीरथ बहू निकलीं। एक हाथ में चबैना की मौनी और दूसरे में लोटा लेकर। लड़का बाल्टी में पानी भर लाया। दुबारा अन्दर जाकर तीरथ बहू कमोरी में सिखरन लाईं। हाथ-मुँह धोकर, चबैना चबाकर उन्होंने एक लोटा सिखरन पिया तो थकावट आधी हो गई। खाने-पीने के बाद रात में दोनों भाई घर-गृहस्थी के झमेलों की चर्चा करते रहे। तीरथ ने बताया कि उनके यहाँ इस समय न डाई मिल रही है, न यूरिया। भादों से

ही यही हाल है। आए दिन हल्ला होता है कि आज आ रही है, कल आ रही है। सैकड़ों लोग सबेरे से ही कोऑपरेटिव सोसाइटी के गोदाम के सामने खड़े इन्तजार करते रहते हैं और शाम को खाली हाथ लौट आते हैं।

431

बिना खाद डाले बुआई करनी पड़ी तो पैदावार घटकर आधी हो जाएगी।

लड़के वालों के बारे में बताया कि आदमी तो ठीक-ठाक हैं। खुद ही एक बार मिलने पर बोले थे कि अच्छे खानदान की कोई लड़की हो तो रिश्ता कराइए। पता चला कि इधर कई पार्टियाँ बातचीत करने गईं, लेकिन बात आगे नहीं बढ़ पाई। लड़के के बाप हैं, इसलिए कोई नहीं कह सकता किस करवट बैठेंगे?

बैंक मैनेजर ने पाँड़े को बुलवाया है। तीन किस्तें लगातार रुक गईं। सोलहवीं, सत्रहवीं और अठारहवीं। मैनेजर साहब जानना चाहते हैं कि कमाई का पैसा गया कहाँ? क्या कहें पाँड़े? यह तो नहीं कह सकते कि कमाई नहीं हुई? कमाये नहीं तो एक लाख घूस कहाँ से दी? भोज-भात में भी कम खर्च नहीं हुआ। लेकिन यह सही है कि उनके हाथ में एक पैसा नहीं आया। दिवाकर कमाए, दिवाकर ही खर्च कर डाले। यह भी कैसे कहें कि घूस देकर गलत किया। न देते तो नौकरी न मिलती। नौकरी आज के जमाने में कितनी अनमोल है! कितने लोगों को तो नौकरी भी नहीं मिली और दी गई रकम भी डूब गई। लेकिन मैनेजर साहब से तो यह सब नहीं कहा जा सकता।

"साहब, आप पूछ रहे हैं कि कहाँ खर्च कर दिया सारा पैसा? कहाँ बताऊँ? इतना जान लीजिए कि न दारू पिया, न जुआ खेला, न रंडीबाजी की।"

मुस्कराने लगे मैनेजर साहब -" उसकी तो अब उमर नहीं रह गई आपकी। फिर किस्त क्यों नहीं दे रहे हैं?"

"हम तो देना चाहते हैं। हमारी नीयत में खोट नहीं है, लेकिन आप ही नहीं चाहते कि हम दें।"

"हम क्यों नहीं चाहेंगे?"

"आप माने सरकार। हमारी नजर में बैंक माने भी सरकार। चीनी मिल माने भी सरकार। हमारे अनाज की एम.एस.पी. न बढ़ाने वाली भी सरकार और जितना तय कर दिया, उस रेट पर खरीद न करने वाली भी सरकार । सरकार अपनी लेनदारी लेना तो जानती है, पर देनदारी देना नहीं जानती। हम आपके देनदार हैं और चीनी मिल के लेनदार हैं। हमें दो साल का गन्ने का बकाया नहीं मिला और आपकी तीन किस्तें रुक गई हैं। हम मिल का कुछ बिगाड़ नहीं सकते, लेकिन आप हमारा

ट्रैक्टर नीलाम कर सकते हैं। खेती-बारी कुर्क कर सकते हैं। हम तो चाहते हैं कि एक सरकार दूसरी सरकार से लेन-देन कर ले और हमारा गला छूट जाय। हमारे आलू, गोभी, प्याज, टमाटर का सही रेट मिलता रहता तो भी हमारी किस्त बकाया न रहती, लेकिन वह भी हमें माटी के मोल फेंकना पड़ता है।"

"रेट तो बाजार तय करता है, पाँड़े जी।"

"बाजार भी तो हमारे लिए सरकार से कम निर्दयी नहीं है। तभी तो बाकी चीजों के लिए वहाँ महँगी चल रही है और किसानों की पैदावार के लिए मन्दी। सबके लिए उसके पास सेंसेक्स की रंगीनी है और किसान के लिए सल्फास की गोलियाँ।"

"तो क्या आपको लोन देकर बैंक ने गलती कर दी?"

"बिलकुल कर दी। ट्रैक्टर चार एकड़ की जोत वाले किसानों के लिए है ही नहीं। दस-बारह एकड़ भी न हो तो क्या उससे अपना घर जोतेगा? ट्रैक्टर रखना हाथी पालने से भी ज्यादा कठिन है। हाथी के एक पेट होता है, ट्रैक्टर के दो होते हैं। वह एक साथ दो खुराक खाता है। एक पेट से डीजल-मोबिल खाता है, दूसरे से ब्याज खाता है। ब्याज का मीटर रात-दिन चलता रहता है। वह हनुमान की पूँछ की तरह बढ़ता है।"

"यह सब फिलासफी छोड़िए। किस्त कैसे भरेंगे, यह बताइए?"

"कैसे बताएँ? सितम्बर से, जब से बेटा ट्रेनिंग में गया, ट्रैक्टर दरवाजे पर खड़ा है। हम तो कहते हैं, ट्रैक्टर आप खिंचवा लाइए। हमें मुक्ति दे दीजिए।"

"इतनी आसानी से से मुक्ति मुक्ति मिल जाएगी? खुद चलाइए, कमाइए और किस्त भरिए।"

"हमें चलाना आता तो रात-दिन एक कर देते, साहब; लेकिन क्या करें? ऐसे फँसे हैं कि रात को नींद नहीं आती।"

मैनेजर साहब आगे बोलने के पहले अपनी बात को कुछ देर मन-ही-मन तौलते हैं, फिर कहते हैं-" कहना तो नहीं चाहता, लेकिन कहना पड़ रहा है। बेटे की नौकरी मिलने की खुशी में जो हजारों रुपये भोज-भात में खर्च कर दिए, उसे थोड़ा कम ही करते तो न चलता? वह ट्रैक्टर से कमाया गया पैसा था। उसमें बैंक का भी हिस्सा था।"

"बात तो ठीक कह रहे हैं, साहब लेकिन बेटे ने 'मानता' मान लिया था कि नौकरी मिल गई तो रामायण का अखंड पाठ कराएगा। पाठ के बाद भोज का विधान है। भगवान ने कृपा कर दी तो उनको नाराज करना भी तो ठीक नहीं था। उनके पास और कोई रोजी-रोजगार तो है नहीं! भक्त की कमाई में ही तो उनका भी हिस्सा बनता है!"

मैनेजर साहब बड़ी देर तक पाँड़े का मुँह ताकते रहे। फिर कहा- "भगवान को हिस्सा देना तो याद रहा, लेकिन बैंक को हिस्सा देना भूल गए। बैंक उत्पादक काम के लिए लोन देता है। भगवान को हिस्सा देना उत्पादक काम नहीं है। गाँव भर को ट्राली में भरकर गंगा-स्नान कराने या देवी-दर्शन कराने के लिए ले जाना, भोज-भंडारा करना अनुत्पादक खर्च हैं। इससे पूँजी डूबती है। जब वसूली कार्यवाही होगी, खेती-बारी नीलामी पर चढ़ेगी तो भगवान बचाने आएँगे?"

"चाहेंगे तो जरूर बचा लेंगे। किसको नहीं बचाया? ध्रुव को बचाया, प्रह्लाद को बचाया, गजराज को बचाया।"

"तब क्या चिन्ता! लीजिए, नॉन पेमेंट की नोटिस पर साइन करके घर जाइए।"

बलमा दो हो गए

सबेरे पहली मुलाकात में तो लड़के के बाप झुन्नू बाबू पहलवान को एखलाकी आदमी लगे। हाथ जोड़कर स्वागत किया। हाल-चाल पूछा, लड़के के मामा से परिचय कराया।

"आपके आने की खबर पाकर यह भी दर्शन करने चले आए। कचेहरी में पेशकार हैं।" फिर बेटे को बुलाया। उसने आकर तीरथ और पहलवान के पैर छुए। "यही हैं हमारे सुपुत्र राकेश कुमार।" झुन्नू बाबू ने बताया। पहलवान मन-ही-मन अपनी बेटी से इस लड़के का जोड़ मिलाने लगे।

अन्दर से हरी धनिया की महक आने लगी। थोड़ी देर में बेटा एक थाली में प्याज की पकौड़ियाँ और तीन कटोरियों में धनिया-टमाटर की चटनी ले आया। पकौड़ी खाते हुए झुन्नू बाबू ने बताया, "इन्हीं पेशकार साहब की पैरवी, गंगा माई के आशीर्वाद और लक्ष्मी जी की कृपा से हम भी इसी साल एक बड़ा काम कर डाले। बेटे को नौकरी से लगवा दिया।"

"हाँ, तीरथ भइया बता रहे थे। सबके बूते की बात नहीं है आजकल बाल-बच्चों को नौकरी से लगवाना। सुना कहीं से बहुत सटीक जुगाड़ भिड़ाया।"

"जुगाड़ तो सब इसका है।" झुन्नू बाबू ने अँगूठे और तर्जनी से सिक्का खनकाने का इशारा करते हुए कहा- "दो साल से डेली-वेजेज में खट रहे थे। ऊबकर भागने लगते थे। इनके मामा समझाते थे कि लगे रहिए। काम आएगा। और काम आया। रेगुलर होने का चान्स आया तो तय किया कि पैसे का मोह नहीं करना है। लग तो

गए पूरे एक।" उन्होंने तर्जनी उठाकर कहा- "लेकिन जिन्दगी भर का बन्दोबस्त हो गया।"

लड़के के मामा बोले-" आज के जमाने में सरकारी नौकरी मिल गई तो समझिए जागीर मिल गई।"

"बिलकुल सही," तीरथ भैया ने स्वीकार में सिर हिलाया।

"पाँच हजार रुपये महीने तो पगार ही है। साथ ही ऐसी सीट मिल गई है कि दो सौ रुपये ऊपर से रोज बरसेगा। जिसकी बेटी बहू बनकर आएगी, समझिए राज करेगी।" झुन्नू बाबू ने खुलासा किया।

तीरथ भैया ने देर तक हामी में सिर हिलाया। फिर बोले- "सो तो है ही। यही सब तो मैंने पहलवान भैया से बताया। जैसे आपका बेटा कमासुत और संस्कारवान है, वैसे ही इनकी बेटी भी रूप-गुण सम्पन्न है। इंटर

फाइनल कर रही है इस साल। हाईस्कूल फस्ट डिवीजन पास हुई है। कुल-परिवार, कद-काठी, शील-संस्कार हर लिहाज से हजारों में एक बैठेगी। बड़े-छोटे का आदर-प्रेम करने की शिक्षा दी गई है। आप जैसे संस्कारी घर में आएगी तो सुखी रहेगी और सुखी करेगी। यही सब सोचकर पहलवान भैया आए हैं आपके दरवाजे पर अपनी अरदास लेकर।"

झुन्नू बाबू पहलवान की ओर देखते हुए बोले- "हम तो जो हैं, तीरथ ने बताया ही होगा। खेती-बाड़ी, बाग-बगीचा, मान-सम्मान, घर-दुआर किसी से छिपा तो है नहीं। रही बात रिश्ते की, उसके बारे में हम क्या, कोई भी कुछ नहीं कह सकता। वह तो जहाँ बदा होगा, जहाँ विधाता ने लिखा होगा, वहीं होगा।"

पहलवान देख रहे थे, न घर जैसा घर है न दुआर जैसा दुआर। सौ साल पुरानी कच्ची दीवारों में जगह-जगह दरें फट रहे थे। सामने खलिहान में जितना पुआल है, उसी से पता चल रहा है कि मुश्किल से साल-भर खाने-भर का धान पैदा हुआ होगा। दो बैल जरूर सामने खूँटे पर बँधे हैं, लेकिन उनके नीचे मौजूद ओछरा को देखकर तथा जिस तरह वे खूँटे के गिर्द घूम-घूमकर अपनी बेचैनी और परायापन दिखा रहे हैं, उससे लगता है कि किसी दूसरे खूँटे से लाकर आज ही बाँधे गए हैं। अभी एक छोत गोबर तक इस खूँटे पर नहीं किए। लड़का भी उनकी बेटी से हर लिहाज से उन्नीस है, लेकिन सचमुच अगर नौकरी से लग गया तो समझो सब ठीक है।

"बदे की बात तो आखिरी है, लेकिन अपने मन को तो खोलिए। कैसी शादी चाहते हैं? कुछ पता चले तो पहलवान भी अपने आपको तौलें।"

इसी बीच लड़के के मामा एक थाली में रखकर तीन कप चाय ले आए। सब लोग चाय पीने लगे। चाय पीते हुए झुन्नू बाबू ने अपने साले की ओर देखा, फिर कुछ सोचने लगे। फिर खखारने लगे।

तीरथ ने फिर प्रश्नवाचक नजर से झुन्नू बाबू को देखा तो झुन्नू बाबू बोले-"पहली बात तो यह है कि लड़की पसन्द आ जाए।"

"मान लीजिए, लड़की पसन्द आ गई। इसके आगे बोलिए? कुछ दान-दहेज पाने का मंसूबा बाँधे हों तो वह भी जाहिर करिए।"

अचानक बहुत गम्भीर हो गए झुन्नू बाबू। जैसे शतरंज का खिलाड़ी अगली चाल चलने के पहले सोचता है, कुछ उस तरह की मुद्रा बन गई। सिर झुक गया। सब उनके सिर उठाने का इन्तजार करने लगे।

धीरे-धीरे सिर ऊपर उठा - "देखिए, हम अपने लिए कुछ नहीं चाहते। हमारे लिए तो लड़की के बाप का एक पैसा भी हराम है। हाँ, लड़के की महतारी मौजूद हैं। लड़के के मामा भी संयोग से आ गए हैं, जिनकी बदौलत बेटा हिल्ले से लगा है। इन लोगों का कोई अरमान हो तो ये लोग बतावें।"

"मामा जी ही बतावें।" तीरथ ने उनकी ओर देखते हुए कहा। मामा जी बोले-" आपका भी तो कुछ बजट होगा।"

"हमारा बजट ग्यारह हजार का हो तो क्या आप मान जाएँगे? इसलिए आपका खुलासा करना जरूरी है। अटेंगे तो सटेंगे, नहीं तो अपना रास्ता पकड़ेंगे।"

मामा जी ने सिर झुका लिया। फिर धीरे-धीरे ऊपर उठाते हुए बोले- "यह तो जीजाजी का बड़प्पन है जो हमें बीच में डाल रहे हैं। आप लोगों के बीच में मेरा कुछ बोलना शोभा नहीं देता। लेकिन आपका आदेश है तो बोलना ही पड़ेगा।"

मामा जी उठे। आकर तीरथ का हाथ पकड़ा और एक तरफ ले जाते हुए बोले- "हम सब इसी समाज में रहते हैं। सबको सब कुछ पता है। जीजाजी की बात इसलिए थोड़ी अलग है कि बेटे के पीछे हुए खर्चे के कारण थोड़ा दब गए हैं। अचानक एक लाख का निकल जाना भारी पड़ता है। वही आप लोग समझ लेंगे तो इनका बोझ थोड़ा कम हो जाएगा। लड़के को

मोटरसाइकिल तो आजकल सभी दे रहे हैं। रही जीजाजी की बात तो अपने मुँह से वे कभी कुछ माँग ही नहीं सकते।"

तीरथ लौटे और पहलवान को थोड़ी दूर ले जाकर बोले- "एक लाख रुपये तिलक और मोटरसाइकिल की माँग है, समझिए।"

सुनकर पहलवान का मुँह लटक गया। दोनों लोग लौटकर चारपाई पर बैठ गए। थोड़ी देर तक चुप्पी रही। सब एक-दूसरे का मुँह देखते रहे। फिर मामा जी ही बोले-" आजकल तो सड़े-गले बहेल्ला लड़कों का तिलक भी इक्यावन हजार से शुरू हो रहा है, भइया। मोटरसाइकिल के बिना तो बात ही आगे नहीं बढ़ती। वह गाना तो आप लोगों ने भी सुना होगा -

अगम बहै दरियाव

दुलहा क मुँह जैसे फैजाबादी बंडा

चढ़े क माँगै हीरो होंडा।

जब बंडा जैसे मुँह वाले लड़के हीरो होंडा माँग रहे हैं तो हमारा भानजा तो लाखों में एक है। जीजाजी के मुँह खोलने की देर है, जो माँगेंगे वही मिलेगा। रोज ही तो कोई न कोई आकर घर घेर रहा है।"

पहलवान को घर घेरने वाली बात अखर गई। हम इनका घर घेरने आए हैं? बातचीत में तनिक भी लिहाज नहीं। मुँह बाए इन्तजार में बैठे हैं कि कौन आकर कितनी बोली लगाता है। समझ गए कि यह दाना उनके दाँत से फूटने वाला नहीं है। तब क्यों न थोड़ा खुला-खुली बात कर ली जाए! तीरथ बता रहे थे कि पिछले साल ही इन्होंने भी अपनी बेटी ब्याही है। घर-दुआर देखकर तो नहीं लगता कि इक्कीस हजार भी तिलक दिये होंगे।

उन्होंने खखारकर शुरू किया- "सुना है, आपने भी पिछले साल बेटी ब्याही है। लगता है, लड़के वालों ने आपको काफी दबाया है।"

"अच्छा रिश्ता पाने के लिए दबना भी पड़े तो खलता नहीं है।" मामा जी बोले-"इकलौती बेटी थी। ऐसे-वैसे घर तो भेज नहीं सकते थे। तभी तो खोजते-खोजते पाँच साल लग गए! "

पहलवान थोड़ी देर चुपचाप सिर हिलाते रहे। फिर पूछा- "क्या करते हैं पाहुन जी? कहीं साहेब-सूबा हैं?"

"साहेब-सूबा तो नहीं हैं, लेकिन हो सकते थे।" झुन्नू बाबू बोल पड़े-"किसी की नौकरी करना उनके खानदान में किसी को पसन्द नहीं। अपना कारोबार है। ठेकेदारी करते हैं। दस-पन्द्रह साल की जमी-जमाई ठेकेदारी है। अगले इलेक्शन में विधायकी लड़ने वाले हैं।"

झुन्नू बाबू ने एक साथ कई रद्दे जमाए। जैसे कह रहे हों कि और पूछो, क्या पूछना चाहते हो।

"किस पार्टी से?" पहलवान ने जानना चाहा।

"किसी भी पार्टी से। सारी पार्टियों में अपने ही आदमी हैं। उस समय जिसकी हवा गरम रहेगी, उसी से लड़ जाएँगे। वे तो निर्दल भी लड़ जाएँ तो सीट निकाल लेंगे। दस-बीस लोग हमेशा आगे-पीछे चलते हैं।" कहकर झुन्नू बाबू पहलवान की आँखों में सीधे देखते हुए मन्द-मन्द मुस्कराने लगे।

"वाह, क्या बात है! दस-पन्द्रह साल से ठेकेदारी ! तब तो उम्र भी ठीक-ठाक होगी।" पहलवान ने पेच निकाला।

"ज्यादा नहीं।" झुन्नू बाबू थोड़ा अटके-" चालीस के अन्दर ही हैं।"

"लेकिन आपकी बेटी तो आपके सुपुत्र से छोटी है। सत्रह-अठारह साल से ज्यादा क्या रही होगी!" पहलवान हल्के-हल्के आगे-पीछे सिर हिलाते हुए बोले।

झुन्नू बाबू झिड़की-सी देते हुए बोले-"अरे, मर्द की कहीं उम्र देखी जाती है! सिर के बाल न झड़े होते तो पच्चीस के भी न लगते।" फिर आवाज को थोड़ा मुलायम बनाते हुए बोले- " शहर गए थे अपने किसी दोस्त के घर। नहाते समय बालों में शैम्पू की जगह भूल से बालसफा लोशन लगा लिया, इसलिए आगे के आधे बाल झड़ गए।"

"बाल तो लबार होते हैं, झुन्नू बाबू।" पहलवान सान्त्वना देने वाले स्वर में बोले-"छोटे-छोटे बच्चों के झड़े-पके जा रहे हैं। असली चीज है कमाई-धमाई। वह है ही। लेकिन दस-बीस लोग साथ लेकर क्यों चलना पड़ता है? कोई खतरे की बात?"

"अरे नहीं, भाई।" झुन्नू बाबू प्रश्न के भोलेपन पर तरस खाते हुए हँसने लगे-"दस-बीस लोग पीछे होने से धाक जमती है। लगता है कि आदमी पावर वाला है। कोई जल्दी उलझता नहीं। दफ्तरों में काम जल्दी हो जाता है। फील्ड में रहना है तो यह सब करना पड़ता है।"

"तब तो राइफल-बन्दूक भी लेकर चलते होंगे। गोली-बारूद वालों के लिए तो लोग दूर से ही रास्ता छोड़ देते हैं।"

बात को भूलभुलैया में उलझते देख लड़के के मामा उठकर घर के अन्दर चले गए।

"वह तो जब चाहें, खरीद लें, लेकिन उनके बाप खरीदने की इजाजत दें तब न! कहते हैं, खतरे वाला सामान साथ लेकर नहीं चलना। लेकिन इधर डी.एम. साहब ने खुद बुलाकर लाइसेंस दे दिया है। जैसे ही बाप की इजाजत मिली, खरीद लेंगे।"

लड़के के मामा थोड़ी देर बाद घर से बाल्टी लेकर निकले और कुएँ पर नहाने चले गए।

पहलवान समझ गए कि मामा मैदान छोड़ गए। बुढ़ऊ कितनी देर झेलते हैं यह देखना है।

"वैसे जमाई बाबू के पिताजी ठीक सोचते हैं। आजकल इज्जतदार लोग बन्दूक-राइफल रखने पर जोर नहीं दे रहे हैं। हाँ, दिन बहुरता है तो आदमी पक्का मकान जरूर बनवाता है। दस-पन्द्रह साल में पक्की हवेली तो बना ही लिए होंगे।"

लगा कि इस तरह के सवालों से झुन्नू बाबू की बेचैनी बढ़ रही है। लेकिन उन्होंने अपने को सँभाल लिया और शान्त स्वर में बोले- "दो लाख ईंट का पँजावा

पिछले साल लगवा दिया था। जब चाहेंगे, बनवाना शुरू कर देंगे। बात यह है कि ठेकेदारी का काम इतना फैला लिया है कि और किसी काम के लिए फुरसत ही नहीं मिलती।"

"आप बता रहे थे कि खेती-बारी भी काफी जमाये हुए हैं। हरवाहों-चरवाहों की जैसी किल्लत है, उसको देखते हुए तो ट्यूबवेल, ट्रैक्टर का इन्तजाम बहुत पहले करना पड़ा होगा।"

"ट्यूबवेल की जरूरत तो इसलिए नहीं है कि सारे खेत नहर के किनारे हैं। रही ट्रैक्टर की बात तो उनके बाप लोन लेकर खरीदने के पक्ष में नहीं हैं, और खरीद भी लें तो उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। दामाद का ठेका-पट्टा सब शहर में है।"

कहने के साथ ही झुन्नू बाबू उठकर खड़े हो गए। बोले- "मैं घंटे भर की मोहलत चाहता हूँ। आलू का बीज खरीदने के लिए बाजार जाना बहुत जरूरी है। तब तक आप लोग राकेश के मामा जी के साथ बातचीत करें।"

"बाजार से बीज खरीदने की जरूरत क्यों पड़ रही है? कोल्ड स्टोरेज में अपना आलू नहीं रखवाए थे क्या?" लेकिन झुन्नू बाबू ने लगता है पहलवान की बात सुनी ही नहीं।

पहलवान समझ गए कि उनके सवालों से घबराकर ही बुढ़वा मैदान छोड़कर भाग रहा है।

वे भी उठकर खड़े हो गए और हाथ जोड़कर बोले-" आप इत्मीनान से बाजार करें। मामा जी भी स्नान ध्यान करें। बातचीत जो होनी थी, हो ही गई है। हमें भी चलने की आज्ञा दीजिए। राकेश की माताजी को बुला दें तो उनसे भी इजाजत ले लें।"

राकेश की माताजी सिर का आँचल थोड़ा आगे खिसकाकर और आँचल का खूँट दाँत से दबाकर एक हाथ में पीढ़ा लिये हुए आईं और पहलवान की चारपाई के आगे थोड़ी दूरी पर पीढ़ा रखकर बैठ गईं।

पहलवान बोले-" आपके दरवाजे रिश्ता लेकर आए हैं। चाहते हैं कि आप भी अपना फैसला सुनाएँ। कुछ सुनकर जाना चाहते हैं।"

"हम क्या बोलेंगे मरद-मानुख के बीच में?" वे लाज दिखाते हुए बोलीं।

"अरे, बेटा आपका है। आपने पैदा किया है। सेया-पखेया है। कुल-खानदान देखकर पतोहू लाएँगी तो हाथ-पैर दबाएगी। सेवा करेगी। सिर की जुआँ निकालेगी। बिना आपके बोले, कैसे काम चलेगा? बहुत लेन-देन करने की हैसियत में तो हम नहीं हैं, लेकिन लड़की आपको गुन-सहूर वाली दे सकते हैं।"

"गुन-सहूर, रूप-रंग, कद-काठी, कुल-खानदान तो चाहिए ही चाहिए भइया। उसमें कैसी कोताही! लेकिन इसके साथ-साथ यह भी देखा जाता है कि कैसी गोड़ी लेकर ड्योढ़ी में परवेस करती है। रुपये पैसे की लालच हमें एकदम नहीं है। भगवान ने बहुत दिया है। लेकिन किसी रईस के घर से आएगी तो उसके साथ घर में रईसी आएगी। किसी दरिद्र के घर से आएगी तो इस घर में भी उसके साथ-साथ दलिद्दर की पैसारी हो जाएगी। बस, यही बचाना होगा। बाकी तो सारी बेटियाँ लक्ष्मी का अवतार होती

हैं।"

अरे, यह तो अपने भाई-भतार से भी दो कदम आगे हैं। पहलवान का रोयाँ-रोयाँ सुलगने लगा। चिढ़कर बोले- "हुकुम हो तो घर का दुख-दलिद्दर दूर भगाने का एक तरीका हम भी बता सकते हैं। सीधे-सीधे डुगडुगी पिटवाकर बाजार के दिन लड़के को नीलामी पर क्यों नहीं चढ़ा देतीं? झुन्नू बाबू के बाप तो आपकी गोड़ी इस ड्योढ़ी के अन्दर पड़ने से नहीं बचा पाए। दलिद्दर की पैसारी हो ही गई, जिसके चलते आपको अपनी बेटी अधेड़ दामाद के पल्ले बाँधनी पड़ी। कच्चे घर में गुजारा करना पड़ रहा है। दरवाजे पर साबुत बैल तक नहीं हैं। घर की दीवारें दर्रा फाड़े हैं, छाजन बैठी हुई है। तीन लड़के हैं। तीनों को नीलामी पर चढ़ा दीजिए तो घर में सात पुश्त से जड़ जमाकर बैठा दलिद्दर भी भाग जाएगा और पक्की कोठी भी खड़ी हो जाएगी।"

"ऐ भइया, आप तो कुफार बोलने लगे। अरे, बदा होगा तो कोठी भी खड़ी हो जाएगी। बाकी आप तो ऐसी बोली बोल रहे हैं जैसे दीन-दुनिया में रहते ही नहीं। जो हीरा खरीदने आएगा उसे हीरे की कीमत भी देनी पड़ेगी। हमारा बेटा नीचे-ऊपर से मिलाकर सात-आठ हजार पैदा कर रहा है तो यह किसके हाथ में जाएगा! जो बहू बनकर इस घर की ड्योढ़ी लाँघेगी उसी के हाथ में तो! इसमें नाराज होने या बोली बोलने की क्या बात है? हम भी वही कहेंगे जो दुनिया का दस्तूर है।"

पहलवान हाथ जोड़कर चल पड़े। तीरथ पीछे-पीछे। पहलवान बहुत रंज में थे। नौ बजे आए थे। अब दो बजने वाले थे। एक कप चाय पिलाने के अलावा दुबारा पानी के लिए भी नहीं पूछा मक्खीचूसों ने। गाय बियाई थी। एक-एक गिलास मट्ठा ही पिला देता ससुरा! अपनी बेटी का विवाह दूनी उमर के वर से किया है। दामाद की हैसियत क्या है, यह भी साफ हो गया। इसके बावजूद दिमाग सातवें आसमान पर है।

भूख बहुत तेज लगी थी। तीरथ बहू ने खाना बहुत स्वादिष्ट बनाया था। खाते ही सुस्ती ने घेर लिया। बिना कुछ बोले-चाले सो गए। जगे तो शाम उतर रही थी। चलने के लिए तैयार होने लगे तो तीरथ रोकने लगे- "देर हो

गई है। सबेरे जाइएगा।"

लेकिन पहलवान नहीं माने। बोले- "घंटा-डेढ़ घंटा रात बीतते-बीतते आराम से पहुँच जाएँगे।"

सतनी के घर के पास पहुँचे तो इच्छा हुई कि उसके घर की ओर मुड़ जाएँ। क्या पता, आई हो तो देखा-देखी हो जाए! मन थोड़ा हुलसित हो जाए। लेकिन दुविधा में पड़े-पड़े ही साइकिल आगे बढ़ गई।

फिर मन को समझा लिया कि सतनी भी अब उन्हीं की तरह बिना फूल-पात की हो गई होगी। वह खनखनाती हँसी और आँखों की चमक कब की गायब हो चुकी होगी। उसे देखकर मन में बसी उसकी छवि को धक्का न लग जाए। न मिलना ही अच्छा।

आधे रास्ते आते-आते उन्हें डर लगने लगा। पत्नी ने आते समय सचेत किया था कि खुद आगे बढ़-बढ़कर मत बोलिएगा, तीरथ भइया को बोलने दीजिएगा, लेकिन वे अपनी आदत से बाज नहीं आए। बोलकर काम बिगाड़ लिया। पत्नी ठीक कहती है कि मुझे अपनी जबान पर कंट्रोल नहीं रहता। पहुँचते ही पूछेगी। क्या बताऊँगा?

फिर खुद को तसल्ली देने लगे- उनके बोलने से काम नहीं बिगड़ा। उन्होंने तो काम बिगड़ने के बाद बोलना शुरू किया था।

घर पहुँचते-पहुँचते खवाई-पियाई का समय निकल गया था। माँ-बेटी सोने की तैयारी कर रही थीं। इतनी जल्दी वापस आ जाएँगे, ऐसा तो सोचा ही नहीं था। उन्हें देखकर पत्नी ने बेटी को रसोई का काम सौंपा और खुद एक बाल्टी पानी और लोटा ले आईं। जब तक पहलवान ने हाथ-पैर धोया, वे चाय बना लाईं। पहलवान डर रहे थे कि अब किसी भी समय पत्नी लड़के वालों का प्रसंग छेड़ेंगी, लेकिन पत्नी ने ऐसा नहीं किया। वे तीरथ और उनके परिवार का हाल-चाल ही लेती रहीं। खाने-पीने के बाद पत्नी ने बेटी को अन्दर से दरवाजा बन्द करने के लिए कहा और गरम तेल की

कटोरी लेकर मड़हे में लेटे पहलवान के पास आईं। पैर के तलुओं और टखनों में अच्छी तरह देर तक तेल की मालिश करती रहीं, लेकिन लड़के वालों के बारे में कोई बात नहीं शुरू कीं। वे जानती थीं कि कोई उम्मीद की बात होती तो पहलवान से बिना बताए एक पल भी न रहा जाता। कुछ नहीं बता रहे हैं इसका मतलब है कि बताने लायक कुछ नहीं है। ऐसे में पूछताछ उनके अन्दर झुंझलाहट पैदा कर सकती है।

पहलवान की नाक बजने लगी तो वे नीचे उतरने लगीं। इस बीच नाक की आवाज बन्द हो गई और पहलवान ने उनकी बाँह पकड़कर अपनी ओर खींचा। कटोरी ताखे पर रखकर वे धीरे-से बगल में लेट गईं। बिना कुछ बोले दोनों प्राणी सामान्य से अधिक समय तक दाम्पत्य सुख में डूबते-उतराते रहे।

441

पहलवानिन का अनुभव है कि पहलवान जितना ज्यादा उदास होते हैं, उनका स्तम्भन उतना ही दीर्घ होता है। एक बार आह्लादित होकर पहलवानिन ने पूछा था- "कहाँ सीखी ऐसी विद्या? तुम्हारे जैसा कोई नहीं।"

कुछ देर बाद पत्नी उठीं। पैताने खिसके कंबल को उठाकर पहलवान के शरीर को अच्छी तरह ढका और हल्के से उनकी नाक हिलाकर बाहर निकल गईं।

झुन्नू बाबू के घर से लौटने के बाद पहलवान को लगता है कि उनकी छाती पर कोई बोझ लदा हुआ है। लगता है कि झुन्नू बाबू को चिढ़ाकर उन्होंने

अच्छा नहीं किया। हो सकता है, आगे-पीछे बात बन ही जाती। कुछ तो है जिसे देखकर पप्पू की अम्मा कहती हैं कि मेरे बोलने से बनती बात बिगड़ जाती है।

दिन में जो समस्या राई भर लगती है, वही रात में कौंधी तो पहाड़ जैसी लगने लगती है।

वे सबेरे दिशा-मैदान के लिए निकले तो वापसी में खेलावन के घर की ओर न के लिए मुड़ गए।

खेलावन सेक्रेटरी उनके लिए आधुनिक दुनिया की ओर खुलने वाली खिड़की की तरह हैं। एक तो पड़ोसी, दूसरे मिलनसार, तीसरे, हफ्ते में दो-एक दिन घर पर फुरसत में दिखते हैं। वे खेलावन को व्यावहारिक और दुनियावी सूझ-बूझ वाला आदमी मानते हैं। बाहर की दुनिया का हाल-चाल जानने और किसी समस्या का निदान जानने के लिए वे खेलावन के पास ही आते हैं। खेलावन आजकल अखबार भी मँगाने लगे हैं। पहलवान को अखबार पढ़ने का चस्का है। पहले वे अखबार पढ़ने के लिए गुरू टी स्टाल पर जाते थे। उसके लिए समय भी निकालना पड़ता था और चाय भी पीनी पड़ती थी। अब अखबार पढ़ने के लिए भी खेलावन के दुआर पर चले आते हैं। न रोज सही, रविवार को तो जरूर आते हैं। अखबार में पढ़कर खेती-किसानी में काम आने वाली जाने कितनी जानकारियाँ वे अपनी पॉकेट डायरी में नोट करते रहते हैं।

खेलावन दुआर पर ही मिल गए। मोटरसाइकिल की सफाई कर रहे थे। पहलवान को देखकर स्वागत किया और बेटे को कुर्सी निकालने के लिए कहा।

बेटे ने कुर्सी पहलवान के पास रखकर प्रणाम किया तो उसे ध्यान से देखते हुए पूछा- तुम कब आए, अजय?"

"कल ही आया, चाचा।"

पहलवान ने देखा - अजय का शरीर छह-सात महीने में गबरू जवान-सा निखर आया है। खेलावन ने जुगाड़ लगाकर उसे पुलिस में भर्ती करवा दिया। घूस का रेट एक से सवा लाख के बीच चल रहा था, लेकिन खेलावन ने अस्सी-पचासी हजार में हो काम बना लिया। वही लड़का छह-सात महीने सरकार की रोटी खाने के बाद ड्योढ़ा होकर उनके सामने खड़ा था और रोबीला लग रहा था।

"कहाँ थे? इधर कई दिन से दिखाई नहीं दिए।"

"चले गए थे बेटी के रिश्ते के लिए लड़का देखने। लड़का तो ठीक था। रोजी से भी लगा था, लेकिन बातचीत बेनतीजा रही। आना-जाना डाँड़ हो गया।"

पहलवान देर तक सारी बात विस्तार से बताते रहे फिर बोले-"जो काम लायक लड़के हैं, उनका भाव तो आसमान पर है ही, जो किसी काम के नहीं हैं उनके माँ-बाप भी सीधे मुँह बात करने को तैयार नहीं दिखते।"

"देखो, भइया। लड़के के बारे में जो कुछ आपने बताया उसको सुनकर तो यही कहेंगे कि लड़का हाथ से जाने देने लायक नहीं है। अब रही बात कि मिलेगा कैसे? तो इसके लिए दो उपाय करने होंगे। एक तो यह कि लड़के के घर एक डमी उम्मीदवार भेजा जाय जो लड़के वालों के घर दो दिन तक टिकान करके उसके बाप को घिसे। फिर ग्यारह हजार तिलक और एक स्कूटर की पेशकश करके लौट आवे। दूसरे हफ्ते दूसरा डमी भेजा जाय जो बातचीत के दौरान इस अफवाह की चर्चा करे कि इधर साल-भर के अन्दर जितने भी डेली-वेजेज वालों को रेगुलर किया गया है, उनका मामला हाई कोर्ट में चैलेंज हो गया है और किसी भी समय कोर्ट का फैसला खिलाफ में आ सकता है। तब तो आपका बेटा दो पैसे के लिए भी महँगा हो जाएगा। हम तो यह जानकर आए थे कि रेगुलर सेलेक्शन के थ्रू आए हैं। यह भाव दिखावे कि हमें ऐसा रिस्की रिश्ता नहीं करना है कि कल को बेटी-दामाद दोनों को बैठाकर खिलाना पड़े। तीसरे हफ्ते हम लोग फिर चलेंगे तो एक मोटरसाइकिल और पचास हजार तिलक पर आराम से

सौदा पट जाएगा।"

"आपने शायद मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। मैं अपनी बात से लड़के के माँ-बाप और मामा तीनों को चिढ़ा आया हूँ।"

"दहेजू* के लिए कैसा चिढ़ना और कैसा चिढ़ाना? बस, उसकी डिमांड का इन्तजाम करना होगा। तब अगर पाँच जूते भी मारना चाहोगे तो झुन्नू बाबू सिर झुका देंगे।"

* दहेज का लोभी।

"उसके लिए सोच लिये हैं। वह जो पश्चिमी सिवान पर उँचाम वाला चक है दस बिस्वा के रकबे वाला, उसी को बेच देंगे। एक तो घर से दूर बहुत है, दूसरे उसमें नहर का पानी नहीं चढ़ता। तीसरे किराए के पम्पिंग सेट से सिंचाई करने में इतना खर्चा आ जाता है कि कोई बचत नहीं होती। पप्पू की पचपन हजार फीस भी भरनी है इस साल की। फीस और विवाह का काम चल सकता है। लेकिन डमी कहाँ मिलेंगे?"

"उसका इन्तजाम मेरे जिम्मे छोड़िए।"

अजय पहलवान को मुँह धोने के लिए लोटे में पानी दे गया। वे दातून चीरकर जीभ साफ किए और कुल्ला करने लगे।

"एक खेत तो पहले से ही रेहन है। यह दस बिस्वा भी बेच देंगे, तब साल-भर की रोटी कैसे चलेगी?"

"आप क्या सोचते हैं, मैंने इस पर कभी सोचा नहीं? हजार दफे सोचा है, लेकिन जितना सोचिए उतना ही आँखों के आगे अँधेरा छाने लगता है। कोई किसान अपनी जमीन बेचने के लिए क्या इतनी आसानी से तैयार होता है! लेकिन दूसरा रास्ता भी तो नहीं दिखता। बेटी ऐसे-वैसे घर में भेज दें? आए दिन रोते-कलपते दरवाजे पर हाजिर रहे वह भी तो नहीं

देखा जाएगा।"

"भौजी से सलाह किए हैं?"

"अभी नहीं। सोचा, पहले आपसे चर्चा कर लें, तब उनसे बात करें।"

अजय चाय दे गया। फिर एक कुर्सी और लाया। दोनों लोग आमने-सामने बैठकर चाय पीने लगे।

"भइया खेलावन, एक बात पूछें?" पहलवान चाय का घूँट उतारने के बाद कहते हैं-" इस इलाके में दस-पन्द्रह एकड़ जमीन वाले किसान तो चार-छह गाँव में खोजने पर शायद एकाध ही मिलेंगे। सौ में पचीस-तीस घर एकदम भूमिहीन हैं। चालीस-पचास घरों के पास आधे से एक एकड़ तक जमीन है। हमारे जैसे चार-पाँच एकड़ की जोत वाले किसानों की गिनती ही यहाँ बड़े किसानों में होती है। सोचता हूँ कि जब हमें अपना पाँच-छह लोगों का परिवार पालना कठिन हो रहा है तो बाकी लोगों का गुजर-बसर कैसे होता है? हम पैदा होने के दिन से लेकर मरने के दिन तक क्यों परेशान रहते हैं? हमारी विपत्ति का कारण क्या है?"

"पहलवान भइया, जो बिलकुल अतात-पंखी हैं, जिनके पास अपनी कहने को एक धूर भी जमीन नहीं है। जिनके नीचे धरती और ऊपर आसमान है, उनके दुखों का भला क्या ओर-छोर? लेकिन जो जगह-जमीन वाले हैं, उनके दुखों का *

हर तरह से साधनहीन।

अगम बहै दरियाव

भी कोई एक कारण नहीं है कि झट से बता दें। लेकिन सबसे बड़ा कारण है, हथारी उपज का सही मूल्य न मिलना। सरकार हमारी फसल का जो समर्थन मूल्य तय करती है वह हमेशा किसान की लागत से कम होता है। इसका मतलब हुआ कि जितनी लम्बी खेती, उतना लम्बा घाटा। जितनी

ज्यादा पैदावार, उतना ज्यादा घाटा। इसीलिए कहा जाता है कि किसान दुख की फसल उगाता है। उसका पैदा किया हुआ अनाज-गल्ला व्यापारी के लिए अमीरी पैदा करता है लेकिन खुद उसके लिए गरीबी पैदा करता है।"

"तो सरकारें लागत से कम समर्थन मूल्य क्यों तय करती हैं? वे किसानों को जिन्दा क्यों नहीं रखना चाहतीं? किसानों को मारकर उन्हें क्या मिलेगा?"

"ऐसा है कि किसान व्यापारी वर्ग का आहार है। किसान का हिस्सा खाकर ही आढ़ती और निर्यातक जिन्दा रहता है। निर्यात मूल्य तय करना केवल सरकार के हाथ में नहीं होता, बहुत सारी ताकतें उस पर प्रभाव डालती हैं। लेकिन इसे समर्थन मूल्य से ड्योढ़ा रखना पड़ता है, तभी निर्यातक को पोसाएगा। अगर सरकार समर्थन मूल्य बढ़ा देगी तो निर्यातक का लाभ घट जाएगा। निर्यातक किसान का हिस्सा खाकर मोटा हो जाता है। दूसरे का हिस्सा खाने वाले की आवाज चाँड़ निकलती है। उससे सरकार दब जाती है। इसलिए भी दब जाती है कि उनसे सरकार को मोटा चन्दा मिलता है। किसान मेहनत करके खाता है। मेहनत करके खाने वाले की आवाज कमजोर रहती है। कमजोर आवाज से सरकार को डर नहीं लगता।"

"आखिर सरकार तो हमारे ही वोट से बनती है।"

"सही है, लेकिन उसे नोट और वोट दोनों चाहिए। व्यापारी अपना नोट नहीं देगा तो उसके काम आएगा, लेकिन किसान वोट नहीं देगा तो क्या उसका अचार डालेगा? किसान को पटाकर रखने के लिए सरकारों के पास बहुत सारे लटके-झटके हैं। कभी ब्याज माफ कर दिया, कभी पेंशन दे दिया, कभी मन्दिर के नाम पर ललकार दिया। अधिकांश जनता बेपढ़ी-लिखी और धर्मभीरु है। वह हजारों साल से राजा या शक्ति पुरुष को भगवान का प्रतीक मानती और उसके आगे झुकती आई है। जै-जैकार करने और सिर न उठाने की आदत उसके खून में समा गई है। इसलिए अपने अधिकार या जरूरत के लिए सत्ता के समक्ष तनकर खड़ी नहीं हो पाती।

और उधर, अगर निर्यातक कम्पनियों का मुनाफा घटा तो वे सरकार की दाढ़ी का बाल नोचने लगेंगी। सरकार उनसे दब जाती है।"

"तो क्या अपनी दुर्दशा के लिए किसान खुद ही जिम्मेदार हैं।"

"खुद ही तो नहीं कह सकते, लेकिन काफी कुछ खुद भी जिम्मेदार हैं। पूछिए कैसे? सरकार की ओर से बिजली देने के लिए चौदह घंटे का रोस्टर घोषित है।

लेकिन भादों-क्वार के सूखे के दिनों में भी कभी चार-पाँच घंटों से ज्यादा बिजली नहीं आई। कोशिश की गई कि चार-छह गाँव के लोग सब स्टेशन तक चलकर अपना विरोध जताएँ, लेकिन बहुत प्रयास करने पर भी कितने लोग जुटे ? ढाई-तीन सौ। नहर विभाग के मुकदमे के खिलाफ प्रदर्शन के लिए उस दिन कितने लोग सगरे पर जुटे? ब्लाक के कर्मचारियों ने गाँव में कम-से-कम आठ लोगों के नाम से बैंक वालों से मिलकर फर्जी लोन कराया है। आए दिन कोई न कोई पकड़कर हवालात में बन्द किया जा रहा है, पर यह नहीं होता कि सारा गाँव मिलकर धरना-प्रदर्शन के लिए निकले। बाजार का दुकानदार मिलावटी यूरिया और डाई बेचता है। यह सबको पता है। लेकिन उसके खिलाफ रिपोर्ट लिखाने, यहाँ तक कि कृषि अधिकारी के दफ्तर में की जाने वाली शिकायत पर दस्तखत करने तक के लिए कोई जल्दी तैयार नहीं होता। इससे सब जान जाते हैं कि ये बिना रीढ़ के केंचुए हैं। इनसे डरने की जरूरत नहीं।"

"बात तो आप ठीक कहते हैं, लेकिन आदमी खेती-किसानी देखे कि लड़ाई करने निकले?"

"लड़ना तो पड़ेगा। जिन्दा रहना है तो अपने मारने वालों के सामने डटना तो पड़ेगा। वरना जैसे हजारों जातियाँ, जन-जातियाँ, पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ इस दुनिया से उछिन्न हो गईं, वैसे ही किसान नाम की प्रजाति भी विलुप्त हो जाएगी।"

"जानते हैं, पिछले पैंतीस साल में जमीन सौ गुनी महँगी हो गई। सोना पचहत्तर गुना, डीजल पचास गुना, जबकि गेहूँ सिर्फ सात गुना। सारी मन्दी किसानों के लिए ही है। पिछले दिनों बजट की खबर अखबार में छपी थी, उसमें जो चीजें सस्ती की गई थीं, उसमें थीं कार, कम्प्यूटर, कालीन और कोका कोला; और जो चीजें महँगी की गई थीं, उनमें थीं बीड़ी, माचिस, चाय, बिस्कुट, पोस्टकार्ड। बड़े पूँजीपतियों के कारखाने में बनने वाली और अमीर लोगों के उपयोग में आने वाली चाजें सस्ती हो गईं और कुटीर उद्योग में बनने वाली या गरीब के काम में आने वाली चीजें महँगी। जिस सरकार की नीयत ऐसी गरीब-विरोधी, किसान-विरोधी हो, उसके खिलाफ गरीब नहीं खड़ा होगा, किसान नहीं खड़ा होगा, तो कौन खड़ा होगा?"

"खेलावन भाई, हममें से कितनों को पता है कि बजट किस चिड़िया का नाम है?"

"अरे भाई, बाजार के मिलावटी दुकानदार का तो पता है? चीनी मिल के मालिक का पता तो है। फर्जी मुकदमा लिखाने वाले ओवरसियर का पता तो है? इनका आप क्या उखाड़ ले रहे हैं?"

पहलवान से कुछ कहते नहीं बना। केवल सिर हिलाते रह गए।

अगम बहै दरियाव

खेलावन के घर से लौटते हुए पहलवान ने इतनी हिम्मत जुटा ली थी कि सारे मुद्दे पर इत्मीनान से पत्नी से सलाह-मशविरा कर सकें। लेकिन पप्पू की अम्मा को उनसे बात शुरू करने का मौका तभी मिला, जब नहा-

खाकर पहलवान आराम करने के लिए भड़हे में लेटे। हुक्का पहलवान के हाथ में देकर वे कुछ देर तक खड़ी रहीं, फिर पैताने बैठकर पाँव दबाते हुए शुरू किया।

"क्या हुआ जो उस दिन बुआ के घर गए थे? कुछ उम्मीद है कि बेकार ही रहा आना-जाना?"

"मैंने तुमसे इसलिए कुछ नहीं बताया कि सुनकर बेकार ही दुखी हो जाओगी। लड़का तो ठीक है। नौकरी से भी लग गया है, लेकिन उसके माँ-बाप बड़े लालची हैं। एक मोटरसाइकिल और एक लाख तिलक के लिए मुँह बाए हैं।"

"छोड़िए! कहीं और पता लगाइए।"

"लेकिन रिश्ता अच्छा है। यह बताओ, अगर अपना उँचास वाला खेत बेच दिया जाय तो कैसा रहेगा? एक-डेढ़ लाख के करीब मिल सकता है।"

"क्या बोल रहे हैं? आपके दो बेटे हैं। कल को समझदार होंगे तो क्या कहेंगे? खेत बेचना तो उनके मुँह का कौर छीन लेने जैसा होगा। पुरखों ने मर-मरकर खरीदा और आप बेचने की सोचने लगे। और अभी तो अम्मा-बाबूजी जिन्दा हैं। उनके जीते-जी आपने यह बात सोच कैसे ली? उन्हें पता चला तो हजार गारी देंगे।"

"मैं खुद बप्पा से बात करके देखूँगा। आखिर बेटी के लिए अच्छा घर-वर ढूँढ़ना भी तो अपनी जिम्मेदारी है।"

"ऐसा हरगिज न करना। दुनिया में सब लालची ही नहीं हैं। खोजने पर भले लोग भी मिलेंगे। भगवान की बनाई दुनिया से कोई बिरवा खतम नहीं होता।"

जितनी आसानी से पत्नी के मान जाने की उम्मीद थी, उतना आसान नहीं है-पहलवान ने सोचा। हो सकता है, पत्नी का सोचना ही ठीक हो। पहलवान को अपने अनुभव से मालूम है कि जीत हमेशा पहलवानिन की

ही ोती है। घर-गृहस्थी के मामले में असली पहलवान पहलवानिन ही हैं। इसलिए चुप हो गए। उन्हें इस बात से अन्दर ही अन्दर राहत महसूस हो रही थी कि झुन्नू बाबू और उनकी पत्नी के साथ हुई नोक-झोंक की चर्चा वे बचा ले गए। पत्नी को अगर झुन्नू बाबू के घर पर हुई झिक-झिक का पता चल जाए तो शायद उनकी एक भी गत बाकी न लगाएँ।

मालती के मामा खिचड़ी पहुँचाने आए हैं।

इस इलाके में ससुराल जा चुकी बेटियों-बहनों के घर मकर संक्रान्ति पर 'खिचड़ी' और नागपंचमी पर 'घुँघनी' के नाम से भेंट-उपहार लेकर जाने की परम्परा है। तिथि निश्चित रहने पर साल में कम-से-कम दो बार बहन-बेटियों की हाल-खबर मिल जाती है, नहीं तो कहो, सालों आने-जाने की फुरसत न मिले।

बहन-बेटियाँ बाट जोहती हैं। पास-पड़ोस की सारी बहुओं के मायके से खिचड़ी-घुँघनी आ गई और किसी एक के मायके से नहीं आई तो वह दुखी हो जाती है। इसका मतलब मायके में उसका मानदान घट गया। तब वह खुद ही खुद को पड़ोसिनों की तुलना में 'दूबर' मानने लगती है। यानी अब मायके में माँ की नहीं, भाभी की मरजी चलने लगी।

अंकल आये. अंकल आये.

भइया आए। भइया आए।

दरी बिछाओ। पानी लाओ।

पंडोही ने मोटरसाइकिल के दोनों तरफ लटके भारी थैले उतारकर जमीन पर रखे तो मालती सारी ताकत लगाकर बारी-बारी उन्हें घर के अन्दर ले गई। देखें तो नानी ने क्या-क्या भेजा है? प्रभाकर बहू आईं और भाई का पैर पकड़कर कारन करके रोने लगीं। कारन करके रोने का मतलब आशु रचित तुकान्त कविता में अपने दुखों, अपनी मुसीबतों का रोना, अपने गिले-शिकवों का इजहार करना, उलाहना देना कि भइया तुमने बहिन की सुधि बिसार दी। तुमको अपनी गोद में बिठाकर दूध-भात खिलाया है, लोरी सुनाया है, चंदा मामा दिखाया है। तुमने पता लगाने की कोशिश नहीं की कि ससुराल में बहन का पेट भरता है कि भूखे सोना पड़ता है।

अरे या मोरे बिरना।
हमरी सुधिया भुलान्या भइया बिरना।
ऊँचा-ऊँची बखरी लोभान्या भइया बिरना।
भितरा कै हलिया न जान्या भाई बिरना।

बहन के लिए रिश्ता खोजने आए तो ऊँची बखरी देखकर ही लट्टू हो गए। अन्दर की असली हालत का पता नहीं लगा पाए।

अगम बहै दरियाव

दुख की बदली छा जाती है। पेड़ों से पीले पत्ते टूट-टूटकर गिरने लगते हैं। अपवाद छोड़ दें तो हर बहन को लगता है कि उसे मायके की तुलना में कमजोर घर में ब्याहा गया है। नहीं लगता तो भी वह मायके के सम्मान में यही शिकायत करती है।

आँसुओं की बरसात थमती है तो माँ-बाप, भाई-भौजाई, भतीजे-भतीजी और रान्ह-परोस का हाल पूछा जाता है। गाय-गोरू, पेड़-पौधे, ताल-पोखर को याद किया जाता है।

गुड़ की डली मुँह में डालते हुए पंडोही की नजर नीम के नीचे खड़े ट्रैक्टर पर पड़ती है। धूल और नीम की सूखी पत्तियों से अटा पड़ा है।

पूछते हैं- "ट्रैक्टर ज्यादा दिन से खड़ा है क्या?"

"कौन चलावे? छोटे नौकरी पर चले गए। मालती के बाबू को खेती के काम से फुरसत नहीं मिलती।"

तब तक मालती की दादी आ गईं। पंडोही ने उठकर उनके पैर छुए। पाँड़े भी कहीं से लौटे। ससुर को देखकर मालती की अम्मा ने घूँघट निकाल लिया। सास के कान में फुसफुसाकर कुछ पूछा और उठकर घर के अन्दर जाने लगीं- चलकर कुछ आग-अदहन करें।

कुशल समाचार के लेन-देन के बाद पंडोही ने फिर ट्रैक्टर की चर्चा छेड़ी-" यह तो खड़े-खड़े सड़ जाएगा।"

पाँड़े ने बताया-" इसे खड़ा देखकर मुझे भी बहुत विरोग होता है, लेकिन क्या करें! कहते हैं कि विपत्ति में विपत्ति आती है।

राजा हरिचंद पै विपति परी। पूँजी मछरी जल में परी ॥

"यह किस्सा तो सुना ही होगा कि राजा हरिश्चन्द्र जब बिकने के लिए काशी जा रहे थे तो कई दिन भूखे रहने से पेट कलकला रहा था। नहीं सहा गया तो एक तालाब में मछली मारने उतरे। राजा थे। मछली मारने की आदत तो थी नहीं। बड़ी मेहनत से एक मछली पकड़ पाए। उसे सूखी पत्तियों की आग में भूना और जब भोग लगाने बैठे तो मछली उछलकर पानी में कूद गई। वही निहाद हमारी है। छोटे के जाने के बाद एक ड्राइवर रखा था। कुछ-न-कुछ कमाकर दे रहा था। लेकिन एक दिन बिना रेडियेटर में पानी डाले ही जोतता रह गया। इंजन सीज हो गया। मारे जाने के डर से खेत में ही इसे खड़ा करके कहीं भाग गया। टोचन करके लाए हैं। तब से खड़ा है। इंजन खोलवाना पड़ेगा। गिरी से गिरी हालत में चार-पाँच हजार का खर्च आएगा।"

फिर कुछ रुककर बोले- "दरअसल, अच्छा ड्राइवर मिलना बहुत ही मुश्किल है।"

"नहीं बाबूजी, हर ड्राइवर अच्छा होता है बशर्ते मालिक उसकी खोपड़ी पर सवार रहे। अकेला छोड़ देने पर अच्छे से अच्छा ड्राइवर खराब हो जाता है। किस्तें कहाँ से दे रहे हैं?"

"दे कहाँ रहे हैं? जून वाली भी नहीं भरी गई। दिवाकर जो कुछ कमाए थे, नौकरी पाने में झोंक दिए। इस महीने दिसम्बर में जो देनी है, वह भी लटक जाएगी।"

दरअसल पंडोही एक महीना पहले ही खिचड़ी लेकर इसलिए आए हैं कि उन्हें कुछ दिनों के लिए ट्रैक्टर की जरूरत है। कई साल से सोच रहे हैं कि उँचास वाले एक बीघे खेत की एक फीट गहरी मिट्टी निकाल दें तो उसमें बहुत बढ़िया धान होने लगेगा। अभी उसमें पानी टिकता ही नहीं। किराए के ट्रैक्टर से सौ-सवा सौ ट्राली मिट्टी ढोना बहुत महँगा पड़ेगा। अपना ट्रैक्टर रहे तो केवल डीजल का खर्च पड़ेगा। उनको अन्दाजा था कि जीजाजी का ट्रैक्टर अक्सर खड़ा ही रहता होगा। इंजन सीज होने की बात सुनकर वे थोड़ा निराश जरूर हुए, लेकिन चार-पाँच हजार खर्च करके भी घाटे में नहीं रहेंगे। टायर सही लग रहे हैं। बगल से फोर लेन सड़क निकल रही है। उसमें मिट्टी की भराई का अथाह काम है। अगर वह काम मिल जाए, तब तो किस्त भी निकल सकती है। लेकिन वे अपनी ओर से ट्रैक्टर के लिए मुँह नहीं खोलना चाहते। बात-बात में कोई राह निकल आए तो...

वे घुमा-फिराकर फिर ट्रैक्टर पर केन्द्रित होते हैं- " दरअसल बाबूजी, ट्रैक्टर की कमाई तभी पोसाती है जब दिन में सोलह नहीं तो कम-से-कम बारह घंटे ड्राइवर के हाथ स्टेयरिंग पर जमे रहें।"

आँगन में आने पर पँड़ाइन पाँड़े से कहती हैं- "जब से आए हैं, ट्रैक्टर की

ही चर्चा छेड़े हुए हैं। क्या है इनके मन में? यहाँ खड़े-खड़े दूध तो दे नहीं रहा है। गले की हड्डी ही बना हुआ है। बैंक की नोटिस आ गई है। अगर लोन अदायगी अपने मत्थे ले लें तो शौक से ले जाएँ।"

पंडोही खाना खाने बैठे तो पँड़ाइन उनकी दाल में घी डालते हुए बोलीं- " ट्रैक्टर क्या खरीदा बेटवा, जी का जंजाल खरीद लिया। छोटे तो भागने की राह पाए, निकल भागे। अब ट्रैक्टर को लेकर ही बाप-बेटे में आए दिन खटपट होती रहती है। मैं तो इनसे कहती हूँ कि जो भी मिले, इसे बेच-बाँच कर छुट्टी कीजिए। जिस तरह हो सके, लोन पटा दीजिए। लोन की गर्मी खोपड़ी पर चौबीस घंटे चढ़ी रहती है।"

"बेचने से क्या फायदा होगा, माता राम! पचास हजार मिलना भी पहाड़ हो जाएगा। अच्छा यही रहेगा कि बनवाकर चलाया जाय।"

अगम बहै दरियाव

"कौन चलाएगा, बाबू? हम लोगों के बस का तो नहीं है। तुम चाहो तो ले जाओ। बनवाकर चलाओ। बस, किस्त भरते रहो। अषाढ़-कातिक में जोताई-बोवाई करा देना, यही बहुत है।"

पंडोही आश्वस्त हुए, लेकिन कुछ बोले नहीं। चुपचाप खाते रहे।

शाम को जाते-जाते वे ट्रैक्टर ले जाने को तैयार हो गए। कह गए-एक-दो दिन में ड्राइवर भेजेंगे। टोचन करके ले जाएगा।

पहलवान पति-पत्नी में तकरार हो रही है।

चौवालीस सौ रुपये दाम चढ़ाकर चारखाने की लुंगी लपेटे नीम के नीचे चबूतरे पर बैठा बीड़ी फूँकता बकरीदी पति-पत्नी के एकमत होने का इन्तजार कर रहा है।

पहलवान का कहना है कि सब कुछ जानते-बूझते कटने के लिए कसाई के हाथ कैसे बेच दें? कोई किसान जोतने के लिए खरीदना चाहे तो चाहे सौ-दो सौ रुपये कम दे, तब भी बेच देंगे।

जोगी की अम्मा का कहना है-" इतने दिन से तो इन्तजार कर रहे हैं, कोई आया? एक आया भी था तो पैंतीस सौ के आगे बढ़ा नहीं। दुबारा वह भी झाँकने नहीं आया।"

बकरीदी धुआँ छोड़ते हुए सामने बँधे बछड़े को तौल रहा है- बड़ी-बड़ी चमकती काली आँखें। नुकीली-गठीली काली-मोटी जड़ वाली बित्ते भर की सींग। पुट्ठों पर चर्बी की मोटी परत। गले के नीचे लहराती ललरी। मोटे घने बालों वाली काली लम्बी पूँछ। कन्धे पर उभरती डील और नीचे लटकता वृहद गुलाबी अंडकोष । क्या धजा है! पूरे पाँच हजार गिनना पड़े तब भी घाटे का सौदा नहीं है। बकरीदी आज तीसरी बार आया है इस सौदे के लिए।

जोगी की अम्मा पहलवान को समझा रही हैं- "आखिर आदमी गाय-गोरू पालता क्यों है? मौके पर बेच-बिकिन कर गरज सकारने के लिए ही तो! गरज बावली होती है। बेटे को किराया-खोराकी भेजे बिना काम चलता तो न बेचते।"

बीड़ी खत्म करके बकरीदी ने सिर उठाया और बड़ी हलीमी से बोला-" अच्छा चाचा, कोई किसान आपसे पाँच सौ सस्ते में खरीद ले और अगले दिन मेरे हाथ पाँच सौ का नफा लेकर बेच दे तो आप क्या कर लेंगे?"

बकरीदी से ज्यादा जोगी की अम्मा पहलवान के उत्तर का इन्तजार करने लगीं। लेकिन पहलवान बिना कोई उत्तर दिए कन्धे पर धोती रखकर नहाने चल पड़े। उन्हें नहाने जाता देख जोगी की अम्मा भी खाने-पीने का इन्तजाम देखने घर के अन्दर चली गईं।

बकरीदी ने दूसरी बीड़ी सुलगा ली।

दो घंटे बाद जब पहलवान खाना खाकर मड़हे में लेट गए और जोगी की अम्मा हुक्का भरकर उन्हें देने गईं तो बकरीदी फिर आकर मड़हे के द्वार पर खड़ा हुआ।

"क्या हुकुम है, चाचा? आखिरी बार बोल दीजिए।"

पहलवान मैदान में आने से डर रहे थे, क्योंकि पहलवानिन विपक्ष में थीं। दोनों के तर्कों का पहलवान के पास कोई जवाब नहीं था।

"चाचा, सारे बछड़े कटने के लिए ही नहीं जाते। लोग बैलगाड़ी में जोतने के लिए भी ले जाते हैं। हल में जोतने के लिए भी। कटते तो वे हैं जो किसी काम के नहीं होते। और अगर उसकी किस्मत में कटना ही बदा होगा तो क्या हम रोक लेंगे?"

कुछ देर तक मौन। फिर बकरीदी बोला - "आखिरी बोली लगा रहा हूँ-पूरे पैंतालीस सौ। इससे ज्यादा कोई नहीं दे सकता। भले छह महीना और बाँधकर खिलाइए।"

पहलवान कुछ बोले नहीं। हुक्का जोगी की अम्मा को पकड़ाकर करवट बदल ली।

बकरीदी ने आँखों-आँखों में जोगी की अम्मा से कुछ पूछा। कुछ समझा। फिर टेंट से रुपये की थैली निकालकर गिनने लगा - "सर्र सर्र सर्र।"

"लीजिए, गिन लीजिए।"

लेकिन पहलवान ने आँखें नहीं खोलीं तो उसने जोगी की अम्मा की ओर हाथ बढ़ाया। जोगी की अम्मा ने इशारे से समझाया कि मेरा पकड़ना ठीक नहीं है। इन्हीं को पकड़ाओ।

बकरीदी ने चारपाई पर पहलवान की कमर के पास नोटों को रखते हुए कहा-"पूरे पैंतालीस सौ रखा है, चाचा। गिन लीजिए और हुकुम कीजिए।"

थोड़ी देर तक पहलवान के बोलने का इन्तजार करने के बाद वह बाहर निकल गया।

"क्या कह रहे हैं? रुपये चारपाई पर रखे हैं।"

"जो चाहो, कहो।"

"मालिक-मुख्तियार आप हैं। मैं क्या कहूँगी!"

कहने के साथ पप्पू की अम्मा रुपये उठाकर गिनने लगीं। दोबारा गिना।

अगम बहै दरियाव

फिर आँचल के खूँट में बाँधकर बोलीं- "कह देती हूँ, ले जाए।"

फिर बाहर निकलकर बकरीदी से बोलीं- "गले में बँधा घुँघरुओं का पट्टा खोलकर रख दो और ले जाओ।"

खूँटे से मुक्त होने की खुशी से बछड़ा चार-छह कदम तो तेजी से चला, लेकिन जब पीछे से गाय के होंकड़ने की आवाज आई तो उसे कुछ गड़बड़ होने का अन्देशा हुआ। उसने पैर रोप दिए। खींचने पर एक कदम बढ़ाता, फिर अड़ जाता। पप्पू की अम्मा दुआर पर खड़े-खड़े उसका जाना देख रही थीं। पहले वह पेशाब के बहाने रुका, फिर गोबर करने के बहाने। पप्पू की अम्मा से देखा नहीं गया। वे रुपये रखने के लिए अन्दर चली गईं।

पहलवान लेटे रह गए। इन्तजार कर रहे थे कि बछड़ा कुछ दूर निकल जाए तो उठें। बचपन से ही यह पहलवान से परच गया था। उनके पीछे दौड़ते-

कूदते खेतों तक चला जाता था। पप्पू से भी खूब हिला-मिला था। पप्पू ने रामगंज के मेले से खरीदकर इसे घुँघरुओं का एक पट्टा पहना दिया था। दौड़ता तो घुँघरुओं की घनघनाहट मन को मोह लेती। सीधे आँखों में आँखें डालकर देखता था। बड़ी-बड़ी कजरारी आँखें।

अचानक दौड़ने की आवाज आई। पहलवान ने सिर उठाकर देखा -आगे दौड़कर आता बछड़ा, पीछे-पीछे मोटा डंडा लिये बकरीदी। पहलवान उठकर बैठ गए।

"पता नहीं कितना जोर है इसकी देह में! इतना तगड़ा झटका दिया कि मैं औंधे मुँह गिर पड़ा। आप उसका पगहा खुद मेरे हाथ में पकड़ाइए और थोड़ी दूर तक हँकवा दीजिए। इससे जानवर जान जाएगा कि मालिक ने अपनी मर्जी से उसे सौंपा है। तब उसका जोर अपने आप आधा हो जाएगा। तभी उसे ले जा पाऊँगा।"

पहलवान बाँस का डंडा लेकर हाँकने लगे। दो-तीन चोट खाने के बाद जमीन से मुँह लगभग सटाकर वह तीन बार होंकड़ा। शायद कहा हो कि तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी पहलवान। फिर पीठ खलाकर सुस्त कदम बढ़ाए।

प्रत्युत्तर में उसकी माँ लछिमिनिया और बैलों ने लगातार रँभाना शुरू कर दिया... उन्हें क्या पता चला? बछड़े ने क्या बताया? बताया कि हमेशा-हमेशा के लिए जा रहे हैं? फिर इस जनम में मिलना नहीं होगा!

पप्पू स्कूल से लौटे तो नगरे पर पड़े घुँघरुओं के पट्टे को देखकर बछड़े को खोजने दौड़े।

शाम को चूल्हा जलाने का मन नहीं हो रहा था पप्पू की अम्मा का।

लेकिन पेट न अगवढ़ लेता है न बकाया छोड़ता है।

लछिमिनिया ने लेकिन पूरी तरह उपवास किया और रात-भर रँभाती रही।

453

खेलावन के बेटे की बरात जा रही है। समधी दारोगा हैं। एस.पी. के रीडर हैं। उन्हीं के कनेक्शन से खेलावन ने कई लड़कों को पुलिस में भर्ती कराया है।

दारोगा जी ने कहा- "बेटे की भर्ती तभी होगी, जब मेरे समधी बनना कबूल करो।"

माठा बाबा, भगवत पाँड़े, करिया सिंह, पहलवान, गाँव के सभी मोतबर लोग बरात चल रहे हैं। खेलावन ने एक-एक आदमी को बरात चलने के लिए मनाया है। छोटे-बड़े सबसे बनाकर रखते हैं। छत्रधारी सिंह इलाज के सिलसिले में बेटे के पास गए हैं, नहीं तो उन्हें भी ले चलते। विद्रोही जी ने भी कहा है कि यूनियन की कोई बहुत अर्जेंट मीटिंग न लगी तो जरूर आएँगे।

पाँड़े जब तक नौटंकी कम्पनी चलाते थे, तब तक ज्यादा छुआछूत नहीं मानते थे। किसी का भी बनाया हुआ खा लेते थे, लेकिन अब 'नेम टेम' से रहते हैं। 'टंट घंट' करते हैं। ठाकुरों-बाभनों के अलावा किसी दूसरी बिरादरी के शादी-ब्याह में जाने से बचते हैं। लेकिन खेलावन के बेटे की शादी में आने से कैसे इनकार कर देते? खेलावन ने उनके बेटे की नौकरी लगवाई है। अठारह हजार रुपये महीने, माने पचीस कुंटल गेहूँ हर महीने का इन्तजाम। लेकिन वे किसी गैर-ब्राह्मण का पकाया हुआ नहीं खा सकते। अपना भोजन खुद पकाएँगे। पक्का भोजन। पूड़ी-सब्जी। हलवाई

की बनाई मिठाई खा सकते हैं।

करिया सिंह के बेटे ने अभी-अभी जीप खरीदी है। वह पिछले दो साल से सांसद जी से जुड़ा है। सांसद निधि से होने वाले काम वही करवाता है। करिया सिंह उसी जीप से चल रहे हैं। कन्धे पर दुनाली टाँगकर। पहलवान के पास भी दुनाली है। बाप के जमाने से। लेकिन वे बन्दूक लेकर नहीं चलते। कहते हैं, जब मैं खुद चल रहा हूँ तो बन्दूक का क्या काम?

कहने को तो खेलावन ने तूफानी को भी बरात चलने का न्योता दिया है, पर दोनों जानते हैं कि तूफानी की उपस्थिति वहाँ असहज स्थिति उत्पन्न कर सकती है। तूफानी ने किसी मीटिंग का बहाना बनाकर माँफी माँग ली है।

एक बाई जी, एक बस, दो घोड़े, तीन कार, पाँच जीप, छह बन्दूकें और बीस-बाईस मोटरसाइकिलें। दारोगा जी ने तो खुली छूट दे दी थी - चाहे जितने बराती आइए। लेकिन अपनी भी तो कुछ जिम्मेदारी है। चलने को तो चार सौ बराती हो जाते, लेकिन खेलावन ने रोक लगा दी- "दो सौ से एक आदमी ज्यादा नहीं।"

अगम बहै दरियाव

दारोगा जी 'मरजाद' भी रोकेंगे, यानी बिदाई सबेरे-सबेरे नहीं होगी। दोपहर में 'शिष्टाचार' करने और दोपहर बाद खिचड़ी खिलाने के बाद होगी।

सारे बरातियों ने, खासकर बूढ़ों ने, जिनके गाल की चमड़ी चुचुक गई है, उलटे छुरे से, मतलब नीचे से ऊपर की ओर मुड़ाते हुए दाढ़ी बनवाई है। सिर्फ सीधे छुरे से बनाने पर ढीली खाल में सफेद बाल की खूँटियाँ बची रह जाती हैं। उलटा मूँड़ने पर ही गाल सही-सही चिकनाता है। बालों में तेल, मूँछों में तेल, जूते-चप्पल में पॉलिस। पान, सुपारी, जर्दा से महकता मुँह। हर बराती दूल्हे की तरह सजा हुआ। इसी साज-बाज में तो बरात निकलने में देर हो गई। औरतों ने गा-गाकर बरात विदा की।

क्या सजावट है! पक्की सड़क से जनवासे तक और जनवासे से दारोगा जी की पक्की हवेली तक रास्ते के दोनों ओर रंग-बिरंगी ट्यूबलाइट और बिजली की झालर की चकाचौंध। जनरेटर की भड़भड़। द्वारचार की लाइटिंग देखते ही बनती है। जलते दीपों वाले पीतल के मंगल कलश सिर पर रखे गीत गाती युवतियाँ बरात के स्वागत के लिए तैयार हैं। उनके पीछे स्त्रियों का रेला ।

आ गई बरात। बैंड बाजा बजने लगा-

घम्मर घम्मर घम्म घम्म
घम्मर घम्मर घम्म
शहनाई की पिपिहरी जैसी पतली दीर्घ रागिनी।

गोले दगने लगे। बन्दूकों से फायर होने लगे। कौवे काँव-काँव करते आसमान में उड़ने लगे। छुरछुरिया-अनार छूटने लगे। दिन जैसा उजाला और चाँदी जैसे धुएँ का गुबार। दोनों घोड़े दो पैरों पर खड़े होकर नाचने और हिनहिनाने लगे। बरातियों के स्वागत के लिए सूँड़ हिलाता खड़ा हाथी गुलाब का फूल दे-देकर बरातियों का स्वागत करने लगा। खुद गणेश भगवान स्वागत कर रहे हैं-

जिस दिन राम जनकपुर आये
देखन आई सारी दुनिया, हाँ सीताराम को भजो ।

दोनों ओर से बीरा मारा जाने लगा। निशाना लगाकर मारो, ठीक सीने पर। बतासे और पैसे लुटाए जाने लगे। महिलाएँ दूल्हे को एक नजर देखने के लिए उमड़ पड़ीं।

"दूल्हा तो ठीक है। बस, साँवला है।"

"भगवान राम भी तो साँवले थे।"

"बराती कैसे हैं? पके आम जैसे बूढ़े पिलपिले।"

"इनके गाँव में नौजवान नहीं बसते क्या?"

गीत बदल गया- बराती एक्कौ मने कै नाँय!

एक भी बराती मन लायक नहीं।

बाई जी छत्राकार घाघरा फैलाकर एक किनारे गोल-गोल नाचते, कमर मटकाते गा रही हैं, लेकिन उनकी आवाज बाजे-तमाशे के शोर में डूब गई है।

नौजवान तो नौजवान, अधेड़ भी बीरा मारती युवतियों के बीच में घुस जाना चाहते हैं। लगता है, झगड़ा होकर रहेगा।

चलो, जनवासे में चलो। जलपान के लिए।

जनवासे का तम्बू कितना बड़ा है! नीचे जाजिम। उसके ऊपर गद्दे, गावतकिए। जलपान करने के पहले चारपाई पर कब्जा करो। अरे कब्जा क्या करना है। सबके लिए चारपाई, गद्दा, चादर और तकिए का इन्तजाम है। अपना दरिद्रपना मत दिखाओ। खाली खेत है, चाँदनी रात है, जिसको जितनी दूर तक फैलकर सोना है, सोओ।

भोजन और जलपान कराने के लिए शहर से वर्दीधारी वेटर आए हैं। जो खाना हो, सामने हाजिर है। भेड़ियाधसान की जरूरत नहीं। पाँच प्रकार की मिठाई, पाँच प्रकार की नमकीन, हलवा, समोसा, ताजी पकौड़ी, कॉफी, चाय, और केसरिया दूध। शहर से हलवाई बुलाया गया है। हलवाई नहीं, कुक। फलाहार करने वालों के लिए तरबूज, खरबूजा, पपीता, केला, खीरा, ककड़ी। जितना खाना हो, खाइए। जितना पीना हो, पीजिए। ध्यान रहे, कहीं पेट न छूट जाए। बगल की झोंपड़ी में दारू-चिखने का इन्तजाम भी है। चुपचाप जाइए, टुन्न होकर चले आइए। बस, होश मत खोइए। डिसिप्लिन में रहिए।

दर्जन-भर होमगार्ड सेवा में लगे हैं। जो चाहिए, हुकुम करिए - चारपाई पर ही हाजिर हो जाएगा। पुलिस वाले हैं तो क्या, दिल खोलकर खर्च कर रहे हैं दारोगा जी। पुलिस भर्ती में करोड़ों पीटे होंगे। नोट रखने की जगह नहीं होगी घर में। थोड़ा खर्च कर दे रहे हैं तो क्या हुआ!

"अच्छा समधियाना लहा लिया सिकरेटरिया ने। जुगाडू है।"

इतनी धूमधाम देखकर पहलवान सोच रहे हैं कि बेटे को इंजीनियरिंग पढ़ाने से अच्छा था कि वे भी लाख-डेढ़ लाख देकर उसे सिपाही में भर्ती करा दिए होते। अब तक इसी तरह उनके बेटे की बरात भी सज गई होती। पाँड़े ने बुद्धिमानी का काम किया।

जलपान के तुरन्त बाद शास्त्रार्थ।

शास्त्रार्थ की परम्परा बन्द ही हो गई थी। जब रात-भर में सारा कर्मकांड निपटाना हो तो शास्त्रार्थ कब हो?

अगम बहै दरियाव

दारोगा जी ने अगले दिन का टिकान दे दिया तो शास्त्रार्थ भी होगा।

"हमें तो पहले से पता नहीं था। कन्यापक्ष वाले पिछड़ रहे हैं- आप लोग पहले से तैयारी करके आए होंगे।"

"जब ललकार दिए गए तो पीठ नहीं दिखाएँगे। कर लीजिए शास्त्रार्थ।"

शुरुआत वर पक्ष से होनी है। माठा बाबा शास्त्रार्थ के पुराने खिलाड़ी रहे हैं। सब उन्हीं से शुरुआत का आग्रह करते हैं। जो पक्ष उत्तर न दे सकेगा, वह प्रश्न पूछने का अधिकारी होगा। उत्तर न मिल पाने की दशा में प्रश्नकर्ता अपने प्रश्न का उत्तर बताने के लिए बाध्य नहीं होगा।

माठा बाबा खाँसकर शुरू करते हैं-

केशवं पतितं दृष्ट्वा द्रोणो हर्षमुपागतः
सर्वे कौरवाः रुदन्ति, हा केशव कथं गता

केशव को गिरा हुआ देखकर द्रोण बहुत प्रसन्न हुए और सभी कौरव चिल्ला उठे, "हाय केशव, वह कैसे चली गई?"

"इसका सामान्य अर्थ तो यह है कि कृष्ण को गिरा हुआ देखकर द्रोण हर्षित हो गए और सारे कौरव रोने लगे कि हाय, कृष्ण कैसे गिर गए? हम जानते हैं कि महाभारत में इस तरह का कोई प्रसंग नहीं मिलता। वास्तव में यहाँ शब्दों का वही अर्थ नहीं है जो भाषित हो रहा है। यहाँ वास्तविक अर्थ छिपा हुआ है। बताइए, वह अर्थ क्या है?"

इतना गूढ़ प्रश्न ! सन्नाटा छा गया।

कन्या पक्ष के एक बुजुर्ग खड़े होकर कहते हैं- " भाइयो, यह ब्राह्मण-बनिया की सभा तो है नहीं, जिसके दोनों पक्षों में पढ़े-लिखे विद्वान जुटे हों। यह तो धूर-माटी में खटकर खाने वाले लोगों की बरात है। इसमें पंडिताऊ भाषा किसे आती है? शास्त्रार्थ करना है तो हमारी बोली में करिए।"

"सही बात, सही बात।" कई आवाजें आती हैं- " संस्कृत जानने वाले यहाँ कितने हैं? आप भले चुन-चुनकर संस्कृत के विद्वान बरात में लाए हों, लेकिन हमारे पक्ष में तो देसी बोली बोलने वाले ही हैं।"

दोनों पक्ष देसी बोली में शास्त्रार्थ के लिए सहमत होते हैं। कन्या पक्ष जवाब नहीं दे सका तो अब उसके पूछने की बारी है। एक बुजुर्ग कहते हैं-" बताइए, यह कैसे हैं-

हर जुवाठ खेत मा, बरदा गाय के पेट मा
हलवाहे कै जनमै नाँय, कलेवा धरा खेत मा।

बैलों को नाधने वाला जुआठ और हल खेत में रखा हुआ है, लेकिन बैल जिनसे जुताई होनी है वे अभी गाय के गर्भ में हैं। हलवाहा, जिसको हल जोतना है वह पैदा ही नहीं हुआ, लेकिन उसका कलेवा खेत में रखा हुआ है।"

"बाप रे! यह तो अपने माठा बाबा की संसकिर्त से भी चार हाथ आगे की चीज है।"

"बूझिए भई, बूझिए।" वर पक्ष के लोग एक-दूसरे की ओर देखकर कहते हैं। अन्ततः वर पक्ष हार मान लेता है। अब उसके पूछने की बारी है।

पहलवान कहते हैं- "जब देसी कहकूत पूछ सकते हैं तो बताइए-

अड़बंग थाम थूनी। दस गोड़ तीन नूनी।"

कन्यापक्ष के बुजुर्ग ने बताया- "यह सिंचाई के लिए बैलों द्वारा कुएँ से पानी निकालने का सरंजाम है। इसमें अड़बंग थाम थूनी के तौर पर धुराई और गड़ारी होती हैं। नहन व पुर होता है। दो बैल और एक उन्हें हाँकने वाला आदमी होता है। दो बैलों के आठ और दो उस आदमी के, कुल दस गोड़ यानी पैर होते हैं और दो बैलों की तथा एक हाँकने वाले आदमी की, तीन नूनी होती है।"

वाह बूढ़े दादा, वाह! अकेले मोर्चा सँभाल लिया आपने। कन्या पक्ष की ओर देर तक ताली बजी।

अब वर पक्ष पूछे।

इस बार भगवत पाँड़े पूछते हैं-

"जोबन निकला छाती फोर,

एकवा करिया एकवा गोर,
एकवा तोर एकवा मोर।

छाती फोड़कर जोबन निकला है। एक काला है एक गोरा है। एक तेरा है, एक मेरा है। बताओ कैसे?"

अटकल लगाई जा रही है। जोबन निकलता है, सही है। छाती फोड़कर निकलता है, सही है। लेकिन उनमें एक गोरा हो जाए, एक काला, यह कैसे हो सकता है?

हार मान ली कन्या पक्ष ने।

"लेकिन इसका अर्थ जरूर समझा दीजिए, बाबा।"

पाँड़े समझाते हैं-" अरे भाई, जोबन का 'जो' और 'बन' अलग कर दीजिए। सुमित्रा कह रही हैं कौशल्या से कि दुख से हम लोगों की छाती फोड़कर या फाड़कर जो बन के लिए निकले हैं उनमें से एक काले हैं, एक गोरे हैं। एक तुम्हारे बेटे हैं एक मेरे बेटे हैं।"

"क्या बात है! वाह पांडे बाबा! वाह!"

अब कन्या पक्ष पूछे।

"हम भी पूछ सकते हैं?"

अगम बहै दरियाव

तेल-धब्बों के दाग वाला पैंट-बुश्शर्ट पहने एक दाढ़ी वाला नौजवान पूछता है-"मैं जनरेटर आपरेटर हूँ। कन्या पक्ष का हुआ।"

थोड़ी कहासुनी के बाद उसके पूछने पर दोनों पक्ष राजी हो जाते हैं-" पूछिए।"

सर सर सर सर डावै
चुभुर चुभुर चुभकावै
बूँदै बूँद चुवावै

थोड़ी देर तक सोचकर पहलवान कहते हैं- "यह तो पुड़ से पानी भरना हुआ। नहन में बँधे खाली पुड़ को पानी भरने के लिए कुएँ में डाला जाता है। हाथ में पकड़ी हुई नहन अन्दर जाते हुए सर-सर की आवाज करती है। फिर पुड़ को चुभुर-चुभुर हिलाकर पानी से भरा जाता है। जब पानी से भरा पुड़ ऊपर आने लगता है तो उससे बूंद-बूंद पानी चूता रहता है।"

"सही बात! सही बात!"

अगला प्रश्न फिर कन्या पक्ष की ओर से।

एक टोपी-धोती धारी अधेड़ खड़े होते हैं। बम्बई में कमाते हैं। हँसकर कहते हैं, एक सवाल मेरा है-

चमड़ा गावै चमड़ा बजावै चमड़ा ताल लगावै
जौ चमड़ा मा चमड़ा डावै बड़ी मजा आवै

"छिः, गन्दी बात! यही पढ़ाई पढ़ने बम्बई गए थे?"

"गन्दी बात नहीं, बहुत ऊँची बात है।" प्रश्नकर्ता ललकारते हैं- " पहुँचने की कोशिश कीजिए।" कीजिए।"

सब चुप। देर तक चुप्पी। फिर हार स्वीकार कर लेते हैं।

प्रश्नकर्ता मुस्कराकर कहते हैं- "बहुत आसान है। चमड़े की जीभ गाती है। चमड़े के बने तबले, ताशा, ढोल, नगाड़ा, मृदंग बजते हैं और जब चमड़े के जूते में चमड़े का पैर डालकर चलते हैं तो कितना मजा आता है।"

"ओऽऽ, वहाँ तक दिमाग ही नहीं पहुँचा।"

"अब वर पक्ष पूछे।"

करिया सिंह कहते हैं- " एक सवाल मेरा है-

खान पान सम्मान में सदा रह्यो अगुवान
अब कस पिछड़े जात हौ, देखि दसानन बान।"

"बताइए, कौन किससे क्यों कह रहा है?"

459

कन्या पक्ष चुप!

"हार मान लिया हो तो खुद पूछो।"

बुज़ुर्ग पूछते हैं, 'बलमा, तुम दो हो गए हो।' बताओ, 'ये दो बलमा कैसे आए?'

बैंड बाजे वाला बूढ़ा मुईन कहता है- "मैं बताता हूँ।"

"तुम कैसे बताओगे? वर पक्ष को बताना है।"

"वर पक्ष की ओर से आया हूँ तो बराती हुआ।"

"अच्छा, बताओ।"

"औरतों के बाल के आखिरी सिरे कभी-कभी दो भागों में बँट जाते हैं। दोमुँहे बाल। यानी बाल में दो सिरे हो गए।"

"वाह बहादुर ! बहुत बढ़िया। इज्जत रख लिया। और पूछो भाई।"

कन्यापक्ष का हौसला पस्त लग रहा है। पूछने के लिए कोई सवाल नहीं सूझ रहा है।

"वर पक्ष की जीत मान ली जाय?"

नाइन दूल्हे के पैर का धोवन लेने आई थी। उसी से वधू का स्नान होगा। वह भी खड़ी होकर सुन रही थी। क्या सवाल न पूछ पाने के चलते कन्या पक्ष हार जाएगा?

"बरातियो, एक सवाल मेरा। बताइए कैसे-

बिन गाय की बछिया भइया बिना साँड बरदान ,
टेकारे पेट माँ बछरू कूदै मठवा हात बिकान ,
चला बेसहि द्या बालमा
बिना बिआने कै गोरसवा
चला बेसहि द्या बालमा

"बिना गाय के यानी बिना माँ के बछिया पैदा हो गई और वह बिना साँड़ के गाभिन हो गई। अभी बछड़ा उसके पेट में ही उछल-कूद कर रहा था कि उसके दूध से बना मट्ठा बाजार में बिकने के लिए आ गया। ओ मेरे बालम, चलिए मुझे वही मट्ठा खरीद दीजिए।"

"बाप रे! यह तो सचमुच बेढब है। क्या पूछ लिया नाउन ने? कन्यापक्ष का पलड़ा भारी कर दिया। दिमाग लगाओ।"

"दिमाग लगाकर थक गए। नहीं पहुँच सकते। हार स्वीकार है।"

"तो अब खुद पूछिए।"

"नहीं, पहले नाउन इसका अर्थ तो बताएँ।"

नाउन कनखी से देखते-मुस्कराते हुए शामियाने से बाहर चली जाती हैं।

अगम बहै दरियाव

"अच्छा बताइए।" दूल्हे के मामा कहते हैं-

दुइ पग चलै चारि लटकाए
तीन मूँड़ दुई नैन सुहाए।

"मैं बताता हूँ।" कन्यापक्ष का एक नौजवान खड़ा होता है-"ये श्रवण कुमार हैं। अपने अन्धे माँ-बाप को काँवरि में बैठाकर तीर्थयात्रा कराने ले जा रहे हैं। श्रवण कुमार के दो पैर चल रहे हैं और माँ-बाप के चार पैर लटके हुए हैं। सिर तीन हैं, लेकिन आँखें सिर्फ दो हैं।"

तभी जनवासे में आकर दो लोग कहते हैं- "भोजन तैयार है। आप लोग भोजन करने चलें।"

"रुकिए। हार-जीत का फैसला तो हो जाने दीजिए।" "रात आधी से ज्यादा बीत चुकी है। हार-जीत के फैसले में सबेरा हो जाएगा।" "ठीक बात, ठीक बात। अभी दोनों पक्ष बराबरी पर हैं। दोनों ने पाँच-पाँच सवाल पूछे और दो-दो सही जवाब दिये। इसलिए शास्त्रार्थ का पटाक्षेप होने दीजिए।"

"बोलो, सियावर रामचन्द्र की जै!"

खेत में दूर-दूर तक च चारपाइयाँ बिछी हैं। रात-भर के जगे लोग बाँस-भर दिन चढ़ने तक सो रहे हैं।

बरातियों को जगाने के लिए बैंड बजने लगा, जैसे पहले राजा-महाराजा लोगों को जगाने के लिए शहनाई! बजाई जाटी थी ।

"उठिए, उठिए। जलपान करिए। बारह बजे 'शिष्टाचार' की रस्म शुरू होनी है।"

कटोरी-कटोरी सरसों का तेल देह में पोतकर लोग नहाने में जुट गए। कुछ

लोग नदी में नहाने गए हैं। नदी के पाट को तैरकर पार करने की होड़ लगी है। ऐसा निश्चिन्त दिन फिर जिन्दगी में कब आएगा !

बाई जी लाली-पाउडर पोतकर तैयार हो रही हैं। रात में लगाया गया काजल बह गया है। उसकी मोटी लकीर को पतली कर रही हैं।

"रात में कहाँ छुप गई थीं? हीक भर नाचीं नहीं। फिरी में आई हैं क्या?"

"उधर अँधेरे में गई थीं। वहाँ काँटा चुभ गया। अब दिन में रंग जमाएँगी।"

सज-सँवरकर सारे बराती शामियाने में बैठ रहे हैं।

बीच में बाई जी के नाचने के लिए गोलाकार जगह छोड़ी गई है। बरई का लड़का सबको पान की गिलौरी दे रहा है। दूल्हे के मामा सरौते से पाँचों मेवा यानी गरी, छोहारा, काजू, किसमिस और बादाम काट-काट कर बरातियों में बाँट रहे हैं। गंगाजली से लोगों पर केवड़ाजल छिड़का जा रहा है। खुद खेलावन सबके अँगूठे के ऊपर और मूँछों में इत्र लगा रहे हैं। शहनाई बज रही है। आनन्द मंगल है।

लाल साड़ी में सजी, लम्बी मुस्की मारती बाई जी आकर अपने वाद्ययंत्रों को प्रणाम करती हैं, फिर थोड़ा झुककर दाहिने हाथ को ऊपर-नीचे हिलाते हुए लोगों को आदाब बजाती हैं।

"वाह! मोती जैसे चमकते दाँत, लाल होंठ, सुन्दर नाशिका, भारी नथ, कजरारी आँखें, बँधी चबुरी के बीच से झरती मुस्कान; बाप रे! वाकई सुन्दर है यार, कहाँ की है?"

"चाँदे बाजार की?"

"चाँदे की बाइयाँ असली सुन्दरी होती हैं। जरूरत-भर की भारी भी है। कितना लेगी?"

"जितना भी ले, है टाप की। रात तो रात तो अँधेरे में ठीक से देख ही नहीं पाए।"

एक ताव नाचने के बाद बाई जी ने आलाप लिया -

ओ बलम तेरे नैना हजारी

"बाबाजी, आपको इशारा करके ही 'बलम' कह रही है। जेब ढीली कीजिए।"

ओ बलम तेरी ऊँची अटारी

"ऊँची अटारी तो छत्रधारी सिंह की है, लेकिन वे आए नहीं हैं।"

"तो क्या हुआ? उनके भाई करिया सिंह तो हैं। उसने पहचान लिया है। उन्हीं की ओर देखकर गा रही है।" करिया सिंह ने सौ का नोट मोड़कर दाँतों के बीच में दबा लिया। आधा नोट मुँह के अन्दर, आधा बाहर। नोट लेने के लिए बाई जी को अपना मुँह करिया सिंह के मुँह के पास लाकर नोट को दाँतों से पकड़ना होगा। इस तरह बाई जी का होंठ करिया सिंह के होंठ से सटेगा और चुम्मा मिल जाएगा। पीढ़ियों से आजमाई गई तरकीब।

सूमों *की जेब से भी माल निकलवाना जानती हैं बाई जी। नाचते-नाचते जाकर

* कंजूस

अगम बहै दरियाव

किसी गत यौवन रसिक के सामने बैठेंगी और अपना आँचल उसके सिर पर डाल देंगी। दोनों लोगों का मुखड़ा घूँघट में। आँखें चार होती हैं। इतनी देर से घूर रहे हैं, मुफ्त में। जेब में हाथ कब जाएगा राजा?... और कंजूस से कंजूस आदमी की जेब ढीली हो जाएगी।

लेकिन हरदयाल बाबा ने तय कर लिया है कि वे नहीं पिघलेंगे। पसीने की

कमाई रंडी-पतुरिया पर लुटाने के लिए थोड़े है। दस रुपये में तो महीने भर का सुर्ती का खर्चा चलेगा। बाई जी के सामने चुनौती खड़ी हो गई।

अचानक वे हरदयाल बाबा का पैर पकड़कर भेंटना शुरू कर देती हैं-

अरे या मोरे बपई।
हमरी सुधिया भुलान्या मोरे बपई।

सारी महफिल ताली बजाकर हँसने लगती है। हरदयाल बाबा झेंपकर महफिल से भाग खड़े होते हैं।

बाई जी हँसते हुए आकर पहलवान के सामने बैठती हैं। घूँघट डालने ही वाली हैं कि पहलवान दस रुपये का नोट निकालकर आगे बढ़ा देते हैं। बाई जी नोट पहलवान के सिर के ऊपर गोल-गोल घुमाती हैं, फिर उनकी मूँछों को ऊपर की ओर उमेठ देती हैं।

वाह! बाई जी ने पहलवान की मूँछों को ताव दे दिया। यानी इन मूँछों पर बाई जी फिदा हो गईं। सचमुच सँभालकर रखा है पहलवान ने मूँछों को- घनी, काली, लम्बी।

अरे, ऊँची अटारी वाले बूढ़ों पर ही लुभाई रहोगी क्या? नौजवानों का दिल धुआँ-धुआँ हो रहा है। उनकी जेब में इतना नोट कहाँ है कि घूँघट के अन्दर चुम्मा ले पाएँ। वे कहते हैं- महल अटारी छोड़िए कोई दूसरा गाना गाइए, दिल को हिचकोले देने वाला।

झुलनी झोंकेदार झुलनी झोंकेदार
लइ ल्या बलम तनी चुम्मा...

"वाह वाह! क्या बात है! चुम्मा! चुम्मा!"

हर नौजवान को हवाई चुम्मा मिल गया। नोट और रेजगारी की बरसात होने लगी।

"चलो भाई। खिचड़ी खाने चलो।"

"जरा रुकिए। अभी तो नाच जमी है।"

"एक लहरा और हो जाय। टाप क्लास का!"

हेराइ गए कंगना , हेराइ गए कंगना,
रात भकझोर मा , हेराइ गए कंगना

"अरे गजब! अब निकाला दिल को झकझोरने वाला गाना।"

जे मोरे कँगना का खोजि ले आवै।
पाँच रुपैया इनाम दूनौ जोबना...
रात भकझोर मा,...

क्या बात है! दूनों जोबना के साथ पाँच रुपैया भी। आने-जाने का किराया-भाड़ा। बाई जी के इशारे पर नौजवान खड़े होकर उनके साथ कमर लचकाने लगे हैं। बूढ़े दरीनों को भी हाथ पकड़कर खड़ा किया जा रहा है। लचकिए। लचकिए। यह दिन फिर पता नहीं कब आए? कितने दिन जिन्दगी के बचे हैं, कौन जाने?

खिचड़ी की पंगत बैठ गई है। औरतें गारी गाने लगी हैं-

दूल्हे की माई बड़ी हरजाई
गली गली खोजैं भतार, हमार केहू का करिहैं
मोरे अंगना में आई बहार, हमार केहू का करिहैं

दूल्हा पत्तल में हाथ नहीं लगा रहा है। कोंहाया हुआ है।

"क्यों नाराज हो भाई? क्या चाहिए?"

दूल्हा बिना मुहर के खिचड़ी नहीं खाता...

मोहर तो पुराने जमाने की चीज हो गई। नए जमाने की चीज चाहिए। दुल्हे के मामा ठीक दुल्हे के सामने की पंगत में बैठे हैं। कह रखा है कि सिर ऊपर नहीं उठाना है। जब तक मेरा इशारा न मिले, पत्तल में हाथ नहीं लगाना है।

"बहुत देर हो गई। खाते क्यों नहीं?" महिलाओं की प्रतिक्रिया आई-

जादू टोना लगाउ दुलहे के।
जेवना न जेवैं भगाउ मड़वे से, ढकेलु मड़वे से।
जा-दू टो-ना...

"क्या चाहिए?"

"बता दिया। हीरो होंडा चाहिए।"

अगम बहै दरियाव

वधू के बाबा आगे आते हैं-"क्यों नहीं, क्यों नहीं! मिलेगा हीरो होंडा। कुम्हार को बुलवाया है।"

"कुम्हार देगा हीरो होंडा?"

"क्यों नहीं देगा। जब वह हाथी, घोड़ा, सिपाही गढ़ देता है तो हीरो होंडा भी गढ़ देगा। आने दीजिए।"

"मजाक मत करिए।" दूल्हे के मामा कहते हैं- " असली वाली चाहिए।"

"अरे भाई, पुलिस की नौकरी दे दिया तो समझो दहेज का पेड़ दे दिया। साठ साल तक पेड़ से दहेज झरेगा। उसके बाद पेंशन अलग से। और क्या चाहिए?"

दुल्हन के बाबा मुस्कराते हैं- "ठीक है भाई। असली वाली भी मिल

जाएगी। हम तो मजाक कर रहे थे। खाइए।"

एक आदमी सचमुच की हीरो होंडा ढकेलकर लाता है और दूल्हे के पीछे खड़ी कर देता है। दूल्हा मुड़कर देखता है। दूल्हे को मामा का इशारा मिल गया। वह पत्तल में हाथ लगाता है।

"बोलो, हनुमान सामी की जै।"

भरपेट पकवानों के साथ भरपेट गालियाँ भी मिल रही हैं। नाम ले-लेकर गालियाँ। पेट भर जाने के बाद भी गाली खाने की लालच में लोग पंगत से उठने का नाम नहीं ले रहे हैं। जिसका नाम छूट जाए, वह अभागा। वही बरात याद रह जाती है जहाँ बरातियों को भरपेट गाली खाने को मिली हो।

माठा बाबा की खुराक कुछ ज्यादा है। जवानी में तो छत्तीस पूड़ी खाते थे। मुँह में दाँत नहीं बचे। दोने के मट्ठे में पूड़ी मींजकर, चीनी मिलाकर मलीदा बना दिया है। चुभला-चुभलाकर खा रहे हैं। पूरी पंगत जीम चुकी है, लेकिन जब तक माठा बाबा खा रहे हैं, कोई कैसे उठ जाए?

गारी गाती औरतों को किसी ने माठा बाबा का नाम बता दिया। औरतें अपने खजाने की अश्लीलतम गालियाँ माठा बाबा पर न्योछावर करने लगती हैं-

कहाँ जाबे भेड़वा अकेलवा रे
तोरी मुली मुली अँखिया
जाबै त जाबै माठा बाबा की
बहिनी की सेजरिया
खाई का दुई पूड़ी पउबै
चोदै का मजूरी पउबै
देहरी पर से लाँड़ देखइबै
चला अउबै अपनी बखरिया रे
तोरी मुली मुली अँखिया

माठा बाबा खा भी रहे हैं, हँस भी रहे हैं और नकली गुस्सा दिखाते हुए गाने वालियों को गरिया भी रहे हैं। अचानक उन्हें छिछिनी आ जाती है। वे खाँसते-छींकते दोना लिये उठकर चल देते हैं।

पान खाकर जाइए। यहाँ की बरइन भी बड़ी हँसलोल है। पूछ लेती है-" जर्दा ज्यादा डालें कि कम? इसलिए पूछ रहे हैं कि ज्यादा डाल दूँ तो कहीं बेहोश न हो जाओ।"

"तुम तो बहुत अच्छी बरइन हो। चलो, हमारे देश बसो।" माठा बाबा कहते हैं। एक घराती वृद्ध ने माठा बाबा के नहले पर दहला लगाया-" आप ही के देश की बिटिया हैं। हम ब्याह कर ले आए हैं। ब्याहने के बाद भी अपनी बहन-बेटियों पर नजर गड़ाने का रिवाज है क्या आपके देश में?"

ठहाके !

तोरे बिरवा मा अजब बहार
बरइन बीरा लगाउ
ऊ बिरवा खाई दूल्हा की माई बहिनिया
काकी पितयनिया, रान्ह परोसिनी
छोटका बड़का
खटाई गरभ रहि जाय
बरइनि बीरा लगाउ
तोरे बिरवा मा.....

कई बार गोली मारी गई

गिरोह को खाना आने का इन्तजार है। सबके पेट में चूहे कूद रहे हैं। समय बिताने के लिए वे झाड़ियों के बीच टॉर्च की रोशनी में ताश खेल रहे हैं। बीच-बीच में मच्छर मारने की चट्-चट् आवाज आती है। पूरी पहाड़ी पर जुगनू दिपदिपा रहे हैं। सरदार नदी में नहाने गया है। गजेन्दर को शाम से दस्त लगे हैं। घंटे-घंटे पर पानी की बोतल लेकर झाड़ियों की ओर भागता है।

अगम बहै दरियाव

ठीक बारह बजे मुच्छड़ महराज का आदमी खाना लेकर आता है। मुच्छड़ महराज अपने आदमी हैं। बालू की रॉयल्टी से आने वाली रकम उन्हीं के पास जमा होती है। आज उनके पोते की बरही है। पहले सारा गिरोह भोज खाने उनके घर जाने वाला था, फिर सरदार ने जाना मुल्तवी करके खाना यहीं मँगवा लिया। उसका सोचना है कि लाख अपने आदमी हैं, फिर भी सावधानी रखनी चाहिए। इस तरह मुन्नी बाई का छप्पन-छुरी डांस देखने का चान्स हाथ से निकल गया।

एक पत्तल पर पूड़ी, सब्जी, चावल, दाल और दोने में खीर परोसकर खाना लाने वाले आदमी को खिलाया जाता है। वह बेझिझक खा लेता है। थोड़ा इन्तजार। वह भला-चंगा है। इसका मतलब इसे खाने में कोई खतरा नहीं है।

गिरोह खाने पर टूट पड़ता है।

गजेन्दर के पेट में फिर मरोड़ उठी।

कोई कहता है-" दाल में तो नमक ही नहीं पड़ा!"

झाड़ियों की ओर पानी का डिब्बा लेकर जा रहा गजेन्दर लौट पड़ता है-" मेरे पास है नमक। वह पैंट की जेब से नमक की शीशी निकालकर सबकी दाल में थोड़ा-थोड़ा डालता है। फिर थोड़ा-सा एक दोने में रख देता है।"

गजेन्दर और जंगू अलग-अलग दिशाओं से लगभग एक साथ लौटते हैं। जंगू हाय-हाय करते और लँगड़ाते हुए लौटा है। उसके दाएँ पैर के अँगूठे में बिच्छू ने डंक मार दिया है।

गजेन्दर कहता है-"सरदार, खाना 'सरदार, खाना खा लीजिए तो शंकरगढ़ के समुझ के पास ले चलता हूँ। वह बिच्छू का जहर झारता है।"

"खाने को मारो गोली। तुरन्त चलो।"

"सरदार, खाने से ताकत आ जाएगी।"

"नहीं, उठो। दर्द बढ़ता जा रहा है। मुझे बिच्छू का डंक बहुत चढ़ता है।"

बलुआ घाट पहुँचते-पहुँचते जहर घुटने के ऊपर तक चढ़ गया। पैर जमीन पर पड़ता है तो झनझनाहट सिर तक चढ़ती है।

जंगू एक पत्थर पर बैठते हुए कहता है- "अब चला नहीं जाता। हाय-हाय करते हुए आधी रात को गाँव में घुसना 'सेफ' नहीं है। तुम समुझ को बुलाकर लाओ। मैं यहीं लेटता हूँ।"

गजेन्दर घाट पर बँधी डोंगी खोलकर उस पार चला गया।

खाना खत्म करने के थोड़ी देर बाद ही सभी लस्त होने लगे। चक्कर आ रहा है कि नींद का झोंका?

"धोखा, धोखा! गजेन्दर ने धोखा किया। इस खाने में जहर मिला है। भागो ! भागो !

"कैसे भागें? खड़ा तो हुआ नहीं जा रहा।"

जंगू को न बैठे कल है, न लेटे। इतनी देर क्यों कर रहा है गजेन्दर?

पूरब से चाँद निकल आया है।

जंगू लँगड़ाते हुए घाट पर आता है।

नदी के दूसरे पाट पर कुछ आहट होती है। पानी में कुछ परछाइयों की झलक दिखती है। वह चौकन्ना होता है। लगता है, डोंगी पर कई लोग सवार हो रहे हैं।

उसे आसन्न संकट का भान होता है। वह जान छोड़कर नदी के किनारे-किनारे पूरब की ओर भागता है। दोनों पैर बराबर का साथ देने लगे हैं।

काफी दूर भागने के बाद वह एक हाथ से बन्दूक सिर के ऊपर उठाकर पानी में उतरता है और बेआवाज धारा के साथ तैरते हुए दूसरे किनारे पर लगता है।

गिरोह के अड्डे के पास से रह-रहकर फायरिंग की आवाज आने लगी है। उसे कुछ दिनों से शक हो रहा था कि उसका कोई साथी पुलिस का मुखबिर बन गया है, लेकिन वह गजेन्दर होगा, यह नहीं सोच सका। अभी चार महीना पहले ही तो वह गैंग में भर्ती हुआ था। भर्ती होने के लिए तीन

दिन तक जंगल में बिना खाए-पिये पड़ा रहा। कहता था कि बैरी का खानदान मिटाने के बाद ही गाँव वापस लौटेगा।

दोनों घाटों से घुसी पुलिस पार्टियों द्वारा चलाए गए सर्च ऑपरेशन में छह डाकू पकड़े जाते हैं। सभी जमीन पर अर्ध बेहोशी की हालत में पड़े हैं। लगता है अलग-अलग दिशाओं में भागने का प्रयास करते हुए गिरे हैं। खाने के बरतन, पत्तल, प्लास्टिक के पानी भरे केन, चावल, पूड़ियाँ आसपास बिखरी हैं।

कन्धे और पैर की ओर से टाँगकर उन्हें पेड़ के तने के सहारे बिठाया जाता है। वे रह-रहकर चैतन्य होने और खड़े होने का प्रयास करते हैं। आँखें फैलाकर देखना-समझना चाहते हैं और निढाल हो जाते हैं।

सड़क के किनारे खड़ी जीप में दो और 'पकड़' पड़ी हैं। उनके हाथ पीछे बँधे हैं। मुँह में कपड़ा ठूंसा गया है। पैर आपस में बँधे हैं और मुँह नीचे करके जीप के फर्श पर लिटाया गया है। एक 'पकड़' का शरीर ठंडा हो गया है। जिस जगह जीप के फर्श पर उसकी नाक थी, वहाँ खून और नाक का मिला हुआ द्रव फैला है। उसे

एक सिपाही घसीटकर लाता है और बबूल के पेड़ के तने से सटाकर बाँधता है।

दूसरी 'पकड़' गायब है। लगता है, अँधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गया। लेकिन भागा कैसे? दोनों पैर तो तोड़ दिए थे?

वह जीप से आठ-दस मीटर की दूरी पर एक झाड़ी में छिपा मिलता है।

एक सिपाही उसकी टाँग पकड़कर बाहर खींचता है और चित करके पीछे हट जाता है। दूसरा छाती का निशाना लेकर फायर झोंकता है।

परखना जरूरी था कि 'पकड़' के कान के छल्ले सोने के हैं या पीतल के? इसलिए चेहरे पर टार्च की रोशनी डाली गई। पकड़ की पुतलियाँ गोल-गोल नाच रही थीं। शरीर थरथरा रहा था। जिन्दगी साथ छोड़ रही थी। गरम खून छाती की कमीज रँगकर कमर की ओर बढ़ रहा था।

देखते-देखते पुतलियाँ स्थिर हो गई।

सुबह स्थानीय अखबार में खबर है- रात चार घंटे तक चली मुठभेड़ में जंगू गैंग के आठ डाकू मारे गए। एक सब-इंस्पेक्टर और तीन सिपाही घायल। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जंगू की माँ को पहचान के लिए बुलाया जाता है। वह एक लाश पर सिर पटक-पटककर रोती है-"अरे, मोरे भइया।" पुलिस वाले क्षण-भर को खुश हो जाते हैं-" लगता है, जंगुआ भी है मरने वालों में।"

जीप में लादकर लाए गए नवयुवकों में से एक की माँ उँगली से बेटे की आँख खोलने की कोशिश करते हुए कहती है-" उठो बेटवा। घर चलो।... पापियों ने मेरे बेकसूर बेटे को मार डाला। चार दिन पहले टोले से पकड़कर लाए थे। हम गरीब लोग कहाँ से लाते पचास हजार।"

मृत डकैतों से बरामद सात घड़ी, तीन चेन और छह अँगूठियों के बँटवारे को लेकर फोर्स के बीच देर तक झाँव झाँव होती है। अनुशासन का हवाला देकर सबको शान्त किया जाता है।

जितना दिमाग मुठभेड़ की योजना बनाने में लगाना पड़ता है, उससे ज्यादा एफ.आई.आर. दर्ज करने में लगता है।

... मुखबिर से सूचना मिलने पर कि इलाके के खूंखार डाकू जंगू का गैंग बलुआ पहाड़ी पर इकट्ठा होकर कोई बड़ी वारदात करने की योजना बना रहा है, दो ऑपरेशन ग्रुप बनाकर आगे-पीछे दोनों तरफ से घेरा डाला गया और ललकारकर सरेंडर करने को कहा गया। बदले में डाकू दल ने फायरिंग शुरू कर दी।

अतः आत्मरक्षार्थ मुझ थानाध्यक्ष द्वारा पुलिस पार्टी को न्यूनतम जवाबी फायरिंग करने का आदेश देना पड़ा और मेरे द्वारा भी अदम्य साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए, जान की परवाह न करते हुए, सिखलाई गई ट्रेनिंग के आधार पर खुद को बचाते हुए तथा माननीय सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट और मानवाधिकार आयोग के आदेशों व निर्देशों का निष्ठा से अक्षरशः पालन करते हुए, बिना विचलित हुए बदमाशों की फायरिंग रेंज में घुसकर फायर किया गया।

बदमाशों की ओर से गोलियों की तड़तड़ाहट बन्द होने के बाद सर्च करने पर अलग-अलग आठ डाकू मरे पाए गए। रात का वक्त होने और जंगल व पहाड़ी इलाका होने के कारण मौके पर कोई गवाह नहीं मिला।

अगले दिन थानाध्यक्ष अपनी कुर्सी पर आगे-पीछे झूलते हुए बल्ब की पीली रोशनी में मुठभेड़ में मारे गए बदमाशों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट पढ़ रहे हैं-

..उसे कई बार गोली मारी गई.

...शरीर के सिर में दो गोलियां लगी थीं...

...उसके दिल के पास तीन बार गोली मारी गई...

....उसकी खोपड़ी में तीन बार गोली मारी गई...

...एक बन्दूक का घाव मस्तिष्क गुहा में और एक घाव छाती में...

...नज़दीकी गोली लगने से घाव के आसपास की त्वचा जल गई...

...शरीर पर प्रवेश और निकास के चार घाव थे...

जीप में बाँधकर लाए गए एक लड़के की रिपोर्ट में मृत्यु का कारण लिखा

है-" शॉक & हैमरेज डयू तो एंटीमोर्टम इंजरी." पेट में गोली लगी, पर पेट में खून नहीं भरा। यानी मरने के बाद गोली लगी।

"अरे, यह क्या लिख दिया।"

ये डॉक्टर लोग भी न, बिना मारे बिगड़ गए हैं! माना कि कोर्ट-कचहरी जाने की हैसियत इनमें से किसी के परिवार की नहीं है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट लेने में ही इनको साल-भर लग जाएँगे, पर अगर इन्क्वायरी बैठ गई तो? आत्मरक्षार्थ चलाई गई गोलियाँ टारगेट के फैटल ऑर्गन्स में ही कैसे लगीं, इसका क्या जवाब दिया जा सकता है? एक बार गोली बन्दूक से छूट गई तो उस पर किसी का कंट्रोल रह जाता है? ट्रेनिंग में बताई गई यह बात वे हमेशा याद रखते हैं कि हमारे कानून और हमारी लचर न्याय व्यवस्था अपराधियों से निपटने में इतनी अक्षम है कि पुलिस

को ही जज और जल्लाद दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है। अच्छा करने के लिए भी कुछ बुरा करना पड़ता है। पत्रकार तो आसानी से मैनेज हो जाते हैं, पर मानवाधिकार आयोग का कारगर इलाज महकमा अभी तक नहीं ढूँढ़ सका। वह तो कहिए कि इस बार के ऑपरेशन में उन्होंने नई टैबलेट का प्रयोग कराया। इसका कोड 'करामाती' है। पहले खाने में सल्फास की गोली पीसकर मिलाई जाती थी। उसमें कई दिक्कतें थीं। एक तो उसमें हल्की-हल्की गंध आती थी। 'टारगेट' को सन्देह हो सकता था। दूसरे, उसका असर होने में घंटे डेढ़ घंटे का समय लग जाता था। उल्टी-दस्त होने लगती थी। शरीर नीला पड़ जाता था। मुँह से झाग निकलने लगता था। और कभी-कभी तो इन्काउंटर करने के पहले ही टारगेट दम तोड़ देता था। तब पोस्टमार्टम रिपोर्ट में 'कॉज आफ डेथ' बुलेट इंजरी के बजाय प्वाइजनिंग दर्ज हो जाता था। तब इन्क्वायरी अफसर के सामने सिर्फ हाथ जोड़ने से काम नहीं चलता था। जेब भी ढीली करनी पड़ती थी।

'करामाती' सचमुच 'करामाती' है। पन्द्रह-बीस मिनट में बेहाल कर देती है।

न उल्टी, न दस्त। न जान जाती है, न शरीर नीला पड़ता है। खाने में खिलाने का मौका न मिले तो चाय, दूध, लस्सी, छाछ, कोल्ड ड्रिंक - किसी में पिला दीजिए। 'करामाती' की जानकारी ट्रेन में जहरखुरानी करने वाले उनके एक विश्वासपात्र चेले ने दी थी।

कप्तान साहब ने पुलिस पार्टी को नकद इनाम की घोषणा कर दी है। जंगुआ हाथ से न निकलता तो आउट ऑफ टर्न प्रमोशन पक्का हो जाता। लगता है, गजेन्दर डबल एजेंट बन गया!

अपरबल सिंह मायूस हैं। उन्हें लगता है कि जंगुआ के बच निकलने के पीछे थानाध्यक्ष की मिलीभगत है। पैसा सबका ईमान खरीद लेता है!

दिवाकर अपने बाल-बच्चे साथ ले जाने के लिए आए हैं। यह जानकर घर का माहौल भारी हो गया है।

शाम को पाँड़े संध्या वंदन से निपटते हैं तो पँड़ाइन उनके पास जाकर बैठती हैं।

"सुनते हो, दिवाकर अपने बच्चे साथ ले जा रहे हैं।"

"तुमने क्या कहा?"

"हम क्या कहेंगे? हमसे पूछकर थोड़े ले जा रहे हैं!"

" उनसे पूछो कि यहाँ खाना, कपड़ा नहीं मिल रहा है?"

"वहाँ बेटे को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाएँगे।"

"उनसे पूछो कि अखंड रामायण के भोज में बनिये का तेल, घी, मसाले, चीनी का जो उधार कर गए थे, उसे कौन देगा? वह दो बार तगादा कर चुका। साल-भर से तलब उठा रहे हैं तो मेहरी का गहना गढ़ाने में कितना खर्च कर देंगे?"

"तो मुझ पर क्यों गरज रहे हो?"

पाँड़े तनिक अप्रस्तुत हुए। फिर बोले-"तुम्हीं बताओ, कायदे से उन्हें पहले लोन अदा करने की चिन्ता करनी चाहिए थी कि नहीं? भगवान इन लोगों को कब सद्बुद्धि देंगे?"

जिसमें सद्बुद्धि लाने की गरज से पाँड़े गरज रहे थे, उस बहू ने पहले ही अपने कानों में उँगली डाल ली थी।

सबेरे-सबेरे दिवाकर बहू साथ ले जाने वाला सामान इकट्ठा करके बोरे में भर रही हैं। मालती उनकी मदद कर रही है। उसे उम्मीद है कि चाची कभी उसे भी साथ ले गईं तो शहर देखने को मिलेगा।

जो वस्तुएँ दिवाकर बहू को विवाह के समय मायके से मिली हैं उन पर वे अपना निर्विवाद हक मानती हैं। ऐसी वस्तुओं में एक परात भी है जिसे उपयोग में नहीं लाया जा रहा था। सोचा गया कि मालती के विवाह में पाँव पूजने के काम आएगी। पर अब वे उसे साथ ले जाना चाहती हैं तो खोजने पर मिल ही नहीं रही है। अम्मा या जेठानी को पता होगा लेकिन वे इन लोगों से पूछना नहीं चाहतीं।

चकला-बेलन दो जोड़ी हैं। इसलिए उन्होंने बेझिझक एक जोड़ी बोरे में डाल लिया। दाल परोसने की कलछुल और चिमटा एक-एक ही है। यह सोचकर कि कलछुल के बिना यहाँ का काम नहीं चलेगा और चिमटे की कीमत कलछुल से कम है, उन्होंने चिमटा अपने बोरे में डाल लिया।

मालती ने इसे देखा और माँ को बताया। प्रभाकर बहू ने बाहर जाकर इसकी जानकारी नीम के पेड़ पर जल चढ़ा रही सास को दी।

सास को यह बात खल रही थी कि उनसे बिना पूछे बहू अपने मन का करती जा रही है। चिमटा ले जाने की बात सुनकर भड़क गईं। लौटकर बोलीं-" अठारह-बीस साल तक पाल-पोसकर जवान किया बेटा तुम्हें सौंप दिया। मूसल जैसा मनसेधू पाकर तसल्ली नहीं हुई? तुम्हारे भतार को तो हर महीने अँजुरी-भर रुपया मिल रहा है। इससे चिमटा नहीं खरीद पाओगी? हम बुढ़ापे में तवे पर अपनी उँगली जलावें? होना तो यह चाहिए था कि दिवाकर वहाँ अकेले रहकर ड्यूटी करते और दो पैसा

बचाकर घर की मदद करते, लेकिन अकल मारी गई है। बनरी नचाने ले जा रहे हैं तो जाओ। लेकिन मुँह फुलाकर मत जाओ, जहर बोकर मत जाओ। हँसी-खुशी जाओ। फिर लौटकर इस घर में नहीं आना है क्या?"

दिवाकर बहू का चेहरा तन गया। दिवाकर के कान तक यह कौवारोर पहुँच गई तो डाँट पड़ेगी कि छोटजतिया औरतों की तरह किचाहिन मचाए बिना तुम लोगों का पेट नहीं भरता?

दिवाकर बहू ने चुपचाप बोरे से चिमटा निकालकर चूल्हे के पास रख दिया, लेकिन इसके साथ ही उनकी परात की तलब और तेज हो गई।

थोड़ी देर बाद वे दालान में दिवाकर के पास पहुँच गईं। प्रभाकर और पाँड़े नहीं थे। शायद दिवाकर को जाते नहीं देखना चाहते थे। इसलिए कहीं डोल गए थे। एकान्त पाकर उन्होंने दिवाकर को बताया कि मेरी माँ द्वारा दी गई परात मिल नहीं रही है। वहाँ आटा गूंधने के काम आती। दिवाकर किसी बात से गुस्से में थे। दाँत पीसकर बोले-"टंटा मत खड़ा कर। मैं तुझे एक के बदले दो परात खरीद दूँगा।"

दिवाकर बहू झट वापस मुड़ गईं।

दिवाकर बहू के जवाब न देने से थोड़ी देर में सास का मन उनके प्रति स्नेहिल हो गया। उन्होंने खुद आगे बढ़कर मालती से एक बोरी में चावल, एक में आटा और दो डिब्बों में खटाई और अचार रखवाया। फिर अपने हाथ से एक मेटी* में अपका ** लगाकर देसी घी भर दिया।

जाते-जाते माहौल तरल हो गया। पुलिस की वर्दी में माँ को बेटा पहले से ज्यादा मोहक लगा।

दिवाकर बहू ने पहले सास के, फिर जेठानी के पैर छुए। आज बहुत दिनों बाद दिवाकर ने माँ के पैर छुए। भाभी के पैर छूने के लिए बढ़े तो वे हँसकर पीछे हट गईं और आशीर्वाद की झड़ी लगा दी। औरतें देर तक आपस में भेंटती और आँसू बहाती रहीं। पोते को चूमते-चूमते प्रभाकर की माँ बिलखने लगीं।

रिक्शा सड़क पर पहुँचने वाला था कि एक मोटरसाइकिल आकर बगल में रुकी। आने वाले ने दिवाकर को एक कागज पकड़ाया। दिवाकर ने रिक्शे पर बैठे-बैठे ही पढ़ा। बैंक द्वारा भेजी गई नोटिस थी। उसे वापस करते हुए पुलिसिया रौब से कहा- "भगवत पाँड़े के नाम से है तो भगवत पाँड़े को खोजकर दो।

... चलो जी रिक्शा।"

* कलसी

** रस्सी का टँगना

आज फिर बुल्लू मर्डर केस की तारीख है।

पहलवान की अपनी गवाही पिछली तारीख पर हो गई है। कत्ल वाले दिन बुल्लू के सहपाठी मोतीलाल ने उन्हें जो बताया था, वही उन्होंने दोहरा दिया। कायदे से तो चश्मदीद गवाह मोतीलाल ही था। वह आकर गवाही दे देता तो केस में दम आ सकता था, लेकिन उसे नौकरी मिल गई। वह गाँव से बाहर चला गया। उसे बुलाने के लिए पहलवान ने उसके बाप से दो चिट्ठियाँ लिखवाईं, लेकिन उसने साफ लिख दिया कि गवाही देकर मुझे किसी से दुश्मनी नहीं लेनी।

दोनों चरवाहे जो घटना के दिन नाले के पास जानवर चरा रहे थे और फौजी द्वारा बुल्लू को दौड़ाकर पकड़ने और मारते-पीटते हुए घसीटकर लाने के चश्मदीद गवाह थे, वे होस्टाइल हो गए। दोनों ने बयान दे दिया कि हमने कुछ नहीं देखा। पुलिस ने हमारा नाम अपने मन से लिख लिया।

ऐसे में पहलवान के अन्दर तारीख पर जाने का कोई उत्साह नहीं है, लेकिन पहलवानिन ने सबेरे उठकर नेनुआ की सब्जी और रोटी बनाकर खिला दिया तो साइकिल लेकर चल पड़े।

घर के बगल में जो बबूल का पेड़ है, उस पर नेनुआ की लता ऊपर तक चढ़ गई है। इतना फल रही है कि चाहे रोज नेनुआ की सब्जी खाओ। नेनुआ की जड़ तो हर साल बरसात होते ही खुद-ब-खुद पनप जाती है, लेकिन सेम को बोना पड़ता है। पहलवानिन पहला पानी बरसते ही छप्पर के बगल में सेम के बीज गाड़ देती हैं और जाड़ा शुरू होते-होते पूरे छप्पर पर इसकी लता छा जाती है। फिर जो इसके फूलने-फलने का सिलसिला शुरू होता है तो फागुन-चैत तक रोज डेढ़-दो किलो सेम तोड़िए। अड़ोसी-पड़ोसी तक खाकर अघा जाते हैं। घर के पिछवाड़े एक कुनरू की लता है। आठ-दस साल पुरानी होगी। गर्मी में सूख जाती है। केवल पेड़ी जिन्दा रहती है जो बरसात होते ही फिर पनप जाती है। वह भी फागुन-चैत तक खूब फलती है।

घर के तीनों तरफ पहलवानिन सूरन का कंद बो देती हैं। हर दूसरे साल खोदती हैं। यहाँ की मिट्टी में सूरन का कंद दो साल में डेढ़-दो किलो का हो जाता है। सूरन तो चाहे साल-भर खाओ। सड़ने-गलने वाला नहीं। इन छोटी-छोटी व्यवस्थाओं में

अगम बहै दरियाव

पहलवानिन बड़ी गुणागर हैं। किसान के घर में इतनी नगदी कहाँ रहती है कि वह खरीदकर सब्जी खाए! अड़ोस-पड़ोस में नेनुआ, कुनरू, सूरन बाँटकर पहलवानिन अच्छी आपसदारी निभा लेती हैं। उनके पेड़ के कटहल की सब्जी तो सब पड़ोसी और रिश्तेदार खाते ही हैं।

निराश दिखते पहलवान को पहलवानिन हौसला देती हैं- " आपका सगा भाई मारा गया है। ऐसे कैसे ढीले पड़ जाएँगे? जो भी नतीजा निकले, लेकिन लड़ना तो आखिरी दम तक पड़ेगा।"

पहलवान अदालत में घुसे तो उनका मुकदमा पेश था। बचाव पक्ष का वकील फौजी से कह रहा था- "हालाँकि अभियोजन ऐसा कोई चश्मदीद गवाह नहीं प्रस्तुत कर सका कि तुमने मृतक को सड़क पर या खेत में दौड़ाकर पकड़ा और घर लाकर मार दिया। मृतक के भाई का इस आशय का बयान भी सुनी-सुनाई बातों पर आधारित है। लेकिन यह भी सच है कि मृतक तुम्हारे घर में मरा पाया गया। तो तुम बताओ कि वह कैसे मरा?"

"हुजूर, मृतक के भाई, पहलवान का बयान तो पूरी तरह मनगढ़ंत और झूठ है। न तो पहलवान मौके पर मौजूद थे और न कोई ऐसा गवाह पेश कर पाए जिसने उनको बताया हो कि मैंने मृतक को सड़क पर या खेत में दौड़ाकर पकड़ा था। असलियत यह है कि बुल्लू मेरी पत्नी की इज्जत लूटने के इरादे से मेरे घर में घुस आया था। उस समय मेरी पत्नी आँगन में बैठकर सब्जी काट रही थी। बुल्लू मेरी पत्नी की बाँह पकड़कर कोठरी की ओर घसीटने लगा तो वह चिल्लाई। उसकी चीख सुनकर मैं बाहर से दौड़कर अन्दर आया और उसकी पकड़ से पत्नी को छुड़ाने लगा। उसने

लपककर थाली में पड़ा चाकू उठाया और जान से मारने के इरादे से मुझ पर हमलावर हो गया। मैं खुद को बचाने की गरज से उससे भिड़ गया। उठा-पटक होने लगी। उसी छीनाझपटी में उसके हाथ का चाकू उसके पेट में धँस गया।

बचाव पक्ष का वकील-" इसका मतलब तुमने बुल्लू को नहीं मारा?"

"कत्तई नहीं मारा।"

"हुजूर, नोट किया जाय।"

जज साहब अभियोजन पक्ष के वकील की ओर देखकर कहते हैं- "नाउ योर विटनेस..."

सरकारी वकील क्षण-भर फौजी को घूरता है। फिर कहता है- "विवेचना-अधिकारी के सामने तो तुमने खुद स्वीकार किया है कि अपनी पत्नी के साथ बुल्लू की हरकत देखकर तुमने उत्तेजना में आकर उसे चाकू मारा !"

"मैंने ऐसा बयान कभी नहीं दिया। पुलिस ने अपने मन से चाहे जो लिख दिया हो।"

"अच्छा यह बताओ, उस समय तुम्हारी पत्नी, बुल्लू और तुम्हारे अलावा मौके पर कोई और भी था?"

"नहीं।"

"विवेचना-अधिकारी ने तो मौके पर तुम्हारे साथी बहादुर का मौजूद होना भी लिखा है।"

"नहीं। यह झूठ है।"

"तो बहादुर फरार क्यों है?"

"इसे बहादुर से पूछिए। मुझसे क्यों पूछते हैं?"

"पोस्टमार्टम रिपोर्ट में बुल्लू के पेट में दो घाव पाया जाना लिखा है। दूसरा घाव कैसे हुआ?"

चुप!

सरकारी वकील की आवाज ऊँची होती है-"तुम फौज के सिपाही हो। देश के रखवाले हो। तुमने सच बोलने की कसम खाई है। सच-सच बताओ कि जब चाकू एक ही बार चला तो घाव दो कैसे हो गए?"

फौजी अपने वकील की तरफ देखता है। वकील अपनी तर्जनी अपने होंठों पर रखता है, जैसे मुँह पोंछ रहा हो।

"इसके अलावा मुझे कुछ नहीं कहना।"

"डाक्टर ने दो घाव कैसे लिखा?"

"इसको डाक्टर से पूछिए, " बचाव पक्ष का वकील मुँह बनाकर कहता है-" मेरे मुवक्किल की जानकारी में तो एक ही घाव हुआ था।"

"तो क्या तुम्हारी पत्नी भी बुल्लू को मारने में शामिल थी?"

"नहीं।"

"बहादुर वहाँ मौजूद नहीं था। तुम्हारी पत्नी मारने में शामिल नहीं थी। तुमने एक ही वार किया तो दूसरा घाव कैसे हुआ?"

फौजी अपने वकील की ओर देखता है।

"इस बिन्दु पर तुम्हारी पत्नी ने पुलिस को दिए बयान में क्या कहा है?"

"उसका बयान नहीं हुआ?"

"क्यों?"

"उसकी आवाज चली गई है।"

"मी लार्ड, यह बहुत आपत्तिजनक है कि मुलजिम की पत्नी, जो कत्ल के

बक्त मौके पर मौजूद थी, उसका बयान दर्ज नहीं किया गया। अभियुक्त की पत्नी इस हत्याकांड की धुरी है। उसी की वजह से यह अपराध कारित हुआ। उसका पक्ष सामने आना तो बहुत जरूरी है। मैं अभियुक्त की पत्नी को गवाही के लिए बुलाने की दरखास्त करता हूँ।"

बचाव पक्ष का वकील - "जब सारी गवाही गुजर चुकी तो आपको नई बात सूझ रही है! यह दरखास्त आपने पहले क्यों नहीं की?"

"मी लार्ड, जरूरत अब महसूस हो रही है। क्या पता उसकी गवाही से सत्य का कोई और चेहरा सामने आए! "

"कोई फायदा नहीं होगा, हुजूर। इस हादसे का उस पर इतना बुरा असर पड़ा है कि उसी वक्त से वह गूँगी हो गई है।"

"मी लार्ड, बचाव पक्ष के विद्वान अधिवक्ता को शायद मालूम नहीं है कि साक्ष्य अधिनियम की दफा 119 में डम्ब विटनेस का भी प्राविधान है। जरूरत पड़ने पर इंटरप्रेटर बुलाया जा सकता है जो उसके इशारों को शब्दों में बदल देगा। कोर्ट से मेरी पुरजोर गुजारिश है कि अभियुक्त की पत्नी को दफा 311 सीआरपीसी के तहत न्यायालय साक्षी के रूप में हाजिर होने का सम्मन भेजा जाय।"

और सोना को साक्ष्य के लिए बुलाने के आदेश के साथ दो महीना आगे की तारीख पड़ गई।

पहलवान उदास मन लौट रहे हैं। पैडिल पर पाँव रखने भर से साइकिल

जितना चल रही है, चल रही है। वे भी सोच रहे हैं कि गूँगी को बुलाने से क्या फायदा? और अगर वह बोल भी सकती तो क्या अपने पति द्वारा गढ़ी गई कहानी के खिलाफ बोलती? मनचाहा बयान तोते की तरह रटा दिया जाएगा। जब चश्मदीद गवाह ही मुकर गए तो बचा क्या!

सूरज डूबने के साथ दो मोटरसाइकिलें धड़धड़ाती हुईं पहलवान के दुआर पर आकर रुकीं। पप्पू की अम्मा सूखने के लिए धूप में डाला गया सुखवन उठा रही थीं। एक तरह से उनके बगल में ही रुकीं। पेट्रोल की गन्ध उनके नथुनों में भर गई। पहलवान बैलों को सानी-पानी दे रहे थे। चार लोगों को मोटरसाइकिल से उतरते देखकर थोड़ा चौंके।

एक ने लपककर पप्पू की अम्मा के पैर छुए। फिर दूसरे, फिर तीसरे ने। चौथे जो बुजुर्ग थे, अपनी जगह पर खड़े-खड़े हाथ जोड़ रहे थे।

पप्पू की अम्मा अपने भाई को पहचान गईं। तीनों पैर छूने वालों ने पहलवान के पास जाकर उनके पैर छुए। अब पहलवान ने पहचाना। एक तो पप्पू के मामा थे। दूसरे झुन्नू बाबू के साले थे जो उस दिन झुन्नू बाबू के घर पर मिले थे। हाथ में लगा भूसा-खली रगड़ते-झाड़ते हुए पास आकर पहलवान ने चौथे बुजुर्ग सज्जन को नमस्कार किया। पप्पू के मामा और तीसरे पैर छूने वाले ने लपककर मड़हे से दो चारपाई निकालीं और दुआर पर बिछा दीं। पहलवान ने बुजुर्ग सज्जन से अनुरोध किया-"पधारिए।"

पप्पू के मामा ने परिचय कराया- "ये लाल बाबू हैं। रेलवे में माल बाबू हैं। हावड़ा में नौकरी करते हैं। झुन्नू बाबू के साले साहब के रिश्ते में आते हैं। और इन्हें तो पहचानते ही हैं, झुन्नू बाबू के साले साहब। उस दिन झुन्नू बाबू के घर पर आप लोगों की मुलाकात हुई थी। हम लोग हाईस्कूल में क्लास फेलो थे।"

इस बीच चौथा आदमी माल बाबू के पैरों से जूते निकाल पास पड़े चिथड़े से उन्हें झाड़ने लगा।

पप्पू की अम्मा कुछ देर तक इन्तजार करती रहीं कि उनके भाई पास आवें तो अपने मायके का हाल-चाल पूछें। जब भाई का ध्यान उनकी तरफ नहीं गया तो वे अन्दर आ गईं। पप्पू को गऊदीन की दुकान से दौड़कर मिठाई और नमकीन लाने के लिए और बेटी को लोटा माँजने के लिए कहा।

पहलवान समझ गए कि उनके दरवाजे पर आने वाले माल बाबू रईस आदमी हैं। पर आए क्यों हैं? साथ में झुन्नू बाबू के साले और खुद उनके साले! क्या झुन्नू बाबू ने रिश्ता स्वीकार करने का सन्देश भेजा है? हो सकता है, उनकी बेटी के रूप-गुण की चर्चा सुनी हो। खुद उनकी शोहरत भी इलाके में सिर्फ पहलवान होने के नाते ही नहीं, मानिन्द आदमी के रूप में भी है। लड़की के बाबा गाँव के परधान रहे हैं। नेता हैं।

लेकिन लड़के का बाप खुद सन्देश भेजकर रिश्ता स्वीकार करे, ऐसा क्या इस दुनिया में सम्भव है? खासकर जैसी तीखी बातें बोलकर वे आए हैं, यह तो सूरज के पश्चिम से निकलने जैसा हो जाएगा।

पप्पू प्लेट में मिठाई और नमकीन रख गए। एक बाल्टी पानी और लोटा लेकर आए। आगन्तुकों के पाँव छूकर चले गए। फिर एक मौनी में चबेना और गुड़ रख गए। पानी पीने का आग्रह करने के साथ-साथ पहलवान कुशल-क्षेम पूछने लगे।

आगन्तुकों में इतना इत्मीनान दिख रहा था कि लगा ये लोग चाय-पानी करके विदा होने वाले नहीं हैं।

तब सोने के लिए चार अतिरिक्त चारपाइयों की जरूरत पड़ेगी। दो ही अतिरिक्त हैं। पड़ोस से माँगनी पड़ेंगी। फिर याद पड़ा कि रजाइयाँ भी माँगनी पड़ेंगी। दो रजाइयाँ उनके घर में ज्यादा थीं मेहमानों के लिए। लेकिन इस साल एक रजाई बड़ा बेटा लेकर चला गया। छोटा बेटा पिछले साल तक जाड़े में उनके साथ ही सोता था। एक ही रजाई में काम चल जाता था। इस साल दूसरी रजाई लेकर वह अलग सोने लगा है। वे कंबल ओढ़ लेंगे। इस तरह एक रजाई खाली हो जाएगी। पप्पू की अम्मा सास के साथ सो जाएँगी तो उनकी रजाई खाली हो जाएगी। फिर भी दो रजाइयों की जरूरत पड़ेगी।

पहले वे खुद अन्दर गए। फिर आवाज देकर बेटे को भी बुला लिया। बोले-"वैसे तो मोटरसाइकिल से हैं। चाय-पानी करके आराम से आधे घंटे में अपने-अपने घर पहुँच सकते हैं... अरे हाँ, चाय! चाय तो पिलानी होगी। आजकल दरवाजे पर आए मेहमान को अगर चाय नहीं पिलाई तो समझो कोई सत्कार ही नहीं किया। चीनी की चाय। तीन कप तो अभी टूटने से बच गए हैं न! मेरी चाय गिलास में दे सकते हो। जो-जो सामान न हो, दौड़कर दुकान से ले आओ। और हाँ, जो कहने के लिए आया था वह तो कहा ही नहीं। चाय पीने के बाद अगर वे लोग जाने का नाम नहीं लेते तो जिस समय मैं इन्हें दिशा-मैदान के लिए लेकर बाहर जाऊँ, तुम जाकर किसी के घर से दो चारपाई और दो रजाई माँग लाना और दालान में पाँच बिस्तर लगा देना।"

पप्पू की अम्मा ने मेहमानों के रंग-ढंग से पहले ही अन्दाजा लगा लिया था कि ये टलने वाले मेहमान नहीं हैं। लेकिन वे यह अन्दाजा नहीं लगा पा रही थीं कि ये सब आए क्यों हैं? उनके भाई अभी तक अन्दर नहीं आए। आते तो सबसे पहले यही पूछतीं। उन्होंने बेटी को गगरी का आटा अन्दाजने के लिए कहा और बेटे को पैसा देते हुए बोलीं- "चीनी, चायपत्ती के साथ एक किलो नई आलू भी ले आना। पुरानी बहुत देर में पकती है और हाँ, जाने

के पहले खेत से दो गोभी के. फूल काटकर दे देना।"

जाएगा। वे जानती हैं कि बेटा रजाई और चारपाई माँगने सिकेटरी के घर ही सिकेटरी तो बात-व्यवहार में ठीक हैं। पप्पू के बाबू से पटती है, लेकिन उनकी घरवाली से पप्पू की माँ की नहीं पटती। इधर काफी गुमान में रहती है। फोन लग गया है। रोज अखबार आता है। बेटे को दहेज में मोटरसाइकिल मिल गई है। घूस देकर बेटे को सिपाही में भर्ती करा दिया है और शादी करके घूस का दुगना वसूल लिया है तो गुमान में नहीं रहेंगी! ब्याहने के लिए कोई बेटी है नहीं तो पैर जमीन पर कैसे पड़ेंगे!

एक दिन-भरसार में बैठे-बैठे उन्हीं को सुनाकर हवा-बतास से कह रही थी कि इंजीनियर बन जाने में ही बड़ाई नहीं है। नौकरी भी मिलनी चाहिए। अखबार में छपा था कि दिल्ली-बम्बई में हजारों बेरोजगार इंजीनियर पेट्रोल पम्पों पर हजार-डेढ़ हजार की नौकरी करके पेट पाल रहे हैं। उन्हें पता है, अभी बेटा खटिया-रजाई माँगने जाएगा तो बिना बोली बोले नहीं रहेंगी- अरे, अब इंजीनियर का घर हो गया, पप्पू। अपनी अम्मा से कहो, हजार-दो हजार गद्दा-रजाई में भी खर्च कर दें।

उनका वश चले तो उस घर से कभी कोई चीज माँगने न भेजें। लेकिन पड़ोस में कोई दूसरा ऐसा घर है नहीं जहाँ जरूरत पड़ने पर यह चीजें माँगी जा सकें। और अब तो जोगी भी कभी-कभार उन्हीं के घर फोन करके कहते हैं- जरा मेरी अम्मा को बुलवा दीजिए, चाची। बात करनी है। झख मारकर जाना पड़ता है। और गईं तो बिना उनका भाखन सुने लौटना मुश्किल। खैर, किसी का गरब-गुमान ज्यादा दिन नहीं चलता। गरब-गुमान ही तो भगवान का आहार है। सोचते-सोचते पप्पू की अम्मा उदास हो गईं।

बेटा, चीनी-चायपत्ती ले आया तो उन्होंने बेटी को चाय जल्दी तैयार करने के लिए कहा। फिर रींधने के लिए भंडारे से चावल-दाल निकाल लाईं। बेटा चाय लेकर गया तो बेटी को अदहन चढ़ाने के लिए बोलकर खुद भी धुएँ से लाल होती आँखों को मींजती बाहर निकल आईं। आजकल उनकी

आँखों में धुआँ लगने पर बहुत जल्दी पानी आने लगता है। बेटी की विदाई के बाद रसोई कैसे कर पाएँगी? कई बार मन में आया कि पप्पू के बाबू से कहें कि कहीं ले चलकर किसी डॉक्टर को दिखाएँ, लेकिन इस डर से कि कहीं डॉक्टर भारी खर्च वाला कोई इलाज न बता दे, वे चुप रह जाती हैं।

माल बाबू का सिर चौथा आदमी दबा रहा था। जेब से छोटी-सी शीशी निकालकर हथेली पर तेल उड़ेलता था, फिर सिर और मूँछों में लगाता था।

इसके पहले कि राशन रींधा जाए, पप्पू की अम्मा खुद अपने कान से सुनकर आश्वस्त हो जाना चाहती थीं कि मेहमानों ने रात उन्हीं के घर बिताने का निर्णय लिया है।

जब सिर दबाने वाले आदमी ने खैनी ठोंककर माल बाबू के आगे हथेली फैलाई और उन्होंने एक चुटकी खैनी उठाकर गाल में दबा ली तो दिशा-मैदान जाना तय हो गया। पप्पू के बाबू ने बताया कि पास में ही बहुत बड़ा तालाब है, उसके भीटे की झाड़ियाँ निपटान के लिए बेहतर हैं, इसलिए लोटे में पानी लेकर चलने की जरूरत नहीं है। उन्होंने यह प्रस्ताव इसलिए भी रखा, क्योंकि घर में कुल तीन लोटे थे। पाँचों लोगों के एक साथ जाने पर लोटे कम पड़ रहे थे।

अगम बहै दरियाव

माल बाबू को छोड़कर बाकी लोग बिना लोटे के चलने पर सहमत हुए। हाथ-पैर दबाने वाले ने माल बाबू के लिए लोटा उठा लिया और उनके पीछे-पीछे चला।

पप्पू की अम्मा के सामने स्पष्ट हो गया कि मेहमानों का ठहरना तय है। मेहमानों के लौटने से पहले पप्पू चारपाइयाँ और रजाइयाँ माँग लाया। दालान को बुहारकर बिस्तर लगा दिया। फिर दालान के कोने में अलाव जलाने लगा। पप्पू की अम्मा ने बाहर निकलकर अलाव के चारों तरफ बैठने के लिए पुआल का बीड़ा रखने के लिए कहा और यह भी कि लौटते ही अपने मामा को अन्दर भेज देना।

दिशा-मैदान से लौटकर सब अलाव के गोले में बैठे तो पप्पू के मामा अन्दर आए। माँ-बाप का हाल-चाल पूछने के तुरन्त बाद भाई से पप्पू की अम्मा ने मेहमानों के बारे में पूछा- "कहाँ से आ रहे हैं इतने सारे लोग? कहाँ जाना है? किस काम से निकले हो? तुम्हें तो बिना बुलाए मेरे पास तक आने की फुरसत ही नहीं मिलती! "

पप्पू के मामा बताने लगे-"वे जो साँवले रंग के मूँछ वाले अधेड़ सज्जन हैं, झुन्नू बाबू के साले साहब के दूर के रिश्ते में आते हैं। रेलवे में माल बाबू हैं। पैसे और रसूख वाले आदमी हैं। गाँव और शहर दोनों जगह कोठियाँ हैं। लम्बे कद के चेचक के दाग वाले जो मेरी उम्र के हैं, वे झुन्नू बाबू के साले हैं। वही झुन्नू बाबू जिनके घर जीजाजी पिछले दिनों लड़का देखने गए थे। तीसरा आदमी माल बाबू का घरेलू नौकर है। साथ लेकर चलते हैं। सोते समय हाथ-पैर दबाता है। उँगलियाँ चटकाता है। नहाने के पहले देह में तेल मालिश करता है। नहाने के बाद गीली धोती पखारता है। पानी भी पीना होता है माल बाबू को तो वही उड़ेलकर देता है। काफी ठाट-बाट से रहते हैं माल बाबू। पैसे वाली पार्टी है।"

फिर आगे बताया- "गए थे अपनी इकलौती बेटी के लिए लड़का देखने। हमेशा बाहर ही बाहर रहे, इसलिए जवार में ज्यादा लोगों को जानते नहीं। जान-पहचान के लिए झुन्नू बाबू के साले को बुलाया था। झुन्नू बाबू का साला मेरे साथ पढ़ा है। मेरे पास मोटरसाइकिल थी तो सुविधा के लिए मुझे भी साथ ले लिया। गए तो हम लोग दो-तीन जगह, लेकिन कोई रिश्ता माल बाबू को अपनी हैसियत के अनुसार नहीं लगा। वापसी में मैंने कहा कि मेरे जीजाजी का घर रास्ते में पड़ता है। जरा हाल-चाल लेते चलें। जीजाजी के बारे में बताया तो बोले- 'हाँ-हाँ, पहलवान का नाम तो सुना हुआ है। पहलवानी में दूर-दूर तक नाम किये हैं।' मैंने बताया कि बेटा भी काबिल निकला है। इंजीनियरी की पढ़ाई पढ़ रहा है, तो और खुश हुए। बोले- 'चलिए, मैं भी दर्शन करता चलूँ।'"

सुनकर खुश हुईं पप्पू की अम्मा। लेकिन झुन्नू बाबू के साले के बारे में जानकर थोड़ा रंज भी हुआ।

पूछा- "यह जो झुन्नू बाबू के साले हैं, तुम्हारे साथ पढ़े हैं? इन्हीं के चलते तो उस दिन झुन्नू बाबू के घर बात नहीं बन पाई। इन्होंने ही तो लम्बी-चौड़ी हाँक कर मामले को उलझा दिया था।"

"अच्छा? मुझे तो जीजाजी ने बताया नहीं। न जाने के पहले, न आने के बाद।" तभी माल बाबू का नौकर अन्दर आया और एक बार फिर पप्पू की अम्मा का पैर छूकर हाथ जोड़कर बोला- "मेरे लिए भी कोई काम बताइए, मालकिन।" बेटी को लहसुन छीलता देखकर, लहसुन की टोकरी अपनी तरफ खींचकर बैठ गया-"लाइए, यह काम तो मैं ही कर दूँगा।"

"अरे, तुम रहने दो भइया। हम सब कर लेंगे।" पप्पू की अम्मा खुश होकर बोलीं। पप्पू के मामा बाहर निकल गए। बेटी चूल्हे की मन्द पड़ रही आग तेज करने चली गई। लौटी तो उसकी ओर प्रशंसा-भरी नजरों से देखते हुए नौकर बोला-" रसोई का सारा काम अकेले निपटा रही हैं बिट्टी। वाह-वाह ! जैसा रूप है, वैसी ही सुघड़ाई। सोचती होगी, जितने दिन रहें माँ को तिनका भी न छूना पड़े। वाह ! ऐसी कुलवन्ती बेटियाँ ज्यादा दिन थोड़े रहने पाती हैं मायके में। किसी पारखी की नजर में पड़ने की देर है, ले जाएगा कोई रतन का पारखी ब्याह कर।"

माँ-बेटी दोनों प्रसन्न हुईं। माँ सोचने लगीं कि कहीं झुन्नू बाबू ने ही तो नहीं भेजा है इन लोगों को कि जाकर चुपचाप लड़की का रूप-रंग, गुण-सहूर देख आओ। हो सकता है उस दिन बेमुरौवती से बोलकर बाद में पछताए हों।

"लहसुन चटनी में डालेंगी क्या बिटिया? अभी और छीलना होगा? किस चीज की चटनी बना रही हैं? हमारे मालिक की बेटी भी इतनी स्वादिष्ट चटनी बनाती है कि हाथ चाटते रह जाओ। बाप को ऐसा चटनीखोर बना दिया है कि खाने में मालिक को चटनी न मिले तो समझो कुछ मिला ही नहीं। जितना रूप, उतना ही गुण। चाहे रोटी-पानी करा लीजिए, चाहे सिलाई-कढ़ाई। अपनी माँ की तो ऐसी आदत खराब कर दी है कि बिना

सिर में चम्पी कराए उन्हें नींद ही नहीं आती।"

"इन्हीं की बेटी हैं?" पप्पू की माँ ने उसका बोलना रोकने के लिए पूछा।

"हाँ, मालकिन। देखिए तो देखती रह जाइए। हँसती है तो लगता है, फूल झड़ते हैं। सफेद बत्तीसी खिल जाती है। जिस घर जाएगी, उजाला कर देगी। इसके बावजूद घमंड तो छू तक नहीं गया है। जैसे अपनी ये बिट्टी हैं। देखकर आँख जुड़ाती है।"

इतनी बड़ाई! अपने मालिक की बेटी के साथ-साथ उनकी बेटी की भी। उनके बोलने के लिए कुछ छोड़ ही नहीं रहा है।

सब्जी के लिए मसाला सिल पर रखा बेटी ने तो वह उठकर सिल के सामने बैठ गया-"लाइए, मैं पीस देता हूँ।"

"अरे नहीं भइया, तुम चलो बाहर। मर्दों में बैठो। यहाँ हम माँ-बेटी आराम से सब निपटा लेंगी।"

"बैठकर खाने के लिए थोड़े आया हूँ, मालकिन!" सिल पर लोढ़ा रगड़ते हुए वह हँसने लगा-" बड़े वाले भइया कहाँ हैं? दिखाई नहीं दिए।"

"स्कूल में हैं, बाहर। छुट्टी में आते हैं।"

"मास्टर साहेब बहुत तारीफ कर रहे थे हमारे मालिक से। रास्ते भर भइया की बात ही हो रही थी। जितने शरीर से लम्बे-चौड़े, उतने ही बुद्धि के भी तेज। इंजीनियरी वाली पढ़ाई पढ़ रहे हैं न?"

"हाँ।" माँ ने गर्व से स्वीकारा और पीढ़ा आगे खिसकाकर कलछुल से दाल का हाल लेने लगीं।

"बहुत काम की पढ़ाई है यह तो ! एकदम नगद-नारायण वाली नौकरी

मिलेगी। भाग्य के बहुत तेज हैं भइया, समझ लीजिए। हमारे गाँव में एक इंजीनियर हुए हैं। एक बीघे में तो पक्का मकान ही बना है। गाँव में ट्यूबवेल, ट्रैक्टर। सैकड़ों बीघे तो खेत ही खरीद डाले। शहर में भी बहुत बड़ी कोठी, मोटर गाड़ी; कितना पैसा कमाते हैं, कोई थाह ही नहीं!"

"वह तो जब होगा तब होगा भइया, लेकिन अभी जितनी नगद-नारायण फीस देनी पड़ रही है उसी से तिल्ला-तौबा मचा हुआ है।"

कहने को तो एक झटके में कह गईं, लेकिन तुरन्त ही उन्हें लगा कि बाहरी आदमी के सामने यह बात मुँह से नहीं निकालनी चाहिए थी। उन्होंने तुरन्त बात बदलने के लिए पूछ लिया - "किस चीज की चटनी पसन्द है तुम्हारे मालिक को?"

"किसी भी चीज की। टमाटर, आँवला, करौंदा; सब तो रखा है आपके भंडारे में।"

दरअसल चटनी के बारे में उन्होंने सोचा ही नहीं था। अच्छा हुआ, इसने बता दिया। उनका मन हुआ पूछें, खाने में क्या-क्या पसन्द है तुम्हारे मालिक को। लेकिन यह सोचकर पीछे हट गईं कि क्या पता, किसी ऐसी चीज का नाम बता दें जिसका इन्तजाम ही न हो पाए।

पकते चावल के साथ फैलती महक को लम्बी साँस लेकर भीतर खींचा नौकर ने, फिर बोला - "बहुत महकौवा चावल रींधा है। क्या नाम है इस चावल का? अपने खेत का पैदा है? गजब! मोहनभोग? सचमुच मोहनभोग ही है। अरहर की तड़का लगी दाल के साथ इसका स्वाद ! हुकुम हो तो कुछ कहूँ, मालकिन? इसके साथ अगर आलू-बैंगन का चोखा भी बन जाय। आलू है ही। बैंगन खेत में देख आया हूँ। आलू-गोभी की सब्जी तो है ही, लेकिन इतना अच्छा चोखा बनाऊँगा

अदरक, लहसुन, प्याज, खटाई का मसाला और कडुआ तेल डालकर कि

हमें उम्र-भर याद करिएगा।"

हँसने लगी मालकिन "बनाओ भइया, हम क्यों मना करेंगे! सब कुछ तो है घर में।"

"हम बैंगन लेकर आते हैं।" कहकर वह बाहर निकल गया।

उसके जाने के बाद बड़ी देर तक माँ-बेटी चूल्हे के पास बैठकर हँसती रहीं। अचानक पप्पू की अम्मा चुप हो गईं। दो-तीन बार लम्बी-लम्बी साँस खींची। बेटी ने पूछा- "क्या हुआ, माँ?"

"गजब का तेज आदमी है मुआ। गजब की नाक है इसकी। खुफियागीरी करने घुसा है अन्दर ? ठीक से बैठो। तुम्हारे पैर टखने तक उघाड़ थे। दाँत चियारकर मत हँसना। किस तरह दाँत की तारीफ कर रहा था। दाँत की बात उसके दिमाग में आई कैसे? कीड़े से काले पड़े दाँत पर तो नजर नहीं पड़ गई?"

बेटी ने हाथ-पैर सिकोड़ लिये। मुँह बन्द कर लिया।

अँधेरे में टटोलकर खेत से बैंगन तोड़ने के बाद वापस आते हुए नौकर की भेंट लघुशंका के लिए निकले मालिक से रास्ते में हुई तो उसने कहा- "मतलब की एक ही बात निकल पाई, मालिक। बेटे की पढ़ाई की फीस भरना इन लोगों को भारी पड़ रहा है। बाकी तो सब चकाचक है।"

खाना खाने के बाद सब लोग रजाई में पैर डालकर हुक्का गुड़गुड़ाने लगे तो पप्पू के मामा ने बात छेड़ी- "जीजाजी ! मैं बता रहा था कि लाल बाबू अपनी बेटी का रिश्ता खोजने के लिए निकले हैं। दो-एक जगह बातचीत की शुरुआत भी हुई है, लेकिन जब से यहाँ आए हैं, सबसे मेल-मुलाकात हुई है, तब से आपका घर-परिवार इनकी नजरों में चढ़ गया है। ये जोगी के साथ अपनी बेटी के रिश्ते का प्रस्ताव रख रहे हैं।"

"जोगी के लिए?" पहलवान चौंके।

"हाँ। इनकी एक ही बेटी है। रूपवान, गुणवान। मैंने तो खुद अपनी आँखों से देखा है। जोगी भइया के साथ बहुत अच्छी जोड़ी रहेगी।"

"सो तो ठीक है मास्टर साहेब, लेकिन जोगी पहले चार साल पढ़ें, पास हों। फिर कहीं रोजी से लगें, तब न शादी की बात सोची जाएगी!"

"जीजाजी, जोगी कोई लाला-बनिया थोड़े हैं कि कमाएँगे नहीं तो खाने का ठिकाना नहीं रहेगा। भगवान का दिया इतना सीर-सायर है..."

"क्या बावलों जैसी बात करते हो, राजपत! इंजीनियरी की पढ़ाई को मामूली समझ रहे हो! बच्चे बारह-बारह घंटे आँख फोड़ते हैं, तब भी बैक आ जाती है।

माने किसी-न-किसी पर्चे में लटक जाते हैं। फिर से इम्तिहान देना पड़ता है। अपनी पढ़ाई सँभालेंगे कि जोरू की दिलजोई करने के लिए भाग-भागकर घर आएँगे। शादी की अभी कौन-सी जल्दी पड़ी है! जब समय आएगा तब शादी भी हो जाएगी।"

"शादी तो एक रस्म है।" लाल बाबू ने बात का सूत्र अपने हाथ में ले लिया-"पूरी हो जाती है तो लड़की के बाप को चैन आ जाता है, नहीं तो सोते-जागते, उठते-बैठते बेचैनी रहती है। बाकी, गौना तो तीन या पाँच साल बाद ही होता है, जैसी जरूरत हो। तब तक तो बबुआ पढ़ाई भी पूरी कर लेंगे और कहीं नौकरी-चाकरी से भी लग जाएँगे। हमारे यहाँ रेलवे में ही जगह निकलती रहती है। साहब-सूबा से इतनी जान-पहचान बना रखी है, किस दिन काम आएगी? कहीं न कहीं हिल्ले से लगाया जाएगा। नौकरी-चाकरी पाने के लिए भी आजकल सोर्स- सिफारिश, लेन-देन जरूरी हो गया है।"

पहलवान समझ गए कि ये लोग पहले ही तय करके इसी मतलब से आए हैं। पप्पू के मामा को दबाव बनाने के लिए लाए हैं। पप्पू के मामा को भी देखिए, रिश्तेदार हमारे हैं और वकील उनके बनकर आए हैं।

उन्होंने बात को टालने के लिए कहा- " सयानी बेटी के बाप की बेचैनी हम भी झेल रहे हैं, लेकिन हर चीज का एक समय होता है..." फिर साले से बोले- " मुझसे बात करने के पहले तुम्हें अपनी बहन से बात करनी चाहिए, राजपत।"

"आप अपनी रजामन्दी दे दें। दीदी को मैं मना लूँगा।"

"रजामन्दी कोई अलग-अलग थोड़े होगी। जो भी तय होगा उसमें दोनों की, बल्कि तीनों की रजामन्दी होगी। जिसकी शादी की बात चला रहे हो, उससे भी तो पूछोगे?"

हुक्के की तम्बाकू पूरी तरह राख हो गई थी। सब चुप हो गए।

सबेरे चायपानी से लेकर खाना तैयार होने तक पप्पू के मामा अपनी बहन को समझाते रहे- " तिलक में नगद पचास हजार और एक मोटरसाइकिल तो लाल बाबू खुद अपने मुँह से देने को तैयार हैं। जोर दिया जाएगा तो एक लाख तक दे सकते हैं। मेरे मन में एक बात आ रही है। इधर से नगदी और मोटरसाइकिल लीजिए और उधर झुन्नू बाबू को थमाकर बिटिया को निपटा दीजिए। गौना दो-चार साल बाद जब मर्जी तब लाइए। धन और पहुँच दोनों में हम लोगों से बहुत बढ़-चढ़कर हैं लाल बाबू। ऐसे समर्थ रिश्तेदार रहते हैं तो वक्त-जरूरत काम आते हैं। दुनिया के चलन में यह सब भी देखा जाता है। ऐसा चांस किस्मत से मिलता है। दामाद बना लिये तो नौकरी का जुगाड़ ये खुद लगा देंगे। आप अकेले में जीजाजी को समझाइएगा। झुन्नू बाबू के साले को बीच में डालकर मैं नौकरी दिलाने वाली शर्त भी अभी से तय कर लूँगा।"

ऐसा लासा फेंका उनके भाई ने कि पप्पू की अम्मा सोच में पड़ गईं। बिना खेती-बारी बेचे बेटी के हाथ पीले हो सकते हैं। इससे अच्छी बात क्या होगी?

उन्होंने अपने भाई से कहा- "तुम जाकर जोगी का मन-मुँह लेने की कोशिश करो। मुझे नहीं लगता कि वे तैयार हो जाएँगे। तुम उन्हें तैयार कर लो तो हम लोगों को क्या दिक्कत!"

मेहमानों के जाने के बाद पप्पू की अम्मा को पछतावा होने लगा कि जब लाल बाबू के टहलुए ने उनके पैर छुए तो उसके हाथ पर रुपये-दो रुपये रखने चाहिए थे। पद बनता था। पर भूल गईं। बेचारा क्या सोचते हुए जा रहा होगा!

एकान्त होने पर पप्पू की अम्मा और पहलवान ने एक-दूसरे को देखा। दोनों के ही पास दूसरे से कहने के लिए बहुत कुछ था, लेकिन शुरू कौन करे ! पप्पू स्कूल चले गए थे। बेटी खेलावन के घर रजाई वापस करने गई थी। पत्नी बिना कहे हुक्का भर लाईं। पहलवान हुक्का पुड़काते हुए नगरे पर बैठे तो वे भी एक मचिया खींचकर सामने बैठ गईं। जरूरी बातचीत करने के लिए जैसा इत्मीनान और एकान्त चाहिए वह हासिल हुआ तो उन्होंने ही शुरुआत की- "ये लोग और कहीं नहीं गए थे। सीधे अपने घर ही आए थे।"

"ये दोनों कहाँ से इकट्ठे हो गए, झुन्नू बाबू के साले और तुम्हारे भाई? ... अभी तो जोगी बीस के भी पूरे नहीं हुए हैं।"

"बीस कुछ कम थोड़े होता है, गौना आया तब तो आप भी बीस के नहीं थे।"

"तब की बात दूसरी थी भाई ! फिर भी देखो, तुम्हारे आते ही मेरी पढ़ाई छूटी थी कि नहीं?"

"तो मेरी वजह से छूटी?"

"अरे, इसमें नाराज होने की क्या बात है? सोचने की बात है। तुम्हीं तो रात में हाथ से किताब छीनकर ढिबरी बुझा देती थीं।"

"अच्छा! मेरा मुँह मत खुलवाओ। पढ़ाई में मन लगता था आपका?"

"तुम्हारी वजह से ही तो नहीं लगता था।"

"छोड़िए! कह रहे थे राजपत कि जोगी को वे तैयार कर लेंगे। जो पैसा और

मोटरसाइकिल लाल बाबू से मिलेगी, वही झुन्नू बाबू को देकर बेटी ब्याह सकते हैं। खेत बिकने से बच जाएगा।"

"पैसा तो जब भी बेटा ब्याहोगी, तभी मिलेगा; बल्कि ज्यादा ही मिलेगा।"

"लेकिन तब तक बेटी को तो घर में बैठाकर नहीं रखा जा सकता। और बैठाकर रखा भी जाए तो भी क्या पता, झुन्नू बाबू के लड़के जैसा कमासुत लड़का फिर मिले कि नहीं! अच्छा, एक बात बताओ। झुन्नू बाबू का बेटा दफ्तर का बाबू है तब तो वे एक लाख की माँग कर रहे हैं। अपने जोगी तो इंजीनियर हैं, तब लाल बाबू सिर्फ पचास हजार क्यों देंगे?"

"तुम्हारा बेटा इंजीनियर है नहीं, होगा। फिर नौकरी ढूँढ़ेगा। झुन्नू बाबू का बेटा तो हर महीने चार-पाँच हजार पगार उठा रहा है। इतनी ही ऊपरी कमाई कर रहा है।"

"ऊपरी कमाई कैसे?"

"अरे, कचेहरी में किसी मुवक्किल की नकल निकलवा दी, अर्जी लिख दी। फाइल इधर से उधर करा दी। हम क्या उतनी अन्दर की बात जान

सकते हैं! इतना जानते हैं कि सबके जीने-खाने का रास्ता बना रहता है सरकारी दफ्तरों में।"

"यह बात है कि लाल बाबू वाला रिश्ता मान लेने पर खेत भी बेचना नहीं पड़ता और बेटी भी खाते-पीते घर में पहुँच जाती। मेरा मन कहता है कि अगर पप्पू के मामा से कहा जाय तो वे लाल बाबू को जोगी को अच्छी तनखाह वाली नौकरी दिलाने के लिए भी तैयार कर लेंगे।"

"यानी तुम भी बेटे की ऊँची से ऊँची कीमत वसूलने का मनसूबा बाँध रही हो?" पहलवान व्यंग्य से मुस्कराए।

पप्पू की अम्मा चिढ़ गईं-" आखिर कोई रास्ता तो निकालोगे कि हरिश्चन्द्र बनने से काम चलेगा! "

"तुम्हारे सुझाए रास्ते से तो हम सबको राहत मिलेगी, लेकिन पहले आपका बेटा तो माने।"

"बेटा क्यों नहीं मानेगा? वह नहीं देख रहा है कि कैसे हम लोग पेट काटकर, शौक-श्रृंगार त्यागकर उसका खर्च पूरा कर रहे हैं।"

"क्या बात है भउजी, भइया को अकेले पाकर दिन-दहाड़े रगेद रही हो!" खेलावन की आवाज आई। वे कब आकर सामने खड़े हो गए, पता नहीं चला।

"आओ-आओ, खेलावन भाई। हम लोग फिर एक साँसत में पड़ गए हैं।"

खेलावन अन्दर आकर दूसरे नगरे पर बैठते हुए बोले- "विद्या बेटी बता रही थी कि कल थोक के भाव मेहमान आ गए थे।"

"वही तो।" पहलवान मेहमानों के आगमन का उद्देश्य बताने लगे।

फिर बोले- "क्या करें? घर की हालत आप जानते ही हैं।"

"लड़की क्या करती है?"

"इसी साल इंटर किया है।"

"जोगी की क्या राय है?"

"अभी उससे कहाँ बात हुई? खुद ही सोच-विचार कर रहे हैं।"

"देखिए, पतोहू से अपनी भी सेवा-पानी करानी हो, उससे सास का पैर दबवाना हो तब तो ऐसी ही बहू ठीक है, लेकिन अगर जोगी का सही जोड़ लगाना हो, उनका हित देखना हो तब तो नहीं ठीक है।"

"इस बहू से बेटे को सुख नहीं मिलेगा, भइया?" पप्पू की अम्मा ने पूछा। इस बीच खेलावन बहू भी उन्हें खोजते हुए अन्दर आ गईं।

"उतना ही मिलेगा, जितना आप लोगों से हम लोगों को मिल रहा है। चूल्हा-चौका सँभालने, हाथ-पैर दबाने, लरिका-फरिका सौचाने तक का। और पढ़ाई-लिखाई पूरी होने, नौकरी-चाकरी में आने के बाद जोगी की तरह ही तकनीकी पढ़ाई वाली कोई लड़की बहू बनेगी तो बेटे के बराबर ही हर महीने मोटी पगार लाएगी। आज के जमाने में तो बेटे के लिए ऐसी ही बहू ठीक मानी जाती है।"

"तो आप लोग भी अब हम लोगों को घर से निकालकर तकनीकी बहू लाओ, भइया।" पप्पू की अम्मा हँसते हुए बोलीं। खेलावन बहू भी हँसने लगीं।

"देखिए, पिता को किस बेटे से सुख मिलता है? अपने गाँव में पी.सी.एस., जज, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, लेक्चरार मिलाकर करीब दर्जन-भर हैं। साल-भर में कितनी बार गाँव आते हैं? कितनों के माँ-बाप उनके साथ हैं? एक के भी नहीं। फिर लेखपाल, ग्रामसेवक, पंचायत सेक्रेटरी, प्राइमरी और मिडिल स्कूल के अध्यापक, लाइनमैन, पोस्टमैन,

पेट्रोलमैन, क्लर्क और एल.आई.सी.-सहारा के एजेंटों की गिनती करिए। यह भी दर्जन भर से ज्यादा हैं, और दिन-भर काम करके शाम को गाँव आ जाते हैं। उनकी बहुएँ घर का काम सँभालती हैं। माँ-बाप की देखभाल करती हैं। पक्का है कि जोगी भी पढ़-लिख लेने के बाद आप लोगों से दूर चले जाएँगे। फिर भी क्या यह सोचकर आप एक बार भी उन्हें इंजीनियरिंग पढ़ाने से पिछड़ने की सोचे? हर पिता का अरमान रहता है कि उसका बेटा दूर-दूर तक जाकर नाम करे। सिर्फ अरथी में कन्धा लगाने के लिए गाँव में न पड़ा रहे। तब बहू के बारे में इतने दकियानूसी ढंग से क्यों सोचा जाए? हम तो कहते हैं, लड़का नौकरी-चाकरी करने इटली, जर्मनी, आस्ट्रेलिया जाए और वहाँ की सफेद चमड़ी वाली बहू लाए। आगे की नस्लें सुधरें। लेकिन अभी करेंगे, खेतीबाड़ी बेचने से

बचाएँगे, तब तो लाल बाबू की इंटर पास बेटी से ही सन्तोष करना पड़ेगा। जोगी भी दो-चार दिन हाथ-पैर पटकेंगे, फिर चुप हो जाएँगे।"

"इंटर पास बहू में क्या खराबी है?" खेलावन बहू भी बातचीत में शामिल हो गई। "हमारी बहू भी तो इंटर पास है। क्या कमी है? लड़के को कुँवारा तो रखना नहीं है। शादी के तीन या पाँच साल बाद गौना आएगा। इस बीच जितना चाहो, बहू को और पढ़ा लो। बेटे की कमाई से पूरा नहीं पड़ेगा तो बहू की कमाई से पड़ जाएगा? वही निहाद है कि माँ की चूँची से पेट नहीं भरा तो बाप के 'फलान चीन्ह' से भरेगा? हाँ, नहीं तो! मैं तो कहूँगी कि अगर लड़की गुणवती है तो ब्याह मानने में कोई खराबी नहीं है। बेटे का ब्याह मानने से बेटी को भी अच्छा घर-वर मिल रहा है। खेती-बारी बिकने से बच रही है। इससे अच्छा क्या होगा?"

हर साल चैत के महीने में पहलवान को खुश होने का मौका मिलता है। खुशी यह

याद करके होती है कि अब चैती की मड़ाई बैलों द्वारा नहीं करनी पड़ती। उनके बचपन में चैत-बैसाख की धूप में महीने-भर बैलों के साथ बैल बन जाना पड़ता था। उनकी पूँछ उमेठकर तेज-तेज चलने के लिए ललकारना और गोबर करने लगें तो उसे नीचे गिरने के पहले ही दोनों हाथों में रोप लेना पड़ता था।

इस साल पहलवान को अठारह-बीस कुंटल गेहूँ बेचना है। बोरा-बन्दी करके रख लिये हैं। रोज पता लगाते हैं कि सरकारी खरीद सेंटर पर खरीद शुरू हुई कि नहीं। पहली अप्रैल से खरीद शुरू हो जानी थी, लेकिन पन्द्रह अप्रैल हो गई, अभी काँटा ही नहीं खड़ा हुआ।

इस साल सरकार ने गेहूँ का समर्थन मूल्य हजार रुपये कुंटल तय किया है। यह बढ़ोतरी पिछले सालों की तुलना में ठीक-ठाक कही जा सकती है। शायद इसका कारण यह है कि पिछले साल के घोषित रेट पर, बोनस देने के बावजूद सरकार टारगेट से बहुत कम खरीद कर पाई थी।

सरकारी खरीद-केन्द्र पर बेचने में समय का बहुत अकाज होता है और बहुत झंझट है। 'दाने पतले हैं' या 'पाला मारे हुए हैं' जैसे कारण बताकर कुंटल पीछे चार-पाँच किलो की कटौती कर लेते हैं। ढोकर ले जाइए। पल्लेदारी दीजिए। चेक लेकर बैंक जाइए। कभी-कभी तो चेक देते समय ही कह दिया जाता है कि भुगतान लेने दस दिन बाद जाइएगा।

अभी खाते में पैसा नहीं आया है।

लेकिन और किसे बेचें? आढ़ती तो साढ़े छह सौ रुपये कुंटल से आगे बढ़ने को तैयार नहीं हैं। उनका पेट नकली खतौनी और नकली किसान बही से ही भर जाता है। हर गाँव में आधे किसान ऐसे होते हैं जिनकी पैदावार इतनी ही होती है कि उससे उनकी साल-भर की खुराकी चल

सके। उन्हें बेचने की नौबत नहीं आती। आढ़ती अपने आदमी भेजकर ऐसे किसानों की खतौनी की नकल तहसील से निकलवा लेते हैं। फिर उसी किसान के नाम पर अपना खरीदा हुआ गेहूँ सरकारी खरीद-सेंटर पर बेच देते हैं। दोनों की खरीद में अन्तर की राशि आढ़ती और सेंटर के बीच बँट जाती है। भुगतान बियरर चेक से मिलता है। जो चाहे भुगतान ले ले। खुला खेल है। दो साल से चल रहा है। जो चाहे देख सकता है, लेकिन जिन्हें देखना चाहिए वे देखना नहीं चाहते और जो देख-देखकर कुढ़ते हैं वे कुढ़ने के अलावा कुछ कर नहीं सकते।

इस साल सरकार ने प्राइवेट कम्पनियों को भी किसानों से सीधे गेहूँ खरीदने की अनुमति दे दी है। उनके एजेंट गाँव-गाँव, दरवाजे दरवाजे दौड़ रहे हैं। वे साढ़े सात से आठ सौ तक का रेट दे रहे हैं। दरवाजे पर ही तौलकर उठा ले जाते हैं। नगद पैसा दे देते हैं। एजेंट पहलवान का गेहूँ देख चुका है-मोटे-मोटे चमकते-सुनहले दाने। कह गया है कि आपको दस रुपये कुंटल ज्यादा दे देंगे।

गृहस्थ के घर में खर्चे का क्या पूछना ! एक पैसा आता है तो दस पैसे का खर्च लगा रहता है। खाद विक्रेता को रबी में प्रयोग की गई यूरिया और डीएपी का उधार चुकाना है। वह जल्दी किसी को उधार नहीं देता। पहलवान के स्वभाव से दे देता है। दो महीने बाद फिर उससे यूरिया और डीएपी लेना पड़ेगा।

एजेंट उस दिन कह गया था- "भाड़ा, पल्लेदारी और कटौती घटा दीजिए तो हमारे और सरकारी रेट में बहुत फरक नहीं रह जाएगा, चाचा। अकाज ऊपर से होगा। दिन-भर लाइन लगानी पड़ी तो धूप में खोपड़ी टन टन बोलने लगेगी।"

खोपड़ी की टन-टन सुनकर पहलवानिन को दरेग आ गया। पिघल गईं। वे खुद देख रही हैं कि पहलवान का चेहरा कैसे दिन पर दिन छुहारा होता जा रहा है। इसी धूप-बतास में दौड़ने के कारण ही तो। बोलीं- " तब दे दीजिए इसी को। कितना कम दे रहा है?"

"यही किलो पीछे सवा-डेढ़ रुपये।"

विद्रोही बहू सारी बात सुन रही थीं। वे अब बहू-बेटे के फैसले में दखल नहीं देतीं। जब घर का मालिकाना सौंप दिया तो वे जानें, उनका काम जाने। लेकिन किलो पीछे सवा-डेढ़ रुपये का नुकसान धूप लगने के डर से कर लेना, यह तो

ठीक नहीं। बोल पड़ीं- "किलो पीछे एक-डेढ़ रुपये के नुकसान को कम करके नहीं आँकना चाहिए। एक-एक बाली कीमती होती है। एक बाली में पचास-साठ दाने होते हैं। एक दाने के बनने में पाँच महीने लगते हैं। दाने-दाने को मिलाकर ही राशि बनती है।"

पहलवान ने महसूस किया कि माँ सही कह रही हैं। बप्पा होते तो कहते- किसान के लिए क्या धूप, क्या जाड़ा! किसान को कोई बँधी-बँधाई तनखाह थोड़े मिलती है कि हर पहली तारीख को नोट से मुट्ठी भर जाए। उसे एक-एक पैसा दाँत से पकड़ना होगा। समय के अकाज का क्या सोचना ? समय को गठरी में बाँधकर रखना है क्या?

सही कहते थे बप्पा। उन्होंने पप्पू को बुलाकर कहा-" जाकर पता करो, खरीद केन्द्र पर तौलाई शुरू हुई कि नहीं? शुरू हुई हो तो उधर से ट्राली लेकर आओ।"

अच्छा हुआ कि पहलवान ने तुरन्त बिक्री कर दी। महीने भर में ही सरकारी खरीद बन्द हो गई। चार महीने बाद पहलवान ने अखबार में पढ़ा - सरकार ने गेहूँ का आयात करने का निर्णय लिया है।

जिन प्राइवेट कम्पनियों ने सीजन में साढ़े सात-आठ सौ रुपये कुंटल की दर से गेहूँ खरीदकर पास के बाजार में किराए के गोदाम लेकर भंडारण कर दिया था, उन्होंने आयात के लिए टेंडर भरा और सरकार ने उनसे वही गेहूँ सोलह सौ रुपये प्रति कुंटल की दर से खरीद लिया। चार-पाँच महीने

में ही इन कम्पनियों को सौ प्रतिशत का मुनाफा हो गया।

पहलवान ने खेलावन से जानना चाहा - "सरकार को गेहूँ आयात करने की जरूरत क्यों पड़ गई? जितनी जरूरत थी, किसानों से ही सीधे क्यों नहीं खरीद लिया?"

खेलावन कैसे कहते कि इसका जवाब देना किसी के वश की बात नहीं है। बोले-"शायद डब्ल्यू.टी.ओ. के साथ हर हाल में आयात करने का करार रहा होगा।"

"क्यों किया होगा ऐसा घाटे का करार?"

"यह तो कोई विशेषज्ञ ही बता पाएगा।"

"और प्राइवेट कम्पनियों से सरकार ने इतने महँगे भाव से क्यों खरीदा? हमें तो हमारी लागत भी नहीं देते।"

"यह भी कोई जानकार ही बता सकता है। यहाँ मेरी बुद्धि फेल है।"

491

इस समय धनकटनी चल रही है।

पूरी सिंवार में धान की फसल करीब-करीब एक साथ पकती है। सबको धान काटकर रबी की बोवाई करने की जल्दी रहती है। इसलिए मजदूरों की लूट मच जाती है। लेकिन मजदूर तो गाँव में जितने हैं उतने ही रहेंगे। जरूरत के अनुसार तो पैदा किए नहीं जा सकते। गरियाने-धमकाने वाला जमाना चला गया। अब बहला-फुसलाकर उनसे जो जितना काम ले सके, ले ले।

सूबेदार हरदयाल को चार मजदूरनें मिली थीं। वे सबेरे उन्हें सवाचने टोले में पहुँचे तो देखा, सारा टोला सूना पड़ा है। बूढ़े परमेसरी ने बताया कि सब आलू लूटने चले गए।

भोर में किसी ने ऊँची आवाज में बताया कि कोल्ड स्टोरेज से जो जितनी आलू ढोकर ले जाना चाहे, ले जा सकता है। एकदम

बस, सब झौवा, पलरी, बोरा-बोरी लेकर दौड़ पड़े।

जाने कौन-सी हवा बही कि आलू का रेट सितम्बर से ही गिरने लगा। अक्टूबर में तो माटी के मोल हो गया!

जितना एक बोरे आलू की कीमत मिलेगी, उससे ज्यादा तो उसका कोल्ड स्टोरेज का किराया लग रहा है। ऐसे में कौन आलू निकालने जाए!

एक नोटिस आई। दूसरी नोटिस आई। लेकिन कोई आलू निकालने कोल्ड स्टोरेज के पास नहीं फटका तो मालिक ने कूलिंग सिस्टम बन्द कर दिया। किराए का नुकसान तो हो ही रहा है। बिजली का बिल ही क्यों बढ़ाया जाए? आलू सड़ने लगा तो ऐलान करवा दिया कि जो चाहे आलू ढोकर ले जाए। कोल्ड स्टोरेज खाली कराने की मजदूरी तो न देनी पड़े ! आसपास के गाँव के लोग आलू ढोने में लग गए हैं। कुछ साइकिल पर तो कुछ पीठ पर ही बोरा-बोरी लादे चले आ रहे हैं। जैसे चींटियों की पाँत चली आ रही हो।

शायद ही कोई किसान होगा, जिसने आलू जमा न किया रहा हो। पहलवान खड़े सोच रहे हैं, उन्होंने तो सिर्फ बीस बोरे ही जमा किया है। प्रभाकर ने तो पाँड़े की मरजी के खिलाफ, इस उम्मीद में बाजार से खरीदकर सौ बोरे जमा किया था कि ठीक-ठाक भाव मिल गया तो ट्रैक्टर की एक किस्त देने का इन्तजाम हो जाएगा।

जिसने भी जमा किया था, सबका डूबा। समझिए, महामारी आ गई।

थोड़े संकोच के बाद उन किसानों के लड़के भी आलू की लूट में शामिल हो गए, जिनका अपना आलू यहाँ जमा था। बोने के काम भी आ जाएगी और महीने-भर मुफ्त की सब्जी खाएँगे।

अगम बहै दरियाव

पुराने लोगों को याद है कि आलू की ऐसी ही दुर्दशा कई साल पहले पश्चिमी जिलों में हुई थी। आलू का दाम इतना गिर गया था कि उसको बेचने से इतना भी नहीं मिलना था, जिससे उसकी खुदाई का खर्च निकलता। इसलिए किसानों ने आलू की खुदाई ही नहीं की। कुछ मजदूर खोद ले गए, कुछ खेत में ही सड़ गई।

आज फिर वही दुर्दशा देखने को मिल रही है। सड़े आलू के ढेर सड़क के किनारे ऊँचे होते जा रहे हैं। बदबू फैल रही है। किसी की समझ में नहीं आ रहा है कि हर चार-छह साल में आलू की ऐसी दुर्दशा क्यों हो जाती है। यही हाल प्याज का होता है। कौन-सी ताकतें इसके लिए जिम्मेदार हैं?

पाँड़े का मानना है कि यह संवत् उनके लिए शुभ नहीं है। सूबे में बनी नई सरकार ने पिछली सरकार द्वारा की गई पुलिस की सारी भर्ती रद्द कर दी। सेलेक्शन कमेटी के कई अधिकारी निलम्बित कर दिये गए और उनके खिलाफ जाँच बिठा दी गई।

महीने-भर इधर-उधर दौड़ने-भटकने के बाद जब दिवाकर को लगा कि यह भटकन लम्बी चलने वाली है तो वे अपने बीवी-बच्चों को ससुराल पहुँचाकर घर लौट आए। आए तो हफ्ते भर तक सोते ही रह गए। पाँड़े

बहुत परेशान हैं। लाख रुपैया डुबाकर लड़का फिर बेरोजगार हो गया। अब रोज उनका खून पीता है।

बर्खास्त पुलिसकर्मियों ने अपनी बहाली के लिए हाई कोर्ट में मुकदमा दायर किया है। प्रभावी पैरवी के लिए यूनियन का गठन किया है। हर बर्खास्त पुलिसकर्मी को पाँच हजार रुपये चन्दा देना है। दिवाकर कई दिन से उनसे रुपया माँग रहे थे। वे कहाँ से देते? कहीं से एक पैसे की आमदनी तो है नहीं! दिवाकर नाराज होकर पैर पटकते चले गए। तबसे बोलचाल बन्द कर दी है। बाजार के चौराहे पर ट्रैफिक पुलिस को ड्यूटी में मदद करते हैं। बीस रुपया रोज पाते हैं। कभी किसी ट्रक-ट्रैक्टर वाले से छीन-झपटकर कुछ मिल जाता है तो उसमें भी दस-पाँच रुपया हिस्सा पा जाते हैं। दो-दो, तीन-तीन दिन तक घर नहीं लौटते और लौटते हैं तो सिर्फ अपनी माँ से बोलते हैं। लगातार सोते हैं और वापस लौट जाते हैं।

प्रभाकर बहू अलग नाराज रहती हैं। वह सास के पीछे पड़ी हैं कि जितना रुपया छोटे को घूस के लिए दिया गया, उतना उनकी बेटी के नाम से भी जमा कर दिया जाए।

बेटियाँ रेंड़ के पेड़ की तरह बढ़ती हैं। साल-दो साल में ब्याह करना पड़ेगा तो कहाँ से करेंगे?

पाँड़े बस यही मनाते हैं कि बिना किसी झगड़े-टंटे के सबेरे की चाय मिल जाए।

पाँड़े पकड़ लिये गए।

तहसील आए थे। दौलत तिवारी के बैनामे में गवाह बनने। बैनामे के बाद तिवारी उनको तहसील के बाहर हलवाई की दुकान पर लड्डू खिलाने लाए थे। लड्डू खाते-खाते उनकी नजर कुछ दूर खड़े चाय पी रहे एक आदमी पर पड़ी जो उन्हीं को गौर से देख रहा था। नजर मिली तो वह पास आ गया।

उन्होंने पूछा, "आप बनकट वाले भागवत पांडे हैं न?" पांडे ने स्वीकार किया, "हाँ, क्या बात है?"

दुविधा में था तो सोचा, पूछ लूँ। कहने के साथ उसने कुल्हड़ में बची चाय को एक घूँट में खत्म किया और कुल्हड़ फेंकने के लिए बाउंड्री की ओर गया तो लौटा नहीं, उधर से ही तहसील के अन्दर चला गया।

"लीजिए एक लड्डू और।"

पाँड़े ने पाँचवाँ लड्डू उठा लिया, लेकिन उनके मन में सवाल बरकरार था- कौन था वह आदमी? परिचित होता तो प्रणाम-पैलगी जरूर करता। पहचान पक्की करने के बाद गायब क्यों हो गया?

दौलत अपनी मोटरसाइकिल से पाँड़े को बस अड्डे छोड़कर चले गए। पाँड़े बस का इन्तजार करने लगे। तभी वह आदमी आकर सामने खड़ा हुआ। बोला-" पाँड़े, आपको तहसीलदार साहब बुला रहे हैं।"

"क्यों? आप कौन हैं?"

"मैं हलके का अमीन हूँ। मेरा नाम हरिद्वार है। बैंक से आपकी रिकवरी आई है। मैंने तहसीलदार साहब को आपके बारे में बताया तो उन्होंने बुलाने के लिए कहा।"

पाँड़े से तुरन्त कुछ कहते नहीं बना। ट्रैक्टर के लोन की किस्तें रुक गई हैं, यह तो पता है। बैंक से नोटिस भी मिला था। लेकिन बैंक ने तहसील में वसूली भेज दी है, यह नहीं पता था।

उन्होंने लगभग चिरौरी करते हुए कहा- "तहसीलदार साहब के सामने मुझे पेश न करो, भइया। मैं जल्दी ही रुपये का इन्तजाम करके बेबाक कर दूँगा।"

पाँड़े को पता था कि इसके साथ-साथ अमीन की जेब में सौ रुपये भी डाल देने चाहिए, लेकिन जेब में सिर्फ किराए-भर का ही पैसा था। हरिद्वार कुछ देर तक उनका चेहरा पढ़ता रहा। फिर बोला- "यही बात चलकर खुद तहसीलदार साहब से कह दीजिए। नहीं तो वे सोच सकते हैं कि बकाएदार ने हुकुमउदूली कर दी।"

"उधर चलूँगा तो मेरी बस छूट जाएगी। यही आखिरी बस है।"

"बस आएगी आठ बजे। अभी तो सात ही बजे हैं। आइए।"

पाँड़े उसके बगल-बगल चल पड़े।

तहसीलदार साहब अपनी इजलास पर बैठे थे। पेशकार उनसे फाइलों पर दस्तखत करा रहा था। हरिद्वार ने आगे बढ़कर बताया- "हुजूर, यही हैं भगवत पाँड़े।"

हाकिम ने नजरें तनिक ऊपर उठाईं, फिर फाइल पर झुका लीं। कलम चलती रही।

पूछा- "बकाया क्यों नहीं जमा करते?"

"कर देंगे, हुजूर। इधर हाथ तंग है। गन्ने का बकाया मिला नहीं। टमाटर मिट्टी के मोल बिका। गेहूँ के रेट से लागत भी नहीं निकली। आलू से ज्यादा उम्मीद थी। बेटे ने बाजार से खरीदकर इसी उम्मीद में जमा किया था कि ठीक-ठाक रेट मिल जाएगा तो ट्रैक्टर की एकाध किस्त दी जा सकेगी, लेकिन वह सारी की सारी कोल्ड स्टोर के बाहर सड़ गई। माटी के

मोल भी नहीं बिकी। क्या करें, कुछ समझ माटी के में नहीं आ रहा है!"

"किसी को घर भेजकर रुपये मँगवाइए।"

"हफ्ते-दस दिन की मोहलत दे दें, सरकार। इन्तजाम करना पड़ेगा। इतने रुपये घर में होते तो किस्त ही क्यों रुकती?"

"ले जाओ। बन्द करो।"

पाँड़े घबरा गए। घिघियाकर बोले- "बन्द करने से कुछ हाथ नहीं आएगा सरकार। इज्जतदार आदमी हूँ। बेइज्जत हो जाऊँगा। मोहलत मिलेगी तभी कुछ इन्तजाम हो पाएगा।"

तहसीलदार का सिर दुबारा नहीं उठा।

हरिद्वार ने उनकी बाँह पकड़ते हुए कहा - "बाहर चलिए।"

पाँड़े ने देखा कि बाहर आने के साथ-साथ वे चार-पाँच लोगों से घिर चुके हैं। इनमें से वे केवल जवाहर चपरासी को पहचानते थे।

हवालात पन्द्रह गुणे बारह फीट की बिना खिड़की वाली कोठरी थी, जिसमें लोहे की छड़ों से बना करीब छह फीट ऊँचा और चार फीट चौड़ा फाटक लगा था।

चपरासी ने आगे बढ़कर कुंडे में लगा पुराने मॉडल का भारी ताला खोला। फिर हाथ की टॉर्च जलाते हुए कोठरी के अन्दर घुसा। उसके पीछे पाँड़े और पाँड़े के पीछे अमीन हरिद्वार। पेशाब की चिरायँध का तेज भभका सबके नथुनों में घुसकर बेचैन कर गया। जवाहर ने मुड़कर अन्दर से कुंडे में बेलन लगा दिया।

जवाहर की टॉर्च की रोशनी हवालात के फर्श पर घूमी। एक कोने में बिस्तर के आकार में पुआल का ढेर पड़ा था। उसके ऊपर बेतरतीब बदरंग

पुराना कंबल पड़ा था। दूसरे कोने पर मिट्टी का घड़ा और प्लास्टिक का मग। जवाहर ने आगे बढ़कर घड़े को उठाया और कहा- "थोड़ी देर इन्तजार करिए। मैं ताजा पानी और खाने के लिए कुछ लाता हूँ। क्या खाएँगे?"

पाँड़े का दिमाग पूरी तरह सुन्न हो गया था। उन्हें कुछ सुनाई नहीं पड़ा। जहाँ उन्हें लाकर खड़ा किया गया था, उसी जगह बिना हिले-डुले या मुड़े अँधेरे में मूर्तिवत खड़े रह गए। यह किस मुकाम पर लाकर नियति ने उन्हें खड़ा कर दिया!

चपरासी ने बाहर से फाटक बन्द करके ताला लगा दिया। पुराने अनुभव से उन्हें पता था कि ऐसा होता है। जो भी पकड़कर लाया जाता है और इस कोठरी में बन्द होता है, वह असामान्य हो जाता है। कुछ तो लोहे के फाटक को तब तक पीटते हैं, जब तक हाथ लहूलुहान नहीं हो जाते। कुछ का चीखते-चीखते या गाली देते-देते गला बैठ जाता है। कुछ सारी रात चुपचाप सिसकते हैं। कुछ बड़ी पोस्ट पर बैठे रिश्तेदारों का हवाला देते हैं। धमकी देते हैं कि नौकरी खा जाएँगे और बाद में गिड़गिड़ाने भी लगते हैं। एकाध ऐसे आए हैं, जिन्हें दो घंटे के अन्दर छोड़ना पड़ा, बिना एक धेला जमा किए हुए। एकाध ने सचमुच नौकरी का संकट खड़ा कर दिया।

करीब आधे घंटे बाद हरिद्वार और जवाहर लौटे। टॉर्च की रोशनी अन्दर फेंकी तो पाँड़े अपनी जगह पर ही खड़े दिखे।

अमीन ने पूछा- " बाजार में पूड़ी-सब्जी मिल जाएगी। लाई-चना भी मिलेगा? क्या खाएँगे?"

"खाने को मारिए गोली।" पाँड़े की आवाज कुएँ के अन्दर से आती लग रही थी-"क्या मुझे रात-भर इसी में बन्द रखोगे?"

"बन्द तो रहना पड़ेगा, महराज। बाहर निकालना मेरे अधिकार में नहीं है। बाकी जो सेवा चाहिए, बोलिए। यहाँ अन्दर कोई तकलीफ नहीं होने पाएगी।"

कहने के साथ हरिद्वार अँधेरे में गुम हो गया।

पाँड़े को याद ही न रहा कि फाटक की छड़ें पकड़े वे कितनी देर से अँधेरे में खड़े हैं। पैरों में दर्द उभर आया। दिन-भर चलते ही बीता था। वे वापस मुड़े, पर कहाँ बैठें? इस काल कोठरी में तो महीनों से झाड़ू भी न लगा होगा। फिर यह सिर को भन्ना देने वाली दुर्गन्ध !

उन्होंने पैरों से पुआल की स्थिति टटोली और फाटक की ओर मुँह करके बैठ गए। घर के लोग इन्तजार कर रहे होंगे। उनके बिना खाए पैड़ाइन खाना नहीं खातीं। आज भूखी ही रह जाएँगी।

करीब घंटे भर बाद जवाहर ने फाटक पर टॉर्च की रोशनी डाली। पानी भरे घड़े को जमीन पर रखकर उसने फाटक का ताला खोला। फिर घड़ा उठाकर अन्दर लाते हुए कहा-"लो पंडित, पकड़ो।"

पाँड़े ने घड़ा पकड़ लिया। जवाहर ने कोने की ओर टॉर्च दिखाते हुए कहा-" उधर सँभालकर रख लीजिए।"

पाँड़े ने घड़ा ले जाकर कोने में ठीक से जमाया और उनके मुड़ने के पहले जवाहर ने बाहर निकलकर फिर फाटक बन्द कर लिया। ताला लगाने के बाद एक जेब से लाई-चने का लिफाफा निकालकर छड़ों के बीच से अन्दर करते हुए कहा- "इसे भी पकड़िए। लाई-चना है।"

"रहने दीजिए। भूख नहीं है।"

"रख लीजिए। क्या पता रात में लग जाए। अब । अब सबेरे भेंट होगी।"

"सबेरे दिशा-मैदान कराने तो आओगे न?"

"इतने सबेरे तो नहीं आ पाएँगे, पंडित। दस किलोमीटर साइकिल चलाकर आते हैं। दस बजने ही वाले हैं। एक दिन थोड़ा थामकर रखिएगा।"

"ऐसा न कहो, भाई। जल्दी आ जाना।"

"मेरे अकेले के आने से क्या होगा! बाहर झाड़ा फिराने ले चलने के लिए कम-से-कम दो-तीन लोग साथ में और होने चाहिए। मन का क्या विश्वास ! मन में आ गया, भाग खड़े हुए तो मैं खदेड़कर अकेले पकड़ भी न पाऊँगा और खड़े-खड़े सस्पेंड हो जाऊँगा। पेशाब लगे तो उधर कोने में नाली पर बैठकर कर लीजिएगा।" फिर थोड़ा रुककर कहा- "लीजिए, अपनी टॉर्च दे देता हूँ। काम आएगी। मैं अँधेरे में ही चला जाऊँगा। आपके घर या पड़ोस में किसी के पास मोबाइल हो या पास में पीसीओ हो तो नम्बर बताइए। मैं फोन कर देता हूँ।"

"है तो जरूर, लेकिन मुझे नम्बर नहीं याद है।"

"कोई बात नहीं। मैं सबेरे खुद जाकर खबर कर दूँगा। बस, इतनी मदद कर सकता हूँ। कोई मंत्री, विधायक, नेता, अफसर पहचान के हों तो उनसे जोर लगवाइए, वरना बिना बकाया जमा किए छूटना मुश्किल होगा।"

पाँड़े ने छड़ों के बीच से हाथ बाहर निकालकर टॉर्च पकड़ ली। जवाहर मुड़कर जाने लगा तो पाँड़े उसी दिशा में, बल्कि शून्य में कुछ देर ताकते रहे। कुत्तों के भँकने की आवाज आई। एक कुत्ता तेजी से भागता हुआ फाटक के सामने से गुजरा और

दो-तीन उसके ठीक पीछे खदेड़ते हुए। वे चैतन्य हुए। मुड़कर घड़े पर टॉर्च की रोशनी डाली। संध्या वंदन तो कर ही लें। टॉर्च को जली हुई दशा में ही जमीन पर रखकर उन्होंने मग धोया। फिर हाथ-पैर-मुँह धोया। कुल्ला किया। अँगोछे से चेहरा पोंछा और पुआल के एक कोने में, अनुमान से पूरब दिशा की ओर मुँह करके पालथी मारकर बैठ गए। हाथ बढ़ाकर टॉर्च उठाया और बुझा दिया।

घुप्प अँधेरा।

ॐ भूर्भुवः स्वः.....

संध्या वंदन के बाद भी वे अपनी जगह पर बैठे रह गए। याद नहीं रहा कि कितनी देर से बैठे हैं। ठंड महसूस होने लगी। मन किया कि पास में पड़ा कंबल उठाकर ओढ़ लें, लेकिन इसे कितने हवालातियों ने ओढ़ा होगा। कितनी जातियों ने, कितने रोगियों ने। टी.बी., दमा, मिरगी के मरीजों ने। खुजली, चीलर वालों ने। उसे छूने के विचार से ही उन्हें गिनगिनी छूटने लगी।

प्यास तो तभी महसूस हो रही थी जब हाथ-मुँह धो रहे थे, लेकिन पेशाब करने से बचना चाहते थे। इसलिए नहीं पिया। लेकिन अब मुँह पूरी तरह सूख गया था। उन्होंने फिर टॉर्च जलाई। उठकर मग में पानी उड़ेला। बिना होंठों से मग सटाए, मुँह ऊपर उठाकर गटागट सारा पानी पी गए। कँपकँपी बढ़ गई। उन्होंने कंबल पर रोशनी डाली। फिर जैसे समझौता-सा करते हुए झुककर अँगूठे और तर्जनी की चुटकी बनाते हुए उसे ऊपर उठाया। एक चुहिया पुआल पर कूदी और नाली की ओर भाग गई। फिर उसके पाँच-छह नवजात गुलाबी बच्चे चुक-चुक करते पुआल पर गिर पड़े। कंबल उनके हाथ से छूट गया। चुहिया के बच्चों को उठाकर उन्होंने दीवाल के किनारे रख दिया। टॉर्च की रोशनी हिलकर पल-भर के लिए दीवार पर गई। दीवार पर कुछ लिखा हुआ दिखा। उन्होंने फिर रोशनी डाली। कोयले से बड़े और टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखा था-

दीन दयाल विरद संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी ॥

ओहो ! कोई और किसी दिन इस काल कोठरी में बन्द था। यह उसी का आर्तनाद है। टॉर्च बुझाकर वे खुद भी जपने लगे - " दुख हरो जानकीनाथ शरण मैं तेरी...।" गाते-गाते वे टॉर्च की रोशनी फर्श पर डालकर कुछ खोजने लगे। हाँ, दिख गया। लकड़ी के कोयले का एक टुकड़ा। यही टुकड़ा पहले लिखने वाले के भी काम आया रहा होगा। उन्होंने उसे उठाया और पहले की लिखावट के नीचे लिखा-

दुख हरो जानकीनाथ...

नीचे हस्ताक्षर किया- भगवत पाँड़े, तारीख...

अगम बहै दरियाव

लिखकर पढ़ा, फिर कोयले का टुकड़ा कोठरी के कोने में फेंक टॉर्च बुझाकर अँगोछा कान में लपेटा और फाटक के पास दीवार से पीठ सटाकर बैठ गए। उन्हें सूरे की याद आने लगी। सूरे ने भी इसी बन्दीखाने में सारी रात या शायद कई रातें इसी तरह जगते-बिसूरते हुए काटी होंगी। कई साल हो गए। उनसे चार-पाँच साल बड़े रहे होंगे सूरे। आवाज से उन्हें पहचान लेते तो ऊँची आवाज में गरजते- पाँय लागी पाँड़े महराज। वे चुपचाप चलते-चलते सूरे के नजदीक पहुँचते और सूरे को पता न चलता तो सूरे की पैलगी का इन्तजार किए बिना आशीर्वाद देने लगते-" मौज करो सूरे, मौज करो।"

तब प्रत्युत्तर में सूरे गरजते- "पाँय लागी महराज, पाँय लागी। मौज तो कर ही रहे हैं आपके राज में।"

जिस समय की उन्हें याद है, सूरे के आगे के ऊपर वाले दो और नीचे का एक दाँत टूट गया था। हँसते थे तो झरोखे वाला मुँह बहुत निर्दोष लगता था। आँखों के देंढर आसमान की ओर टँग जाते थे। उस शाम खेलावन की माँ ने उन्हें राह में रोककर इस उम्मीद में सूरे के पकड़े जाने की खबर दी थी कि वे निर्दोष सूरे को छुड़ाने का कोई जतन करेंगे, लेकिन...

इस बन्दीखाने से तो चार-छह दिन में छूट ही गए होंगे सूरे, पर फिर कभी गाँव लौटकर नहीं आए। कहीं मर-खप गए होंगे। तब उनकी पकड़ को सारे गाँव ने हँसकर उड़ा दिया था। कितनी बेगानी लगी होगी तब सूरे को यह दुनिया! इस दुनिया ने सूरे की दुनिया कितनी बार उजाड़ी? एक बार उनकी दोनों आँखें फोड़कर उजाड़ी। एक बार उनकी प्रेमिका छब्बी को उनसे छीनकर उजाड़ी। एक बार...

पाँड़े को लगा कि ठंड बढ़ गई है। ठंडी हवा फाटक के अन्दर आकर सीधे मुँह पर लग रही है। घंटों हो गए इस तरह फाटक के पास बैठे हुए। कंबल ओढ़ना पड़ेगा? उन्होंने टॉर्च जलाकर दीवार के सहारे खड़ी की। रोशनी छत से टकराकर कोठरी में फैल गई। वे खड़े हुए। कंबल को दोनों हाथों से पकड़कर कई बार झाड़ा, फिर ओढ़ लिया।

रात का पिछला पहर होगा। आँखें करुआने लगीं। पंडिताइन को भी नींद नहीं आई होगी। वे कोठरी में गोल-गोल टहलने लगे। अचानक सुर्ती की अमल जगी। इसी एक अमल की गिरफ्त में वे कई साल से हैं। नौटंकी कम्पनी खोलने के साल-भर बाद से। उनके नगड़ची थे, नन्दू। सुर्ती बहुत अच्छी मलते थे। मलकर उनके सामने हथेली फैला देते। करीब-करीब साल-भर नन्दू हथेली फैलाते रहे और वे इनकार करते रहे। फिर किस दिन एक चुटकी उठाई और मुँह में डाल ली, याद नहीं।

अब रात-दिन का कोई साथी रह गया है तो यही सुर्ती। कल आखिरी बार बस स्टेशन पर खाई थी। दौलत ने मलकर दी थी।

वे पुआल के ढेर के एक कोने पर बैठ गए। कुर्ते की दाहिनी जेब से चुनौटी निकाली और गदोरी पर सुर्ती-चूना रखकर मलने लगे। थोड़ी देर बाद अजान की आवाज कान में पड़ी।

अल्ला हो अ क ब र ...

दाईं हथेली से बाईं को पीटकर, उन्होंने सुर्ती की गर्द झाड़ी। जोर से छींके और सुर्ती को जीभ पर रखकर बाएँ गाल में दबा लिया। छत की ओर रोशनी फेंकती टॉर्च को उठाकर बुझा दिया। और आँखें बन्द कर लीं।

ट्रेन की सीटी सुनाई पड़ी। फिर गड़गड़ाहट की आवाज। ट्रेन लोहे के पुल से गुजर रही है। फिर किसी ट्रक का हॉर्न। मुर्गे की बाँग। सीखचों के बीच फाटक के बाहर अँधेरे की चादर कुछ हल्की लग रही थी। लगा, पेट में गैस का दबाव बढ़ रहा है। वे घबड़ाए। रात कुछ खाया नहीं। लाई-चने का

पैकेट कुर्ते की जेब में ज्यों का त्यों पड़ा है। फिर दबाव क्यों? शायद लड्डू डालडे में बना था। जैसे भी हो, इसे रोकना होगा। आठ बजे से पहले शायद ही कोई कोठरी का ताला खोलने आए।

पेशाब तो बहुत पहले से रोके थे। अब रोकना सम्भव नहीं। नाली में निपट लेते हैं। टॉर्च जलाई। उठे। कंबल उतारा और नाली पर टॉर्च की रोशनी डाली। वे नाली के दोनों ओर पैर रखकर लघुशंका के लिए बैठे, लेकिन धार खत्म होने के साथ-साथ दीर्घशंका का दबाव बढ़ गया। ऐसा कि रोके न रुके। दुर्निवार ! अब क्या करें?

समय बिलकुल न था। वश से बाहर। उठकर फौरन काँछ खोली। पीछे मुड़े और कोने की ओर पीठ करके बैठ गए। आधा मिनट भी न लगा होगा कि धड़ाक से मुक्त हो गए। तेज बदबू फैली। नाक दबानी पड़ी लेकिन जैसे बोझ उतर गया। राहत मिल गई। कुछ देर तक उसी दशा में बैठे रह गए।

नया वर्ष शुरू होने के ठीक पहले गन्ना किसानों के लिए बुरी खबर आई। हाई कोर्ट की डिवीजन बेंच ने बस्ती शुगर मिल के केस में फैसला देते हुए सूबे की सरकार के उस आदेश को रद्द कर दिया जिसमें कहा गया था कि चीनी मिलें वर्ष

अगम बहै दरियाव

06-07 के सीजन के लिए किसानों को 125 रुपये कुंटल की दर से भुगतान करें। किसानों के चेहरे लटक गए हैं।

"क्यों दिया हाई कोर्ट ने ऐसा फैसला?" पूरा मामला समझने के लिए वे खेलावन के दुआर पर जमा हो रहे हैं।

गन्ना पैदा करने से ज्यादा कठिन है, उसका भुगतान ले पाना। यह रोग दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। गन्ना मिलें गन्ना ले लेती हैं लेकिन उसका भुगतान करने में सौ अड़ंगे लगाती हैं। साल भर पहले गन्ना लिया। पेरकर चीनी बनाई और बेच दी, लेकिन गन्ने की कीमत देने के बजाय हाई कोर्ट पहुँच गए। किसान अपनी खेती-बारी सँभाले कि मुकदमे के पीछे-पीछे भागे। थककर गाँव के किसानों ने भुगतान की पैरवी का जिम्मा खेलावन के मत्थे डाल दिया।

"तुम पढ़े-लिखे हो। ऐसे जनहित के काम में तुम्हारा मन भी लगता है। ऐसी नौकरी में हो कि भाग-दौड़ के लिए फुरसत निकाल सकते हो। सबसे बड़ी बात कि तुम्हारे पास मोटरसाइकिल है।"

"मोटरसाइकिल तो है काका, लेकिन वह पानी से नहीं चलती है। पेट्रोल पीती है। और पेट्रोल के लिए नोट चाहिए।"

"नोट तो तुम्हें सरकार हर महीने दे ही रही है, बेटा।"

खेलावन की बात गलत नहीं थी। जहाँ पहुँचिए, चाय-पानी पिलाना पड़ता है। नकल लेने, फोटोकॉपी कराने, झंडे-बिल्ले का इन्तजाम करने में खर्च लगता है। एक बार का मामला हो तो आदमी अपनी जेब से खर्च कर दे। रोज-रोज कहाँ से करेगा!

सबने माना कि दौड़-धूप करने के लिए चन्दा करके खर्च जुटाया जाएगा।

जाड़े की शाम है। अँधेरा और कुहरा बढ़ गया है। खेलावन ने नीम के पेड़ के नीचे अलाव जलाकर उसके चारों ओर बैठने के लिए पुआल बिछा दिया। आधे लोग तो नंगे पैर ही हैं। वे ठंड से ठिठुरे पैर सीधे लपट के बीच में ही डाल देना चाहते हैं। जब तक सुन्न पैर को गर्मी का एहसास होगा, तलुवे की एक पर्त चमड़ी जल चुकी होगी। बाद में कल्लाएगी।

खेलावन मुड़े हुए कागज का बंडल लेकर आते हैं और बाबा हरदयाल के हाथ में पकड़ाकर कहते हैं- "यही है वह फैसला।"

"पढ़कर सुनाओ, बच्चा।" बाबा हरदयाल पन्नों में झाँककर कहते हैं-" यह तो अंग्रेजी में है।"

"मुझे ही कौन सी अंग्रेजी आती है! किसी से पढ़वाने के लिए ले जाना चाहें तो ले जाएँ। मैंने जो सुना है वह बताता हूँ। मिल मालिकों ने हाई कोर्ट में गुहार लगाई है

कि सरकार ने बिना किसी आधार के वोट के लालच में बहुत ज्यादा रेट तय कर दिया है क्योंकि गन्ना किसान बहुत बड़े वोट बैंक हैं।"

"हमारे वकील ने भी तो कुछ कहा होगा?"

"कुछ क्या, बहुत कुछ कहा, लेकिन कोर्ट को मिल मालिकों की बात में ज्यादा दम दिखा। कोर्ट ने फैसले में लिखा कि सरकार ने अपने दिमाग का इस्तेमाल किए बिना राजनीतिक लाभ के लिए इतना ज्यादा रेट तय किया है।"

"तो कुछ मिलेगा कि नहीं?"

"मिलेगा। केन्द्र सरकार द्वारा तय की गई स्टेट्यूटरी मिनिमम प्राइस मिलेगी।"

"यह क्या चीज है?"

"इसकी हिन्दी तो मुझे भी नहीं आती।"

"यही तो बात है। मैं भी अखबार में खोज-खोज कर गन्ने की खबरें पढ़ता हूँ, लेकिन पूरी बात समझ में नहीं आती। डिवीजन बेंच, डबल बेंच, सपोर्ट

प्राइस, मिनिमम प्राइस, काउंटर, रिज्वाइंडर जाने कौन-कौन से शब्द ! "

अखबार हिन्दी का और उसमें भरी रहती है अंग्रेजी। दिमाग में इतना घमंजा मचता है कि खोपड़ी भन्ना जाती है। आखिर जो भाषा हम बोलते-समझते हैं, उसमें फैसला क्यों नहीं देतीं अदालते?

पीछे से कोई ठिठोली करता है- "स्कूल भेजा जाता था तो भागकर अरहर के खेत में लुका जाते थे और अब..."

खेलावन हँसते हुए कहते हैं- "मैं समझाता हूँ। केन्द्र सरकार भी हर साल गन्ने का खरीद मूल्य घोषित करती है। सीजन 06-07 के लिए वह मूल्य है, 80 रुपये 16 पैसे कुंटल। अभी वही रेट मिलेगा। कोर्ट ने यह भी आदेश किया है कि सरकार गन्ना और चीनी व्यवसाय के जानकार लोगों की एक कमेटी बनाएगी। वह सारे मुद्दों की जाँच-परख करके एक रिपोर्ट देगी कि कितना मूल्य देना ठीक होगा। वही रेट फाइनल होगा।"

"कमेटी?" बाबा हरदयाल कहते हैं-" कमेटी का मतलब समझते हैं? कमेटी का मतलब हुआ काम पर मिट्टी। जिस काम पर मिट्टी डालना हो, उस पर कमेटी बना दीजिए।"

पीछे से कोई कहता है- "हमारी समझ में यह नहीं आता कि किसी तीसरे के बीच में पड़ने की जरूरत क्या है? जैसे बाकी सारे सौदों की खरीद-बिक्री आमने-सामने बैठकर होती है, उसी तरह गन्ने की भी हो। मिल के आदमी हमारे खेत पर आएँ। माल देखें। रेट तय हो। नगद भुगतान करें। माल ले जाएँ। यह क्या कि माल ले लिया और भुगतान लटका दिया ! हमारे मुँह-पेट नहीं है? हम कैसे जिएँ?

बच्चों की फीस कहाँ से दें? बीमार की दवाई कहाँ से कराएँ? बेटी का ब्याह कितने बरस टालें? पैसे के बिना दस काम रुके रहते हैं। हाथ घूँछा हो तो दोपहरी में भी आँख के आगे अँधेरा छाया रहता है।"

"इससे तो अच्छा था कि हम गुड़ बनाकर बेच देते। नगद पैसा मिल जाता। गुड़ का रेट भी आजकल अच्छा जा रहा है।"

खेलावन कहते हैं- "यह सब यहाँ रोने से क्या फायदा? इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट से स्थगन लेना होगा। वकील को मोटी फीस देनी होगी। उसके लिए पैसा चाहिए।

"आपको यह भी पता होगा कि सरकार ने सीजन 07-08 के लिए भी समर्थन मूल्य घोषित कर दिया है। साल भर में खाद, सिंचाई, जुताई, मजदूरी हर चीज महँगी हुई है, लेकिन सरकार ने इस साल के लिए भी वही 125 रुपये का रेट तय किया जितना पिछले साल का था। एक रुपये की भी बढ़ोतरी नहीं की। इसके बावजूद मिल मालिक इसे नहीं मानेंगे। वे इसके खिलाफ भी हाई कोर्ट जा चुके होंगे, अगर हम सीजन 06-07 के लिए हाई कोर्ट द्वारा दिए गए फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट से स्थगन नहीं लेंगे तो हाई कोर्ट सीजन 07-08 के लिए भी पिछले साल के फैसले को दोहरा देगा। वैसे तो पश्चिम के किसान रुपये-पैसे से पोढ़े हैं। वे हम जैसे छोटे किसानों की मदद की उम्मीद नहीं करते लेकिन हमारा भी तो कुछ फर्ज बनता है।

"आप लोगों ने पैरवी का जिम्मा मेरे ऊपर डालते समय चन्दा इकट्ठा करने की बात मानी थी, लेकिन अभी दिया किसी ने नहीं। चन्दे का नाम सुनते ही आप लोगों को जूड़ी आ जाती है। पश्चिम में एक आवाज पर हजारों रुपये घंटा-भर में झड़ जाते हैं।"

"गुस्सा मत करो, खेलावन। तुम्हीं ने अभी कहा कि पश्चिम के किसान पोढ़े हैं। उनके पास बीसों बीघे खेत हैं। हमारी उनकी क्या बराबरी? इधर के किसान की जेब की तलाशी लो। पाँच रुपये भी निकलना मुश्किल। लाठी-डंडे की चोट खानी हो तो जहाँ कहो, चलकर खा लें। रुपये की चोट सही नहीं जाती। जहाँ जरूरी हो, अपने पास से खर्च करो। कोई सौदा-सुलुफ बिकता है तो आकर दे जाएँगे।"

खेलावन के घर से चाय बनकर आ गई। सब सुड़क-सुड़ककर चाय पीने

लगे। "तब तो कहते थे कि मिल खुल रही है। खुशहाली लाएगी। गन्ना बोइए। बोने लगे तो यह हाल है।"

बाबा हरदयाल कहते हैं-" आज की रात शहरों में नया वर्ष मनाने की तैयारी चल रही होगी। लोग रात-भर नाचेंगे, गाएँगे। जश्न मनाएँगे। पटाखे और फुलझड़ियाँ छूटेंगी।

बिजली की झालरें सजेंगी। हमारे गाँव के हिस्से की बिजली भी उन्हीं के हिस्से में चली गई और हम यहाँ अँधेरे में बैठे बिसूर रहे हैं।"

सुबह प्रभाकर खरहरे से दुआर बुहार रहे थे। उनकी माँ इकट्ठा हुए कूड़े में आग लगाकर हाथ सेंक रही थीं। कुहरा पड़ रहा था। उस कुहरे को चीरकर जवाहर की साइकिल प्रकट हुई।

पाँड़े के न लौटने से बूढ़ी पहले से सशंकित थीं। प्रभाकर को अजनबी से बात करते देखो भी लपककर पास पहुंचीं और खबर सुनकर जहाँ खड़ी थीं, वहीं विलाप

चुप-चुप-चुप! प्रभाकर ने दौड़कर उनके मुँह पर हाथ रख दिया -"पूरे गाँव में खबर फैलाने का इरादा है क्या?"

बूढ़ी तुरन्त चुप हो गईं। निःशब्द सिसकते हुए आँसू और नाक पोंछने लगीं।

दोनों लोग घर के अन्दर आए। प्रभाकर ने पत्नी से कहा- "तुरन्त चार-पाँच

रोटियाँ सेंक दो।"

"दाल भी चढ़ा देती हूँ।"

"दाल नहीं। तुरन्त निकलना है। कुर्ते की जेब में रोटियाँ डाल लूँगा। रास्ते में खाता चला जाऊँगा। और देखो, घर में कितना पैसा है?"

प्रभाकर दातून कूचते हुए नहाने चले गए। घर में आठ हजार, चार सौ रुपये निकले। छोटे भी रात घर नहीं लौटे थे। पता नहीं, कहाँ पड़े होंगे! नहीं तो उनके मोबाइल से मालती के मामा को तैयार रहने के लिए कह देते। मोटरसाइकिल भी लेकर गायब हैं। साइकिल से जाने में एक-सवा घंटा लग जाएगा।

बाजार में पी.सी.ओ. खुला दिखा तो रुककर साले साहब को खबर करने लगे। पंडोही ने कहा- "यहाँ आने की क्या जरूरत है? सीधे तहसील पहुँचिए। मैं भी कुछ पैसों का इन्तजाम करके वहीं पहुँचता हूँ।"

प्रभाकर ने साइकिल तहसील जाने वाली सड़क पर मोड़ी। बाएँ हाथ से साइकिल सँभाली, दाहिने हाथ से जेब से रोटी निकालकर उसे गोल चोंगा बनाकर काट-काटकर खाने लगे।

अगम बहै दरियाव

जबाहर ने बताया कि पाँड़े को स्नान ध्यान करा दिया गया है। कुछ खाने-पीने से मना कर रहे हैं।

दोनों लोग बन्दीखाने के पास गए। पाँड़े की धोती बाहर सूख रही थी। आवाज सुनकर पाँड़े सीखचों के पास आ गए। उन्होंने अँगोछे को लुंगी की

तरह लपेट रखा था। मालती के मामा ने आश्वस्त किया कि घबराएँ नहीं। हम छुड़ाने का कुछ उपाय खोजते हैं।

तहसीलदार साहब बारह बजे के बाद बैठे तो दोनों लोग पेश हुए। बताया कि ट्रैक्टर चालू हालत में नहीं है, इसीलिए किस्तें नहीं भर सके। गरीब ब्राह्मण हैं। बीस हजार का इन्तजाम बड़ी मुश्किल से कर पाए हैं। जमा कराकर छोड़ने की करा मेहरबानी की जाए।

तहसीलदार साहब ने बहुत कड़ाई से स्पष्ट किया -"पूरा बकाया, मय ब्याज, दस प्रतिशत कलेक्शन चार्ज जोड़कर बेबाक करने के बाद ही छूटना हो पाएगा।"

दोनों लोग गेट के पास आकर सोचने-विचारने लगे। मालती के मामा ने कई जगह मोबाइल से बात की। फिर बोले- "मैं एक बार बाजार का चक्कर लगाकर आता हूँ। कोई प्रभावशाली परिचित मिल जाय तो सिफारिश कराने के लिए ले आऊँ। किसी सेठ से कुछ रकम भी उधार मिल जाए तो लाते हैं। बीस हजार जमा करने से तो छोड़ेगा नहीं। तब तक पाँड़े जी चाय वगैरह पीना चाहें तो पूछ लीजिए।"

आकाश में बादल छाये हुए थे। पाँड़े कंबल ओढ़कर पुआल पर लेटे थे। प्रभाकर की आवाज सुनकर सीखचों के पास आ गए। पूछा- "क्या हुआ?"

"हुआ तो अभी कुछ नहीं। आपको कुछ खाने-पीने के लिए ले आएँ?"

"मैंने अमीन से सबेरे ही कह दिया था कि पिछले बीस साल से मेरा नेम है, शालिग्राम को नहलाए और भोग लगाए बिना मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करता। शालिग्राम घर पर हैं।"

"तो क्या प्राण देंगे? पता नहीं कब तक अन्दर रहना पड़े !"

"अन्न-जल ग्रहण न करने वाली युक्ति मैंने यह सोचकर निकाली कि हो सकता है, ब्राह्मण के भूखे रहने की बात से ये लोग कुछ नरम पड़ें। बड़े सबेरे तेज भूख लगी थी तो जेब में शाम का रखा लाई चना खा लिया

था।... एक बात जरूर करनी है। अगर आज की रात यहाँ गुजारनी पड़ती है तो कहीं से एक कंबल का इन्तजाम करना होगा।

यहाँ के कंबल से बहुत बदबू आ रही है। रात में ठंड से कलेजा काँठ हो जाता है। पंडोही कहाँ गए?"

"गए हैं किसी सिफारिशी की तलाश करने जो तहसीलदार पर दबाव बना सके।"

"मुझसे खड़े नहीं रहा जा रहा है। मैं लेटता हूँ।"

प्रभाकर बाहर चाय की दुकान पर आ गए। सबेरे वही चार रोटियाँ पेट में गई थीं। अब चार बजने वाले थे। भूख लग गई थी।

पंडोही ब्लॉक प्रमुख को लेकर लौटे। सत्तारूढ़ दल की पार्टी में थे। लहीम-सहीम थे। नेता के पूरे ड्रेस में थे। सफेद खादी का कुर्ता, पायजामा और सदरी। हो सकता है, इनसे काम बन जाए। पंडोही ने प्रभाकर के कान में बताया कि एक सेठ से दस हजार रुपये भी उधार ले आए हैं।

इन्तजार होने लगा कि मुकदमों की सुनवाई खत्म हो, भीड़ छँटे तो मिलना ठीक रहेगा। छह बजे के बाद एकान्त हुआ तो तीनों लोग अन्दर गए। तहसीलदार से ब्लॉक प्रमुख जी की जान-पहचान थी। उन्होंने बताया कि अभी कुछ पैसा बाजार से उधार लेकर आए हैं, जमा कर लीजिए और इनका उद्धार करिए। मेरे बहुत ही खास हैं।"

"पार्ट पेमेंट का तो कायदा नहीं है।"

"कायदा-कानून सब आपके बाएँ हाथ का खेल है। तहसीलदार की पावर अथाह होती है। इज्जतदार आदमी हैं। शिकंजे में फँस गए हैं।"

फिर ब्लॉक प्रमुख ने दोनों लोगों को बाहर जाने का इशारा किया और खुद

अपना मुँह तहसीलदार साहब के कान के पास ले जाकर फुसफुसाए- " मैं सिफारिश में न आता लेकिन बात ऐसी है कि आना पड़ा। बकाएदार के लिए नहीं, बल्कि आपके लिए आना पड़ा। जिसको आपने बन्द किया है वह सुगर का क्रानिक पेशेंट है। पैंतीस-छत्तीस घंटे हो गए, कुछ खाया-पिया नहीं है। उठ-बैठ नहीं पा रहा है। कभी भी कोलेप्स कर सकता है। तब उलटे लेने के देने पड़ जाएँगे। ऊपर वाले पल्ला झाड़ अलग हो जाएँगे। आप फँस जाएँगे।"

जरूर तहसीलदार साहब खुद शुगर के मरीज रहे होंगे। ढीले पड़ गए। ब्लॉक प्रमुख थोड़ी देर तक आगे भी बोलते रहे लेकिन तहसीलदार साहब को वह सब सुनाई ही नहीं पड़ा।

पूछा- "कितना जमा करवा सकते हैं?"

"तीस हजार लाए हैं।"

"जाइए, जमा कराइए।"

दोनों लोग बहुत प्रभावित हुए। बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि इतनी जल्दी

संकट कट जाएगा। जानना चाहा- "कैसे बात बनी?" ब्लॉक प्रमुख जी ने उन्हें एक तरफ खींचकर बताया- "दंड और दाम दोनों का प्रयोग करना पड़ा। पहले यह कहकर समझाया कि आपको यहीं नौकरी करनी है और मुझे यहीं राजनीति करनी है। इसलिए दोनों को एक-दूसरे की बात सुननी पड़ेगी। फिर, मेरी जेब में हजार का एक नोट पड़ा था। उसे उनको दिखाते हुए सामने पड़ी फाइल के बीच में रख दिया। मानना ही था।... कल याद करके लौटा दीजिएगा।"

कागजी कार्यवाही पूरी हुई। बन्दीखाने का ताला खुला। सब बाहर मिठाई की दुकान पर आए। मिठाई-समोसा खाते, चाय पीते पाँड़े ब्लॉक प्रमुख

जी का गुन गाते रहे।

"क्या कहें? कर्ज लेकर फँस गया। जो कभी नहीं हुआ था, वह हो गया।"

बगल की पान की गुमटी वाला दुकानदार देर से पाँड़े की बात सुन रहा था। अचानक बोल पड़ा- "किस्त का पैसा जुटाने के लिए जाँगर पेरना पड़ता है, महराज। मशीन के साथ मशीन बनना पड़ता है। मेहनत करके कभी खाए नहीं। हरवाह-चरवाह कमाकर देते रहे, आप खाते रहे। देने की नीयत कभी रखी नहीं। लेना ही लेना सीखे, चाहे दान, चाहे भीख। आपको तो चाहिए था कि लोन लेने के बजाय सड़क किनारे की किसी सरकारी जमीन पर कब्जा करके मन्दिर की नींव डालते और चन्दे की रसीद छपवा लेते। पहले ही दिन से कमाई शुरू हो जाती।"

"अरे, बड़ा दुर्मुख है तू तो भवानी! " ब्लॉक प्रमुख ने डाँटा-"ऐसे कहीं बोला

जाता है?"

"यहाँ बकाया में बन्द होने वाले ज्यादातर जनेऊधारी ही आते हैं, नेताजी।"

"क्यों, और जातियों के लोग नहीं आते?"

"बहुत कम। मेहनतकश जातियों के लोग ज्यादातर वही आते हैं जो शराबी-कबाबी होते हैं या फर्जी लोनिंग में फँसाए गए होते हैं। जिन्हें पता ही नहीं होता कि उन्होंने कोई लोन लिया है।"

"चुप कर, नहीं तो किसी दिन मार खाएगा। पान लगा। एक जोड़ा खिला, एक बाँध दे। तम्बाकू अलग।"

पाँड़े ने महसूस किया कि कटु जरूर बोला पानवाला, पर गलत नहीं बोला। मशीन के साथ मशीन बनना पड़ता है। यही नहीं हो पाया।

बाप-पूत घर के लिए चले तो कुहरा शुरू हो गया था। चैन कवर पैडिल से रगड़ खाकर आवाज कर रहा है - खर्र खर्र खर्र।

अच्छा है। अँधेरे में घंटी का काम कर रहा है।

507

रात के दो बज रहे थे। तूफानी अपने समर्थकों के साथ आया और हॉल में पड़े तख्त पर ढह गया। कुछ समर्थक तख्त पर और कुछ नीचे बिछी दरी पर बैठ गए। सबके चेहरे पर घोर निराशा थी। किसी के मुँह से आवाज नहीं निकल रही थी।

तूफानी का टिकट कट चुका था।

'कट चुका' भी कैसे कहेंगे? घोषित ही नहीं हुआ। सत्ता पार्टी के विधायक की मृत्यु से खाली हुई इस सुरक्षित सीट से लड़ने के लिए तूफानी खुद को अपनी पार्टी का प्रबल उम्मीदवार मान रहा था। इसी विधानसभा को कार्यक्षेत्र बनाकर वह दो दशकों से पार्टी की जड़ जमाने में रात-दिन एक किए हुए था। सन् 1991 के चुनाव में मरा हुआ समझकर फेंका गया था। उस समय सिर में लगी चोट के कारण आज भी उसे कान में सीटी बजने की आवाज सुनाई पड़ती है।

वह सबेरे से ही पार्टी ऑफिस में अपने साथियों के साथ टिकट घोषित होने के इन्तजार में जमा था। दो-तीन कप चाय के अलावा सारे दिन पेट में अन्न का एक दाना नहीं गया। लेकिन अब उन सबकी भूख मर चुकी है। लगता है कि अब कभी भूख लगेगी ही नहीं।

जब से सीट खाली हुई, उसे इधर-उधर से आश्वस्त किया जा रहा था कि इस सीट से उसे लड़ाने का मन राजरानी बना चुकी हैं। आज तूफानी के समर्थकों ने दोपहर में ही माला-फूल का ऑर्डर दे दिया था। उनकी योजना थी कि टिकट घोषित होते ही पार्टी ऑफिस से माला-फूल से लादकर तूफानी को जीप में क्षेत्र तक ले चलेंगे। लेकिन टिकट घोषित हो गया राष्ट्रीय पार्टी से दो-दो बार विधायक रह चुकी कमला चौधरी को। जिनके राजधानी में दो-दो पेट्रोल पम्प हैं, गैस एजेंसी है और भी जाने क्या-क्या है! जिनके पति रिटायर्ड कमिश्नर हैं। राजधानी से लाकर उन्हें क्षेत्रवासियों के सिर पर बैठा दिया गया।

आज दोपहर में ही पार्टी फंड में एक करोड़ रुपये देने की घोषणा के साथ पार्टी में शामिल हुईं और दस घंटे के अन्दर टिकट पा गईं।

तूफानी के पूरे शरीर में झनझनाहट-चुनचुनाहट मची है। माथे पर पसीना चुहचुहा रहा है इतनी ठंड में भी। सिर दर्द से फटा जा रहा है। थोड़ी-थोड़ी देर में मुँह से 'होऽऽ' जैसा कुछ निकलता है और मुँह औंधे से सीधा या सीधे से औंधा हो जाता है। एक समर्थक सिर और दूसरा पैर दबाने लगा है।

"उठो, चलो।" तूफानी लड़खड़ाते हुए खड़ा होता है।

"ड्राइवर को जगाओ।"

"मंडल को-ऑर्डिनेटर के लिए भी 'राजरानी' के जन्मदिन के गिफ्ट की राशि जमा करने का टारगेट फिक्स कर दिया गया था। दो लाख रुपये। टारगेट फिक्स करने वालों को सोचना चाहिए कि अभी मेरी प्रैक्टिस कितने दिनों की हुई। प्रैक्टिस से दाल-रोटी चल जाए, यही बहुत है। जाति वहाँ भी राह रोककर खड़ी हो जाती है। ऐसे पिछड़े जिले में जिस वकील

का कोई पैतृक आधार न हो, दस साल तो लग जाते हैं सब्जी का खर्चा निकालने में। पाँच साल तक तो चाय पीने का पैसा घर से लेकर आना पड़ता है।"

"दलित पार्टी का कैडर कोई लखपति तो होता नहीं। रोज कमाने, रोज खाने वाले लोग। आप उनसे नारे लगवा लीजिए, चाहे झाड़ू लगवा लीजिए। चना-चबेना पर दिन काट लेंगे, लेकिन अगर कहो कि पाँच सौ रुपये चन्दा दे दीजिए तो कहाँ से देंगे? कार्यकर्ता तो खुद उम्मीद करते हैं कि वकील साहब अपने पैसे से चाय पिलाएँ। करना भी चाहिए। ऊपर बैठे लोग अगर गलत समझेंगे तो कैसे चलेगा?" बर्थडे राशि का संग्रह करने वाले ने, जो खुद भी विधायक थे, कहा था -"पाँच साल तक गाँव की परधानी भी तो किए हो ! उसकी कमाई किस मौके के लिए गाड़कर रखे हो? खोदो उसे।"

यह सोचकर कि पार्टी हाईकमान की नजरों में बने रहना जरूरी है, उसने इधर-उधर से जुगाड़ करके और मित्रों से उधार लेकर टारगेट की आधी रकम-एक लाख रुपये जमा की थी। साथ में शपथ पत्र -

मैं तूफानी सिंह अम्बेडकर, पुत्र शेर बहादुर उर्फ शेरू, निवासी गाँव बनकट (सियरहवा टोला), अपनी नेता बहन राजरानी के जन्मदिन पर बिना किसी जोर-जबरदस्ती या दबाव के पूरे होशोहवास में रुपये एक लाख, जिसका आधा पचास हजार होता है, अपनी खुशी से भेंट स्वरूप दे रहा हूँ।

और इसी के साथ उसके आत्मगौरव का बहुत बड़ा हिस्सा बुझ गया था। उधार लिया गया पैसा चुकाना अभी बाकी है और जिस मौके को हासिल करने की उम्मीद में कर्जदार बना, वह हाथ से छीन लिया गया।

कार्यकर्ता रामसुमेर का सहारा लेकर जीप की अगली सीट पर बैठते हुए तूफानी मरी आवाज में कहता है- "रामसुमेर भइया, मैं अपना तन बेच देता तो भी दो लाख पूरा नहीं कर सकता था। क्या दलित की बेटी को दलित की हालत का पता नहीं है?"

रामसुमेर समझाता है- " भइया, अब वे दलित की नहीं, दौलत की बेटी बन चुकी हैं।"

देश सूखा पड़ा, हम भिखारी रह गए

पाँड़े आजकल उदास रहते हैं। जबसे हवालात में बन्द हुए, मन बुझ गया है। अब उनका सारा सुख, सारी संतुष्टि सिर्फ चाय में सिमट गई है। सबेरे चाय मिल जाए तो फिर दोपहर तक किसी चीज की इच्छा नहीं होती।

चाय उन्हें एक लोटा चाहिए। पत्ती-दूध कम रहे चाहे ज्यादा, बस मीठी होनी चाहिए। मीठी और गरम। उसे वे कटोरे में उड़ेलकर फूंक-फूंक कर देर तक पीते हैं।

चाय पीकर वे खेतों की ओर निकले। आलू खुद गया है। उसका खेत खाली है। सरसों पक गई हो तो दो-चार दिन में काट लेनी होगी। अगर धूप में तेजी आ गई तो काटते समय आधी खेत में ही झड़ जाएगी। आलू और सरसों से खाली हुए खेतों में तुरन्त मूँग और उड़द बो देना है। पंडोही को खबर भेजनी होगी कि ड्राइवर को ट्रैक्टर लेकर भेज दें। समय से जोत-बो जाए। नीलगायों और बहेंतू जानवरों के चरने से बचा लिया गया तो दो-चार मन पैदा हो जाएगा।

सुनते हैं, कानपुर के सरकारी कृषि फार्म पर 'सम्राट' नाम की मूँग की कोई ऐसी किस्म ईजाद की गई है जो उड़द की तरह एक साथ फलती और पकती है। बार-बार तुड़वाने के लिए मजदूर की जरूरत नहीं पड़ती। हाथ

एकदम खाली है, नहीं तो मँगाकर इसी साल बोते।

अपनी रौ में सोचते हुए मेंड़ पर चले जा रहे थे, तभी पीछे से आवाज आई-"बाबू-बाबू, देखिए क्या छपा है अखबार में!"

दिवाकर की आवाज थी। खुशी से लबरेज। जब तक वे मुड़ते, दिवाकर ने उन्हें बाँहों में भर लिया। पाँड़े का जी जुड़ा गया। लगा कि बेटे की नौकरी बहाल हो गई।

उन्होंने पढ़ा, मोटे-मोटे अक्षरों में छपा था- सीमान्त और लघु किसानों के सभी ऋण माफ। नीचे विस्तार था - एक हेक्टेयर की जोत वाले सीमान्त और दो हेक्टेयर जोत वाले लघु किसानों का 31 मार्च, 2007 तक का सभी ऋण माफ। तीसरे पेज पर-चार करोड़ किसान साठ हजार करोड़ रुपये के कर्ज के जाल से मुक्त ।

पाँड़े की आँखों में इतने आँसू उमड़े कि अखबार के सारे अक्षर उसी में डूब गए। अखबार दिवाकर की ओर बढ़ाकर पाँड़े ने आकाश की ओर मुँह उठाया और

अगम बहै दरियाव

हाथ जोड़कर विगलित स्वर में बोले- "हम तो उजड़ ही गए थे, प्रभो! आपने उबार लिया। अब हम भी दुनिया में रह जाएँगे।" फिर अपने दोनों कान पकड़कर बोले-ससुर कहाएँ जो आगे कभी लोन लेने की सोचें।

पाँड़े वहीं से शिवालय गए और शंकर भगवान के आगे हाथ जोड़कर रुद्राष्टक पढ़ने लगे-

मैं निर्वाणस्वरूप, सर्वव्यापी ब्रह्म, वेदस्वरूप भगवान शिव को प्रणाम करता हूँ। उनकी आँखों से निरंतर आँसू बह रहे थे। रात को सोते समय एक क्षण के लिए उनके मन में विचार आया कि इतनी सारी किश्तें व्यर्थ ही जमा हो गई थीं।

श्रीमान कप्तान साहेब,

जयहिंद,

आपकी चिट्ठी पाकर बहुत अच्छा लगा। आपने मुझे भटका हुआ कहा है और लिखा है कि सरेंडर कर दूँ और छह-सात साल की सजा काटकर सही आदमी की जिन्दगी जीऊँ। क्या कहूँ साहब, सही आदमी बनकर सही काम कर पाता तो जरूर बन जाता, लेकिन ऐसा नहीं हो सकता।

मेरे पास इतना समय भी नहीं है कि छह-सात साल इत्मीनान से बैठकर जेल की रोटी खाऊँ। मुझे बहुत सारे दबाए-सताए लोगों को इंसाफ देना है। पढ़ाया गया था- 'इंसाफ की डगर पर बच्चो दिखाओ चलके ।' तो मैं इंसाफ की डगर पर चल पड़ा। स्कूल में प्रार्थना कराई जाती थी- 'हम दीन दुखी निबलों विकलों के सेवक बन संताप हरें।' तो मैं निबलों विकलों का सन्ताप हरने में जुट गया।

आपने लिखा है कि आप भी मेरी जैसी कठिन राह से निकलकर आए हैं और पढ़-लिख कर अपनी जगह बनाई है। पढ़ना मुझे भी बहुत अच्छा लगता था। अपनी कक्षा का मॉनीटर बनने वाला था, लेकिन पढ़ने ही नहीं दिया गया। पढ़ाया जाता था कि सदा सच बोलो और सच बोलने पर अड़े रहने के कारण ही स्कूल से निकाल दिया गया।

511

मैं जब से समझने लायक हुआ, अन्याय और अपमान झेल रहा हूँ। मेरे पिता को पीट-पीटकर मार डाला गया, बिना किसी गलती के।

मेरी टाँग तोड़ दी गई, बिना किसी गलती के। मेरी बहन को बेइज्जत किया गया। मुझे गाँव से भगा दिया गया। थाने में पीट-पीट कर ऐसा जुर्म कबुलवाया गया, जिसे मैंने किया ही नहीं। आज तक मैंने न एक हत्या की, न एक डाका डाला, लेकिन मेरी मशहूरी डाकू के रूप में है।

सरहंग कमजोरों पर जुल्म करते हैं और पुलिस सरहंग का ही साथ देती है। कमजोर का साथ देने वाला कोई नहीं। इसलिए यह काम मुझे अपने हाथ में लेना पड़ा। आपका यह कहना सही नहीं है कि मैं बाहुबली बनने की कोशिश कर रहा हूँ। मुझे पता है कि इस समाज में बाहुबली बनने के लिए सवर्ण या कम-से-कम मुसलमान होना जरूरी है और मुसलमान बाहुबली बन भी गया तो बहुत जल्दी या तो अन्दर जाएगा या ऊपर। मैं तो पुलिस का काम कर रहा हूँ। कायदे से मुझे भी सरकार के खजाने से तनखाह मिलनी चाहिए। अखबार में पढ़ा था कि आपने लावारिस लाशों का दाह-संस्कार करने वाले बाबाजी को माला पहनाकर सम्मानित किया है। मैं मुर्दा फूंकने का नहीं, बल्कि मुर्दों में जान फूंकने का काम कर रहा हूँ। क्या इसके लिए मेरा सम्मान नहीं होना चाहिए?

आप कहते हैं कि जंगू कानून अपने हाथ में लेकर शान्ति भंग करता है। आपकी नजर में शान्ति उस दिन भंग होती है, जिस दिन मैं अन्यायी को सजा देता हूँ। मेरी नजर में शान्ति उस दिन भंग होती है, जिस दिन अन्यायी कमजोर पर जुल्म-ज्यादती करता है। बस, यही अन्तर है। जबकि न आप चाहते हैं कि शान्ति भंग हो, न मैं।

मैं समाजविरोधी नहीं, अन्यायविरोधी हूँ। आपकी पुलिस जाति- धर्म और अमीर-गरीब देखकर अपना पक्ष चुनती है। मैं हर अन्यायी को सजा देता हूँ और हर सताए गए को न्याय देता हूँ, चाहे उसकी जाति या धर्म कुछ भी हो। सर जी, मैं ऐसी दुनिया बनाने में लगा हूँ जिसमें न कोई मुझे सताए, न मैं किसी को सताऊँ। न कोई मुझे दबाए, न मैं किसी को दबाऊँ। मेरा नारा है-

दबना नहीं। दबाना नहीं ॥

रोना नहीं। रुलाना नहीं ॥ झुकना नहीं। झुकाना नहीं ॥

सर जी, जिसकी छट्ठी-बरही होती है, उसकी तेरही भी होती हैं। मेरी तो और जल्दी होगी। मुझे पता है कि मेरी जिन्दगी के दिन गिने-चुने हैं। इसलिए जितने दिन बचे हैं, धरती का बोझ कम करने के काम में लगा रहना चाहता हूँ।

आपका यह कहना बिलकुल सही है कि कानून के हाथ लम्बे होते हैं जो एक दिन मेरी गर्दन दबोच लेंगे। मैं तो चाहता हूँ कि वे इतने लम्बे हो जाएँ कि सताने वालों की गर्दन दबोचने और सताए जाने वालों को राहत देने के लिए खुद उनके दरवाजे तक पहुँचने लगें। अभी वे इतने लम्बे नहीं हैं। इसीलिए सताए जाने वालों के बीच से जंगू जैसे जनसेवक पैदा होते रहते हैं। सताए।

आशा है, आप मुझे इंसाफ की डगर पर चलने का ज्यादा से ज्यादा मौका देंगे।

आपकी नजर में भटका हुआ...

जनसेवक, जंगू

अखबार में कर्ज माफी की खबर पढ़ने के बाद पाँड़े को यह दुनिया खूबसूरत लगने लगी। सूरज-चाँद-सितारे अधिक चमकीले लगते।

आसमान अधिक नीला, पेड़-पौधे अधिक हरे, दूध-दही अधिक उजले लगते। अरहर की दाल का स्वाद बढ़ गया। मन करता कोई ऐसा मिले जिससे मजाक कर सकें और ठठाकर हँस सकें।

सबसे ज्यादा अचरज में तो कंजी कुतिया है। माघ में उसने पाँड़े के घर के सामने पुआल में गुफा बनाकर पिल्ले जने थे। महीने भर के होते-होते वे टहलते-घूमते, काट-कटौवल खेलते, पाँड़े के दुआर तक पहुँचने लगे। जहाँ-तहाँ गन्दगी करते और पुराने जूते-चप्पल घूरे से लाकर खेलने के बाद दुआर पर ही छोड़ जाते। पाँड़े रोज

सबेरे खरहरे से बुहारकर अपना दुआर चमकाते और थोड़ी ही देर में पिल्ले आकर सब भरभंड कर देते। पाँड़े गन्दी गन्दी गालियाँ देते हुए किलकिलाकर दौड़ते और जो कुछ हाथ लग जाए उसी को फेंककर मारते। कंजी सामने पड़ जाती तो दूर तक दौड़ाते-ससुरी को मेरा ही दुआर मिलता है हर साल बियाने के लिए। लेकिन इधर पाँड़े ने उसके पिल्लों को मारना-पीटना एकदम बन्द कर दिया है। बहुत हुआ तो ताली पीटकर या हो-हो करके भगाते हैं।

सुरक्षित दूरी पर बैठकर तिरछी नजर से पाँड़े को ताकती कंजी समझ नहीं पा रही है कि आखिर इस आदमी को हो क्या गया।

एक शाम प्रभाकर की अम्मा संध्या वंदन के लिए कुशासनी बिछाने आईं तो पाँड़े बोले-"कभी थोड़ी देर पास भी बैठ जाया करो। हमेशा दूर-दूर ही रहती हो।" प्रभाकर की अम्मा को बहुत अच्छा लगा। जमाना गुजर गया पाँड़े के मुँह से अपने लिए ऐसे चाहत के बोल सुने। लेकिन प्रगट में बोलीं-"बहू-बेटियों के घर में जब चाहो तब कैसे आकर बैठ जाएँ। हाथ-पाँव हाथ दर्द कर रहा हो, आवाज लगाओ तो काहे नहीं आएँगे?

और संध्या वंदन खत्म होते ही आकर बगल में बैठ गईं। अँधेरे से लड़ते

दीये के टिमटिमाते प्रकाश में दोनों लोग देर तक सुख-दुख की बातें करते रहे। फिर पाँड़े हाथ जोड़कर आसमान की ओर देखते हुए बोले- "ऐसे ही भगवान एक दिन दिवाकर की बहाली की खबर भेज देते, और अब कुछ नहीं चाहिए।"

पहलवान शाम को ओसारे में बैठकर पगहा बर रहे थे, तभी खेलावन आए और बाहर खड़े-खड़े ही बताया कि "कल सबेरे मिल गेट पर प्रदर्शन करने चलना है।" "अरे, अन्दर तो आइए। किस बात के लिए प्रदर्शन? फिर कुछ गड़बड़ हुआ है क्या?"

"अभी पूरे गाँव में खबर करनी है।" कहने के साथ-साथ खेलावन अन्दर आकर नगरे पर बैठ गए- "गड़बड़ तो नहीं कहेंगे। सुप्रीम कोर्ट ने कुछ तो हम लोगों के आँसू पोंछे ही हैं। 19 दिसम्बर वाले हाई कोर्ट के आदेश पर सुप्रीम कोर्ट ने 18 जनवरी को स्थगन दे दिया था। अभी 15 मई को वर्ष 2007-08 के सीजन के लिए भी 110 रुपये कुंटल की दर से भुगतान करने का आदेश कर दिया है।

साथ ही मिल मालिकों को यह भी आदेश दिया है कि वे तीन हफ्ते में इस रेट से भुगतान करना सुनिश्चित करें, लेकिन आप तो जानते ही हैं कि मिल मालिक कितनी मोटी चमड़ी के लोग होते हैं। यह प्रदर्शन मिल मालिकों पर दबाव बनाने के लिए है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय रेट पर तुरन्त भुगतान करें।"

"लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने पन्द्रह रुपया काट क्यों दिया?"

"यह तो अन्तरिम आदेश है। इतना भी पाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर

लगाना पड़ा। आप तो जानते ही हैं, मिल मालिक पूरी ताकत झोंक देते हैं।"

"लेकिन मिल मालिक हैं कितने? हम लोग तो लाखों में हैं।"

"वहाँ छप्पर थोड़े उठाना होता है कि संख्याबल काम आ जाएगा! असली ताकत तो यह है-" खेलावन अँगूठे और तर्जनी से रुपये ठनकाने का इशारा करते हुए कहते हैं- "मिल मालिक बड़े-बड़े वकील खड़ा कर देते हैं। कई-कई वकील, जो एक बहस के लिए लाखों-लाख फीस लेते हैं, वे सिद्ध कर देते हैं कि उनका मुवक्किल किसानों से भी ज्यादा बदहाल है। अगर उसे राहत नहीं दी गई तो उसके पास जहर खाने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं रहेगा।"

"और जज लोग इसे सच मान लेते हैं?"

"मानना ही पड़ता है। कहा गया है कि रुपये की माई पहाड़ चढ़ती है।"

"क्या कह रहे हैं? वहाँ भी रुपया चलता है?"

"रुपया तो सारे हिन्दुस्तान में चलता है। वह जगह हिन्दुस्तान से बाहर है क्या? रुपया अकल का दरवाजा खोल देता है। मान लीजिए, उनका वकील तर्क करता है कि मिल मालिक दुर्लभ प्रजाति के जीव हैं। इन्हें विशेष संरक्षण मिलना चाहिए। जैसे शेर-बाघ को मिलता है। जैसे सरकार उनके लिए अभयारण्य बनाती है। उनके आहार के लिए चीतल-हिरन पालती है कि वे जितना चाहें, मारे-खाएँ। मिल मालिक के लिए गन्ना किसान क्या हैं? हिरन चीतल ही तो हैं। वे करोड़ों में हैं। अगर सौ-पचास मिल मालिकों को बचाने के लिए लाख-दो लाख किसानों की बलि भी देनी पड़े तो कौन-सा पहाड़ टूट जाएगा? इतनी आत्महत्या तो किसान रोज खुद ही करते हैं। कोई फरक पड़ता है। मैं 'योर आनर' को यकीन दिलाना चाहता हूँ कि किसान विलुप्त होने वाली प्रजाति नहीं है। इनकी संख्या दिन दूनी रात चौगुनी की दर से बढ़ती रहेगी। यह इन्हीं के हित में होगा कि इन्हें उतना ही दिया जाय, जितने से यह जिन्दा रह सकें। न मरैं, न मोटाँय। सरकारें वोट की लालच में इनको इनके हाजमे से ज्यादा दे देती

हैं। अगर न्यायपालिका ही इस पर अंकुश न लगाएगी तो कौन लगाएगा?

"बगल में खड़ा उनका दूसरा वकील तर्क करता है- योर आनर, चिड़ियाघर

के बाघों को खिलाने के लिए तो रोज सैकड़ों बकरे काटे जाते हैं। फर्ज कीजिए, किसी दिन ये कटने से इनकार कर दें तब? तब तो बगावत ही हो जाएगी। लॉ एंड आर्डर कुछ रह जाएगा? आखिर वे कटने के लिए ही तो पैदा हुए हैं। और क्या उनको हल में नाधेंगे?

"तब तक उनका तीसरा वकील बोल पड़ता है- जैसे संरक्षण पाना शेरों-बाघों का अधिकार है, इन द सेम मैनर...

"चौथा वकील बीच में ही लोक लेता है-मी लार्ड, वेदों-पुराणों में कहा गया है कि जीवो जीवस्य भोजनम्। मतलब कि...

"अब तक जज साहब की समझ में इतना कुछ आ चुका होता है कि मतलब समझाने की जरूरत नहीं रह जाती। उनकी कलम उठ जाती है और किसानों के हिस्से की रकम कटकर मिल मालिकों के हिस्से में जुड़ जाती है।"

पहलवानिन दो कप चाय दे जाती हैं।

"जज साहब लोगों को तो पब्लिक भगवान का दर्जा देती है।"

"देने की क्या बात? वे हैं ही धरती के भगवान। लेकिन भगवान ने ही तो हिरनों, बकरों को शेरों का भोजन बनाया है। हजारों साल से बकरे और हिरन शेरों बाघों के लिए शहीद हो रहे हैं, कभी उनकी सुनवाई भगवान के दरबार में हुई कि बस, अब बहुत हो गया? अब हमें भी अपनी पूरी उमर जीने दीजिए!"

खेलावन कप में बची चाय समाप्त करने के लिए अल्पविराम लेते हैं फिर

कहते हैं- "देखो भइया, मकड़ी के जाले में कौन फँसता है? मक्खी-मच्छर ही तो। हमारा कानून उतना ही मजबूत है, जितना मकड़ी का जाला। मकड़ी उसे इतना मजबूत बनाती है कि उसके वजन से सौ गुने ज्यादा वजन वाला जीव उसमें फँस जाय तो निकल नहीं सकता। लेकिन आप कहें कि उसमें वह बिल्ली फँसा ले तो कैसे फँसा लेगी?

"अब देखिए, मिल मालिक रूपी बिल्ली कैसे कानून का जाला फाड़ती है। तौलाई सेंटर पर किसान ने अपना गल्ला तौलवाकर मिल को सौंप दिया। अब वह गन्ना मिल का हो गया। लेकिन सेंटर से मिल तक उस गन्ने की ढुलाई का खर्च भी मिल किसान के भुगतान से काट लेती है- सात-आठ रुपये कुंटल की दर से। क्यों भला? कहते हैं, हमें 'ऊपर' तक देना पड़ता है। पहले तो पाँच रुपये कुंटल ही देना पड़ता था। जब से नई सरकार आई, दस रुपये कुंटल देना पड़ता है। पूछिए, ऊपर माने कहाँ? इसे और साफ करिए तो कहेंगे- और साफ करेंगे तो खुद साफ हो जाएँगे।"

पहलवान कहते हैं-"सच बोलने में किसका डर?"

अगम बहै दरियाव

"आप थाने के सिपाही के खिलाफ भी सच बोलकर चैन से नहीं बैठ सकते, वे तो बहुत लम्बे हाथ वाले लोग हैं! फिर भी लम्बी लड़ाई लड़ने का फायदा मिला है। अदालत ने लम्बी सुनवाई के बाद इससे मुक्ति दे दी है। अब जरूरत है, हकीकत में इस मुक्ति आदेश को लागू कराने की। यह धरना-प्रदर्शन इसे भी लागू कराने के लिए है।"

बनकर गाँव का जत्था भोर में ही निकल पड़ा। भीड़-भाड़ में साइकिल मुसीबत बन जाएगी, इसलिए दुर्गापुर बाजार तक पैदल और वहाँ से टेम्पो या बस जो मिल जाए। बड़े लोग मोटरसाइकिल से पहुँचेंगे।

आज जत्थे की अगुआई पाँड़े बाबा कर रहे हैं। उन्होंने अपने मटमैले अँगोछे को साफे की तरह बाँध लिया है। अगर यही लाल रंग का होता, तब देखते!

पाँड़े बाबा कहते हैं-"अरे भाई, कुछ गाना-बजाना होता चले। शमशान घाट जाने के लिए थोड़े निकले हैं! "

इसीलिए खेलावन ने नन्दू को भी नगड़ची लेकर चलने के लिए कहा था। नगड़ची होती तो उसकी टंकार ही समाँ बाँधने के लिए काफी होती। लेकिन फोड़े जाने के डर से वह नगड़ची लेकर नहीं आया।

सर पर कफन बाँधकर निकली हम वीरों की टोली।

"नहीं, नहीं। कफन बाँधने की क्या जरूरत है भाई?"

फिर कुछ देर तक चुप्पी।

गिरधारी प्राइमरी स्कूल में अपनी कक्षा के मॉनीटर रहे हैं। आगे पढ़ पाते तो आगे भी रहते। वे शुरू करते हैं- "झंडा ऊँचा रहे हमारा..."

"लेकिन झंडा है कहाँ?"

पाँड़े बाबा खुद कोई हिम्मत-हौसले वाला गीत याद करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अब याददाश्त जवाब देने लगी है।

तभी पीछे-पीछे चल रहे नन्दू टेरते हैं-

देश सूखाग्रस्त हो गया और हम भिखारी रह गये।

"इस मौके पर ऐसा गाना?"

"क्या हुआ? सही तो गा रहे हैं," बाबा हरदयाल कहते हैं, "सबकी किस्मत

बदल गई। बस हम किसानों की नहीं बदली। जब नवाबों, अंग्रेजों, जमींदारों का राज था तब भी हम भिखारी थे और आज भी भिखारी हैं,

सुराज मिलने के इतने सालों बाद भी।"

"लेकिन आज के दिन तो हम मिल मालिकों की दाढ़ी का बाल नोचने निकले

"खाक निकले हैं! नन्दू सही कह रहे हैं। हम सब भिखमंगे हैं। भीख माँगने निकले हैं।"

"भिखमंगे नहीं, दर भिखमंगे। भिखमंगों से भी गए-बीते। भिखमंगे तो भीख में दूसरों की चीज हासिल करते हैं। हम तो अपने ही खून-पसीने की कमाई भीख में माँगने निकले हैं।"

सिर पर कफ़न बांधे भिखारियों का एक समूह बाहर आया।

सब एक-दूसरे का मुँह देखने लगते हैं। कोरस गीत सुनाई सबको पड़ रहा है, लेकिन पता नहीं चल रहा है कि गा कौन रहा है? अपने भिखारी होने के बोध ने उन्हें निर्वाक् कर दिया है।

पाँड़े का जत्था पहुँचा तो डेढ़-दो सौ किसान आ चुके थे। घंटे डेढ़ घंटे में हजार-बारह सौ की भीड़ जुट गई। ज्यादातर अधेड़ या बूढ़े। जिनके पास टोपी नहीं थी, उन्हें यूनियन की ओर से हरी टोपी दी गई। जैसे हजारों तोते मैदान में उतर आए हों।

पुलिस पहले से पहले से डंडा लिये, टोप लगाए मौजूद थी। मंच बन गया। माइक बँध गया।

...हेलो, हेलो! हमें जवाब चाहिए कि देश की सबसे बड़ी अदालत के आदेश के बावजूद हमारा पेमेंट क्यों लटकाया जा रहा है? क्या मिल मालिक खुद को सारी अदालतों से ऊपर मानते हैं?

मैनेजमेंट चाहता है कि किसानों के पाँच प्रतिनिधि वार्ता के लिए मिल के भीतर आएँ।

यूनियन चाहती है कि खुले मंच पर माइक के आगे आमने-सामने बैठकर वार्ता हो ताकि सब सुन सकें।

अन्त में एक अधिकारी मंच पर आकर बोलना शुरू करता है- "मिल किसानों से है, किसान मिल से नहीं। माननीय उच्चतम न्यायालय ने जो आदेश किया है, उसका शत-प्रतिशत पालन करने के लिए हम कृतसंकल्प हैं। हमारी मजबूरी यह

है कि मिल भयानक घाटे में चल रही है। अन्तरराष्ट्रीय बाजार में चीनी की कीमत बहुत गिर गई है। हमारे संघ ने सरकार से दो हजार करोड़ रुपये का राहत पैकेज माँगा था। हमें खुशी है कि सरकार ने हमें यह राहत पैकेज देने का आश्वासन दे दिया है। इस आश्वासन के भरोसे हम आपको आश्वासन देते हैं कि जिस दिन यह रकम हमारे खाते में आएगी, सेम डे आपके खाते में पहुँच जाएगी।"

शोर उठा-" इस आश्वासन को हम ओढ़ें कि दसाएँ। आश्वासन से कहीं पेट भरता है।"

"पिछले साल सूबे की सरकार ने मिल मालिकों को अल्टीमेटम दिया था कि 31 अगस्त तक सारा भुगतान कर दें। कहाँ करा पाई? इनके आगे तो सरकार भी लाचार है।"

"आश्वासन नहीं, भुगतान चाहिए। आज चाहिए। अभी चाहिए।"

'भाइयो, आपको टस से मस नहीं होना है। हम जेठ की इसी चिलचिलाती धूप में शहीद हो जाएँगे, लेकिन..."

" कोई-न-कोई 'आज खाली हाथ लौट गए तो ये फिर कोई-न-कोई झाम फँसा देंगे।"

" 'अब क्या झाम फँसाएँगे? कंटेम्प्ट आफ कोर्ट हो जाएगा।"

"इनको कुछ नहीं होगा। जो कुछ होगा, हमीं लोगों को होगा।"

"मिल प्रशासन - मुर्दाबाद!"

"किसान यूनियन-जिन्दाबाद!"

तभी मिल के अन्दर से चार-पाँच ढेले आकर मंच पर गिरे। एक ढेला उस अधिकारी के सिर में लगा। वह सिर पकड़कर बैठ गया।

पुलिस डंडा भाँजते हुए टूट पड़ी।

पुलिस का साथ देने के लिए मिल के कर्मचारी आ गए।

भगदड़ मच गई।

पाँड़े की पीठ पर दाहिने कन्धे के पास कसकर एक डंडा पड़ा। वे गिर पड़े। तभी पीछे से उनके ऊपर दूसरा कोई गिरा और पाँड़े के हिस्से के बाकी डंडे उसकी पीठ पर पड़ने लगे।

बूढ़े-अधेड़ ज्यादा तेज भाग भी तो नहीं सकते थे! पुलिस ने हीक भर मारा। दर्जनों के सिर फट गए।

किसानों की पिटाई में पुलिस की मदद करने वाले मिल कर्मचारी डंडा फेंककर स्वयंसेवक की भूमिका में उतर गए। चीनी लादने के लिए खड़े खाली ट्रकों में घायलों को लादकर अस्पताल पहुँचाने लगे।

जो चलने-फिरने की हालत में थे, उन्होंने हाय-हाय करते, गिरते-पड़ते, हरी

टोपी के नीचे से बहकर आते खून को पोंछते अपने-अपने घर की राह

पकड़ी। "वकीलों की फौज खड़ी करने के लिए इनके पास करोड़ों है, लेकिन हमारी खून-पसीने की कमाई के बदले इनके पास हमेशा लाठी रहती है।"

सबेरे अखबारों में छपा-हिंसक भीड़ को काबू में करने के लिए न्यूनतम बल प्रयोग करना पड़ा।

मिल प्रशासन ने इस घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताया।

दिवाकर ट्रैक्टर वापस ले आए।

"यह क्या किया?" पाँड़े नाराज हुए -"न किसी से पूछना न पछोरना।"

"अब मैं खाली हूँ तो खुद चलाऊँगा।"

"दुनिया क्या कहेगी? यही न कि लोन माफ हो गया तो उठा ले गए।"

"तो क्या उनके हाथ बेच दिया था?"

"अरे ससुर के नाती, तुम कुछ समझते क्यों नहीं? जब तुम सड़ने के लिए खड़ा करके भाग गए थे तो वे ले गए। अपनी गाँठ से पैसा लगाकर मरम्मत कराए। कुछ न कुछ किस्त की रकम भी जमा कर रहे थे। जैसे ही लोन माफ होने का पता चला तुम दौड़े-दौड़े गए, उठा लाए। एक बार घर में चर्चा तो कर लेते। तुम्हारी जोताई-मड़ाई तो वे अपना ड्राइवर भेजकर समय-समय पर करा ही रहे थे।"

दिवाकर की माँ भी समझाने लगीं- "लाना ही था तो तरीके से लाया जाता, इस तरह लट्ठमारी से थोड़े ! ओछा काम कर दिये।"

पाँड़े समझाने के स्वर में कहने लगे - "जब चलाना था तब तो चलाए नहीं। तब तो मेहरारू के सिखाने में चलते थे। मैं पकड़ा गया तो वही छुड़ाकर लाए थे। तुम तो झाँकने तक नहीं आए !"

दिवाकर फनफनाते हुए ट्रैक्टर पर बैठे और भड़भड़ाते हुए निकल गए।

अगम बहै दरियाव

लगता है, आजकल गन्ना किसानों के ऊपर लक्ष्मी जी मेहरबान हैं। मई, 2008 में सुप्रीम कोर्ट ने सीजन 2007-08 के लिए 110 रुपये कुंटल की दर से भुगतान करने का अन्तरिम आदेश पारित किया था और 7 जुलाई, 2008 को हाई कोर्ट की लखनऊ पीठ ने मोदी शुगर मिल के केस में 125 रुपये कुंटल की दर से भुगतान करने का आदेश दे दिया। कोर्ट ने कहा कि सीजन 2007-08 के लिए सूबे की सरकार ने 125 रुपये कुंटल की दर से भुगतान करने का जो आदेश दिया था, वह सही है। यह भी आदेश दिया है कि दो महीने के अन्दर सारे बकाए का भुगतान कर दिया जाए।

किसानों के चेहरे खिले हुए हैं।

जहाँ भी चार लोग इकट्ठा होते हैं, अपनी खुशी का इजहार करते हैं। सबके पास कहने के लिए कुछ न कुछ है।

"यह तो बाकायदा दोनों पक्षों को सुनकर दिया गया फैसला है। एकदम फाइनल। अब बचकर कहाँ जाएँगे बेटा लोग!"

"जज साहब लोग न हों तो ये मिल वाले किसानों को पीसकर पी जाएँ।"

"आप क्या समझते हैं कि वे लोग सेटिंग करने की कोशिश न किए होंगे! लेकिन दुनिया से अभी ईमान-धरम एकदम ही नहीं उठ गया है।"

"आखिर मिला इंसाफ। भले देर से मिला।"

"भगवान के घर देर है, अन्धेर नहीं है।"

सबको अपने गन्ना बकाया की रकम जबानी याद है।

"ब्याज की रकम भी जोड़कर रखिए।"

" मुझे तो डर लग रहा है कि मिल वाले फिर कोई झाम न फँसा दें।"

इस आशंका पर बात बढ़ाकर कोई अपनी खुशी पर ग्रहण नहीं लगाना चाहता। झाम-झमेले के बादशाह तो वे लोग हैं ही।

और ग्रहण लग ही गया!

एक दिन खबर फैली कि हाई कोर्ट की इलाहाबाद पीठ ने 18 अगस्त, 2008 को पेराई सीजन 2007-08 के लिए सूबे की सरकार द्वारा निर्धारित 125 रुपये कुंटल की दर से भुगतान करने के आदेश को रद्द कर दिया और आठ महीने पहले बस्ती शुगर मिल के केस में दिए गए फैसले को ही कमोबेश दोहराते हुए कहा कि कमेटी बनाकर उसकी संस्तुति प्राप्त की जाए और उसी के अनुसार सरकार रेट निर्धारित करे। तब तक केन्द्र सरकार द्वारा इस वर्ष के लिए निर्धारित एमएसपी 81 रुपये कुंटल का रेट दिया जाए।

बाजार में कई गाँव के किसान इकट्ठा हैं। अखबार में खबर छप चुकी है,

फिर भी सब एक-दूसरे से तसदीक करना चाहते हैं। क्या पता, कोई इस खबर को झूठी कह दे !

"विश्वास नहीं होता कि ऐसा हुआ होगा। एक ही हाई कोर्ट की दो पीटें एक ही मुद्दे पर, दो विपरीत फैसले कैसे दे सकती हैं? एक पीठ सरकार के उसी आदेश को सही ठहरा रही है, दूसरी उसी आदेश को गलत।"

"विश्वास तो केन कमिश्नर को भी नहीं हो रहा है। अखबार में उनका बयान छपा है कि वे किसके आदेश का पालन करें।"

"क्या होगा भगवान इस देश का ? चारों तरफ कितना हँसौवा हो रहा होगा!"

"एक माननीय न्यायमूर्ति ने जिसे दिन कहा, दूसरे ने उसे रात कह दिया। एक ने जिसे सफेद कहा, दूसरे ने उसे स्याह कह दिया।"

"कोर्ट-कचेहरी से ही उम्मीद रहती थी। अब वहाँ से भी विश्वास उठ जाएगा।"

"समझ सभी रहे हैं कि ऐसा क्यों हुआ होगा लेकिन कहे कौन कि राजा आपन गौड़या ढाँकि ल्या।"

सुख-दुख नहीं महसूस होता। जो "उनके लेखे हम मिट्टी के बोरे हैं। हमें सुख चाहे, ठोकर मारकर चला जाए।"

"मेरा तो कहना है कि किसानों को अब जहर खा लेना चाहिए, क्योंकि उन्हीं की वजह से मिल मालिक हों चाहे जज साहबान, चाहे सरकारें, सभी को झमेला झेलना पड़ता है।"

किसानों के बीच में आकर एक पत्रकार ने बाबा हरदयाल के मुँह से माइक सटाकर पूछा- "जब आपको हाई कोर्ट के 18 अगस्त वाले फैसले की जानकारी हुई तो कैसा लगा?"

"वैसा ही जैसे अभी आपको बिना कसूर दस जूता मारा जाए तो लगेगा।"

इसी के साथ सवाल-जवाब खत्म हो गया।

लेकिन बनकट गाँव में शाम का माहौल अलग है। कुछ लोगों का मानना है कि खेलावन चन्दा वसूलकर खा गए। ऐसा हो ही नहीं सकता कि सही जगह पर पैसा पहुँचता तो अपना असर न दिखाता।

"सिपाही की भर्ती में हचककर दलाली खाई। बेटे की शादी में हचककर दहेज दबाया। इससे तिजोरी नहीं भरी तो चन्दे की रकम डकार गए।"

"तिजोरी तो भरी, लेकिन हीक नहीं भरी।"

खेलावन के मुँह पर भले कोई कुछ न कहे, लेकिन घूम-फिरकर सारी बात उनके कानों तक पहुँचती है। यह बात वह भी कह रहा है जिसने अभी तक एक

अगम बहै दरियाव

पैसा चन्दा नहीं दिया! छह महीने में सात लोगों ने कुल अठारह सौ रुपये चन्दा दिया है। वे कल ही सबको वापस कर देंगे। सही कहा गया है- गगरी के मुँह पर ढक्कन लग सकता है, आदमी के मुँह पर नहीं।

पाँड़े को यह जानने में चार महीने लग गए कि उनका मामला माफी योजना के अन्तर्गत नहीं आता। पहले तो बैंक ने बताया कि अभी सरकार की ओर से कोई गाइड लाइन नहीं आई। अखबार की खबर के आधार पर राइट ऑफ थोड़े हो सकता है! फिर गाइड लाइन आई तो साफ हुआ कि 31 मार्च, 2007 तक के पिछले दस वर्षों का कर्ज माफ किया गया है। उनका कर्ज मार्च, 1996 का है; ग्यारह साल पहले का। इसलिए माफी योग्य नहीं है।

पाँड़े को लगा कि अचानक उनका शरीर चैत-बैशाख के गन्ने की तरह सूखने लगा है। सिर भाँय-भाँय करने लगा। शरीर की सारी ताकत लगाकर उन्होंने प्रतिवाद किया-"लेकिन अखबार में तो ऐसी किसी सीमा की बात छपी नहीं थी!"

"जरूर छपी होगी। आपने ठीक से पढ़ा नहीं होगा।"

मैनेजर की बात पर पाँड़े को गुस्सा तो बहुत आया लेकिन पी गए। मैनेजर को गुस्सा दिखाने का कोई मतलब नहीं था। उनकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। वे बैंक में इधर से उधर चक्कर काटते रहे। कभी मैनेजर के केबिन में जाते, कभी किसी स्टाफ से कुछ जानना चाहते। मैनेजर ने गार्ड को बुलाकर कहा- इसको बाहर निकालो। काम नहीं करने दे रहा है। गार्ड उन्हें बाहर करने लगा तो पाँड़े ने ऐसा झटका दिया कि उसकी बन्दूक कन्धे से छिटककर फर्श पर जा गिरी। पाँड़े को बाहर करके गार्ड ने जँगले में ताला डाल दिया।

अगले तीन-चार दिन पाँड़े दूसरे बैंकों में जाकर असलियत का पता लगाने की कोशिश करते रहे। वहाँ से भी यही पता लगा कि उनका बकाया माफ होने की समय सीमा में नहीं आता। यह भी पता चला कि जब वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री बने थे तो उन्होंने भी तीन साल का कर्ज माफ किया था। अब जो भी सामने पड़ता, वे उसी को रोककर कहते-"पीछे भी माफ कर दिया, आगे भी माफ कर दिया। हमें बीच में फँसा दिया। अरे भाई जब आप दस वर्ष का साठ हजार करोड़ माफ कर रहे थे तो बीच का हजार करोड़ और माफ कर देते। सभी का सारा माफ हो जाता।"

वे एक तर्क और देते- जो दो साल तक बकाया जमा नहीं कर पाया उसकी माली हालात ज्यादा खराब मानी जाएगी कि जो बारह-पन्द्रह साल तक नहीं दे पाया। माफी की जरूरत ज्यादा किसको थी? जब सन् 1997 का बकाया आप माफ करने लायक मानते हैं तो 1996 का कैसे छोड़ सकते हैं?

- बिलकुल सही कह रहे हैं आप। लेकिन यह सब सड़क पर कहने से क्या होगा? बैंक को अथाह पावर होती है। वे जाने कब से बड़े-बड़े उद्योगपतियों का करोड़ों-करोड़ बकाया हर साल माफ करते आ रहे हैं। एक झटके में। और एक ही साल नहीं, हर साल, बिना नागा। तो आपका भी करें। जाकर उनकी खोपड़ी पर सवार हो जाइए। खुद न करना चाहें तो ऊपर 'रेफर' कर दें। आप ऊपर से करवाइए।

रेफर करनेवाली बात पाँड़े को जँच गई। देखिए, मिलने-जुलने से ही रास्ता मिलता है। वे अगले दिन ही मैनेजर के पास पहुँच गए।

मैनेजर ने उन्हें समझाने की कोशिश की- अब कुछ नहीं हो सकता।

"रेफर करने में आपकी नानी क्यों मर रही हैं? हम ऊपर से कराएँगे।"

"किसको रेफर करें? ऐसा कोई प्रोसीजर ही नहीं है।"

"हम आपको कानून सिखाएँगे क्या?" हमें नहीं पता कि कैसे आप लोग बिगड़ा काम बनाते और बना काम बिगाड़ते हैं?

मैनेजर साहब ने उन्हें अपने केबिन में बिठाया। मिट्टी के कुल्हड़ में चाय पिलाकर शान्त कराना चाहा। तब भी पाँड़े रेफर करने की जिद पर अड़े रहे तो कहा-ठीक है, जो कुछ रेफर करना चाहते हैं, लिखकर दे दीजिए।

कहने के साथ मैनेजर ने एक कलम और कागज उनकी ओर बढ़ाया।

पाँड़े ने कहा- मैं बाहर बैठकर इत्मीनान से समझ-बूझकर लिखूँगा। बहुत कुछ लिखना है। एक पन्ना और दीजिए।

तीसरे दिन बैंक खुलते ही पाँड़े मैनेजर के केबिन में घुसे। देखते ही मैनेजर ने हाथ जोड़ दिए-आपका मामला उसी दिन रेफर कर दिया, ब्राह्मण देवता। अब हमें बख्स दीजिए। दूसरों का काम भी करने दीजिए।

"रेफर कर दिया है तो उसकी कापी दीजिए। अमीन पीछे पड़ा है। जब तक

समाधान नहीं हो जाता, तब तक वसूली तो रोकिए। आर.सी. तो तहसील से वापस मँगाइए! "

हरिद्वार अमीन कहता - " जो होना था, हो गया। अब आपके लिए फिर कैबिनेट बैठेगी क्या? तहसील के दस बड़े बकाएदारों में आपका नाम तीसरे नम्बर पर है। बेबाकी नहीं किए तो इसी मार्च में खेती-बारी कुर्क कर दूँगा।"

अमीन को जहर बोलने की ट्रेनिंग दी जाती है क्या? बोली से ही बरछी घोंप देते हैं।

अगम बहै दरियाव

पुलिस की गाली भी इतना गहरा घाव नहीं कर सकती। लेकिन अमीन की पावर वे जानते हैं। उससे मीठा बोलने में ही कल्याण है।

"कुर्क करके क्या पाएँगे? कोई रास्ता बताइए।"

"रास्ता यही है कि कोई कानूनी राह खोजिए या मंत्री लेबल के किसी बदजुबान नेता को सीधे डीएम साहब से भिड़ा दीजिए।"

"मंत्री तो छोड़िए, कोई संतरी भी मेरी पकड़ में नहीं है, भाई! बिना स्वार्थ के कोई किसी की नहीं सुनता आज के जमाने में। मैं सीधा-सादा खेतिहर, किसके काम का हूँ! आप ही कोई राह निकालें नहीं तो इस भँवर में डूब जाऊँगा।"

हरिद्वार कुछ देर तक पाँड़े की आँखों में ताकता रहा। फिर कहा- "पाँड़े बाबा, स्वार्थ से ऊपर कौन है? मैं भी नहीं हूँ। अमीन की पावर ही कितनी, लेकिन खर्च-बर्च को तैयार हों तो इस मार्च में आपकी कुर्की-नीलामी टाल सकता हूँ।"

"कैसे टालेंगे?"

"यह मत पूछिए। ।। आम खाने से मतलब रखिए, पेड़ गिनने से नहीं।"
रखिए, पेड़

"फिर भी, तसल्ली के लिए..."

"आपकी आर.सी. बैंक को वापस कर दूँगा। ।। इस मार्च का संकट टल जाएगा। दुबारा आर.सी. आने में छह महीने लग जाएँगे। तब तक कोई और दाँव खोज लीजिएगा।"

"खर्च कितना पड़ेगा?"

हरिद्वार ने दाएँ-बाएँ देखा। फिर पाँड़े की दाहिनी हथेली अपने सामने करके उस पर उँगली से रकम लिखी।

"यह तो बहुत ज्यादा है, अमीन साहब!"

"आर.सी. की रकम भी तो बहुत ज्यादा है, महराज! कितनी है, पता है?"

पाँड़े ने इनकार में सिर हिलाया।

हरिद्वार ने बैग से आर.सी. निकालकर उनके सामने कर दी - "तीन लाख इकतीस हजार तीन सौ पाँच रुपये। इसमें आर.सी. कटने की तारीख के आगे का ब्याज और दस परसेंट कलेक्सन चार्ज भी जोड़ लीजिए।"

पाँड़े के मुँह से आवाज नहीं निकली।

आर.सी. बैग में डालते हुए अमीन ने कहा- " चलता हूँ। जैसा हो, एक-दो दिन में बता दीजिएगा।"

पाँड़े ने थूक निगलकर गला तर किया। फिर कहा- "कम-से-कम एक हफ्ते की मोहलत दीजिए... आँखों के आगे अन्धकार छा गया है... अँधेरे में कुछ सूझ नहीं रहा है..."

"एक हफ्ते की नहीं, एक महीने की मोहलत लीजिए, लेकिन जितना कहा है, उतना इन्तजाम करके लौटिए।"

वांछित राशि का आधा लेकर एक महीने बाद अमीन के सामने हाजिर हुए पाँड़े। गिनने के बाद अमीन का मुँह बन गया। पाँड़े ने दीन स्वर में स्थिति स्पष्ट की-" नहीं कर पाया। इतनी रकम भी पत्नी की हँसुली गिरवी रखकर जुटाई है।" सुनकर अमीन चुप रह गया। पाँड़े को लगा कि पिघल गया। पता नहीं, हँसुली गिरवी रखने की बात सुनकर पिघला कि पाँड़े के ब्राह्मण होने के नाते। लेकिन जाते-जाते बोला, "पाँच हजार बकाया रहेगा। जब हो तब याद करके दे जाना।" अगले एक-डेढ़ महीने अमीन आर.सी. बैग में दबाए रहा, फिर एक दिन तहसील गया। आर.सी. की दूसरी कॉपी निकलवाई। बाकीदार के खाने में दर्ज था-भगवत पाँड़े, पुत्र...

अमीन ने स्याही और कार्बन का मिलान करके दोनों प्रतियों पर 'भगवत' के 'त' को 'ती' बना दिया। फिर आर.सी. के बाएँ मार्जिन पर रिपोर्ट लगा दी-दिए गए पते पर 'भगवती पाँड़े' नाम का कोई आदमी नहीं मिला। प्रेषणकर्ता को आवश्यक कार्यवाही हेतु वापस ।

पास जर का माल था लाखों-करोड़ों

सरकारी वकील सोना से जिरह कर रहा है।

"अगर तुम बोल सकती हो तो बोलकर, वरना इशारे से जवाब दो। क्या तुम्हारा नाम सोना है?"

सोना स्वीकार में सिर हिलाती है।

"क्या तुम फौजी की पत्नी हो?

स्वीकार में सिर हिलाती है।

"क्या तुम मरने वाले को पहले से जानती थीं?"

"स्वीकार।

"क्या तुम्हारे पति ने उसे तुम्हारे सामने मारा?"

फौजी की ओर देखती है।

"क्या तुमने मरने वाले को बचाने की कोशिश की?"

सिर नीचे झुका लेती है।

"क्या उस लड़के के साथ तुम्हारे गलत सम्बन्ध थे?"

इनकार।

"क्या मृतक तुम्हारे घर में घुसकर जबरन तुम्हारी इज्जत लूटने की कोशिश कर रहा था?"

इनकार।

"दोनों से इनकार? लेकिन तुम्हारे पति ने बयान दिया है कि मृतक बदचलन था। वह बलात्कार के इरादे से तुम्हारे घर में जबरदस्ती घुसा था और तुम्हारी इज्जत लूटने के लिए तुम्हें घसीटकर कोठरी की ओर ले जा रहा था। तुम चिल्लाई थीं। तुम्हारी चीख सुनकर तुम्हारा पति दौड़कर आया था और तुम्हें छुड़ाने के इरादे से मृतक से भिड़ गया। मृतक ने वहाँ पड़ा सब्जी काटने वाला चाकू उठा लिया और जान से मारने के इरादे से तुम्हारे पति के ऊपर झपटा। दोनों गुत्थमगुत्था हो गए। इसी छीना-झपटी में मृतक के हाथ का चाकू ही मृतक के पेट में घुस गया और उसकी मौत हो गई।"

"नहीं, नहीं।" अचानक चिल्ला पड़ती है सोना-"यह सब झूठ है।"

"ऐं।" उसको बोलता देखकर सब चौंक जाते हैं। सरकारी वकील तुरन्त पूछता है- "तो सच क्या है?"

"सच यह है कि बुल्लू खराब चाल-चलन वाला आदमी नहीं था। वह मेरे घर में जबरदस्ती नहीं घुसा था। वह कालेज से अपने घर लौट रहा था तो मेरे पति ने उसे दौड़ाकर अपने दोस्त बहादुर की मदद से पकड़ा और घर के अन्दर लाकर आँगन में पटककर चाकू मारा था। रसोई के चाकू से नहीं मारा। चाकू उसके पास पहले से था।"

"लेकिन मारा क्यों?"

सोना सिर घुमाकर फौजी की अंगार हो रही आँखों को देखती है, फिर कहती है-"उस पर शंका का भूत सवार था। वह सोचता था कि मेरा बुल्लू से गलत सम्बन्ध है। उसके दोस्त बहादुर ने उसे बरगला दिया था।"

"क्यों बरगला दिया था?"

"बहादुर चाहता था कि जब मेरा पति नौकरी पर बाहर रहे तो मैं उसके साथ सोऊँ।"

"तुमने अपने पति को यह बात नहीं बताई थी?"

"बताई थी, लेकिन वह बहादुर की बात पर आँख मूँदकर विश्वास करता था।"

"यह बातें तुमने जाँच अधिकारी के सामने क्यों नहीं बताई। गूँगी क्यों बन गई?"

"मैं डर गई थी।" वह रोनी आवाज में कहती है। "मेरे आदमी ने मुझे डरा दिया था

कि बोलेगी तो जेल भेजवा दूँगा।"

फौजी पैर पटककर चिल्लाता है- "हरामजादी! "

"तो आज क्यों बोली? क्यों बताया?"

सोना सिर झुकाकर बोलती जा रही है-" उस लड़के पर झूठा कलंक लगाना मुझसे बर्दास्त नहीं हुआ... मेरी आँखों के सामने उस बेकसूर की जान चली गई... मरते समय की उसकी पथराई आँखें आज भी मुझे बेचैन कर देती हैं..."

सरकारी वकील तुरन्त कहता है- "हुजूर नोट किया जाय। सोना का बयान मृतक के बड़े भाई द्वारा लिखाई गई एफ.आई.आर. से पूरी तरह मेल खाता है, जिसमें अभियुक्त द्वारा मृतक को खेतों में दौड़ाकर पकड़ने और घर के अन्दर ले जाकर मारने की बात कही गई है। दोनों चरवाहों के होस्टाइल हो जाने के चलते अभी तक हमारे पास कोई चश्मदीद गवाह नहीं था, लेकिन अब कड़ी से कड़ी जुड़ रही है। सोना के बयान से यह गुत्थी भी सुलझ गई कि जब बरामद किचन के चाकू के फाल की लम्बाई चार इंच है तो पोस्टमार्टम रिपोर्ट में घाव की गहराई छह इंच कैसे पाई गई? मुल्जिम ने हत्या में प्रयुक्त चाकू छिपा दिया और उसकी जगह

किचन का चाकू बरामद करा दिया जिससे यह सिद्ध होता है कि यह हत्या ठंडे दिल-दिमाग से की गई है। मृतक को दौड़ाकर पकड़ने की बात, मृतक के भाई को, मृतक के सहपाठी ने बताई थी जो उस दिन मृतक के साथ ही कालेज से लौट रहा था। वह लड़का भी चश्मदीद गवाह है, लेकिन गवाही के लिए हाजिर नहीं हुआ। मैं हुजूर से गुजारिश करता हूँ कि सच्चाई के ऊपर पड़ा पर्दा पूरी तरह से हटाने के लिए उस लड़के को कोर्ट में तलब किया जाय।"

थोड़ी देर सन्नाटा रहता है। फिर सरकारी वकील कहता है- "मेरी दूसरी गुजारिश यह है कि गवाह और मुल्जिम पति-पत्नी हैं, और एक ही घर में रहते हैं। इस बयान के बाद गवाह को मुल्जिम से जान का खतरा पैदा हो गया है। इसलिए जरूरी है कि मुल्जिम की जमानत खारिज करते हुए उसे कस्टडी में लेकर जेल भेजा जाय।"

"हुजूर, मुझे अपना बचाव करने का मौका दिया जाय। मैं गवाह पेश करके साबित कर दूँगा कि यह सारी कहानी झूठ का पुलिंदा है," बचाव पक्ष का वकील कहता है।

कस्टडी में कोर्ट से बाहर निकलते हुए पैर पटक-पटककर चिल्ला रहा है फौजी- "हरामजादी, छिनार ! दिखा दिया न तूने अपना तिरिया-चरित्तर। खुद साबित कर दिया कि तू उस लौंडे से फँसी थी। अब मुझे तेरे यार को मारने का कोई पछतावा नहीं है। लौटकर तुझे भी हलाल करूँगा।"

अगम बहै दरियाव

सरकारी वकील तुरन्त कहता है- "हुजूर, मुल्जिम की यह धमकी खास तौर पर नोट की जाय। मुल्जिम ने खुद स्वीकार कर लिया है कि उसी ने बुल्लू को मारा है और उसे इसका कोई पछतावा नहीं है।"

पाँड़े की जमीन कुर्क हो गई।

कुर्की का नोटिस मिला तो परेशान हो गए। सूझ ही नहीं रहा था कि इतनी बड़ी रकम का इन्तजाम कहाँ से करें? रिश्तेदारों में दौड़े, लेकिन रिश्तेदारों में कोई इतना सक्षम नहीं था। कई रिश्तेदार थोड़ी-थोड़ी मदद कर सकते थे, लेकिन सुनते आए हैं कि उधार के लेन-देन में रिश्ते खराब हो जाते हैं। ब्याज की तो कोई उम्मीद भी नहीं करता, पर अक्सर मूलधन भी वापस नहीं मिलता। मदद करिए या रिश्ता बचाइए।

एक रास्ता यह था कि जितनी जमीन लोन अदा करने के लिए जरूरी हो, उतनी बेच दी जाए। तब भी आधी के करीब जमीन बच जाएगी। सवर्ण जातियों में तो खेती की बहुत भूख अब रही नहीं। पहले से ही काम भर की खेती है। उलटे हर बेटी के ब्याह में बीघे-दो बीघे बेचने की नौबत आ जाती है। श्रमजीवी जातियों के पास जमीन कम है। उन्हें खेत की भूख रहती है। वे पेट काटकर खेत खरीदने के लिए पैसा जोड़ती हैं। उन्हीं के बीच से कोई खरीदार तैयार हो जाए तो बात बन सकती है।

पहलवान कई दिनों से इलाके के सम्भावित खरीदारों से सम्पर्क कर रहे हैं, लेकिन हर जगह विश्वास का संकट आड़े आ जाता है।

बिक्री के लिए जरूरी है कि जमीन बंधन-मुक्त हो। इसके लिए जरूरी है कि कर्ज की सम्पूर्ण राशि बैंक में जमा हो जाए। पाँड़े के इस आश्वासन पर कि जमीन बंधन-मुक्त होते ही वे बैनामा कर देंगे, खरीदार बैंक में कर्ज की राशि जमा कर दे और मुक्त होते ही पाँड़े अपने वादे से मुकर जाएँ तो क्या होगा? खरीदार तो फँस जाएगा।

"ऐसा कैसे होगा? पाँड़े ऐसे आदमी हैं क्या?"

"कौन कैसा आदमी है, यह पहले से थोड़े पता होता है! मौका आने पर पता चलता है। तेवारीपुर के घुरहू का किस्सा भूल गए क्या?"

घुरहू ने अपने गाँव के पुजारी को दस हजार रुपये एडवांस देकर एक जमीन का सौदा पक्का किया। रुपये का प्रबन्ध करने के लिए अपनी दो भैंसें और पत्नी

सोना ने कानों पर हाथ रख लिया। पहलवान का मन हुआ कि पास जाकर सोना को तसल्ली दे। लेकिन क्या कहकर...? उनके पैर नहीं उठे।

थोड़ी देर में सारी कचहरी में हल्ला हो गया- "एक औरत ने अपने मर्द के खिलाफ गवाही देकर उसे फाँसी लगवा दिया।"

"कलजुग का चौथा चरण चल रहा है भाई। देखते जाइए, आगे क्या-क्या होता है!"

पाँड़े की बेचैनी बढ़ गई। कुर्की हो गई है तो देर-सबेर नीलामी होनी ही है। इस बीच वे पचासों लोगों से मिले। तहसील और बाजार में भूखे-प्यासे भटकते रहे, कहीं से कोई उम्मीद की किरण नजर आ जाए !

उन्हें पता लगा कि नीलामी का आदेश तो एस.डी.एम. करेगा, लेकिन बाकी सारी कार्यवाही नीलामी अधिकारी करेगा। अक्सर हलके का नायब

ही नीलामी अधिकारी होता है। तो पाँड़े भटकते-भटकते एक शाम नायब के घर पहुँचे।

नायब ने उन्हें आश्वस्त किया- "कुर्की भले हो गई है, लेकिन नीलामी इतनी जल्दी नहीं होगी। ब्राह्मण की जमीन नीलामी में खरीदने के लिए जल्दी कोई तैयार नहीं होगा। एक-दो बार नीलामी टलेगी ही।... और नीलामी की कार्यवाही भी आपके गाँव या बाजार में नहीं करूँगा, तहसील में करूँगा। यहाँ तक बोली बोलने वाले नहीं पहुँचे तो भी कुछ मोहलत मिल जाएगी। और नीलामी की कार्यवाही होने के बाद भी बकाया जमा कर दोगे तो नीलामी रद्द हो सकती है। सरकार को बकाए से मतलब है। जाइए, जमा करने का उपाय सोचिए।"

क्या उपाय सोचें? कोई अकल काम नहीं कर रही। कई दिन तक दिमाग दौड़ाने के बाद उन्हें अपने एक मौसेरे भाई की याद आई। बचपन में बम्बई कमाने गए। बाद में डायनेमो बनाने की फैक्टरी लगा ली। बहुत पैसा कमाया। बड़े आदमी बन गए हैं। बाल-बच्चों को लेकर बम्बई में ही रहते हैं।

इधर पन्द्रह-बीस साल से कोई बात-व्यवहार नहीं है। मौसी जिन्दा होतीं तो पहचानतीं, लेकिन बताने पर तो जान ही जाएँगे। वे अगर मदद कर दें तो मेरा उद्धार हो सकता है। मुफ्त में तो माँग नहीं रहे हैं! जब बिकने की नौबत आ गई है तो वही खरीद लें। घर की प्रॉपर्टी घर में ही रह जाएगी। मौसेरे भाई हैं। आधा खून साझा है।

मान तो जाना चाहिए। आधी जमीन लिख देने से ही लोन पट जाएगा। आधी बच जाएगी।

उन्होंने पत्नी मे सलाह की। पत्नी को बहुत उम्मीद नहीं लगी। उनका कहना था कि जब अपनी जमीन ही छोड़कर शहर में बस गए हैं तो आपकी क्यों खरीदेंगे? लेकिन कोशिश करने में क्या जाता है!

भेंट के लिए तीन किलो गुड़, तीन किलो ढूढ़ी और एक किलो देसी घी लेकर पाँड़े बम्बई जाने वाली ट्रेन में बैठ गए। छत्तीस घंटे की यात्रा थी। रास्ते के लिए पैड़ाइन ने ठोंकवा* बाँध दिया था।

तीसरे दिन बम्बई पहुँच गए। फिर तीन दिन लग गए उन्हें मौसेरे भाई का घर खोजने में। इतना ही पता था कि दादर स्टेशन पर उतरना पड़ता है। वहाँ से पाँच-छह किलोमीटर पर है। वे तो निराश होकर लौटने की सोच रहे थे, तभी उनके गाँव के पास के एक बरई मिल गए। पान की दुकान चलाते थे। उन्होंने सूत्र से सूत्र जोड़ा तो वे पहुँच सके।

लेकिन मुलाकात से भी कोई फायदा नहीं हुआ। पता नहीं, मौसेरे भाई सचमुच सब कुछ भूल चुके थे या न पहचानने का नाटक कर रहे थे। चार दिन लग गए पाँड़े को उनसे अपनी रिश्तेदारी समझाने में। चार दिन में टुकड़े-टुकड़े में मुश्किल से घंटे भर बात करने का मौका मिला। दोनों भतीजे भी एक बार पैर छूकर गए तो फिर सामने नहीं आए। मौसेरे भाई की पत्नी भी तो रिश्ते में उनकी भौजाई लगती थीं, लेकिन मिलकर हाल-चाल पूछने की कौन कहे, एक बार सामने भी नहीं पड़ीं। एक बार घर के अन्दर से एक नारी स्वर सुनाई भी पड़ा तो वह था- जब रुपये-पैसे की जरूरत होती है तो लोग रिश्तेदारी जोड़ने आ जाते हैं। जैसे यहाँ कमाकर गाड़ गए हों। समझते हैं कि शहर में रुपये का पेड़ फरता है। जाइए और हिलाकर ढो लाइए। वैसे कोई कटी उँगली पर मूतने को तैयार नहीं होता।

सुनकर पाँड़े के कान के कीड़े झड़ गए। अब रुकने का क्या मतलब? वापसी में सोचते रहे कि वे यहाँ आए ही क्यों? विपत्ति में बुद्धि कुंद हो जाती है।

चालीस घंटे के भूखे-प्यासे दोपहर में घर पहुँचे तो पता चला कि आज ही तहसील में नीलामी लगी है। घर में मातम पसरा था। प्रभाकर तहसील गए थे।

पाँड़े को भूख-प्यास भूल गई। तुरन्त तहसील की राह पकड़ी। लेकिन प्रभाकर बस स्टॉप पर ही मिल गए। उसी समय तहसील वाली बस से

उतरे थे। बिलखते हुए बताया कि "सारी जमीन पौने तीन लाख में नीलाम हो गई... आधे घंटे में सारा खेल खतम हो गया...

* महुए की पूड़ी

अगम बहै दरियाव

"अपने रघुनन्दन ने ही तो ली नीलामी। यह न बोलते तो कोई और बोली बोलने वाला नहीं था। वे ही कोरम पूरा करने के लिए अपने बड़े भाई के साले और उनके एक पड़ोसी को लेकर आए थे। न्यूनतम सरकारी मूल्य दो लाख साठ हजार तय हुआ। उनके साले ने दो लाख पैंसठ हजार की बोली लगाई और पड़ोसी ने दो लाख सत्तर हजार की। फिर रघुनन्दन ने बढ़ाकर दो लाख पचहत्तर हजार किया। वही अन्तिम हो गई।"

फिर तनिक रुककर बोले- "सब पहले से सधा-बधा था, बाबू। रघुनन्दन ने नायब को खरीद लिया था। माटी के मोल नीलाम हो गई।"

पाँड़े का चेहरा कठोर हो गया। उन्होंने अपने अँगोछे से प्रभाकर के बह चले आँसुओं को पोंछा और दोनों लोग चुपचाप आगे-पीछे घर की ओर चले।

पाँड़े राह चलते याद करने लगे। बहुत पुराना दाँव साधा रघुनन्दन ने। उनके पिता कनक तिवारी की एक विधवा भाभी थीं। उनके पेट में अवैध गर्भ ठहर गया। यह पचास साल पहले की बात है। बदनामी से बचने के लिए उन्हें घर में ही मार दिया गया। कहा गया कि उल्टी-दस्त से मर गईं। सबेरे सारे पड़ोसी, पट्टीदार जुटे। शवयात्रा के पहले जब पड़ोसी औरतों ने मुँह में गंगाजल डालने के लिए उनका मुँह खोला तो मुँह में कटी हुई उँगली का टुकड़ा मिला। शोर हो गया कि इनकी हत्या की गई है। साफ था कि जिसकी उँगली का टुकड़ा मुँह में मिला है, उसी ने मुँह-नाक दबाकर मारा होगा। कनक तिवारी सामने नहीं आ रहे थे। लाश तो जला दी गई। पुलिस केस नहीं बना, लेकिन कनक तिवारी सामने आए तो उनकी दाहिनी कनिष्ठा उँगली पर पट्टी बँधी थी। खोलकर देखा गया। कनिष्ठा का अगला एक-तिहाई हिस्सा गायब था। साबित हो गया कि कनक तिवारी ने ही

मारा। भाभी का घर से बाहर निकलना-पैठना तो होता नहीं था। घर में पुरुष के रूप में केवल कनक तिवारी थे। यानी यह गर्भ कनक तिवारी का जन्माया था।

पंचायत हुई और कनक तिवारी को दो जीवों की हत्या और व्यभिचार का दोषी माना गया। जुर्माना लगाया गया और बिरादरी बाहर रहने का दंड दिया गया। आज तक गाँव के किसी ब्राह्मण परिवार से उनका खानपान नहीं है। उस पंचायत के सरपंच भगवत पाँड़े के पिता बाउर पाँड़े ही थे। कनक तिवारी के बड़े बेटे का विवाह तो हो गया था, लेकिन रघुनन्दन से पाँच साल बड़ी बहन का विवाह नहीं हो पाया। वे आजीवन कुँवारी रह गईं। खुद रघुनन्दन बिनब्याहे रह गए और तीस साल की उम्र में बंगाल से छह हजार में एक लड़की खरीदकर उससे ब्याह किया।

तब से कनक तिवारी का परिवार भगवत पाँड़े के परिवार से रंजिश पाले हुए था।

पाँड़े के खेत नीलामी में खरीदकर आज तिवारी परिवार की छाती जुड़ा गई होगी।

दोनों लोगों का उदास चेहरा देखकर ही प्रभाकर की माँ सब समझ गईं। कोई किसी से नहीं बोला। सारा घर भाँय-भाँय कर रहा था। चूल्हा नहीं जला। अँधेरा होते ही जो जहाँ पड़ा था, वहीं पड़ा रह गया।

पाँड़े को रात-भर लगता रहा कि चारपाई उन्हें लेकर गोल-गोल घूमती हुई आसमान में उड़ी जा रही है।

पहलवान के घर में उदासी है। जब से यह लगा कि खेत में बचा रह गया गन्ना जलाना पड़ेगा, परिवार दुखी हो गया है।

इस साल गन्ना खूब सधा हुआ था। लम्बा-मोटा और घना। दो बीघे का रकबा था। दस ट्राली तक निकलने की उम्मीद थी। गर्मी में तीन बार गुड़ाई की गई थी। पप्पू भी पूरी बाँह की कमीज और पायजामा पहनकर गुड़ाई में जुटे थे। पूरी बाँह की कमीज इसलिए कि बाँहों को गन्ने की धारदार पत्तियों से चिरने से बचाया जा सके। आग लगाए जाने से पहलवान से कम दुखी पप्पू नहीं हैं।

सच पूछिए तो गन्ने की पेराई का सही समय दीवाली से होली के पन्द्रह दिन पहले तक का है। इस समय मौसम ठंडा रहता है और खूब ओस पड़ती है। गन्ने की सूखी पत्तियों की धार ओस से इतनी नरम हो जाती है कि उन्हें छीलने या अँटियाने में हाथ में चीरा नहीं लगता। गन्ना हरा रहता है। रस से भरा रहता है। तौल में वजन पकड़ता है।

लेकिन कुछ रसूखदार लोगों को छोड़कर मिल नजदीक के किसानों को शुरुआती महीनों के लिए सप्लाई की पर्ची नहीं देती। पहले दूर के गन्ने की सप्लाई लेती है। जानती है कि पास के किसान और कहाँ जाएँगे। झख मारकर उन्हीं को सप्लाई देंगे। शुरुआती महीनों की पर्ची पाने के लिए बहुत तिकड़म लगानी पड़ती है। मुट्ठी गरम करनी पड़ती है। मुट्ठी तो गन्ने का रकबा लिखवाने के लिए भी गरम करनी पड़ती है। गन्ना ग्राम सेवक को मिला लीजिए तो बिना गन्ना बोये ही बीघे-दो बीघे गन्ने का रकबा दर्ज करा सकते हैं। उसी इन्दराज के आधार पर पर्ची जारी हो जाएगी जिसे ब्लैक करके तेज-तर्रार लोगों के लड़के मोबाइल और जूते खरीदते हैं।

पहलवान को जनवरी और फरवरी की सप्लाई के लिए दो-दो और मार्च के लिए तीन पर्चियाँ मिली थीं।

उम्मीद थी कि अप्रैल के लिए भी तीन पर्ची मिल जाएँगी तो सारा गन्ना निकल जाएगा। लेकिन मार्च में एक ट्राली की सप्लाई ही कर पाए थे कि मिल बिगड़ गई। बीस दिन तक पेराई बन्द रही। अप्रैल में चली तो फिर एक ट्राली सप्लाई की। दूसरी खेप काटकर तैयार की ही थी कि मिल ने पेराई सत्र की बन्दी घोषित कर दी। हाथ में पर्ची रहते हुए सप्लाई नहीं हो सकी। यहाँ पश्चिम की तरह के दस-बीस एकड़ की जोत वाले किसान तो हैं नहीं। छोटी-सी जोत में गृहस्थी का सारा मेल मिलाना पड़ता है। दलहन भी, तेलहन भी, आलू भी, गेहूँ भी, चरी भी, बरसीम भी। ऐसे में दस ट्राली गन्ने में चार ट्राली बेकार चली जाए तो कितना खलेगा?

अगर पूस-माघ में ही पता चल जाता कि सारी सप्लाई नहीं हो पाएगी तो कोल्हू में पेरकर गुड़ बना लेते। अब तो वह भी नहीं हो सकता ! गन्ने का आधा रस तो खेत में ही सूख गया। जो रस निकलेगा, उसकी भेली नहीं बँध पाएगी। राब की तरह लीट हो जाएगा। लप्सी की तरह पसर जाएगा। गगरी में भरकर रखिए और घोलकर खुद पीजिए या बैलों को पिलाइए।

पहलवानिन गुस्से से कहती हैं-" आगे से गन्ना बोना बन्द। लू और धूप में गोड़ाई, सिंचाई करिए। कटाई, छँटाई, लदाई, ढोवाई के लिए मजदूरों की मिन्नत करिए। खरीद सेंटर पर किराए की ट्राली लिये भूखे-प्यासे दो-दो दिन तक काँटा कराने का इन्तजार करिए। घटतौली सहिए। भुगतान के लिए धरना-प्रदर्शन करिए। लाठी खाइए। यह सब सहने के लिए तैयार रहिए, तब भी खेत में जलाना पड़ रहा है। नहीं पालना ऐसा जी का जंजाल! धान, गेहूँ बो कर ही राजी रहेंगे।"

'धान-गेहूँ में ही कौन-सी बरक्कत हो जाती है? बो तो रहे हैं आजा-बाबा के समय से धान-गेहूँ।' पहलवान, पहलवानिन को जवाब देना चाहते हैं लेकिन चुप रह जाते हैं। पहलवानिन को भी यह बात पता है। वे तो बस मन का गुबार निकाल रही हैं।

पप्पू खेलावन से जानना चाहते हैं- " अभी तो किसानों का सैकड़ों बीघा गन्ना खेत में खड़ा है, काका। तब मिल ने पेराई क्यों बन्द कर दी?"

"गर्मी के चलते, बेटा। मिल वाले कहते हैं कि गर्मी बढ़ने पर ग्लूकोज की जगह सुक्रोज बनने लगता है। गर्मी से चीनी की रिकवरी भी घट जाती है। कहते हैं कि रिकवरी पौने दस प्रतिशत से कम हो जाती है तो मिल को चलाने में घाटा होने लगता है। वे घाटा क्यों सहें?"

"तो गर्मी आने के पहले सारा गन्ना क्यों नहीं पेर लेते? उस समय तो मिल बिगाड़कर बैठ जाते हैं।"

"मिल बिगाड़ना भी जरूरी होता है।" खेलावन भेद-भरी मुस्कान बिखेरते हैं-

"मिल के बिगड़ने से भी मिल वालों को 'बनने' का मौका मिलता है। किसानों को अर्दब" में लेना आसान हो जाता है। कमीशन का रेट बढ़ जाता है।"

पहलवान जैसे खुद से कहते हैं-" तैयार फसल में आग लगाना जैसे जवान बेटे के सिर पर मौर बाँधने के मौके पर उसे कफन ओढ़ाना... लेकिन करना पड़ रहा है..."

सूखे तिलेठे** का बोझ सिर पर रखकर पहलवान सबेरे सूरज उगने के साथ गन्ना फूंकने निकलते हैं। उनके पीछे उनका कुत्ता झबरू। रबी की फसल कट चुकी है। आसपास के खेत खाली हैं। हवा शान्त है। यही सही समय है गन्ने में आग लगाने का।

मेंड़ पर पहुँचकर वे तिलेठे का बोझ खोलकर खेत में फैलाते हैं और सिर मेंड़ पर टिकाकर बुदबुदाते हैं- "हे ईख महरानी, माफ करना। फूंकने के लिए तो बोया नहीं था। हर कार्तिक एकादशी को पूजकर आपसे बरक्कत का आशीर्वाद माँगते रहे। आप हमारे कपड़े-लत्ते, पोत-नात और शादी-ब्याह का खर्च पूरा करती रहीं। कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि इन्हीं हाथों से आपको आग के हवाले करना पड़ेगा! शायद फिर कभी अन्नपूर्णा

बनकर आपकी वापसी हो। लेकिन आज तो फूँकना ही पड़ेगा, नहीं फूँकेंगे तो अगली फसल कैसे बोएँगे?"

वे माचिस की तीली जलाकर तिलेठे में छुआ देते हैं। गन्ने की सूखी पत्तियाँ पल-भर में आग पकड़ लेती हैं। चट्-चट् की आवाज के साथ गन्ना फटने-जलने लगता है।

झबरू दूसरे कोने से खेत में घुसकर कुछ सूँघ रहा है। उसे किसी अन्य प्राणी की मौजूदगी का एहसास हो रहा है। धुआँ खेत में फैलता है तो दूसरी ओर से सियारों का एक परिवार निकलकर जंगल की ओर भागता है। माँ-बाप और दो बच्चे। झबरू पहले से ताक में था। दौड़कर पीछे दौड़ते एक बच्चे को गिरा लेता है। बच्चा किकियाता है। सियारिन पल-भर रुककर कें-कें करते बच्चे को देखती है, फिर दूसरे बच्चे के साथ भाग चलती है।

आग पूरे खेत को अपनी चपेट में लेकर हाहाकार कर रही है। धुएँ का रेला आसमान में उठ रहा है। झबरू सियार के घायल बच्चे को तड़पता छोड़कर लौट आया है और खून सना मुँह उठाकर हाथ जोड़े खड़े पहलवान को ताक रहा है।

थके कदमों से घर की ओर लौटते हुए पहलवान सोच रहे हैं कि किसान की जिन्दगी किस काम की? एक कोना ढाँकिए तो दूसरा उघार हो जाता है।

* दबाव

** सरसों के डंठल

अगम बहै दरियाव

पहले कहाँ पता था कि जिन्दगी इतने गाढ़े में कटने वाली है।

उन्हें अपने स्कूल के दिन याद आने लगे। सन् 1962 की लड़ाई हो चुकी थी। सन् 1965 की लड़ाई हो चुकी थी। गाँव देहात में फौज, सरहद, गोला, बन्दूक, पैटर्न टैंक और चीन-पाकिस्तान की चर्चा आम थी। हर नौजवान की जबान पर 'जय जवान जय किसान' का नारा था। सन् 1971 की लड़ाई शुरू हुई तो वे दर्जा सात में पढ़ रहे थे। उनका मन करता कि अगर उनकी उम्र के लड़कों की भर्ती फौज में होती तो वे भी भर्ती होने के लिए दौड़ पड़ते। जबकि उन्हें पता था कि एकमात्र पुत्र होने के कारण उन्हें गृहस्थी के काम में ही नधना पड़ेगा। तब बुल्लू पैदा नहीं हुए थे। उन दिनों ऐसा ही सोचने का रिवाज था। फौज में जाने का रास्ता बन्द होने के बाद उन्होंने खेती-किसानी में मन लगाया। एक बीघे में जितना 'शंकर धान 6444' पैदा करके दिखा दिया, उससे 130 कुंटल प्रति हेक्टेयर का रेकॉर्ड बना और उन्हें राज्य सरकार की ओर से कृषि रत्न का पुरस्कार दिया गया। लेकिन क्या फायदा? नाम होने से पेट तो भरता नहीं। इतनी पैदावार के लिए किए गए खर्च और मेहनत की तुलना पैदा हुए अनाज की कीमत से करिए तो वही ढाक के तीन पात। अब वे भी मान गए हैं कि चाहे जितना हाथ-पैर फेंकिए, किसानी के पेशे में बरकत नहीं होने वाली।

अगर उन्हें किसी ने सही समय पर आगाह कर दिया होता कि खेती-किसानी से गुजर-बसर नहीं होने वाली तो वे इस खानदानी दलदल में क्यों फँसते? वे भी पिंड छुड़ाकर किसी दिशा में भाग खड़े होते।

हाईस्कूल में पाइथागोरस की एक प्रमेय पढ़ाई जाती थी कि समकोण त्रिभुज के कर्ण पर बने वर्ग का क्षेत्रफल शेष दोनों भुजाओं पर बने वर्ग के क्षेत्रफल के बराबर होता है। इसे सिद्ध करना बहुत मुश्किल होता था। पहलवान को लगता है कि किसान की जिन्दगी की प्रमेय पाइथागोरस की प्रमेय से भी ज्यादा कठिन है।

कोई बताने वाला नहीं है कि इसे हल करने वाला पाइथागोरस कब पैदा होगा?

भगवत पाँड़े को चैन नहीं है। नींद और भूख दोनों मर गई हैं। एक रोटी गले के नीचे उतारकर वे चौके से उठ गए। बिस्तर पर लेटे-लेटे अँगोछे से मच्छर उड़ाते और पसीना पोंछते रहे। जेठ की तपन है और हवा बन्द है।

वे देर तक करवट बदलते रहे फिर उठकर मड़हे से बाहर आ गए। चाँदनी खिली हुई थी। थोड़ी देर बाद उन्होंने खुद को अपने नीलाम हुए खेतों के बीच खड़ा पाया। मेंड़ पर मिठौवा महुआ शान्त खड़ा था। इसका फूल सामान्य महुए के फूल से ज्यादा मीठा होता है इसलिए इसका नाम पड़ा मिठौवा। लपसी बनाने के लिए गाँव के लोग इसी को माँगकर ले जाते हैं। पाँड़े की तीन पीढ़ियों ने कभी किसी को इनकार नहीं किया। अब यह भी खेतों के साथ नीलाम हो गया।

पाँड़े पास आकर उसके मोटे तने को सहलाने लगे। तने से महुए की एक डाल चार-पाँच हाथ की ऊँचाई से निकली, धनुष का आकार बनाती आगे जाकर जमीन की ओर इतनी झुक गई है कि बच्चे इस सिरे से चढ़कर उस पर झूला झूलते और सियरपत्ती खेलते हैं। बचपन में पाँड़े, उनके पिता और उनके बाबा भी इस पर झूल चुके हैं। जितनी दूर तक इस डाल का ओछाँह खेत में पड़ता है, उतनी दूर तक कुछ पैदा नहीं होता। पाँड़े के बेटों ने कई बार कहा कि इससे पैदावार का नुकसान होता है। इसे काट दिया जाए, पर पाँड़े राजी नहीं हुए। उनका तर्क था कि यह डाल इस पेड़ की शोभा है। समझिए हाथी की सूँड़ है। इसको काट देने से यह बूँचा हो जाएगा। बप्पा बताते थे कि जब मेरे बाबा जेल में थे तो इसी महुए को याद करके उनकी आँखों से आँसू टपकने लगते थे। जब उन लोगों ने इसे

कटने से बचा लिया तो अब तुम लोग क्यों काटना चाहते हो?

पाँड़े उसके तने को सहलाते हुए बुदबुदाए - "अब क्या पता, रघुनन्दन तुम्हें जिन्दा रहने देते हैं या कटवा देते हैं..."

वहाँ से टहलते-टहलते पाँड़े खेत के दूसरे कोने पर आ गए। चाँदनी रात में अपने खेतों का विस्तार देखते रहे।

अपने खरबूजे के खेत में माचे पर बैठे पहलवान बड़ी देर से देख रहे हैं कि कोई है, जिसकी झलक चाँदनी में मिल रही है। जरूर कोई चोर है जो उनके खेत से खरबूजा चुराने की नीयत से आया है और उनकी मौजूदगी का आभास पाकर ठिठक गया है। वे भी आज देखते हैं कि यह कौन है? कब उनके खेत में घुसता है? रँगे हाथ पकड़ने का इससे अच्छा संयोग शायद ही कभी मिले।

पाँड़े वहीं मेंड़ के कोने पर बैठ गए।

इन खेतों को बचाने के लिए उनके पुरखों ने कम संघर्ष नहीं किया। उनके बाबा ने आजीवन कारावास की सजा काटी। उनके पिता ने लम्बी मुकदमेबाजी झेली।

अगम बहै दरियाव

उन्हें आठ-नौ साल की उम्र में पिता के साथ बाबा से मिलने जेल जाने की याद है। जोन्हरी का लावा और गुड़ लेकर गए थे। बाबा का चौड़ा माथा, गंजी खोपड़ी, ताँबे जैसा रंग और लम्बे-लम्बे कानों की याद उन्हें अब तक है। बाबा ने हँसते हुए उन्हें गोद में उठाकर चूमा तो उन्होंने झट अपने जूठे होंठ पोंछ लिये थे।

पाँड़े के पैदा होने के साल भर पहले उनके बाबा को जमींदार ज्वाला सिंह की हत्या के जुर्म में आजीवन कारावास की सजा हो गई थी। उन्होंने

पिताजी से कहा था कि एक बार साथ लेकर आओ। पोते का मुँह देख लूँ।

ज्वाला सिंह अपने इलाके में रियाया पर तरह-तरह के अत्याचार करने के लिए कुख्यात थे। लगान वसूल करके रसीद न देना उनके कारिंदों का खास हथकंडा था। फिर बकाया दिखाकर बेदखली की तलवार लटका देते थे। एक था छाँगुर पासी। उनके जिम्मे जिल्ले का काम सँभालता था। एक बार वह तीन दिन तक काम पर नहीं आया। ज्वाला सिंह आगबबूला हो गए। चौथे दिन हाथी पर चढ़कर खुद उसके घर पहुँच गए। छाँगुर ने आकर हाथ जोड़े- "छह महीने का बेटा बुखार में तड़प रहा है इसीलिए गैरहाजिर रहा हुजूर।"

"कहाँ है बेटा? लाओ, दिखाओ।"

छाँगुर बच्चे को गोद में लेकर आया। कपड़ा हटाकर दिखाया - दुबला-पतला, पीला बच्चा। पसलियाँ चलती हुईं। ज्वाला सिंह ने हाथी पर बैठे-बैठे बच्चे के पेट में बरछी घोंपी और हवा में उठाकर पटक दिया।

कहा- "ले, तेरी मुसीबत दूर कर दिया। अब फौरन काम पर पहुँच।"

इस घटना का बड़ा विरोध हुआ। आसपास के गाँववालों ने ज्वाला सिंह की कोठी घेर ली। उनका महावत लोगों पर हाथी दौड़ा देता। लोग पिछड़ जाते। फिर घेर लेते। दिन-भर घेराबन्दी चली। घुड़साल और भूसाघर फूंक दिया गया। पुलिस आ जाने के चलते कोठी फूँकी जाने से बच गई।

पाँड़े के बाबा भी कोठी का घेराव करने वालों में थे। जिन्होंने कोठी घेरी थी, उनके द्वारा बेबाकी के बाद भी अगले साल बेदखली की नोटिस भेज दी गई! कारिंदों ने एक-एक नाम याद करके सूची बनाई। पाँड़े के बाबा दरियाव पाँड़े के नाम भी नोटिस आई। वे इलाके के सम्मानित और प्रभावशाली आदमी थे। सारे पीड़ित उनके पास आए। तय हुआ कि पहले खुद ज्वाला सिंह से मिलकर सही बात बताई जाए और बेदखली टालने की प्रार्थना की जाए। सुनवाई न हो तो आगे की सोची जाए।

पता चला कि ज्वाला सिंह जिल्ले पर आने वाले हैं। पीड़ित किसान उनसे

मिलने पहुँचे। खबर पाकर आसपास के कुछ और किसान भी जुटने लगे।

ज्वाला सिंह ने किसी की एक न सुनी। कहा- "तुम लोगों ने मेरी कोठी घेरी

थी। तुम लोगों को सबक सिखाना जरूरी है। भाग जाओ नहीं तो बाँधकर पिटवाऊँगा और रुस्तम के पैरों तले कुचलवा दूँगा।"

जनता भड़क गई, लेकिन क्या करे ! रुस्तम बहुत खूंखार था। वह थोड़ी दूर पर जंजीर में बँधा झूमता हुआ पीपल की पत्तियाँ खा रहा था। महावत थोड़ी दूर पर अधलेटा था।

भीड़ में दो सगे गड़ेरिया भाई थे। कारिंदों ने चार साल में चार बार उनकी झोंपड़ी उजाड़ी थी। वे भेड़ लेकर चराने गए होते। कारिंदे आते और उनकी बूढ़ी माँ से कुछ न पाकर झोंपड़ी उजाड़ देते। दोनों भाई हर बार जंगल में थोड़ा और अन्दर जाकर फिर झोंपड़ी बनाते। वे भी जमींदार से शिकायत करने आए थे। लोगों का गुस्सा देखकर उन्होंने कहा- "हाथी का डर दिखा रहे हैं तो महावत को ही बाँध लो। महावत के बंध जाने के बाद हाथी से क्या डर? वह तो बँधा ही है।"

दोनों ने महावत के हाथ-पैर बाँधकर एक किनारे डाल दिया। भीड़ को दिशा मिल गई। वह कारिंदों और सिपाहियों पर टूट पड़ी। वे भाग खड़े हुए। ज्वाला सिंह दीवार पर टँगी अपनी बन्दूक लेने के लिए अन्दर लपके, लेकिन भीड़ के हाथों खींचकर जमीन पर पटक दिए गए। खुद को घिरा पाकर उन्होंने दरियाव पाँड़े के सामने हाथ जोड़े-" जान बख्स दीजिए, ब्राह्मण देवता! जो कहोगे, वही होगा।"

"ऊपर से जमीन साथ लेकर नहीं आए थे, बाबू ज्वाला सिंह। जिनको ऊपर वाले ने इस धरती पर पैदा किया है, उन सबको जीने-खाने का हक है। हमारे घर एक जून की रोटी जुरना पहाड़ है। हमारे बच्चे कैथा और बेल का गूदा खाकर दिन काटते हैं और आप हमारा खून चूसकर उसी पैसे से

रंडी नचाते हैं। इतने पर भी पेट नहीं भरा तो बेबाकी के बावजूद बेदखली कर रहे हैं, इतना अन्याय !"

ज्वाला सिंह गिड़गिड़ाए- "किसी को बेदखल नहीं करूँगा। लिखकर ले लो। जान बख्स दो।"

दरियाव पाँड़े ढीले पड़े- "हाथ जोड़ रहा है। बचन दे रहा है। हमें बेदखली रुकने से ही मतलब है। जान लेकर क्या करेंगे?"

पीछे से कोई बोला-"नहीं, बाबा। यह गेहुँअन है। गेहुँअन को छेड़ने के बाद छोड़ने का मतलब है अपना काल बुलाना।" तभी सिर की ओर खड़े छाँगुर पासी ने फावड़े का एक सधा वार किया और ज्वाला सिंह की आधी गर्दन कटकर एक तरफ को लटक गई। खून का फौवारा छूटा और लोथ छटपटाने लगी।

इजलास पर पाँड़े ने बयान दिया- "हमने मारा। अकेले मारा। ठीक मारा। कोई पछतावा नहीं।"

सात लोगों ने यही बयान दिया- "हमने मारा। अकेले मारा। ठीक मारा।"

अगम बहै दरियाव

मारने का घाव एक और जुर्म का इकबाल करने वाले सात। जज ने दाँतों तले उँगली दबाई-"हॉरिबल!"

छाँगुर पासी को फाँसी। दरियाव पाँड़े और दोनों गड़ेरिया भाइयों को आजीवन कारावास तथा दस अन्य लोगों को मामूली सजा हुई।

लावा की पोटली अपने पिता को देते हुए बौर पांडे ने कहा, "जमींदारी प्रथा खत्म हो गई है, पिताजी।

"सुना तो था बेटा, लेकिन विश्वास नहीं हुआ।"

यह जानकर कि सचमुच जमींदारी प्रथा खत्म हो गई है, दरियाव पाँड़े के

चेहरे पर जो खुशी छलकी उसे बयान करने के लिए शब्द नहीं बने हैं। आसमान की ओर देखकर हाथ जोड़ते हुए बोले - " अब किसानों के प्राण बच जाएँगे। आखिर खून चूसने वालों का नाश हो ही गया। किसान के सिर पर लटकती बेदखली की तलवार सदा-सर्वदा के लिए टल गई। सोचा नहीं था कि कभी ऐसा दिन भी आएगा। बेटा, मेरी तरफ से सारे गाँव में रोट बँटवा देना। रिहा हुआ तो उन खेतों को आकर भर आँख देखूँगा जो अब हमेशा-हमेशा के लिए हमारे पास रहेंगे।"

लेकिन नहीं देख सके। पाँच-छह महीने बाद जेल में ही पेचिश से उनकी मौत हो गई।

चाँद सिर के ऊपर आ गया है। रात पारदर्शी हो गई है। पहलवान को घर जाने को देर हो रही है। छोटे बेटे ने खाना खाने के लिए दो बार पुकार लगाई है। कौन है यह आदमी जो मेंड़ के कोने पर बैठा तो बैठा ही रह गया।

वे दबे पाँव चलकर पाँड़े के पीछे पहुँचे और पूछा- "कौन?"

पाँड़े जैसे चौंककर जागे - " पहलवान बच्चा!"

"अरे आप! यहाँ अकेले, इतनी रात में?"

"क्या बताएँ, बच्चा ! नींद नहीं आ रही थी तो सोचा, चलो अपने खेतों से ही मिल आएँ। कल रात सपना देखा कि मेरे खेत पतंग की तरह आकाश में उड़ रहे हैं और मैं उन्हें पकड़ने के लिए पीछे-पीछे दौड़ रहा हूँ। तब से मन इन्हीं पर टँगा था। दिन में तो आ नहीं सकते थे, रात के अँधेरे में चले आए।"

"क्या कहें, बाबा! जैसा आपके साथ हुआ, वैसा दुश्मन के साथ भी न हो।"

"मन को चौबीस घंटे यही मथता रहता है बच्चा कि जिन खेतों को पुरखों ने इतनी जद्दोजहद से बचाकर रखा, उन्हें मैंने अपनी नालायकी से गँवा

दिया। ऊपर जाने पर वे पूछेंगे कि ऐसा क्यों किया तो मैं क्या जवाब दूँगा?"

"धीरज रखिए, बाबा। विपत्ति में धीरज ही काम आता है। रात बहुत बीत गई है।

चलिए, आपको घर तक छोड़कर आते हैं।"

दोनों लोग मेंड़ पकड़कर आगे-पीछे चलने लगे।

अचानक पीछे मुड़े पाँड़े-"कैसे धीरज रखें, बच्चा... दस प्राणियों के मुँह में शाम को अन्न तो देना पड़ेगा, कहाँ से देंगे? कल को दोनों पोतियों की शादी करनी होगी। कहाँ से करेंगे? बेटा पुलिस की नौकरी से निकाल दिया गया। एक लाख घूस देकर भर्ती करवाए थे। वह पैसा भी डूब गया। अब हम कैसे जिएँगे?"

रात में पाँड़े ने सपना देखा, उनका मदरहवा वाला खेत हाथ जोड़े खड़ा-खड़ा पूछ रहा था-मेरी भी नीलामी हो गई क्या महराज ? पाँड़े झझककर जगे। उन्हें लगा कि उनका मदरहवा वाला खेत भी कोई ले गया। वे उठकर दौड़े।

धवल वकील साहब ने सन्देश भेजा है-

जंगल में भटकते फिरने की जरूरत अब नहीं है। अब तुम्हारा नाम ही तुम्हारी पूँजी है। इस पूँजी को राजनीति में लगाओ। सरेंडर करने का यही

सही मौका है। दलित और पिछड़ी पार्टियाँ तुम्हें हाथों-हाथ लेंगी। सिस्टम के अन्दर रहकर सिस्टम से लड़ना सीखो। फूलन को देखो। संसद तक पहुँची कि नहीं। भदोही शहर के बीच चौराहे पर उसकी मूर्ति लगी है। पुलिस से डरने की जरूरत नहीं। सीधे कोर्ट में सरेंडर करा दूंगा। पाँच-सात साल में लाल बत्ती की गाड़ी पर चलने लगोगे। वक्त जरूरत पर हम लोगों के काम भी आओगे।

जंगल में साथियों के साथ बैठा जंगू रात-भर सोच-विचार करता है और भोर में जवाब लिखता है-"मजबूर हूँ वकील साहब। मेरा मिशन अभी अधूरा है। आततायियों से धरती का मुक्त होना अभी बाकी है।"

अगम बहै दरियाव

खाली खेतों में दुपहरिया मनक रही है। लू के बवंडर उठ रहे हैं। आधा आषाढ़ बीत गया है, लेकिन अभी पानी की एक बूँद नहीं पड़ी। आम का झरौता हो गया है। आम के लालची बच्चों और रखवालों से बाग खाली हो गया है। रखवालों के तख्त बाग में लावारिस पड़े हैं। एक तख्त पर पैर पटक-पटककर पाँड़े बाबा चेतावनी दे रहे हैं।

अपनी करनी की सजा पाएँगे अब अट्ठानबे। एक के बदले में मारे जाएँगे अट्ठानबे ॥

पाँड़े के दिमाग में रह-रहकर विचलन आ जाता है। तब वे अपनी नौटंकी की दुनिया में लौट जाते हैं। अदा किए गए पार्ट के संवाद बोलने लगते हैं। यह संवाद 'वीर अभिमन्यु उर्फ जयद्रथ वध' में अर्जुन का है।

जिस दिन अभिमन्यु को चक्रव्यूह में घेरकर मारा गया, उस दिन अर्जुन संसप्तकों से लड़ने के लिए मुख्य युद्धभूमि से दूर चले गए थे। शाम को

लौटे तो पता चला कि आज उनका लाल युद्धभूमि में खेत रहा है। सातों महारथियों ने निहत्थे अभिमन्यु को घेरकर मारा है और जयद्रथ ने मृत अभिमन्यु के सिर पर लात से प्रहार किया है। वे क्रोध से काँपते हुए प्रण करते हैं कि जयद्रथ को तो वे कल सूर्यास्त से पहले-पहले यमलोक पहुँचाएँगे, साथ ही अब तक जीवित बचे जिन कौरवों ने निहत्थे अभिमन्यु को अनीति से मारा है, वे अट्ठानबे भी उनके हाथों मारे जाएँगे।

पहलवान ने पाँड़े बाबा के मुख से यह संवाद कई बार सुना है। रौद्र रूप धारण किए हुए अर्जुन के रूप में जब गुस्से से पैर पटकते थे तो तख्तों की चूलें हिल जाती थीं। जब-जब धनुष पर बाण तानते, दर्शक अपने आगे बैठे लोगों की आड़ में अपना सिर छिपा लेते कि कहीं गुस्से से पागल हो रहे अर्जुन का बाण बहककर उनको न आ लगे।

धान की बेरन डालने के लिए बेहनौरा भर रहे पहलवान देर से पाँड़े की दहाड़ सुनकर दुखी हो रहे हैं।

पाँड़े बाबा बाग से निकलकर खेतों की ओर बढ़ते हैं। पहलवान समझ जाते हैं कि नंगे खल्वाट सिर पर पड़ती प्रचंड धूप से आधे घंटे में ही वे भाड़ में लावा की तरह भुन जाएँगे। उनसे रहा नहीं जाता। वे पाँड़े बाबा की ओर लपकते हैं।

पास आने पर पाँड़े की नजर उन पर पड़ती है। वे रुकते हैं और हाथ उठाकर पहलवान को सम्बोधित करते हुए अत्यन्त करुण स्वर में आलाप लेते हैं-

पास लाखों करोड़ों का जर माल था।
एक दिन मेरा राजन जमाना रहा।

आज इस हाल में फिर रहा दर-बदर
पेट भरने का भी ना ठिकाना रहाऽऽ
आज इस हाल में...

पहलवान आगे बढ़कर पाँड़े को अँकवार में भर लेते हैं...

गृहस्थी का सारा दारोमदार अब प्रभाकर के जिम्मे आ गया है। पाँड़े जी इधर-उधर भटकते रहते हैं। दिवाकर या तो चौराहे की ड्यूटी करते हैं या अपनी बर्खास्तगी के मामले में दौड़-धूप करते रहते हैं। दिवाकर की पत्नी अपने बच्चों के साथ मायके में है। दिवाकर की माँ ने सन्देश भिजवाया है कि दुर्दिन अपने घर में रहकर काटना चाहिए। मायके में ज्यादा दिन रहने से मान घटता है। सावन बीतने के बाद दिवाकर को विदाई कराने भेजूँगी। चली आना।

प्रभाकर किसी चमत्कार की उम्मीद में बीच-बीच में तहसील और कचहरी के चक्कर लगा आते हैं। सुबह निकलते हैं तो दिन-भर भटककर पहर रात बीते लौटते हैं।

एक दिन कचहरी परिसर में हाई कोर्ट के एक वकील साहब के मुंशी से भेंट हो गई। प्रभाकर की विपत्ति सुनकर कहा- "मेरे वकील साहब से मिल लो। वे हाई कोर्ट से नीलामी खारिज करा देंगे।"

नए मुवक्किल की तलाश में वकील साहब शनिवार के दिन जिले के दौरे पर आते थे। बगल के होटल में ठहरे थे। प्रभाकर के कागजात देखने के बाद आश्वस्त किया- "गारंटी के साथ नीलामी खारिज करा देंगे।"

"कैसे कराएँगे?"

"चाहें जैसे कराएँ। आपको काम से मतलब।"

"फीस क्या लगेगी?"

"पचास हजार मेरी और पाँच हजार मुंशी की।"

प्रभाकर बड़ी देर तक सोचते रहे, फिर कहा- "मान लीजिए, बीबी का गहना-गुरिया बेंचकर आपकी फीस जुटा भी लें तो यह विश्वास कैसे करें कि आप जो कह रहे हैं, उसे करके दिखा देंगे।"

"देखिए, यह तो बिजनेस सीक्रेट है। नहीं बता सकते। इतना कह सकते हैं कि वकील के तरकस में हजार तीर रहते हैं। जो कारगर हो उसे चलाया जाता है।"

"वकील साहब, हम पहले ही बरबाद हो चुके हैं। अब और जुआ खेलने की ताब नहीं रह गई है।"

"जुआ नहीं खेलना। सुप्रीम कोर्ट की नई-नई रूलिंग आई है। उसी से सी.पी. सी. की दफा 60 में सेंध लगा दूँगा। श्योर शॉट!"

"ठीक है, घर पर सलाह करेंगे।"

घर बात करने पर एक ही सवाल मुँह बा कर खड़ा हो गया-इतना पैसा आएगा कहाँ से? पाँड़े जी से चर्चा करने का कोई मतलब नहीं है। उनकी तबीयत और खराब हो जाएगी।

तीनों प्राणी कई रात सिर जोड़कर सोच-विचार करते रहे। गहने बेचने के अलावा और कोई सूरत नजर नहीं आई।

प्रभाकर बहू का कहना था कि गहने देने में उन्हें कोई एतराज नहीं है। जितने दिन बदा था, पहनने का शौक पूरा हो गया। खेत वापस मिल गए तो फिर गढ़ा लिये जाएँगे। लेकिन फैसला मनमाफिक न हुआ तब? साल, दो साल में बेटी ब्याहना जरूरी होगा। नए गहने गढ़ाने की औकात तो

पहले भी नहीं थी। सोचा था कि अपने ही गहने तुड़वाकर उसके लिए गढ़ा दूँगी।... अब जैसा आप लोग ठीक समझें।

फैसला कोई सामान तो है नहीं कि इस हाथ से पैसा दो, उस हाथ से सामान लो। कहने को तो हर वकील जीतने की गारंटी देता है।

मामला लटका रह गया।

ऐसे में एक दिन वकील साहब का मुंशी घर तक पहुँच गया।

"क्या सोचा आप लोगों ने? अपील की भी एक मियाद होती है।"

"इतनी फीस हमारी औकात से बाहर है।"

"चलिए, दस हजार जीतने के बाद दे दीजिएगा।"

फिर सोच-विचार हुआ। अन्ततः प्रभाकर की माँ ने कहा- "बेटियाँ बाँस की तरह बढ़ती हैं। समय से उन्हें ब्याहना भी जरूरी है। इसलिए बहू से पहले मेरे गहने बेचकर देखो। उससे पूरा हो जाय तो ठीक, नहीं तो दूसरा रास्ता खोजा जाएगा।"

फीस की रकम पूरा करने के लिए दुआर की नीम बेचनी पड़ी। कितनी छतनार नीम थी। दरवाजे की शोभा थी। सैकड़ों चिड़िया शाम को उस पर बसेरा लेती थीं।

पाँड़े कहीं से भटककर लौटे तो नीम पर कुल्हाड़े चल रहे थे। वे बिना कुछ बोले रुककर कुल्हाड़ों का चलना देखते रहे। उन्हें लगा कि रघुनन्दन ने उनकी नीम भी नीलाम करवा ली।

भादों की अँधियारी रात्रि। असंख्य टिमटिमाते जुगनू । मेघाच्छन्न आकाश। दूर से आती मेघ गर्जन की आवाज। रह-रहकर बिजली कौंध जाती है। चुहचुइया अनवरत झंकार रही है। इन सबके ऊपर अँधेरे में भटकते पाँड़े की फटी-फटी आवाज सोते हुए लोगों के कान में पड़ रही है।

मोसे नैना लड़ाइ ले गुजरिया
मोसे नैना लड़ाइ ले.

अपनी कोठरी में सोई अनारा के कान में यह टेर पड़ती है तो वे बेचैन हो जाती हैं। यह गीत 'हीर रांझा' और 'सुल्ताना डाकू' के खेला का युगल गीत था। वही तो हैं पाँड़े की हीर और फूलकुँवरि। इस गीत को जाने कितनी बार उन्होंने पाँड़े के साथ गाया है। इसे गाते हुए पाँड़े के साथ जब-जब वे मंच पर उतरतीं, समाँ बँध जाता था। पाँड़े तब गबरू जवान थे। बड़ी-बड़ी बोलती आँखें, लम्बी जुल्फी, झलक मारती दाँतों की पंक्ति, कटार-सी मुस्कान। राजा बनें चाहे डाकू, हर पार्ट में कमाल कर देते थे। वे खुद भी तो तब सिर्फ अठारह साल की थीं।

युवा होती अनारा पर पाँड़े की नजर पड़ी। एक-दो बरातों में उनका मुजरा सुनने को मिला। कोकिलकंठी-कानों में अमृत घोलने वाली। क्या रूप! क्या यौवन! क्या लोच! आलाप लेतीं तो लगता कलेजे में बरछी धँसी जा रही है। रत्न !

"अनारा को मुझे दे दीजिए, चाची। मुँहमाँगी तनखा दूँगा।" पाँड़े ने अनारा की माँ से कहा।

"हटो, महराज। यही तो उसके कमाने के दिन हैं। सूखी तनखा से क्या होगा?" लेकिन पाँड़े ने पीछा नहीं छोड़ा। दो साल तक पीछे पड़े रहे।

हारकर मानना पड़ा अनारा की अम्मा को। और अनारा का साथ पाकर पाँड़े की नौटंकी कम्पनी का सितारा आसमान पर पहुँच गया।

हीर का रोल करते-करते वे खुद को पाँड़े की हीर मानने लगीं। पाँड़े पर दिलोजान से फिदा हो गईं। पाँड़े मिल जाएँ, चाहे सारी दुनिया छूट जाए। मन करता कि पाँड़े को कलेजे में छिपाकर कहीं भाग जाएँ। मगर क्या करें, डायलॉग तो वही बोलने थे जिसकी इजाजत खेला देता था!

अगम बहै दरियाव

"क्या मिलेगा तुमसे नैना लड़ाकर, नौजवान? क्या है तुम्हारे पास मुझे देने के लिए? मैं तो सिपहिया से नैना लड़ाऊँगी जो मुझे सोने की गढ़ी में रखेगा। चाँदी के बरतन में खिलाएगा। चंदन के पलंग पर सुलाएगा।"

"मैं तुम्हें अपने दिल में रखूँगा, रानी। अपने हाथ से खिलाऊँगा। अपनी गोद में सुलाऊँगा।"

... लेकिन नहीं मानती हीर... उसके प्यार को ठुकरा देती है। उसी का नतीजा है कि आज उसका प्रेमी पागल होकर दर-दर भटक रहा है।

लेटे नहीं रहा जाता अनारा से। वे कोठरी से बाहर आ जाती हैं। घुप्प अँधेरे में कुछ सूझ नहीं रहा है। वे आवाज की दिशा में देखते हुए कुछ देर तक खड़ी रहती हैं, फिर धीरे-धीरे आगे बढ़ती हैं।

इस अन्धकार में कीचड़-काँदो और कुश-काँटों के बीच पगलाए घूम रहे हैं पाँड़े। वे शोक में डूब गई हैं।

पाँड़े के खेत नीलाम होने की खबर उन्हें कई दिनों बाद मिली। उन्होंने अपनी नौकरानी को भेजकर सन्देशा दिया- 'फौरन आकर मिलें।'

वे इन्तजार करती रहीं। उस दिन नहीं आए पाँड़े। अगले दिन भी नहीं आए। आए तीसरे दिन अँधेरे में।

पाँड़े का हाथ पकड़कर वे उन्हें पक्के घर के आँगन में ले गईं। एक कोने में बने चूल्हे को लालटेन की रोशनी में दिखाती हुई बोलीं-" इसी के नीचे खोदिए। आपकी जरूरत भर का मिल जाएगा। बेचकर अपना कर्ज पटा दीजिए।"

पाँड़े उनका मुँह देखने लगे।

"आगा-पीछा मत सोचिए। वेश्या का धन लेने में हिचक रहे हैं न? किसी को पता नहीं चलेगा।"

पाँड़े ने अनारा को भुजाओं में भर लिया। दोनों के आँसूँ एकाकार होने लगे।

"तुमने कह दिया तो मुझे मिल गया। देखता हूँ कि क्या हो सकता है?"

अनारा इन्तजार करती रहीं, लेकिन नहीं लौटे पाँड़े...

प्यारी कंगाल किसको समझती है तू। मेरी दौलत जमा है अमीरों के घर ॥

आवाज़ से पता चलता है कि पांडे यहाँ आ रहे हैं।

वे पाँड़े से इतनी अभिन्न हो गई थीं कि एक बार फूलकुँवरि का पार्ट करने से ही इनकार कर दिया था। खेला में ही सही, वे पाँड़े से बेवफाई करने के लिए तैयार नहीं थीं। बहुत समझाना पड़ा था।

शायद उनकी बेवफाई के कारण ही उनका सुल्ताना आज बन-बन भटक रहा है।

जब कहेगी मैं ढो करके ले आऊँगा हीरे मोती से भर दूँगा मैं तेरा घर।

अरे, ये तो एकदम दुआर पर ही पहुँच गए ! वे पीछे मुड़ती हैं और अपनी

कोठरी में जाकर अन्दर से साँकल चढ़ा लेती हैं।

जंगू चाहिए। जिन्दा नहीं, मुर्दा। फरमान ऊपर से आया है।

जब से सूबे में दलित पार्टी की सरकार बनी है, यह खबर पूरे इलाके में गूँज रही है कि जंगू दलित मुख्यमंत्री का अपमान करता है, कि जंगू को दलित पार्टी में ब्राह्मणों को शामिल करना पसन्द नहीं आया। वह कहता है कि दलितों की पार्टी तो मिट गई ब्राह्मण सम्मेलन कराकर। उनकी नेता तो ब्राह्मणों के घर बैठ गईं। किसी को पता नहीं है कि जंगू ने यह बात कब, कहाँ और किससे कही? पर विश्वास सभी कर रहे हैं। विश्वास कर रहे हैं और जोर-शोर से प्रचारित कर रहे हैं।

दुनिया देख चुके लोग मान रहे हैं कि अब जंगू के दिन पूरे हो चुके। वैसे भी एक दलित को डाकू के रूप में कोई कब तक बर्दाश्त कर सकता है? बर्दाश्त ही करना पड़े तो वह मान सिंह, मोहर सिंह, पान सिंह, अनार सिंह जैसा खानदानी तो हो। मुश्किल यह है कि उसका गैंग न औरतबाजी का शौक रखता है, न दारूबाजी करता है, न मोबाइल रखता है।

भादों का महीना है। पहाड़ी पर जंगू गैंग के मौजूद होने की सूचना पक्की है। मुखबिर दोपहर में सादे कपड़ों वाले एक इंस्पेक्टर को पहाड़ी के सबसे ऊँचे पेड़ पर चढ़ाकर डाकू दल की लोकेशन दिखा लाया है।

जंगल फूला हुआ है। कल्याणी उमड़कर बह रही है। ऑपरेशन के लिए सटीक समय है।

अचूक सफलता के लिए ल्योर एंबुश टैक्टिक्स अपनाई जानी है। तीन पुलिस पार्टियाँ बनाई गई हैं। एक पहाड़ी को उत्तर-पूरब से कवर करेगी। दूसरी पश्चिम-उत्तर से। पहाड़ी के पश्चिम और दक्षिण नदी बह रही है। तीसरी पार्टी नदी के दूसरे किनारे पर घाटी में दक्षिण की तरफ से पोजीशन लेगी। पहली और दूसरी पार्टी की गोलीबारी से घबराकर डाकू दल नदी के रास्ते भागना चाहेगा। तब घाटी में पोजीशन लेकर बैठी पार्टी नदी में ही पूरे गैंग को जलसमाधि दे देगी।

लोहे के पुल के पास अपने ठीहे पर बैठा अबरार होमगार्ड गजराज को दूर से आता देख सामने रखी मछलियों पर जोर-जोर से पानी छिड़कते हुए बड़बड़ाता है-"रिटायरमेंट के बाद इन पुलिसवालों का पेट कैसे भरता होगा? तब तो हर चीज का पैसा देना पड़ता है।"

गजराज होमगार्ड वाली गोल कत्थई टोपी उतारकर पुलिस वाली लाल तिकोन की लम्बी टोपी पहन रहा है। अबरार जानता है कि ऐसा वह अपना रुतबा बढ़ाने के लिए करता है। हो सकता है रिश्तेदारी में खुद को दारोगा बताता हो। शेखीबाज और बड़बोला है। घमंड इतना कि जैसे थाना इंचार्ज यही लगा हो।

"जै हिन्द, सर।" अबरार ने सिर झुकाया।

"दस किलो रोहू। फौरन।"

"दस किलो? हमेशा तो दो किलो जाती थी।"

"आज जमघट होगा। पाँच मुर्गे भी चाहिए।"

"कहाँ गाज गिरने वाली है?"

"जहाँ कहो, गिरवा दूँ।"

"खाक गिरवा दोगे। झूठ-मूठ का ताव दिखाते हो। जंगुआ इतने दिन से आग मूत रहा है। उसका तो कुछ उखाड़ नहीं पाए।"

गजराज के नथुने फूलने लगे, लेकिन कुछ बोला नहीं। तेज नजरों से अबरार को घूरने लगा। अबरार की अनुभवी आँखों ने गजराज की आँखों की भाषा को पढ़ना चाहा।

जाते हुए गजराज आदत के विपरीत अबरार की ओर देखकर मन्द-मन्द मुस्कराया।

इसका मतलब-कुछ बता रहा है या छिपा रहा है? गजराज के जाते ही अबरार ने ठीहे पर बेटे को बैठाया और नदी पार करके पहाड़ी की झाड़ियों में गुम हो गया।

सन्देशवाहक से कहा- "नेताजी से कहना कि रात गरजना-बरसना हो सकता है।"

"बादल तो कहीं दिखते नहीं?"

"बादल को पैदल आना है क्या?"

रात साढ़े तीन बजे का समय रहा होगा। पहले पूर्वोत्तर की पार्टी ने फायर झोंका। फिर उत्तर-पश्चिम की पार्टी ने।

तभी नदी के उस पार दक्षिण की ओर से मोर्चा सँभालकर बैठी पार्टी ने पानी में कई लोगों के कूदने की आवाज सुनी। अँधेरे में कुछ अधिक काले बिन्दुओं की तरह गतिमान परछाइयाँ मध्यधारा में पहुँचीं तो आदेश हुआ- फायर ।

नई-नई सप्लाई हुई इंसास राइफलें परछाइयों को निशाने पर लेकर गरज उठीं।

एक भी जवाबी फायर नहीं आया तो सर्च लाइट फेंकी गई! दस-बारह मरे-अधमरे नीलगाय नदी की धारा में ऊभ-चूभ करते बहे जा रहे थे।

नदी में नहाकर गीली धोती बदले बिना ही पाँड़े बाबा तट के बालू पर पालथी मारकर बैठ गए और झूम-झूम कर उच्च स्वर में पाठ करने लगे - जब गड़ दस तमहरन भरन मन गंगा...

गोरू चराते बच्चे पास आ गए। पूछा- "क्या गा रहे हैं, बाबा?" "अष्टाध्यायी है बच्चा। आओ, सीखोगे?"

बच्चे हँसते हुए पीछे हटे - पागल पाँड़े।

मंत्र-पाठ रुक गया। सिर घुमाकर डाँटा- "शट अप। आई नाट मैड, नाट बैड, सिर्फ सैड।"

घाट पर स्नान करने वाले लोग पाँड़े की हालत पर दुखी हुए। इनमें से कई लोग जब बच्चे थे तो पाँड़े के बाजार से लौटने का इन्तजार करते थे कि गट्टा खाने को मिलेगा। जवान पाँड़े खुशदिल और बच्चों के प्रिय थे। पाँड़े को देखकर बच्चे समूह में गाते-

पाँड़े मारेन मछरी, पँड़ाइन बनईं झोर।
पाँड़े लागेन जेवैं, पँड़ाइन का लड़्गा चोर।

पाँड़े बाबा चिढ़ने और क्रोधित होने का अभिनय करते। खदेड़ते। झुककर ढेला खोजने लगते।

अगर पाँड़े उधर से गुजर रहे हों और बच्चों की नजर उन पर न पड़े तो वे खुद अपनी मौजूदगी की सूचना देते-"खबरदार बच्चो ! अगर आज फिर चिढ़ाए तो जान लो, बहुत मार खाओगे।"

और बच्चों को चिढ़ाने की याद आ जाती। पाँड़े 'पकड़ो पकड़ो' कहते हुए उन्हें दौड़ाते -"बहुत मारब। बहुत मारब।"

पास पहुँचने पर पाँड़े हँसते हुए कहते - " अच्छा, चुप हो जाओ तो गट्टा देंगे।" बच्चे चुप हो जाते और कभी दो-दो गट्टा तुरन्त पा जाते, कभी पाँड़े कहते-"ऐसे नहीं देंगे। पहले मुझे मौसिया कहो। बोलो - मौसिया, गट्टा दे दो।" बच्चे दुविधा में फँस जाते। कहें कि न कहें? मौसिया कहने में कोई फसंत तो नहीं है?

लेकिन छोटे बच्चे पाँड़े के हाथ में दिख रहे सफेद मीठे गट्टों का लोभ संवरण न कर पाते और मौसिया-मौसिया कहते हुए हथेली फैला देते। पाँड़े हँसते हुए उनके गाल थपथपाते और दोनों हथेलियों पर एक-एक गट्टा रख देते। धीरे-धीरे सारे बच्चे पाँड़े की शर्त मान लेते। तब पाँड़े एक और 'एडवाइजरी' जारी करते - "जाकर अपनी अम्मा से बता देना कि तुमने पाँड़े बाबा को अपना मौसिया बना लिया है।" ज्यादातर बच्चे अपनी माताओं को यह सूचना न देते और जो देते उनकी माताएँ

देर आते-कभी-कभी स्कूल आते-जाते बच्चों को पाँड़े राह में रोककर पूछते-"किस दर्जे में पढ़ते हो?"

"चार में।"

"कै तक पहाड़ा याद है?"

"बीस तक।"

"तो बताओ, कै नवाँ मुँह चुम्मी क चुम्मा?"

बच्चे चुप। चुम्मी-चुम्मा तो अभी पढ़ाया नहीं गया!

"नहीं पता? तब क्या पढ़ाते हैं तुम्हारे गुरुजी? जाकर उनसे कहना कि पाँड़े ने उन्हें फेल कर दिया।"

"तो आप ही बता दीजिए।"

"सात नवाँ कितना होता है? तिरसठ न? तिरसठ के छह और तीन एक-दूसरे का मुँह चूमते हैं कि नहीं?

तो सात नवाँ मुँह चुम्मी क चुम्मा हुआ।"

नदी किनारे से उठकर पाँड़े मैदान में चर रहे पशुओं के बीच पहुँच गए। एक चरवाहे से उसकी लाठी ली। अँगोछे को सिर में गोल-गोल लपेटा और माथे पर मोरपंखी की जगह आम का पल्लव खोंसकर कृष्ण के भाव में आ गए। पशुओं को हाँककर बड़की बगिया की ओर ले जाने लगे। बोले- "इन्हें चराने वृन्दावन ले जा रहा हूँ।"

ऐसे ही कई दिन पहले ईसा मसीह के भाव में आ गए थे। भूसी चौधरी की कमरी और लाठी ले ली। एक सफेद भेड़ के बच्चे को गोद में उठा लिया और रेवड़ को हाँककर जंगल की ओर ले जाने लगे। बोले-" इन्हें चराने यरुसलम की ओर ले जा रहा हूँ।"

माठा बाबा कहते हैं-"अभी तो बैताली की बकरियों पर नजर पड़ना बाकी है। पड़ गई तो मोहम्मद साहब के भाव में आ जाएँगे। कहेंगे, इन्हें चराने के लिए मक्का-मदीना ले जाऊँगा।"

सबको हँसाने वाले पाँड़े को आज इस हाल में देखकर लोग दुख के सागर में डूब जाते हैं। औरतों की आँखों में आँस आ जाते हैं।

तूफानी हैरान है। हैरान है। उसे झटके पे झटका लग रहा है। इस बार पार्टी ने अगले साल होने जा रहे विधानसभा चुनाव के उम्मीदवारों की सूची जारी करने की शुरुआत कई महीना पहले से कर दी है। इससे उम्मीदवारों को अपने क्षेत्र के मतदाताओं से सम्पर्क करने के लिए पर्याप्त समय मिल सकेगा।

अब तक जारी तीन सूचियों में एक-तिहाई नाम ब्राह्मणों के हैं। सूची देखने से लगता है कि टिकट के लिए सबसे उपयुक्त उसे माना गया है जो ब्राह्मण हो, बाहुबली हो और पार्टी कोष में मोटी रकम जमा करने की हैसियत भी रखता हो। दूसरी प्राथमिकता पार्टी फंड में मोटी रकम जमा करने वाले सवर्ण या मुस्लिम बाहुबली को है। आरक्षित सीट के लिए भी गाँठ का पूरा होना अनिवार्य शर्त है। इससे लम्बे समय से पार्टी में जीवन खपाने वाले कर्मठ कार्यकर्ता बिलबिला गए हैं। इसका मतलब मिशन के लिए मार-गारी सहने वाले कार्यकर्ताओं का कोई मोल ही नहीं रहा।

थैली और जाति परधान हो गई। थैली का कोई इन्तजाम भी कर ले, लेकिन ब्राह्मण कैसे बने? पार्टी को इसका उपाय भी बताना चाहिए!

तूफानी ने खुद इस बार टिकट का दावा नहीं किया है। टिकट पाने के लिए मोटी रकम चाहिए। उसके पास रकम कहाँ है? अगर संघर्ष और त्याग का कोई मूल्य होता तो उसे बुलाकर टिकट दिया जाता। दिया जाता तो उसका इतना जनाधार था कि जीत भी जाता। अगर उसने अपनी जिन्दगी के कीमती दो दशक पार्टी संगठन में बर्बाद न करके प्रैक्टिस जमाने में लगाए होते तो हो सकता है, आज वह भी पैसे से टिकट खरीदने की हैसियत में होता।

"कहाँ तो पार्टी की स्थापना ब्राह्मणों के फंदे से दलितों-पिछड़ों को मुक्त कराने के उद्देश्य से की गई थी और कहाँ अब पार्टी खुद उन्हीं के फंदे में फँस रही है। खुद ब्राह्मण सम्मेलन कराकर अपनी जड़ खोद रही है। भला बताइए, अब ऐसा समय आ गया कि दलितों-पिछड़ों की पार्टी को ब्राह्मण चलाएँगे। अपनों का हाथ बलाएँगे। नहीं पकड़ रही हैं, दूसरों का पैर पकड़ रही हैं।"

"जिनको ये जमीन में बैठाकर खुश हो में गाड़ देंगे।" रही हैं वही एक दिन इनको जमीन

तूफानी को याद आता है, उसका एक ब्राह्मण सहपाठी पार्टी में शामिल होना चाहता था। वह उसे मान्यवर के पास ले गया। मान्यवर ने उस लड़के से तो कुछ नहीं कहा, लेकिन तूफानी को अलग बुलाकर डाँटा- "क्या करने जा रहे हो? ब्राह्मण नीबू की उस अकेली बूँद के समान है जो कड़ाह-भर दूध को फाड़ देती है। ऐसी गलती कभी न करना।"

और आज क्या हो रहा है?

कैडर में हताशा और असंतोष की बात ऊपर तक पहुँच गई है। सबको राजधानी बुलाया गया है। पार्टी के नए थिंक टैंक रूठे कैडर को मनाने के लिए बौद्धिक क्लास ले रहे हैं। हॉल के दरवाजे चारों तरफ से बन्द कर

दिये गए हैं। सबके मोबाइल फोन हॉल के बाहर रखवा लिये गए हैं। यह अत्यन्त गोपनीय मीटिंग है। यहाँ की कोई बात कभी भी हॉल के बाहर नहीं जानी चाहिए।

... आपकी शिकायत है कि पार्टी ब्राह्मणों को साथ क्यों ले रही है? आप बताइए राजनीति का लक्ष्य क्या है? सत्ता। सत्ता जादू की छड़ी है। सत्ता अलादीन का चिराग है। सब कुछ उसी से हासिल होता है। इसलिए जैसे भी मिले, उसे हासिल करना है। सत्ता हासिल करने के लिए गुण-अवगुण दोनों की जरूरत पड़ती है। ब्राह्मणों के पास दोनों हैं। उनके पास धन भी है,

बुद्धि भी है, ज्ञान भी है, आत्मबल भी है और मनबढ़ई भी है। वे धूर्त भी हैं, छलिया भी हैं, मिठबोले भी हैं और सबसे बड़ी बात कि उनमें विश्वासपात्र बनने का गुण है। वे दुर्मुख नहीं होते, मूर्ख नहीं होते, लंट नहीं होते। वे हर 'खेला' खेलने के उस्ताद होते हैं। यह सारी खूबियाँ उन्हें एक दिन में नहीं मिल गईं, हजारों साल में मिली हैं। लम्बी साधना से मिली हैं। यह उनके जीन्स में हैं। और आपके समाज के पास क्या है? इनमें से एक भी नहीं। न गुण, न अवगुण। इनको हासिल करने में हमें हजार साल लगेंगे। लेकिन सत्ता हमें आज चाहिए। जो अपने बूते मिलने वाली नहीं। अपने संख्याबल के साथ उनकी बुद्धि और चतुराई मिलाकर ही हम अजेय बन सकते हैं। इसलिए इनका साथ पकड़ना हमारी मजबूरी है। इनके सहयोग से प्राप्त सत्ता का उपयोग हम अपने गरीब भाइयों के कल्याण में करेंगे। इसी को क्रान्ति कहते हैं-दूसरे की शक्ति और बुद्धि को अपने हित में प्रयोग करना। हमारी नेता ने, हमारी पार्टी ने बहुत क्रान्तिकारी कदम उठाया है। हम सबको मिलकर इसे सफल बनाना है। जिसकी जिस क्षेत्र में ड्यूटी लगाई जा रही है, वहाँ के पार्टी उम्मीदवार से तालमेल बिठाकर जैसे भी हो उसे जिताना है। सत्ता प्राप्त होते ही सारे कार्यकर्ताओं को उनकी मेहनत के अनुसार समुचित पद पर समायोजित किया जाएगा। जाइए, कमर कसकर पार्टी उम्मीदवार के साथ लग जाइए।

नए नारे नोट करिए और जन-जन तक पहुँचाइए-

पंडित शंख बजाएगा।
हाथी बढ़ता जाएगा।

और-

हाथी नहीं गणेश है।
ब्रह्मा विष्णु महेश है।

घर लौटकर तूफानी कई दिन तक खुद को और कार्यकर्ताओं को समझाने की कोशिश करता रहा कि पार्टी के इस कदम को क्रान्तिकारी मानकर स्वीकार कर लिया जाए।

"कैसे कर लिया जाय? बीस साल पहले आपने ही तो दर्जनों बार प्रतिज्ञा कराई थी कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश में विश्वास नहीं करूँगा।"

अगम बहै दरियाव

तूफानी की बोलती बन्द हो जाती है।

तभी चौथी सूची जारी हुई। इस सूची में पार्टी ने चन्द्रकांत ओझा को उसी क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया है जहाँ से वे पाँच साल पहले रामवादी पार्टी से चुनकर मंत्री बने थे। पिछले साल उन्हें भ्रष्टाचार के आरोप में उस पार्टी से निकाल दिया गया था। छह महीने पहले ही वे राजरानी की पार्टी में शामिल हुए थे। तूफानी को अच्छी तरह याद है, सन् 1991 के चुनाव में यही आदमी चौराहे पर चीख-चीख कर भाषण दे रहा था कि हम हिन्दुस्तान को चमारिस्तान नहीं बनने देंगे। इसी ने कोल्ड स्टोरेज से मुक्त करने के पहले तूफानी के पीछे लात मारी थी। इसी के चुनाव क्षेत्र में योगदान देने के लिए कल शाम तूफानी को पार्टी का फरमान मिला है। यह खबर पढ़ते ही तूफानी के कान में फिर सीटी जैसी बजने लगी।

शाम को आसपास के पार्टी कार्यकर्ता तूफानी के आँगन में बैठकर विचार-विमर्श कर रहे हैं। सभी दुखी हैं। निराश हैं।

करने किसी कीमत पर नहीं करने। "मैं तो उस हरामजादे माफिया का चुनाव प्रचार करने जा सकता। उसका मुँह नहीं देख सकता।"

"हमारा क्या होगा? जब हमारी नेता ही ब्राह्मणों ब्राह्मणों की गोद में बैठ गई..."

"बहन राजरानी से बहुत उम्मीदें थीं।"

"पहले लड़ाई में उतारा। चार जूता मारने का नारा दिया। अब चौराहे पर निहत्था खड़ा कर दिया।"

"मान्यवर की कमाई मिट्टी में मिल गई।"

"बाबा साहब का सपना टूट गया। समय का चक्र घूमते-घूमते फिर वहीं पहुँच गया, जहाँ से चला था।"

"नहीं, उससे भी हीन दशा में। पहले सत्ता नहीं थी, पर सपना तो था। ब्राह्मणवाद से मुक्ति का सपना। मनुवाद से मुक्ति का सपना। अपमान, अन्याय और अत्याचार से मुक्ति का सपना। अब हम अपने लोगों को फिर वही सपने कैसे दिखा सकेंगे? कौन हमारा यकीन करेगा? कौन हमारे साथ खड़ा होगा? यह मामूली नुकसान नहीं है! "

कहाँ रहती है सरकार

पाँड़े का इलाज शहर के नामी डॉक्टर से हो रहा है। ज्यादातर शान्त रहते

हैं। कभी-कभी भागने या बड़बड़ाने लगते हैं। ठीक रहते हैं तो घर-गृहस्थी के छोटे-मोटे काम करते हैं।

555

दुआर-मोहार बुहार लेते हैं। गाय-भैंस को चारा डाल देते हैं। गोबर काढ़कर घूरे में फेंक आते हैं। हड्डियाँ दिखने लगी हैं। आँखें भैंस गई हैं।

डॉक्टर ने कहा है कि दवाई का नागा नहीं होना चहिए। इनको कोई ऐसी बात न कहें कि इनके दिल को चोट लगे।

वैसे तो नींद उचटी रहती है, लेकिन दवा खा लेते हैं तो देर तक सोते हैं। आज दोपहर में खाना खाकर बाहर तखत पर लेटे तो देर तक सोते रहे। उठे तो जानवरों की सरिया साफ की। गोबर घूरे में फेंका, फिर नाँद साफ करने में जुट गए।

सूरज डूबने ही वाला था कि एक मोटरसाइकिल दरवाज़े पर आकर रुकी। धोती, कुर्ता और जैकेट पहने एक बूढ़ा आदमी नीचे उतरा और चिल्लाया, "कहाँ हो पांडे? गद्दार पांडे, बाहर निकलो।"

दगाबाज ? पाँड़े ने हौदी की ओट से झाँककर देखा - यह तो उनके समधी हैं। प्रभाकर के ससुर। ऐसा तेवर ! क्यों भला?

आजकल तनिक भी गरमागरमी होने पर पाँड़े का दिल जोर-जोर से धड़कने लगता है। वे हौदी की आड़ में दुबक गए।

मालती ने किवाड़ की ओट से झाँककर पहचाना-नाना! माँ को बताकर वह नाना को बिठाने के लिए चारपाई निकालने लगी। मालती की दादी घूँघट काढ़कर बाहर निकलीं। मालती ने चारपाई पर दरी बिछाकर नाना के पैर छुए।

"आइए, बैठिए।" मालती की दादी बोलीं- " पशु-परानी का हाल-चाल

ठीक है?"

"हाल-चाल क्या खाक ठीक रहेगा! जिसके भगवत पाँड़े जैसे रिश्तेदार रहेंगे उसका हाल-चाल ठीक रहने पाएगा?"

मालती की दादी अचकचा गईं-" इतना गुस्सा! बात क्या है?"

प्रभाकर बहू मौनी में गुड़ और लोटे में पानी लेकर आईं-" बैठो, बाबू। गुस्साये काहे हैं? पानी पीजिए।"

उन्होंने गुड़ की मौनी पिता की ओर बढ़ाई। पिता ने मौनी पर ऐसा उलटा हाथ चलाया कि मौनी गुड़ सहित हवा में उछल गई।

प्रभाकर बहू बाप का पैर पकड़कर भेंटना चाहती थीं। खेत की नीलामी के बाद वे एक बार भी बेटी का हाल-चाल लेने नहीं आए। वे शिकायत करना चाहती थीं। उनकी आँखें पिता के आने की खबर सुनते ही डबडबा आई थीं। लेकिन पिता का यह रौद्र रूप देखकर सहम गईं। आँख का पानी, आँख में ही सूख गया।

"अब तुम लोगों के घर पानी पीने लायक है? पानी तो पाँड़े ने ऐसा पिला दिया कि... यही तो पूछने आया हूँ कि विश्वास में लेकर मेरा गला क्यों काटा?"

"आपका गला क्यों काटेंगे महराज ? पाँड़े का तो खुद गला कट गया। हल खूँटी पर टैग गया।"

"पाँड़े का टँगा तो पाँड़े की करनी से टैगा। इसका मतलब यह थोड़े कि बाँड़े आप जायें, साथ में पाँच हाथ पगहा भी ले जायी"

"बुझौवल काहे बुझा रहे हैं, महराज। पाँड़े का कसूर तो बताइए?"

"कसूर ? ई देखो।" मिसिर ने जेब से कागज निकालकर हवा में

लहराया-"ट्रैक्टर खरीदने के लिए जमीन कम पड़ रही थी तो मुझसे मदद माँगी थी। इनका काम न रुके, इसलिए मैं भी अपनी एक एकड़ जमीन की खतौनी लगाकर सह खातेदार बन गया था। बदले में पाँड़े ने क्या दिया कि आज मेरी जमीन भी नीलामी घर चढ़ाने की नौबत आ गई।"

"इसमें हमारा कोई कसूर, कोई दगाबाजी नहीं है बाबू।" प्रभाकर बहू बाप के सामने बढ़ आई-" बाजार दर से नीलामी होती तो एक-डेढ़ एकड़ की नीलामी से सारा कर्जा पट जाता। आपके पास नोटिस जाने की नौबत ही न आती। यह नौबत इसलिए आई, क्योंकि सरकार ने माटी के मोल जमीन नीलाम कर दी।"

बाप ने बेटी को घूरा और दाएँ-बाएँ मूँड़ी झटकते हुए चिल्लाए -" चोप्प! तू मुझे पढ़ाने चली है। मैं तेरा बाप हूँ कि तू मेरी बाप है? हट जा सामने से। मेरी छाती में आग लगी हुई है। पाँड़े को बुला। सामने आवैं। कहाँ मुँह छिपाकर बैठे है? थूकना है उनके मुँह पर।"

"मुँह क्यों छिपाएँगे?" पँड़ाइन बोलीं- "थोड़ी देर पहले तक तो यहीं थे। उनका कुर्ता और अँगोछा तो सामने तखत पर रखा है।"

मिसिर तखत के पास गए। खखारकर कुरते पर थूका और जूता उतारकर उसे पीटने लगे-फटर-फटर ! पाँड़े हौदी की आड़ में थोड़ा और दुबक गए। लगा कि कफ का लोंदा सीधे आकर उनके चेहरे पर चिपक गया है। जूते की हर चोट उन्हें अपने कपार पर बजती लगी। दिल इतनी तेजी से धड़धड़ाने लगा, जैसे छाती से बाहर आ जाएगा। वे पसीने से भीग गए।

"तुम लोग खानदानी कपटी हो। ट्रैक्टर कबाड़ हो गया तो मेरे बेटे के गले मढ़ दिए और लोन माफ होने का पता चला तो रातों-रात उठवा लिये ! तुम लोगों का मुँह देखना पाप है।"

बातचीत सुनकर पास-पड़ोस के लोग भी जुटने लगे। थककर हाँफते समधी अपनी रौ में बोले जा रहे थे- "मैंने तो दरियाव पाँड़े का खानदान समझकर बेटी ब्याहा था। इनकी औकात से बढ़कर दान-दहेज दिया था। मुझे क्या पता था कि भिखमंगों के घर बेटी ब्याह रहे हैं! गाँड़ में गुह नहीं

था तो क्यों ट्रैक्टर खरीदने को लबलबाए हुए थे?

इलाके में बड़मनई कहलाने के लिए? पवस्त में नाक कटा दिए! अपनी इज्जत तो धोए ही, मेरी भी धो दिए। कोई हयादार आदमी होता तो अब तक चुल्लू-भर पानी में डूबकर मर जाता। कह देना-चाहे जैसे करें, बकाया कर्ज अदा कर दें। मेरी जमीन नीलाम नहीं होनी चाहिए।"

तांडव मचाकर मिसिर मुड़े। मोटरसाइकिल स्टार्ट की और चल पड़े। सास-बहू वहीं जमीन पर बैठकर रोने लगीं।

"हे दैव, इतना अपमान!" पाँड़े ने माथा पकड़ लिया- किस कु-घड़ी में ट्रैक्टर खरीदने की सोची। अपने साथ रिश्तेदार को भी फँसा दिया। अब तो चमड़ी बेचने को तैयार हो जाएँ तब भी कोई उन्हें चार पैसे उधार देने वाला नहीं मिलेगा! सचमुच डूब मरने का काम हो गया उनके हाथ से। अपनी ही पत्नी, बहू के सामने आने की हिम्मत नहीं पड़ रही है।

अँधेरा छा गया था। दोनों औरतें अभी भी बैठी रो रही थीं। कबुतरी पँड़ाइन की पीठ सहलाकर उन्हें चुप करा रही थी। पाँड़े सरिया के पिछले दरवाजे को खोलकर गाँव से बाहर की ओर भागे।

लगा, सारा गाँव उनका पीछा कर रहा है -

दगाबाज, धोखेबाज ! पकड़ो। पकड़ो।

कहाँ भागें? कहाँ लुकाएँ?

प्रभाकर लौटे तो बड़ी देर तक पाँड़े को नदी के किनारे और रेल की पटरी के आसपास खोजते रहे। फिर लौटकर सो गए। रात ज्यादा बीत चुकी थी जब कबुतरी बेटे को पेशाब कराने के लिए बाहर निकली।

उसने आवाज से पहचाना। पाँड़े राग से दुनियाऽऽ... ओ दुनियाऽऽ गाते

हुए अपने खेतों की ओर लपके जा रहे थे। अचानक रुक गए। फिर पीछे मुड़ गए। चन्द कदम चले और फिर वापस मुड़ गए।

वह थोड़ी देर तक वहीं खड़े-खड़े आवाज का पीछा करती रही, फिर बेटे को लेकर अन्दर चली गई। लेकिन नींद नहीं आई। कहाँ चले गए पाँड़े? लौटने की कोई आहट नहीं मिली।

देर तक करवटें बदलने के बाद वह फिर बाहर निकली। बाहर सन्नाटा था। फरियाई हुई रात धीरे-धीरे कुहासे की गोद में जा रही थी। वह पाँड़े के खेतों की ओर बढ़ने लगी। बढ़ती, रुकती, आहट लेती फिर बढ़ती।

घास पर ओस की बूँदें उतर आई थीं। हवा में ठंडक थी।

अगम बहै दरियाव

पास से सियारों का-'हुआँ-हुआँ' सुनाई पड़ा तो वह ठिठक गई। फिर मिठौवा महुआ की डाल पर बैठा घुग्घुओं का जोड़ा कचपचाया।

थोड़ी देर सन्नाटा। फिर कबुतरी को लगा कि पाँड़े ने किसी को पुकारा है। उसे डर लगा। लौट पड़ी।

सबेरे पाँड़े की लाश महुए की डाल से झूल रही थी। पाँड़े की कमर में केवल पटरे का जाँघिया था। धड़ पर जनेऊ और दाहिनी कलाई में लाल-पीले धागे का रक्षासूत्र बँधा था। सिर तनिक बाईं तरफ झुका था। होंठों के बाएँ कोने से तार जैसी लार की पतली धार टूट-टूटकर जमीन पर चू रही थी।

कबुतरी बता रही थी-रात में दुनिया-दुनिया गाते हुए इधर आए थे। नहीं जानती थी कि इस तरह हँसते-गाते अपना 'जिउ' देने जा रहे हैं।

लाश का पंचनामा करते समय लगा कि पाँड़े ने जाँघिये के नेफे में कुछ छुपा रखा है। क्या होगा? रुपये? नहीं, एक पुर्जी निकली। लिखा था-

श्री गणेशाय नमः

कुल कर्ज लिया-चार लाख रुपये ,
खर्चा लगा-अठारह हजार रुपये।
नीलामी तक कुल जमा 5,91,280 रुपये।
बकाया शेष 4,07,712 रुपये।

आज फिर कार्तिक एकादशी आ गई। कल पाँड़े बाबा की तेरही है। आधी रात तक दिवाकर की माँ कल के भोज के लिए दोनों बहुओं से राशन, तेल, घी और सब्जी की नाप-जोख कराती रहीं और पाँड़े को याद करती रहीं- 'जबसे इस घर में आए, कभी उन्होंने दूब की सुटकुनी से भी नहीं मारा और जब से गए, कभी सपने में भी नहीं आए। इतने निर्मोही हो गए!'

तीसरे पहर सोईं और भोर में प्रभाकर बहू की आवाज सुनकर कच्ची नींद से जग गईं।

प्रभाकर की बहू पूछ रही थी, "अम्मा, क्या आप गरीबों को खाना खिलाने जाएंगी ताकि हमें दुःख हो?"

सास थोड़ी देर तक चुप रहीं। फिर कहा- "अब क्या दलिद्दर खेदना, बहू। दलिद्दर तो पाँव तोड़कर हमेशा के लिए घर में बैठ गया। जाओ, सो जाओ।"

प्रभाकर बहू थोड़ी देर तक अँधेरे में खड़ी रहीं। फिर आँगन में आ गईं। सूप

और गन्ने की अगोढ़ी उठाकर 'इस्सर आवैं दलिद्दर जायें' का जाप करती, सूप को धप्प-धप्प पीटते घर के कोने-अँतरे से दलिद्दर को भगाती बाहर ले गईं...

कई दिनों बाद आज फिर पहलवान के सपने में आए पाँड़े बाबा। पहली बार आए थे फाँसी लगाने के चार-पाँच दिन बाद। पीपल के पेड़ में टँगे विभिन्न घंटों के बीच टँगे थे। कुछ सरकारी अमले जिनके चेहरे शिकारी जानवरों जैसे थे, पाँड़े बाबा के लटकते पैरों को पकड़कर नीचे खींचने के लिए उछल रहे थे। उन्हें दूर खड़ा देखकर ललकारा था- अरे पहलवान, एक ठो लाठी लेकर भगाते क्यों नहीं इन हरामजादों को?

आज का सपना जाड़े की दोपहरी का है। गुनगुनी धूप खिली हुई थी। खाना खाकर आराम करने के लिए वे माचे पर आकर लेटे तो झपकी आ गई। क्या देखते हैं कि पाँड़े बाबा सामने खड़े हँस रहे हैं। उनके साथ अलग-अलग रस्सियों में टँगे बीसियों घंट भी हँस रहे हैं। व्यंग्य की हँसी। किसी के सिर पर मराठी पगड़ी थी, किसी के काठियावाड़ी। कोई पंजाबी बोल रहा था, कोई उड़िया, कोई कन्नड़।

"ये लोग कौन हैं, बाबा? मुझे देखकर इस तरह हँस क्यों रहे हैं?"

"हम हिन्दुस्तान के विभिन्न प्रान्तों के आत्महत्या कर चुके किसान हैं, बच्चा!" एक घंट बोला- "हँस रहे हैं तुम्हारी इस बचकानी सोच पर कि तुम इस देश में रहकर किसानी जीवन के दुख और दरिद्रता से मुक्ति का सपना देख रहे हो। जीते-जी इस बैडंड से मुक्ति नहीं मिलने वाली। इसके लिए मरना पड़ेगा।"

"और मरना भी कैसा?" दूसरा घंट बोला- "अकाल मृत्यु। ताकि दुबारा इस मृत्यु लोक में जन्म न लेना पड़े।"

पहलवान कुछ न समझते हुए पाँड़े बाबा का मुँह ताकने लगे तो उन्होंने समझाया - " अपने धर्म की व्यवस्था के अनुसार मरने के तेरह दिन तक, जब तक तेरही नहीं हो जाती, जीव मुक्त रहता है। उसके बाद फिर कहीं-न-कहीं जन्म लेना

* परेशान

पड़ता है। मान लीजिए, फिर किसी किसान परिवार में पैदा हो गए। यानी जो कुछ झेलते-झेलते बूढ़े होकर मरे थे, फिर उसी कुर्की-नीलामी-हवालात के नरक कुंड में पहुँच गए तो? मरकर भी चैन नहीं मिला। इस मामले में मुसलमानों के धर्म की व्यवस्था बढ़िया है। जिन्दगी जैसी भी लंगे-तंगे कटे, लेकिन एक बार मर गए तो फिर पैदा होने के झमेले से जान छूटी। जब तक कयामत का दिन नहीं आ जाता निश्चिंत होकर अपनी कब्र में आराम फरमाते रहिए। कयामत कब आएगी, किसी को पता नहीं! अभी तक तो आई नहीं। लेकिन हिन्दू धर्म में अगर ऐसा चैन चाहिए तो अकाल मौत मरना पड़ेगा। रेल से कटकर, पानी में डूबकर, जहर खाकर या फाँसी लगाकर। क्योंकि अकाल मौत मरने पर जीव न स्वर्ग में जाता है, न नर्क में जाता है, न फिर पैदा होता है। प्रेत योनि में भटकता रहता है। हम इसे भटकना क्यों कहें? स्वच्छंद विचरण करता रहता है। सूक्ष्म शरीर में पूरे वायुमंडल में जहाँ मरजी, पल-भर में पहुँच जाइए। दुनिया की नजर से दूर रहकर दुनिया का नजारा लीजिए। प्रेत योनि माने आदर्श योनि। न कोई चिन्ता, न शोक। परम स्वतंत्र, परम सुखी।"

पहलवान अवाक् सुन रहे थे।

पाँड़े मुस्कराकर बोले-" इसीलिए मैं तुम्हें लेने आया हूँ। छोड़ो मृत्यु लोक

का सारा बैडंड। चलो, हमारे साथ।"

कहने के साथ पाँड़े बाबा ने अपने दोनों हाथ फैला दिए। पहलवान डर गए। यह क्या बोल रहे हैं बाबा? मुड़कर भागे। लेकिन कितना भी भागते, मुड़कर देखते तो पाते कि बाबा की पकड़ में आने में बस बाल बराबर कसर है। वे हाँफते रहे, भागते रहे। तीनों लोक में भागते फिरे। पसीने से सराबोर हो गए, लेकिन कहीं लुकाने की ठाँव नहीं मिली। तभी उन्हें दबोचने के लिए सामने से दूसरा घंट लपका। उसे गच्चा देने के लिए पहलवान ने झट बाईं तरफ छलाँग लगाई और लद्द से माचे के नीचे गिर पड़े।

बहुत देर तक पहलवान समझ ही न पाए कि वे कहाँ हैं? पाँड़े कहाँ गए?

कमर में चोट लग गई थी। वे सँभलकर खड़े हुए। शरमाते हुए चारों तरफ देखा। आसपास कोई नहीं था। वे सँभलकर फिर माचे पर चढ़े और आँख बन्द करके लेट गए।

तो क्या पाँड़े बाबा उन्हें आत्महत्या के लिए उकसा रहे थे? उनके मन में विषाद की एक मद्धिम धुन बजने लगी। पहले भी कई बार यह धुन बजी है, जब वे बहुत निराश या उदास हुए हैं। बहुत पहले किसी नेता की मृत्यु पर उन्होंने रेडियो पर शहनाई की ऐसी ही धुन सुनी थी। इस धुन से उनका मन डूबने लगता है। डर लगता है कि किसी दिन वे इस धुन के प्रभाव में न आ जाएँ।

जूझने का हौसला और बुद्धि उनका साथ छोड़ दे। वे पाँड़े बाबा के रास्ते पर न चल पड़ें।

एक बार उन्होंने अखबार में एक शब्द पड़ा था- डिप्रेशन। यह शब्द भी कभी-कभी उन्हें डराता है।

जब चौड़े बाबा की आत्महत्या का मामला टी.वी. और अखबारों में गरमाया तो किसी बड़े नेता का बयान आया था। वह हैरान था कि किसानों की बेहतरी के लिए इतनी योजनाएँ लागू करने के बावजूद वे आत्महत्या क्यों कर रहे हैं? क्या इन्हें कोई दिमागी बीमारी हो गई है? जैसे सियार-कुत्ते पागल होकर भागने लगते हैं, जैसे भुर्गियाँ पटापट भरने लगती हैं। डिप्रेशन की इस लहर के पीछे कोई विदेशी साजिश तो नहीं है, जाँच करानी होगी।

जरूरत है ऐसे नासमलों को यह समझाने की कि दिमागी बीमारी की जाँच किसानों की नहीं, किसानों के लिए योजना बनाने वाले उन योजनाकारों की कराने की जरूरत है, जिनमें से खेलावन सेक्रेटरी की मानें तो बहुतों को यह भी पता नहीं होगा कि चने का पेड़ बड़ा होता है या अरहर का? आलू जमीन के नीचे फलता है कि ऊपर?

एक दिन शाम को खेतों के बीच खेलावन मिले तो एकान्त देखकर पहलवान फुसफुसाकर बोले-"खेलावन भइया, एक बात कहना चाहते हैं?"

"हाँ-हाँ, कहिए।"

"कहना भी चाहते हैं और संकोच भी हो रहा है कि सुनकर आप क्या सोचेंगे?"

"अरे, ऐसी क्या बात है?"

"मुझे कभी-कभी लगता है कि मेरी खेती-बारी भी पाँड़े बाबा की तरह नीलाम हो जाएगी।"

"ऐसा क्यों लगता है?"

"यही तो नहीं पता! लेकिन जब-जब ऐसा लगता है, दिल की धड़कन बढ़ जाती है। मुँह सूख जाता है। कभी-कभी लगता है कि मेरी ही नहीं, सारे किसानों की जमीन नीलाम होने वाली है। सब भिखारी होने वाले हैं। कभी लगता है कि किसी से मुझसे यह बात सपने में कही है। कभी लगता है कि हकीकत में कही है।"

खेलावन थोड़ी देर तक पहलवान का मुँह ताकते रहे। फिर बोले- "आप से यह बात किसी ने कही कि नहीं, यह तो आप जानें;

अगम बहै दरियाव

लेकिन यह सही है कि बर्बादी का खतरा सचमुच सारे गन्ना किसानों के सिर पर मँडरा रहा है। बर्बादी न कहिए, सत्यानाश कहिए।"

खेलावन मेंड़ की ओर बढ़ते हुए बोले- " आइए, बताते हैं कि कैसे?"

दोनों लोग मेंड़ पर अगल-बगल बैठ गए।

"देखिए, जहाँ तक मेरी जानकारी है, सन् 1973-74 से सूबे की सरकार गन्ने की सपोर्ट प्राइस निर्धारित करती आ रही है और मिल मालिक उसे देते आ रहे थे। किसी-न-किसी बहाने देने में देरी करते थे, यह और बात है। लेकिन कई साल पहले मिल मालिकों ने मूल्य निर्धारित करने के सूबे की सरकार के इस अधिकार को ही कोर्ट में चैलेंज कर दिया। कहा कि सूबे की सरकार को गन्ना मूल्य निर्धारित करने का अधिकार ही नहीं है। हाई कोर्ट ने भी दिसम्बर, 1996 में एक फैसले में कह दिया कि सूबे की सरकार को गन्ना मूल्य निर्धारित करने का अधिकार नहीं है। आदेश कर दिया कि सूबे की सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य नहीं, केन्द्र की सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य दिया जाय। केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य सूबे की सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य से हमेशा कम रहता है, क्योंकि दोनों के निर्धारण के आधार और उद्देश्य अलग हैं।"

खेलावन ने दो बीड़ी सुलगाईं। एक पहलवान को पकड़ाते हुए बोले - " अब असली खतरा समझिए। यह मामला पिछले कई साल से सुप्रीम कोर्ट में लटका है। गन्ना सप्लाई की जो पर्चियाँ उस फैसले के बाद जारी की गईं, उनमें लिखा गया कि यह सौदा सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के अधीन है। मई, 2004 में सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले से कुछ राहत मिली, लेकिन असली सवाल अब भी लटका है। अगर सुप्रीम कोर्ट ने कह दिया कि सूबे की सरकार को गन्ने का मूल्य निर्धारित करने का अधिकार नहीं है तो किसानों पर वज्र फट पड़ेगा। उन्हें केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य से जितना ज्यादा भुगतान मिला है, उसे मिल मालिकों को वापस करना पड़ेगा और यह वापसी 1996 के फैसले से लेकर फैसला होने की तारीख तक प्राप्त भुगतान पर लागू होगी। सुप्रीम कोर्ट का फैसला कब आएगा, कोई नहीं जानता। चौदह-पन्द्रह साल से तो लटका है। मान लीजिए, और चौदह-पन्द्रह साल लटक गया तो पचीस-तीस साल में प्राप्त भुगतान का अन्तर लाखों में होगा। किसान की जमीन की कीमत से भी ज्यादा। तो कहाँ से वापस करेगा किसान? उसकी जगह-जमीन नीलाम हो ही जाएगी। मिल मालिक अपने पक्ष में फैसला पाने के लिए जान लड़ा देंगे। थैली खोल देंगे। इसी खतरे की चर्चा आजकल हर जगह हवा में है। लगता है, इसी की भनक कहीं से आपको लगी है जिससे आपका चैन छिन गया है।"

अँधेरा उतर आया था। पहलवान के मन में भी और वातावरण में भी।

563

सुट्टा खींचने पर दोनों बीड़ियों के टोटे रह-रहकर दीप्त हो उठते थे।

थोड़ी देर तक चुप्पी रही, फिर खेलावन बोले- "देखिए भइया, कृषि समवर्ती सूची में है, इसलिए कृषि के मामले में कानून बनाने का अधिकार केन्द्र और राज्य दोनों सरकारों को है। इसलिए राज्य सरकार द्वारा गन्ने का मूल्य निर्धारित करना कहीं से गैरकानूनी नहीं है। यह बात हमारे जैसे कम पढ़े-लिखे आदमी के सामने भी एकदम साफ है। लेकिन लगता है,

यही तय करने में जज साहब लोगों को बीसों साल लग जाएँगे। कहते हैं, रुपये के बल पर झूठ सच को कठघरे में बन्द करवाता है। इसलिए कुछ भी हो सकता है। बलि का बकरा तो एक झटके में सारे कष्ट से मुक्त हो जाता है। हम किसान ही ऐसे अभागे हैं कि जाने कब तक सूली पर लटके-लटके जीने और मरने के बीच में तड़पते रहेंगे!"

खेलावन उठकर खड़े होते हुए बोले-" चलिए, जो चीज अपने वश में नहीं है, उसकी चिन्ता करके जान साँसत में डालने से क्या होगा? अपने नेता सरदार वी.एम. सिंह जी-जान से पैरवी में लगे हैं। उम्मीद करिए कि सत्य की विजय होगी। डरने से क्या होगा? लड़ना ही अपने हाथ में है। लड़ते रहेंगे।"

पहलवान को कुछ दिनों के लिए चैन मिल जाता है, लेकिन कभी-कभी जब उन्हें अपने पहलवान होने का बोध होता है तो गुस्सा आने लगता है।

"डरता कौन है जी? मरने-मारने की नौबत आएगी तो उनको मारकर मरेंगे. जो हमारे मरने के हालात पैदा कर रहे हैं।"

उनका मन करता है कि एक लाठी लेकर निकलें और सबको एक तरफ से पीटना शुरू कर दें। गन्ना लेकर दाम न देने वाले मिल मालिकों को पीटें। घटतौली करने और अवैध कटौती करने वाले सेंटर इंचार्ज को पीटें। मिलावटी खाद बेचने वाले सेठ को पीटें। जाड़े के दिनों में सिंचाई के लिए दिन के बजाय रात में बिजली देने वालों को पीटें। शहर के निर्जन पार्कों में रात-भर सैकड़ों बल्ब जलाकर बिजली बरबाद करने वालों को पीटें।

पहलवान आजकल लम्बी लाठी लेकर चलने लगे हैं। उनकी आँखें चढ़ी

रहती हैं। पूछने पर कहते हैं-"मैं सरकार की तलाश में घूम रहा हूँ। कहाँ रहती है सरकार? मिल जाए तो बताऊँ।"

अगम बहै दरियाव

एक दिन कहीं से नंगे बदन कन्धे पर लाठी रखे लौटे तो गर्दन और सीने पर नम मिट्टी लगी थी। जैसे अखाड़े से कुश्ती लड़कर लौटे हों। पहलवानिन आगे पड़ गईं।

पहलवान ने ललकारा- "तुम मुझे चैलेंज करते हो, सरऊ? आओ, दो-दो हाथ हो जाय।"

जब तक पहलवानिन कुछ समझ पातीं, पहलवान ने उनके दोनों पंजों में अपने पंजे फँसाकर दाहिने-बाएँ हिलाया और लंगी मारकर गिरा दिया। पहलवानिन डर और शर्म से सिकुड़ गईं। उठकर कोठरी के अन्दर भागीं और अन्दर से किवाड़ बन्द कर लिया।

पहलवान हँसने लगे-" भाग गए सरऊ मैदान छोड़कर !"

पहलवानिन को रोना आ गया- यह क्या होता जा रहा है उनके पहलवान को?

थोड़ी देर बाद किवाड़ की झिरी से झाँककर उन्होंने देखा। पहलवान बैलों की नाँद में खली-भूसा डाल रहे थे। पहलवानिन बाहर आईं और पहलवान के हाथ से खली की हाँड़ी लेते हुए बोलीं- "आप धूप से आए हैं, आराम कर लीजिए। सानी मैं चला दूँगी।"

पहलवानिन को चिन्ता व्याप गई। उन्हें पता है कि पाँड़े पहलवान के सपने में आते हैं। इसका मतलब पाँड़े बाबा के भूत ने पहलवान की डील को अपना आस्ताना बना लिया है। पहलवान तो भूत-प्रेत मानते नहीं। उन्हें ही अपने परानी के लिए कुछ करना पड़ेगा।

वे खेलावन बहू को साथ लेकर बिन्दा ओझा के घर गईं। बिन्दा का घर गाँव के दक्षिण नहर के किनारे है। जाने कहाँ-कहाँ की औरतें झोंटा खोले उनकी चौरी पर अभुवाती, भूत उतरवाती रहती हैं।

सारी बात सुनकर बिन्दा ने खोजना शुरू किया और लगातार मंत्र-वर्षा करके थोड़ी देर में पकड़ लिया! दो छायाएँ थीं। भाग रही थीं। एक-दूसरे के पीछे छिपने की कोशिश कर रही थीं। बिन्दा ने दोनों को खींचकर पिटारी में बन्द किया फिर बताया- "दो हैं। एक बरम्ह प्रेत है। हाल ही में आया है। दूसरी चुड़ैल है-नट्टिन। इसको बीस साल की उमर में इसके प्रेमी ने मारकर नदी में फेंक दिया था। पहलवान कभी उसी घाट पर नहा रहे थे। उनकी उघारी देह देखकर मोहित हो गई। साथ लग गई। दिन में बरम्ह प्रेत की सवारी रहती है, रात में चुड़ैल की। रात-भर चूसती है।"

"सही बात। तभी तो पहलवान इधर मुरझाए-मुरझाए रहते हैं।

* स्थान

बोलना न चालना, मुँह फेरकर सो जाते हैं। उनके पहलवान की देह ही ऐसी है कि जो भी देखेगी, लुभा जाएगी। लेकिन पाँड़े बाबा को क्या कहें? जीते-जी इतनी दोस्ती थी तो मरकर दुश्मन क्यों बन गए?"

"मेरे रहते चिन्ता की क्या बात? कहिए, दोनों को बाँधकर पीपल के पेड़ में उलटा लटका दूँ। कहिए, पानी में डुबाकर मार दूँ। बाँधने का काम तो आसान है। कम खर्चीला भी। लेकिन उसमें डर बना रहता है कि कभी कोई जबरदस्त सोखा पिल पड़ा तो छुड़ा ले जाएगा। पानी में डुबोकर मार दिया जाय तो हमेशा के लिए खतरा टल जाएगा। मैं तो अपनी इसी चौरी पर जला भी सकता हूँ। आप लोग खुद अपनी आँखों के सामने जलता हुआ देखकर तसल्ली कर सकती हैं, लेकिन तब उसकी राख गंगाजी में प्रवाहित करना अपना फर्ज बन जाएगा और खर्च बढ़ जाएगा।"

तय हुआ कि पानी में डुबोकर मार देना ही काफी रहेगा।

" डुबोकर मारने का क्या खर्च आएगा?"

"अब आप लोग ठहरीं गाँव की बहू। पहलवान भी बेटे जैसे हैं। तो अपने लिए क्या खर्च लेना? सामान दे जाइए, बस। एक देसी मुर्गा, एक बोतल दारू, लवंग, कपूर, लोहबान, जायफल, बच्छि, अगरबत्ती, नीबू, हरी मिर्च, दो सुई, ब्रह्मप्रेत के लँगोट के लिए सवा गज लाल सूती कपड़ा और एक जोड़ी खड़ाऊँ। नट्टिन के लिए एक लाल साड़ी, एक डिबिया सिंदूर और छह लाल चूड़ियाँ।"

"हम औरत जात मुर्गा-दारू खरीदने कहाँ जाएँगी, बाबा? पहलवान से यह बात छिपाना भी है। आप खुद ही खरीद लाइएगा। खर्च कितना पड़ेगा? मैं दे देती हूँ।"

बिन्दा ने जोड़कर कहा- "पाँच सौ दे दीजिए। जो बचेगा, वापस कर देंगे।" रुपये टेंट में लपेटते हुए बिन्दा ने कहा- " शाम को अँधेरा होने के बाद नदी के पूरबी घाट पर आ जाइएगा। 'ब्रह्म' और 'चुड़ैल' दोनों का 'निकारा' एक साथ करेंगे और एक साथ डुबोकर मार देंगे।"

शाम को घर से निकलने के लिए किसी बहाने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी। दिशा-मैदान के लिए शाम को औरतें घर से बाहर जाती ही हैं।

शाम को दोनों महिलाओं को घाट की ऊँचाई पर खड़ा करके बिन्दा कहते हैं-" ध्यान से देखती रहना।"

वे खुद धारा के पास जाते हैं। धारा की ओर मुँह करके उकहूँ बैठते हैं। झोले से दो छोटे-छोटे कछुए निकालते हैं। उनकी पीठ पर गोंद लगाकर कपूर का ढेला चिपकाते हैं और तीली रगड़कर जला देते हैं। फिर थोड़ा पीछे हटकर जोर-जोर से फूत्कार छोड़ते हैं।

पीठ पर जलते कपूर की गर्मी और सामने पानी की नमी का आभास पाकर दोनों कछुए धारा की ओर बढ़ते हैं। अँधेरे में दीये की लौ जैसी दो लपटों को आगे बढ़ते देख दोनों औरतें आश्चर्य में डूब जाती हैं।

दो गज की दूरी तय करके दोनों लपटें पानी में समा जाती हैं।

घुप्प अँधेरा।

बाप रे! अपनी आँखों से न देखतीं तो उन्हें कभी विश्वास न होता कि इस तरह प्रेत को डुबोया जा सकता है। "सचमुच गुनी आदमी हैं बिन्दा।"

दोनों एक-दूसरे को बाँहों में भर लेती हैं।

गाँव में आधी रात के करीब तूफानी के रहे तूफानी ने हाथ बढ़ाकर फोन उठाया। मोबाइल की घंटी बजी। गहरी नींद में सो

बुरी खबर है। "हेलो, तूफानी भाई! आपके लिए बुरी खबर है। पार्टी विरोधी गतिविधियों में लिप्त रहने के आरोप में आपको पार्टी से निकाल दिया गया।"

तूफानी थोड़ी देर तक आँख मींजते हुए समझने की कोशिश करता रहा। फिर बोला-"बुरी भी कह सकते हो... अच्छी भी कह सकते हो... अब हमारे जैसों का वहाँ काम ही क्या है?"

और पत्नी की कमर में हाथ डालकर फिर सो गया।

कुछ देर बाद राजधानी के सदर थाने के इंचार्ज की घंटी बजी। आला

अफसर का फोन था।

"जी सर! जय हिंद सर!"

"तूफानी सरोज को पार्टी से निकाल दिया गया है। उसका फ्लैट तुरन्त खाली कराकर मीडिया की मौजूदगी में सामान सड़क पर फेंका जाना है।"

"जी सर! जय हिंद सर!"

आधे घंटे बाद - "सर, उसके नाम से कोई आवास आवंटित नहीं है। राजधानी आता है तो विधायक कमला चौधरी को आवंटित खाली फ्लैट में ठहरता है। सामान तो उसमें क्या छोड़ता होगा। हो सकता है, हवाई चप्पल या पायजामा छोड़ जाता हो।"

"नहीं छोड़ा हो तो उसका इन्तजाम करो। सामान ही नहीं रहेगा तो फेंकोगे क्या?"

"सर।"

"दो-एक थाली, गिलास, तवा, कड़ाही, पतीला, बाल्टी, चादर, बिस्तर, खटिया का इन्तजाम कर लो। फोटो में सामान का ढेर दिखना चाहिए।"

"सर।"

"सामान सड़क पर फेंके जाने, पार्टी से निकाले जाने और विधायक कमला चौधरी के फ्लैट पर अवैध ढंग से किए गए कब्जे को मुक्त कराने की खबर मय फोटो अखबार के पहले पेज पर छपनी चाहिए।"

"राइट, सर! जै हिन्द, सर!"

अगले दिन पार्टी से निष्कासन और सामान सड़क पर फेंके जाने की खबर और फोटो के साथ एक छोटी-सी खबर और छपी थी-

तूफानी के बैंक अकाउंट में हफ्ते भर पहले तीन लाख रुपये नगद जमा किए गए हैं। माना जा रहा है कि यह ड्रग से कमाया गया पैसा है। जाँच बैठा दी गई है।

खबर पढ़कर कुछ लोगों ने कहा- " छुपा रुस्तम निकला साला!" कुछ कहा-"छुपा लोग दुखी हुए-"तूफानी था तो गाँव का नाम अखबार में छपता रहता था।"

इधर कुछ दिनों से पहलवान शंकर भगवान से नजदीकी महसूस करने लगे हैं। उनका स्वस्थ साँवला शरीर, शान्त तपस्यारत मुद्रा, गले में नाग, जटाओं से निकलती गंगा की धारा पहलवान को अपनी ओर खींचती है। मुखमंडल पर कितनी कान्ति, कितनी शान्ति! तय कर पाना मुश्किल कि नन्दी के मुख पर ज्यादा शान्ति विराजती है कि शंकर भगवान के। देखकर मन को सुकून मिलता है।

शंकर भगवान पहलवान को इसलिए भी अच्छे लगते हैं कि वे उन्हीं की तरह सिधवा स्वभाव के हैं। उन्होंने अन्य देवताओं की तरह न तो भेष बदलकर किसी स्त्री का सतीत्व भंग किया, न किसी से बलात्कार किया, न मोहिनी रूप धरकर किसी को छला। चालाक लोगों ने खुशामद करके जहर पिलाना चाहा तो वह भी पी लिया।

उनके चरित्र पर कोई दाग नहीं है। मर्द हैं और मर्द की तरह रहते हैं।

कभी-कभी पहलवान को लगता है कि शंकर भगवान कोई भगवान नहीं,

उन्हीं के पुरखा हैं। उनकी खेती-बारी भी कभी नीलाम हुई है। तब से वे अपनी गृहस्थी नन्दी बैल पर लादे बाल-बच्चे लेकर सारी दुनिया में घूम रहे हैं। बेर और कैथा खाकर आखिर कौन गुजारा करेगा? जिसको अन्न नहीं मिलेगा, वही न! जब इस देश के देवी-देवता अपनी जगह-जमीन नहीं बचा पाए, तो पाँड़े कैसे बचा लेते? फर्क बस इतना है कि शंकर भगवान तो भाग खड़े हुए इसलिए बच गए और हमारे पाँड़े फँस गए।

पहलवानिन को लगता है कि बरम्ह बाबा का भूत उतरवाने से फायदा हुआ है। पहलवान कुछ शान्त लगने लगे हैं। आज खाना खाते समय उन्होंने न बोलने का अपना नियम भी तोड़ दिया। एक रोटी माँगकर और खाई।

कुत्ते को कौरा देकर, और जानवरों के मुँह में थोड़ी-थोड़ी रोटी पकड़ाकर उन्होंने हाथ धोये और सींक से दाँत खोदते हुए आराम करने के लिए दालान में गए। पीछे से पहलवानिन भी हुक्का भरकर चिलम में फूंक मारते हुए पहुँचीं।

पहलवान अधलेटे होकर हुक्का पुड़काने लगे तो बोलीं- " आराम कर लीजिए तो जरा बाजार चले जाइए। नमक खत्म है। पैरों में लगाने के लिए थोड़ा महावर लाना है। थोड़ा चून-पान भी लेते आइएगा।"

"इतना सामान? तो तुम भी चली चलो।"

"हम क्या करेंगे चलकर !"

"चलो, आज अपने हाथ से तुम्हें पान खिलाकर लाते हैं।"

पहलवान का प्रस्ताव और उनकी मुस्कराहट देखकर पहलवानिन गद्गद हो गईं। उन्होंने हाथ जोड़े- "हे भगवान, हमारे पहलवान को इसी तरह हँसता-खेलता बनाए रखिए। हमें कुछ और नहीं चाहिए।"

लेकिन प्रत्यक्ष में पूछा- " पान किस खुशी में?"

"मेरी सोच में अपनी सोच मिलाने के लिए हमेशा तैयार रहती हो

इसलिए।"

"हुँह!" वे मुस्कराईं-"पान खिलाने चले हैं! वह भी बाजार में। जब पान खिलाने की उमर थी तो कभी अकेले में भी नहीं खिलाए! "

"तब अकल नहीं थी। कदर नहीं जान पाए।" पहलवान पत्नी की ठुड्डी ऊपर उठाते हुए मुस्कराकर बोले- "कूदकर साइकिल के कैरियर पर बैठ लेना, फिर देखना कैसे फर्राटे से ले चलता हूँ!"

"और नहीं सँभाल पाए, गिरा दिए तो?" ... वे मुस्कराईं।

"पच्चीस साल से कोई और सँभाल रहा है क्या, भाई?"

"हटिए, कहते हुए लाज भी नहीं आती।"

आसपास देखा, कोई नहीं था। पहलवानिन इठलाने लगीं।

"लाज क्यों आएगी? लोग तो दूसरियों को बैठाते हैं। मैं तो अपनी को बैठाऊँगा।"

"दूसरियों को बैठाने के लिए सभी लपकते हैं। अपनी के लिए किसी के पास फुरसत नहीं रहती।" पहलवानिन आँख नचाकर तिरछे देखते हुए बोलीं।

पहलवान मुस्कराते हुए बोले- "इतनी मोटी न हो गई होतीं तो आगे बैठाने लायक थीं।"

"चुप रहिए। आज क्या हुआ है आपको?" ... वे उठकर बाहर जाते हुए बोलीं।

"तुम्हारी मरजी! लाओ, फिर पैसा-वैसा तो दो।"

खुशी के मारे विह्वल हो गईं पहलवानिन। खुश रहते हैं तो कैसी मीठी-मीठी बातें करते हैं उनके पहलवान।

उन्होंने लौटकर उनकी जेब में कुछ रुपये और चूना लाने के लिए चुनौटी डाली। मिट्टी का तेल लाने के लिए टिन का डिब्बा साइकिल के हैंडिल से लटका दिया। एक बार फिर सामानों की सूची गिनाई। फिर बोलीं- " मैं जा रही हूँ जरा सुनरी के घर तक। कल उसका गौना है। सबके साथ अभी डीह पूजने जाना है।"

थोड़ी देर बाद पहलवान साइकिल पर बैठकर निकले तो रास्ते में औरतों का झुंड गाते हुए जा रहा था। पप्पू की अम्मा लाल साड़ी पहने गाते हुए आगे-आगे चल रही थीं-

रंग बिगड़ि गा मोर जालिम तोहरी फिकिर से।

पहलवान सोचने लगे कि क्या सचमुच मेरी फिक्र से पप्पू की अम्मा का रंग बिगड़ गया है? ऐसा नहीं है। उम्र के साथ तो सभी का रंग थोड़ा हल्का पड़ता है, लेकिन बिगड़ गया है, ऐसा नहीं कह सकते। पप्पू की अम्मा की आँखें, उनकी हँसी अभी भी जकड़ती है।

खरीदारी करके बाजार से निकल रहे थे कि आवाज आई- "अरे, पहलवान भइया हैं क्या?"

उन्होंने मुड़कर देखा। पान की गुमटी के सामने मिडिल स्कूल का उनका सहपाठी मुरली खड़ा था। वे हँसते हुए साइकिल मोड़कर मुरली के पास आ गए। साइकिल स्टैंड पर खड़ी की। दोनों मित्र लपककर गले मिले, फिर एक-दूसरे का

हाल-चाल पूछने लगे। पहलवान को याद आया कि मुरली कबड्डी बहुत अच्छी खेलता था। वही उनका जोड़ थाम पाता था। मुरली ने शिकायत की" खाने-पीने में कंजूसी करने लगे क्या भाई? क्या देह थी! गलाकर

आधी कर दिए। मूँछें तक छोटी करा लिये। पहले क्या बिच्छू के डंक जैसी घनी ऐंठी मूँछें थीं!"

"अरे भाई, गृहस्थी का झोड़ तो तुम जानते ही हो। सब कुछ जुरता-जुहाता रहे तब भी समय से खा-पी नहीं पाता आदमी।"

"जवानी का खाया-पिया ही बुढ़ापे में काम आता है, भइया ! कहते हैं कि घोड़े का, पहलवान का और वेश्या का बुढ़ापा बहुत खराब गुजरता है।"

वेश्या से तुलना करना पहलवान को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने बात बदलने के लिए पूछा-" अपनी सुनाओ। कहाँ हो आजकल ?"

"मैं तो सूरत की एक कपड़ा मिल में लगा हूँ। सुना, तुम्हारा बेटा इंजीनियर हो गया। तबीयत खुश हो गई। लेकिन मिठाई खाने को नहीं मिली। आज दिखाई पड़े हो। सोचा, आवाज देकर एक बीड़ा पान ही खाया जाय।"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, आओ! "

"कुछ कमाने-धमाने लगा कि अभी पढ़ ही रहा है?"

"नौकरी से लग गया है।"

"रुपये-पैसे से मदद करता है कि खुद ही उड़ा रहा है?"

"देता है, तभी तो गृहस्थी की गाड़ी चल रही है।" पहलवान ने झूठ बोलकर इज्जत बचाई।

"बहुत खुशी हुई सुनकर। यही तो लायक बेटे का धरम है।"

दोनों लोग मुड़कर गुमटी के सामने खड़े हो गए। पहलवान ने गुमटी वाले से एक पान लगाने को कहा।

"एक क्यों?"

"मैंने तो छोड़ दिया। तीन-चार साल हुए।"

"अकेला पान तो दुश्मन को खिलाते हैं।" मुरली हँसने लगा - "दो भाई पहलवान को भी एक जोड़ा।"

फिर हैंडिल में टँगे पहलवान के झोले के ऊपर महुए के पत्ते में लपेटकर रखे पान के बंडल को देखकर बोला- "फिर यह बंडल किसका है?"

"तुम्हारी भौजी के लिए।"

हँसा मुरली- "हाँ, सेवा करते रहिए। बुढ़ापे में वही काम आएँगी।"

"अभी क्या कोई दूसरी काम आ रही है?" हँसे पहलवान भी। फिर देर तक मुरली सहपाठी लड़कियों की चर्चा करके और हथेली उलटी कराकर छड़ी मारने और मुर्गा बनाने वाले मौलवी साहब की बातें सुनाकर हँसता रहा।

गिलौरी भरे मुँह को ऊपर उठाकर दोनों हँस रहे थे, फिर भी पहलवान के कुर्ते पर पीक की कुछ बूँदें गिर गईं।

मन उत्साह और खुशी से भर गया।

लेकिन पहलवान के मन में एक संकट भी पल रहा था। खरीदारी करने में जेब के सारे पैसे खत्म हो गए थे। मुरली यदि विदा लेकर पहले चल पड़ता, तब तो वे बाद में पान वाले से कह सकते थे कि पान का पैसा उधार रहेगा। मुरली को लगता है, कोई जल्दी ही नहीं थी। देर होने लगी तो उन्होंने पान वाले से कहा- "पान का पैसा लिख लो, राधे। अगले बाजार के दिन देंगे।"

"अरे, मैं दिए देता हूँ!"

"तुम क्यों दोगे, भाई?" मुरली का हाथ पकड़कर उन्होंने सख्ती से मना

कर दिया- "हमारी राधे की लिखा-पढ़ी कोई आज से चल रही है!"

मुरली के जाने के बाद मित्र के सामने जेब खाली होने की बात उजागर होने का मलाल उन्हें थोड़ी देर सालता रहा। फिर उन्होंने इस मलाल को झटक दिया। मुरली उसकी तन्दुरुस्ती पर चिन्ता प्रकट कर रहा था। उन्होंने भी वह कहावत सुनी है कि चिता मुर्दे को जलाती है, जबकि चिन्ता आदमी को जिन्दा ही जला देती है। चिन्ता ही सारी बीमारियों की जड़ है। इसी से मन गिरता है। गठिया-बतास पकड़ता है। जिन्दगी के झमेले तो मरते दम तक साथ नहीं छोड़ने वाले। जवानी कहीं गई थोड़े है! जरूरत है उसे महसूस करने की। मुरली कह रहा था - पहलवान का बुढ़ापा। कैसा बुढ़ापा? एक बार पहलवानिन ने हँसते हुए उन्हें जवाब दिया था- मौका मिले तो मौर बाँधकर विवाह करने निकल पड़ोगे और कहते हो बुढ़ा गए।

बारी-बारी से उन्होंने दोनों हाथों, फिर दोनों पैरों को झटका और थोड़ा झूमकर साइकिल चलाने लगे। गाँव पहुँचने के पहले सड़क के बगल में वह बाग था, जिसमें उनके गाँव का अखाड़ा था। अखाड़े का डेढ़ फीट ऊँचा, लम्बी ढलवा पूँछ वाला मुंढा दूर से दिखाई पड़ रहा था। इसी से छलाँग लगाकर वे लगातार तीन साल अपने गाँव में लम्बी कूद के चैम्पियन बने थे।

पहलवान की साइकिल का हैंडिल अपने-आप बाग की ओर मुड़ गया। स्कूल से पढ़कर लौट रहे पाँच-छह छोटे-छोटे बच्चे पास में बेर के पेड़ के नीचे बेर बीन रहे थे। पहलवान को आता देख वे विपरीत दिशा की ओर भागे।

"क्या हुआ?"

"जोगी के बप्पा आ रहे हैं। उन पर बरम्ह बाबा की सवारी आती है। पकड़ लिये तो?"

पहलवान ने पास आकर साइकिल स्टैंड पर खड़ी की और मुंढे की मिट्टी को माथे से लगाया। मुंढे के आसपास घास उग आई थी। सूखी पीली पत्तियाँ उदासी का माहौल बना रही थीं। इसी मुंढे से कूदकर वे चौदह हाथ लम्बी छलाँग लगाते थे। अब कूदे तो कितना उछाल ले पाएँगे? वे कुछ देर तक टकटकी लगाकर मुंढे को देखते रहे। पहलवान को लगा कि उन्हें देखकर मुंढा भी उदास हो गया है। मानो पूछ रहा हो-बहुत दिन से दरसन नहीं दिए ! एकदम ही भुला दिए।

वे अँगोछे से मुंढे पर पड़ी पत्तियाँ झाड़ने लगे। एक लड़का कन्धे पर फावड़ा रखे बगल से गुजर रहा था। पहलवान ने आवाज देकर उसे बुलाया और उसका फावड़ा लेकर अखाड़ा गोड़ने लगे।

"अरे, मेरे रहते आप क्यों गोड़ेंगे?" लड़के ने हँसते हुए उनके हाथ से फावड़ा ले लिया और खुद गोड़ने लगा।

इधर-उधर से कई लोग जुटने लगे। भीड़ जुटती देख पहलवान का सिर भारी होने लगा।

"क्या है पहलवान ? कुश्ती होगी क्या?"

पहलवान ने स्वीकार में सिर हिलाया।

"किसकी, किससे!"

"मेरी, नयबवा से।" कहने के साथ पहलवान ने फुर्ती से धोती-कुर्ता उतारकर साइकिल के हैंडिल पर टाँगा और लँगोट का पट्टा कसने लगे।

"नयबवा कौन?"

"जिसने पाँड़े के खेत नीलाम किए।... देखो, हरामजादा कैसे तुम्हारे पीछे छिप रहा है।"... पहलवान ने ताल ठोंका- "तेरी तो ऐसी की तैसी ससुरे !"

छिपने की कोशिश करते नायब को पहलवान ने झपटकर पकड़ा। खींचकर

बीच अखाड़े में लाए और दे झटके पे झटका।

नायब किसी को दिख नहीं रहा था, लेकिन पहलवान जिस तरह पसीने-पसीने हो रहे थे उससे लगता था कि नायब बार-बार दाँव काटकर खुद को बचा रहा है।

नौजवान हक्के-बक्के थे, लेकिन अनुभवी लोगों ने मौके की नजाकत को समझ

लिया और पहलवान का उत्साहवर्धन करने लगे।

"ऐ-है-है! उस्ताद से उस्तादी? यह ले धोबियापाट! "

पहलवान ने किचकिचाकर नायब को आसमान में उठाया, दो बार नचाया और पटक दिया। तुरन्त उसकी छाती पर सवार हुए और मिट्टी में रगड़ने लगे।

लोग खुशी से चिल्लाने लगे। पहलवान को कन्धे पर उठा लिया। त्रिभुवन माली भी तमाशा देखने के लिए रुक गया था। उसके हाथ में माला-फूल की डलिया थी।

लोग उसकी माला निकाल-निकालकर पहलवान के गले में डालने लगे।

"अरे, मेरे गले में माला क्यों?"

"आप विजेता हैं। दंगल जीता है।"

"माला ती बलि के बकरे को पहनाते हैं जी!"

पहलवान माला नीचकर फेंकते हुए भागे। कुछ लोगों ने मनुहार करके उन्हें आगे से रोका। वे वापस मुड़े तो उनकी नजर मुंढे पर पड़ी। वे पिछड़ते हुए

कई कदम पीछे गए। चार-पाँच बैठक लगाई और ताल ठोंककर मुंढे की ओर दौड़े।
पहलवान को लगा कि उनके साथ उनचासों पवन दौड़ रहे हैं। हवा में छलाँग लगाई तो उन्हें लंका की ओर छलांग लगाते हनुमानजी याद आ गए। लेकिन उछाल लेते समय मुंढे पर दाहिने के बजाय बायाँ पैर पड़ा और हवा में दोनों पैर आगे-पीछे हो गए। जमीन पर बायाँ पैर पहले पड़ा और मीच खा गया। उठ नहीं सके। लोगों नै सहारा देकर उठाया। चबुरी बाँधकर उन्होंने खुद को कराहने से रोका। चारपाई पर लादकर घर लाए गए।

अँधेरा होते-होते आधा गाँव पहलवान के दरवाजे पर इकट्ठा था।
पी.सी.एस. ने पूछा-" बेमौसम कूदने क्यों लगे, काका?"

"बल आजमाने के लिए, बच्चा।"

"नहीं, काका। भय को भयभीत करने के लिए... डर को डराने के लिए... जैसे जाल पड़ने पर जान बचाने के लिए मछलियाँ उछलती हैं। यह केवल आपकी नहीं, आप जैसे लाखों किसानों की आखिरी छलाँग है। मौत के खिलाफ लगाई गई छलौंग! "

"लेकिन आखिरी क्यों?"

"क्योंकि जिनसे आपको खतरा है, वे दिनोदिन ताकतवर होते जा रहे हैं। अब आप उनसे मुकाबला करने लायक रह ही नहीं गए हैं।"

"क्या बात करता है!" पहलवान ने आँगन की ओर मुँह घुमाया-"सुनती हो, जी! जरा मेरी लाठी तो लाना।"

"अब आपकी लाठी चलाने के नहीं, टेकने के काम आएगी काका। जानते हैं क्यों? - क्योंकि जिनसे पाला पड़ा है उनसे लड़ने के लिए आपकी लाठी बहुत छोटी है। उनसे पार पाना चाहते हैं तो जाति-धर्म का भेद भुलाकर संगठित होना पड़ेगा। जान हथेली पर लेकर जूझने के लिए निकलना पड़ेगा।"

"यही बात कहते-कहते तो मैं जवान से बूढ़ा हो गया।" खेलावन कहते हैं-" लोगों को ताव तो आता है। हामी भी भरते हैं, लेकिन फिर ठंडे पड़ जाते हैं।"

अगम बहै दरियाव

पहलवान उत्तेजित होकर उठ बैठते हैं- "इस बार ठंडा नहीं पड़ने देंगे। इसे जीने-मरने का सवाल बनाएँगे।"

बरदाही बाजार के बाग में चारों तरफ से किसानों का रेला उमड़ा आ रहा है।

पेड़ की डाल में स्पीकर बँधवाते खेलावन भीड़ देखकर खुश हो रहे हैं। यह उनकी दौड़-धूप का नतीजा है।

खेलावन और पहलवान ने गाँव के बाबा हरदयाल, लल्लू सिंह और प्रभाकर के साथ बैठकर तय किया कि पाँड़े की आत्महत्या को किसानों के ऊपर मँडराती विपत्ति से जोड़कर एक बड़ी रैली करनी है और इस विपत्ति से बचने की राह खोजनी है।

फिर इन लोगों को साथ लेकर आसपास के गाँवों का दौरा किया और नीलामी की घटना को विपत्ति का मूल मानकर, उसी की बरसी को 'विपत्ति दिवस' के रूप में मनाना तय किया।

बस, दलित इस जुटान में शामिल नहीं हो रहे हैं। तूफानी ने कहा कि आप लोग हम दलितों को अपना मानते कहाँ हैं? आपने हम लोगों के पास एक धूर जमीन तो छोड़ी नहीं कि चटनी के लिए धनिया ही बो सकें। भूदान आन्दोलन के समय जमीन का जो पट्टा मिला, उस पर आज तक आप

लोगों ने कब्जा नहीं करने दिया।

किसी के पास कोई जवाब नहीं था।

"अनाज महँगा बिकेगा तो आपको फायदा होगा, क्योंकि आपको बेचना है। लेकिन हमें तो नुकसान हो जाएगा क्योंकि हमें खरीदकर खाना पड़ता है।"

पहलवान को दोपहर का भोजन तैयार कराने का जिम्मा दिया गया है। पूड़ी-सब्जी और हलवा। बाग के किनारे जमीन में चूल्हा खुदवाकर उन्होंने सबेरे पाँच बजे ही उबलने के लिए आलू चढ़वा दिया है। गाँव की औरतों को कल शाम ही सहेज आए हैं कि आलू निकोलने और पूड़ी बेलने के लिए चौका-बेलन लेकर सबेरे नौ-साढ़े नौ तक पहुँच जाएँ।

अरे, अनारा भी आ गईं!

पूड़ी बेलती औरतों के लिए बिछाये गए जाजिम से थोड़ी दूर पहले रुककर सोच रही थीं कि कहाँ बैठना ठीक रहेगा। तभी माठा बाबा उन्हें पहचानकर पास आते हैं-"स्वागत है आपका, अनारा बाई। बिना आपके आए यह यज्ञ कैसे सम्पूरन हो सकता था! - कबुतरा, ले जाओ; आपको महफिल के बीच में बैठाओ।"

पहलवानिन उठकर आती हैं और अनारा की बाँह पकड़कर औरतों के बीच ले जाती हैं।

एक बूढ़ी आवाज गांधी बाबा के नाम की जगह पाँड़े बाबा का नाम जोड़कर गीत की शुरुआत करती है-

पाँड़े बाबा माँगे सुराज, चलु सखी लावन को।

"सही बात। पहले जो सुराज मिला था, उसमें किसानों का हिस्सा कहाँ

था? अब लेना है।"

विद्रोही जी राजधानी से सौ लोगों का जत्था लेकर सबेरे वाली गाड़ी से उतरे हैं। उन्हीं के साथ आए एक बुजुर्ग ने मंच संचालन सँभाला है। सभा की शुरुआत करते हुए उन्होंने सबसे पहले सरदार सतनाम सिंह, माजिद खान और बाबा हरदयाल को मंच पर बुलाया। फिर आसपास के गाँवों और जातियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए कुछ अन्य किसानों को। सब हाथ में हाथ डालकर खड़े हुए।

भाइयो, हम पिछले सौ साल से अलग-अलग नाम और पहचान लेकर लड़ते रहे और यह समझ में आया कि हिन्दू-मुसलमान या अगड़े-पिछड़े में बँटकर हम अपने प्राण नहीं बचा सकते। अब हमारी एक ही पहचान रहेगी-किसान।

हम किसान बनकर जीने की राह खोजने निकले हैं। इसके लिए बाकी सारी पहचानों को एक में मिलाना होगा। मंच पर उपस्थित हमारे भाई हमारी धार्मिक और जातीय एकता के प्रतीक हैं। अब तक सत्ता हमारे धार्मिक नारों का प्रयोग हमें एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने में करती थी। आज से हम इन नारों का प्रयोग एक दूसरे के साथ अटूट एकता साबित करने के लिए करेंगे। इन्हें आपको इतनी ऊँची आवाज में दोहराना है कि यह सत्ता के बहरे कानों तक पहुँच जाए।

बोलो-हर हर महादेव
अल्लाहो अकबर

अगम बहै दरियाव

सत सिरी अकाल, बोले सो निहाल

एक बार फिर...

...हर वक्ता कम-से-कम समय में अपनी बात रखे ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों को सुना जा सके।

खानपान का इन्तजाम सँभालने के साथ-साथ पहलवान के कान भाषण पर ही लगे हुए हैं। जितने वक्ता, उतनी तरह के प्रस्ताव।

.... अब हम मरेंगे तो फाँसी लगाकर नहीं, बल्कि अपने हक के लिए लड़ते हुए मरेंगे।

खेलावन अनुमान लगाते हैं कि बारह बजते-बजते आसपास के गाँवों से चार-पाँच हजार की भीड़ उमड़ आई है। इतना बड़ा बाग पूरा भर गया है। लगता है कुएँ का पानी एकाध घंटे में सूख जाएगा।

बाजार के गल्ला व्यापारी संघ ने एक कुंटल आटा, एक कुंटल चावल, एक कट्टा अरहर दाल और हजार रुपये का सहयोग किया है।

कस्बे के ट्रैक्टर डीलर सरदार सतनाम सिंह ने कढ़ी-चावल और चाय का लंगर लगा दिया है। पड़ोसी गाँव के ट्रैक्टर वाले खान एक ट्राली गन्ना लेकर आए हैं। ट्रैक्टर में ही पेराई के लिए कोल्हू जुड़ा है। जितना पीना चाहें, गन्ने का रस पिएँ। कम पड़ने पर गन्ना फिर आ जाएगा।

खान की अम्मी भी ट्रैक्टर पर बैठकर आई हैं। पान खाने से काली पड़ी उनकी बत्तीसी लाल होंठों के बीच कितनी सुन्दर लग रही है।

"आइए, आइए। यहाँ बीच में आइए।"

. चार-पाँच साल पहले मैं डीएपी खाद खरीदने गया तो एक बोरी 605 रुपये में मिली थी। अगले साल उसी बोरी का दाम 911 रुपये हो गया।

डेढ़ गुने से ज्यादा और हमारे धान की कीमत 1080 रुपये कुंटल से बढ़कर 1120 रुपये-यानी सिर्फ पौने चार प्रतिशत की वृद्धि। आज डीएपी की कीमत और गेहूँ की एमएसपी का मिलान करके देखिए, डीएपी का दाम खरगोश की तरह छलांग लगाता जा रहा है और गेहूँ का कछुए की तरह रेंग रहा है। बताइए, कैसे होगा हमारा गुजारा?

... चुनाव पास आने पर सरकार हमारी जेब में चन्द सिक्कों की भीख डाल देती है और हम पूँछ हिलाने लगते हैं। क्या हम भिखारी हैं? हमें भीख नहीं, दान नहीं, दाम चाहिए।

संतोखी सभा में आने के लिए तैयार नहीं थे। उनका कहना था कि "अगर इसी तरह गाँव के लोग इकट्ठा होकर मेरे साथ की गई जालसाजी का विरोध छत्रधारी सिंह के दरवाजे पर चढ़कर किए होते तो मुझे अपनी आधी उमर कोर्ट-कचेहरी में भटकते हुए क्यों गुजारनी पड़ती?"

"वह सब भूल जाइए।" भूसी ने समझाया - "आदमी का धरम है कि सही काम के लिए उठाई गई आवाज में अपनी आवाज मिलाए। चलिए।"

... क्या है किसान के हाथ में? न बीज, न बिजली, न बाजार। उसे सीएम, पीएम पैकेज देकर बहलाने से बाज आइए। उसे पॉलिसी दीजिए। सब्सिडी दीजिए, खाद में, बीज में, दूध में।

विद्रोही जी अब किसान यूनियन के दफ्तर में रहते हैं। यूनियन के अच्छे संगठनकर्ता और योजनाकार माने जाने लगे हैं। यूनियन पूरे प्रान्त का दौरा करते रहते हैं। यूनियन को मजबूत करने के लिए

वे भाषण देने खड़े हुए।

... पंचो, बड़े भाग का दिन है कि हजारों साल से अलगाव का सराप झेलने के बाद आज हम एक होने के लिए इकट्ठा हुए हैं। सन् 1980 के 7 दिसम्बर को लोकदल पार्टी द्वारा आयोजित धरना-प्रदर्शन के आवाहन में मुझे भी शामिल होने का मौका मिला था। उसमें हमारी माँग थी कि किसान को गेहूँ, गन्ने और आलू का सही दाम दिया जाए। फिर 26 मार्च, 1981 को दिल्ली के बोट क्लब पर रैली हुई। उसमें भी यही माँग थी कि

किसान को उसकी उपज का सही दाम दिया जाए। 1988 में 25 से 30 अक्टूबर तक महेन्द्र सिंह टिकैत के नेतृत्व में बोट क्लब पर जो धरना-प्रदर्शन हुआ, उसमें भी मुख्य माँग थी कि गन्ने का सही मूल्य दिया जाए। 8 मई, 2003 को गन्ने का बकाया और उचित मूल्य की माँग पर संसद भवन के सामने जो ऐतिहासिक प्रदर्शन किया गया, उसे आप भूले नहीं होंगे। सही दाम माँगते-माँगते हम जवान से बूढ़े हो गए। क्या किसी ने हमारी सुनी? सही बात तो यह है कि हमने जिसे भी चुना, उसी ने हमें चूना लगाया। आज भी हमारी माँगें ज्यों की त्यों हैं।

अगम बहै दरियाव

...इस देश में बेइज्जत करने और प्रताड़ित करने वाले कानून सिर्फ बकाएदारों के लिए बनाए गए हैं। खूनी, कत्ली, बलात्कारी लोगों के लिए भी ऐसे अपमानित करने वाले कानून नहीं बने। हम माँग करते हैं कि एक निर्धारित सीमा से नीचे किसी किसान की जमीन नीलाम न करने का कानून बने। उतनी न्यूनतम जमीन उस किसान परिवार के भरण-पोषण के लिए छोड़ दी जाए, जितनी परिवार के जिन्दा रहने के लिए जरूरी है, ताकि फिर किसी किसान को फाँसी के फंदे पर झूलना न पड़े। मैं जमीन की यह न्यूनतम सीमा पाँच बीघे प्रस्तावित करता हूँ। सभा का अनुमोदन हो तो इसे अपने माँगपत्र में दर्ज किया जाए।

प्रस्ताव का तालियों से स्वागत हुआ।

...19 नवम्बर, 2009 को गन्ना किसानों ने दिल्ली कूच करते समय नारा दिया था-दिल्ली हमारी दुश्मन है। सचमुच किसान जिसे भी गद्दी सौंपता है, वह उसका दुश्मन बन जाता है। अब हम ऐसे नेताओं से चुनावी घोषणापत्र रजिस्टर्ड एफिडेविट पर लेंगे, ताकि मुकरने पर उन पर मुकदमा चलाया जा सके और गद्दी से उतारा जा सके।

पहलवान को किसी लड़के लड़के ने ने आकर बताया- " आपको बोलने के लिए बुलाया जा रहा है।"

"इतने विद्वानों के बीच मैं क्या बोलूँगा?" मना तो कर दिया, लेकिन सोचने लगे कि बोलता तो क्या बोलता? बोलता कि जो पराए लूट रहे हैं, उससे बचने का रास्ता तो हम सब मिलकर खोज रहे हैं, लेकिन जो अपने लूट रहे हैं, अपनों को लूट रहे हैं, उनसे बचाने कौन आएगा? इतने दिनों से बेटी के लिए वर खोज रहे हैं, लेकिन हर दरवाजे से भिखमंगे की तरह दुरदुराए जाते हैं। इसलिए कि मोटा दहेज नहीं दे सकते। मैं कहता कि सभी लड़कों के बाप इसी सभा में हाथ में गंगाजली उठाकर कसम खाएँ कि दहेज लेना हराम है। दहेज लें तो समझो, अपनी बेटी पर काँछ खोलें। बोलता तो बोलने के बाद सबसे पहले खुद कसम खाता।

पी.सी.एस. दक्षिण भारत की यात्रा पर गया है, इसलिए अपना भाषण लिखित रूप में दे गया है। भाषण क्या, चौदह पृष्ठों का पूरा लेख है। तय होता है कि समयाभाव के कारण उसके खास-खास हिस्से दो-तीन मिनट में पढ़ दिए जाएँ-

...हम बिलकुल नहीं चाहते कि समर्थन मूल्य बढ़ाने के लिए हमें हर साल धरना-प्रदर्शन करना पड़े। हम ऐसा उपाय बता रहे हैं, जिससे

स्वामीनाथन आयोग की सिफारिश भी लागू हो जाए और सरकार को अनाज का मूल्य भी ज्यादा न बढ़ाना पड़े। ... समर्थन मूल्य का लाभकेवल उन्हीं किसानों को मिलता है जो अपना अनाज बेचने की स्थिति में हैं। ऐसे बड़ी जोत वाले किसान देश के कुल किसान परिवारों के दस-पन्द्रह प्रतिशत हैं। शेष किसान केवल अपने उपयोग भर का अनाज ही उगा पाते हैं इसलिए समर्थन मूल्य का घटना बढ़ना उनको प्रभावित नहीं करता।... यदि सरकार किसानों को रियायती दर पर बीज, उर्वरक, बिजली, डीजल, कीटनाशक आदि उपलब्ध करा दे तो अनाज की उत्पादन लागत भी घट जाएगी और समर्थन मूल्य की प्रचलित दर पर भी किसान के लिए खेती घाटे का सौदा नहीं रह जाएगी। सबसे खास बात यह कि इससे हर किसान को राहत मिलेगी, चाहे वह अनाज बेचने की स्थिति में हो या न हो।

...उद्योगों को तो सरकार कच्चे माल, ईंधन, पैकिंग मटेरियल आदि की खरीद पर रियायती दर का लाभ देती ही है, किसानों को देने में क्या आफत है! उद्योगों के लिए 'सेज' का कानून है। सुख की सेज, वंडरलैंड। धरती पर स्वर्ग। इसलिए कि वे सरकार के सगे हैं। जबकि देश का सबसे बड़ा उद्योग खेती है, फिर भी सरकार उसे उद्योग का दर्जा देने को राजी नहीं है। उद्योगपतियों से तो मर्चेंट चैम्बर में जाकर पूछती है कि उन्हें कैसा बजट चाहिए। कभी किसानों से भी पूछ लेती ! कब तक सरकार उद्योगपतियों को सगा और किसानों को सौतेला मानती रहेगी?

... यह पूरी किसान प्रजाति के लिए अँधेरा समय है। इससे उबरने के लिए आगे आइए। जैसे सुराजियों में नाम लिखाने के लिए गांधी बाबा ने आवाहन किया था। जैसे आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने के लिए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आवाज दी थी, जैसे जमींदारों के खिलाफ लामबन्द होने के लिए इसी धरती से बाबा रामचन्द्र ने पुकारा था, उसी तरह किसानों के साथ बेइंसाफी करने वालों के खिलाफ लामबन्द होने के लिए आज हम आवाज देने आए हैं।

वक्ता ने दोनों हाथ उठाकर पूछा- "बोला, के-के तैयार बा?" हजारों कंठों से आवाज आई- " सब केहू तैयार बा।"

अगम बहै दरियाव

आवाज के साथ हजारों मुट्ठियाँ हवा में तन गईं।

तैयार किया गया माँगपत्र पढ़ा गया और पन्द्रहवें दिन बुधवार को अपनी माँगों को मनवाने के लिए भारी संख्या में राजधानी प्रस्थान करने का निर्णय लिया गया।

खाने-पीने के लिए किसी का मुँह न जोहना पड़े, इसलिए पिट्ठू में चना-चबेना, सतुआ-पिसान लेकर चलना है।

किसाऽऽन एकता -
जिन्दाबाद!

सूरज भगवान रेलवे लाइन के पार तरेरा देकर डूब रहे हैं। पहलवानिन आँगन में बैठी आँसुओं की बाढ़ में डूब रही हैं।

विद्रोही बहू उन्हें दबे स्वर में समझा रही हैं-"अपना दुख अपनी छाती में दबाकर रखो, बहू। पूरे गाँव में अन्दोर करने से कोई फायदा नहीं।"

आए दिन मोबाइल से घर की हाल-खबर लेने वाले जोगी ने पहली बार चिट्ठी भेजी है। लिखा है-दस लाख रुपये की सख्त जरूरत है, अम्मा। फ्लैट खरीदना है। चाहें तो मेरे हिस्से का खेत बेच दें।

बेटी चम्पा से चिट्ठी सुनती पहलवानिन के कान में 'खेत बेच दें' और 'मेरे हिस्से का' दोनों वाक्यांश पिघले शीशे की तरह घुसे और वे फफकने लगीं- "हमारी औकात नहीं थी कि इंजीनियरी की फीस भर पाते। पेट काटकर पढ़ाया। उसी के चलते अभी तक सयानी बेटी का ब्याह नहीं कर सके। सोचा था कि बेटा कमाने-धमाने लगेगा तो बेटी भी ब्याह उठेगी। और बेटे ने यह बजर गिराया! "

बहू को समझाते-समझाते विद्रोही बहू की सब्र का बाँध भी टूट जाता है। वे जोड़ती हैं- "महुआ खाकर खरमिटाव किया है और आलू खाकर दिन काटा है, तब यह जायदाद खड़ी हुई है और उसी के लिए लिखा है निर्दइया ने कि बेच दो।"

चम्पा पास में मूक खड़ी है।

जब तक विद्रोही बहू उससे कहतीं कि घर के किवाड़ अन्दर से बन्द कर ले, रान्ह-पड़ोस की औरतों से आँगन भर गया।

581

पड़ोसियों को देखकर पहलवानिन कारन करके रोने लगती हैं।

"...किस जनम का बदला लेने तू मेरी कोख में आया रे, दुश्मनवा?... दो साल से ज्यादा नौकरी करते हो गया। कभी हथेली पर दो पैसा भी नहीं रखा कि लो अम्मा, तमाखू खा लेना। और अब सीधे कलेजे पर ही छुरी चला दिया।"

फिर, जैसे जोगी सामने खड़े हों, वे समझाने लगती हैं- " खेत तो लक्ष्मी का रूप होते हैं बेटा। इन्हें बेचने की बात तो तब नहीं सोचा, जब जिन्दगी बहुत गाढ़े में कट रही थी। किसने तुमको यह कुमति दे दी? इधर देखो, मुझसे आँख मिलाओ।"

अचानक उन्हें नई चिन्ता घेर लेती है- " पहलवान बाप-बेटे धरना-प्रदर्शन करने शहर गए हैं। उनके कान में यह बात पड़ गई तो?"

वे पड़ोसनों के आगे हाथ जोड़ती हैं- " पहलवान के लौटने पर उनके कान में चिट्ठी वाली बात मत डाल देना, बहिनी! उनकी दिमागी हालत ठीक नहीं रहती।"

फिर थोड़ा-सा रो लेने के बाद कहती हैं- "मैं खुद जाकर अपने बेटे को समझाऊँगी। मेरा बेटा ऐसा नहीं है। जरूर किसी ने उस पर जादू-टोना कर दिया है।" रूर किसी ने उस

गुरु टी स्टाल पर चाय पी रहे माठा बाबा की नजर अखबार की एक खबर पर टिक गई। उन्होंने अखबार का पन्ना लल्लू सिंह की ओर बढ़ाते हुए कहा- " लीजिए, सबेरे-सबेरे खुशखबरी पढ़िए।"

"सुनाइए।"

"सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों की बेंच ने सूबे की सरकार द्वारा वर्ष 06-07 व 07-08 के सीजन के लिए निर्धारित गन्ने के समर्थन मूल्य 125 रुपये कुंटल का समर्थन करते हुए आदेश किया है कि इन दोनों वर्षों के लगभग 900 करोड़ रुपये के बकाए का भुगतानं चीनी मिलें किसानों को तीन माह के अन्दर करना सुनिश्चित करें।"

"तो इसमें इतना खुश होने की क्या बात है, महराज ! जज लोग तो आदेश करते ही रहते हैं। इसी के लिए तनखाह लेते हैं। आप क्या समझते हैं कि मिल मालिकों की खाल इतनी पतली है कि कल से किसानों के लिए खजाना खोल देंगे।

अगम बहै दरियाव

2006 से इन्तजार करते-करते 2012 लग गया कि नहीं? वे तीन महीने के बजाय तीन साल में भुगतान कर दें तो गनीमत मानिए।"

"नहीं लल्लू सिंह, कोर्ट ने यह भी कह दिया है कि तीन महीने में भुगतान नहीं किया तो अठारह फीसदी सालाना की दर से ब्याज भी देना पड़ेगा। और सुनिए, सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट द्वारा जारी पहले के सारे स्टे ऑर्डर वैकेट कर दिए गए हैं। अब मिल मालिकों को भागने के लिए गली नहीं मिलेगी। मैंने इतना सख्त आदेश अपनी जिन्दगी में पहले नहीं देखा!"

"इतनी जल्दी न आप मरे जा रहे हैं, न हम। सारी सख्ती-नरमी पता चल जाएगी।"

अनारा की पुकार

उस शाम पाँड़े अँधेरे में भागे जा रहे थे कि सामने से सूरे आते दिखे। पाँड़े को देख दोनों हाथ जोड़कर पैलगी की। पाँड़े ने सूरे को 'मौज करो' का आशीर्वाद देने के लिए दाहिना हाथ उठाया ही था कि सूरे का चेहरा समधी के चेहरे में बदल गया। वे अट्टहास करते दोनों बाँहें फैलाए पाँड़े का रास्ता रोकने के लिए बढ़े। धोखा, धोखा! पाँड़े पीछे मुड़कर बेतहाशा भागे। भागते-भागते रामगंज के मेले में पहुँच गए। वहाँ पुलिस अफसर यंग हैट लगाए घूम रहा था।

पाँड़े को देखकर बोला- " सुल्टाना, दुम बहोत बहादुर है। लो, जलेबी खाओ।" जलेबी का छत्ता मुँह में डाला ही था कि आवाज आई- "मिल गया, मिल गया।" पाँड़े ने मुड़कर देखा - यह तो वही हरिद्वार अमीन है जिसने एक बार उनकी आर.सी. वापस की थी। इसको अभी पाँच हजार देना है। पाँड़े जलेबी का दोना फेंककर भागे। इस गली से उस गली। उस गली से इस गली। सामने नजर पड़ी तो देखा अपने कोठे पर हरा घाघरा पहने अनारा इशारे से उन्हें बुला रही थी। पाँड़े कहना चाहते थे कि तू नीचे आ। चल, भाग चलें। लेकिन मुँह से आवाज ही नहीं निकल रही थी। गली में कीचड़ था। वे धोती उठाकर दौड़ रहे थे। गली खतम होने का नाम नहीं ले रही थी। अचानक उनका पैर फिसला और नहर की नाली में गिर गए। पूरी तरह भीग गए। साँस अभी तक तेज थी। बनियान निकालकर नाली की मेंड़ पर रखी और दम मारने के लिए मेंड़ पर लेट गए। पता नहीं, कब तक लेटे रह गए !

583

ठंड लगने लगी तो उठे और चल पड़े। थोड़ी देर में पाया कि अपने मिठौवा महुआ के नीचे खड़े हैं। उस डाल के ठीक नीचे जिस पर चढ़कर वे बचपन में सियरपत्ती खेला करते थे। कभी उन्हें लगता कि जग रहे हैं, कभी लगता सपना देख रहे हैं। उनके दिमाग में बार-बार एक ही दृश्य कौंध रहा था। जूते से चबूतरे को फटर-फटर पीटते और खखारकर थूकते समधी की क्रुद्ध छवि। सही कह रहे थे। कहीं मुख दिखाने लायक नहीं रह गए। ऐसी

जिन्दगी से तो मर जाना अच्छा।

महुए के मोटे तने में निकली गाँठों के सहारे चढ़कर वे उस डाल के बीचोबीच आकर बैठ गए। अपनी धोती खोली। धोती का एक सिरा डाल से निकले कनखे में फँसाया और दूसरे सिरे का फंदा बनाकर गले में डाल लिया।

तभी सामने के गन्ने के खेत में सियारों ने हुआँ-हुआँ शुरू की। सियारों के चुप होने के बाद महुए के पेड़ पर बैठा घुग्घू कचपचाया। दूसरे ने उसका जवाब दिया।

क्या बात किए दोनों?

पाँड़े ने आसमान की ओर देखा। पत्तों के बीच दिख रहे आसमान में 'बिप्फैया' सिर के ऊपर पहुँचने वाला है। दो-ढाई घंटे रात बाकी होगी। कार्तिक लग गया है। थोड़ी देर पहले तक आसमान साफ था। तारे चमक रहे थे। अब कुहासा फैलने लगा है। ठंडी हवा बहने लगी है। इसी समय पिताजी हल नाधने के लिए नगेसर को आवाज देते थे। पहले माँ आकर पिताजी को जगातीं। तब पिताजी घर से थोड़ा आगे आकर ऊँची आवाज में पुकारते- "ए नगेसऽऽर!"

यह पुकार करीब एक किलोमीटर की यात्रा करके नगेसर के घर तक पहुँचती । दूसरी या तीसरी पुकार पर नगेसर की बूढ़ी माँ पोपले मुँह से उसी ऊँचाई से जवाब देतीं- जात अहाँ! (जा रहे हैं।)..

सारा गाँव सुनता और जाग होने लगती।

बाद में नगेसर को जगाने का काम उनके जिम्मे आया और उनको जगाने का
काम पत्नी के जिम्मे।

पत्नी की याद आते ही कल शाम जमीन पर बैठकर सास-बहू के रोने का दृश्य आँखों में तैरने लगा। रोना नहीं, कलपना। जब से उनके घर में आईं,

कोई सुख नहीं दे सके। दुख ही पूँजती रहीं और अब रोने के लिए अकेला छोड़कर जा रहे हैं। दोनों बहुएँ ताना मारेंगी कि खेती-बारी नीलाम करवाकर गया तुम्हारा आदमी...

तुम्हें कहाँ से खिलाएँ?

इस तरह बुढ़िया को मझधार में छोड़कर मरना भी तो दगाबाजी है! फिर दगाबाजी! नहीं, नहीं। इससे तो अच्छा था कि अनारा की मदद ले लेते...

अगम बहै दरियाव

अनारा की याद आते ही उन्हें लगा कोई पुकार रहा है-ए पाँड़े ऽऽ... वे चारों तरफ देखने लगे।

फिर आवाज़ आई, पांडे... ये अनारा की आवाज़ है!

उन्होंने सामने देखा... ठीक दोपहरी जैसे उजाले में हरा घाघरा पहने दोनों बाँहें फैलाए दौड़ती चली आ रही है अनारा... अनारा नहीं - उनकी हीर, उनकी रानी पिंगला... लाल दुपट्टा और लम्बे केश हवा में लहरा रहे हैं...

"अनाराऽऽ... मेरी पिंगले-ए...ए...!"

उन्होंने लम्बी पुकार लगाई और दोनों बाँहें फैलाकर अपनी पिंगला को आगोश में भरने के लिए लपके। पैर डाल से फिसले और फंदा गले पर कस गया!

रात नफरत की काली खतम जल्द हो रत की काली

बैताली भीटे पर अपनी झोंपड़ी के बाहर मटमैला फटा कुर्ता पहने गूलर के पेड़ की जड़ पर बैठे एक हस्तलिखित पुस्तिका में आँखें गड़ाए गाने की कोशिश कर रहे हैं-

डाकू एक रहा सुल्ताना
जेका जानै सकल जहाना
दूजा अब जंगू उधिराना
जेसे हारि गए दारोगा थानेदाऽऽऽऽर...

असली दुनिया के दंद-फंद देख लेने के बाद बैताली फिर नौटंकी की दुनिया में लौट जाना चाहते हैं; जहाँ राजा राजा की तरह रहता है, डाकू डाकू की तरह। जहाँ मर्द जबान और लँगोट का कच्चा नहीं होता और हाकिम बिकाऊ नहीं।

विद्रोही जी ने आश्वासन तो दिया था कि जिस जमीन पर झोंपड़ी बनाने के चलते उन पर दफा 122-बी का मुकदमा छत्रधारी ने कायम कराया है, उसी का पट्टा देकर वे मुकदमे का आधार खत्म कर देंगे। उन्होंने पट्टा दिया भी, लेकिन एक गलती हो गई। पट्टे में झोंपड़ी वाला नम्बर दर्ज होने के बजाय बगल वाली जमीन का नम्बर दर्ज हो गया। इसकी जानकारी बहुत बाद में हुई, पैमाइश किए जाने पर। तब तक विद्रोही और दहबंगा का कार्यकाल खत्म हो चुका था।

बैताली की पहली औरत टीबी से मर गई। आधी बकरियाँ उसकी दवाई और मुकदमे की भेंट चढ़ गईं। उनका मुकदमा सोया रहता है, सोया रहता है, अचानक जागकर चल पड़ता है।

इस बार परधानी के चुनाव के समय रघुनन्दन ने उनसे वादा किया था कि परधानी जिता दोगे तो सबसे पहले तुम्हारे पट्टे के नम्बर में संशोधन

कराऊँगा। बैताली ने खुलकर रघुनन्दन का साथ दिया। रघुनन्दन जीत गए। एक दिन बैताली को बुलवाकर कहा- "तुम्हारी संशोधन वाली फाइल तैयार है। अब कुछ खर्च-बर्च का इन्तजाम करो।"

"कैसा खर्च-बर्च, महराज ? वोट भी लिया, घूस भी लोगे?"

"अपने लिए थोड़े ! ऊपर के साहब-सूबा लोगों के लिए।"

बैताली के शरीर में आग लग गई। गुर्रा उठे- "कान खोलकर सुन लो पंडित, अब मैं किसी को झाँट का एक बाल भी नहीं देने वाला!"

उनका दाँत पीसना देखकर रघुनन्दन पीछे हट गए।

विद्रोही जी जब भी गाँव आते हैं उन्हें तसल्ली देते हैं कि डरने की जरूरत नहीं है। मुकदमा भले वे लोग लटकाकर रखें, लेकिन उन्हें उनके कब्जे की जमीन से बेदखल नहीं कर सकते। तुम्हारी बिरादरी की मुख्यमंत्री ने सन् 1995 में ही कानून पास कर दिया था कि ग्रामसभा की जमीन पर किसी दलित का कब्जा है तो उसे बेदखल नहीं किया जा सकता।

पर बैताली को अब किसी की बात पर विश्वास नहीं होता। वे जिन्दगी-भर जंगल में शिकार करते करते रहे, लेकिन खूंखार जानवरों से उनका पाला गाँव में ही पड़ा।

एक बार तो उनके मन में आया कि जंगू की पलटन में भर्ती हो जाएँ, लेकिन अपनी उम्र देखकर चुप लगा गए। पाँड़े का नौटंकी का सामान अभी भी उनके घर में व्यर्थ पड़ा है। परदे, पोशाकें बड़े-बड़े बक्सों में पड़े-पड़े सड़ रहे होंगे। सालों से धूप तक नहीं दिखाई गई होगी। अगर मिल जाए तो...

एक दिन हिम्मत करके वे पाँड़े के घर गए। कहा- "मरती हुई कला को जिन्दा करना चाहता हूँ, महराज!"

सुनकर प्रभाकर हँसे-"अभी तक किसी को मरकर जिन्दा होते देखा है?"

बैताली चुप।

"कितने में खरीदना चाहते हो?"

"अभी तो हाथ एकदम खाली है, लेकिन..."

प्रभाकर की माँ थोड़ी दूर खड़ी दोनों की बात सुन रही थीं।

बोलीं- "दे दो, बेटा। घर खाली हो। यहाँ भी तो रखे रखे सड़ ही रहा है। देखकर विरोग होता है।"

इधर उन्हें जंगू के ऊपर लिखी नौटंकी की एक हस्तलिखित पुस्तिका मिल गई है। उसी को खेलने की तैयारी है-

जंगू कहता है कि गाँव-देश से अत्याचार मिटाना चाहिए, गालियाँ देनी चाहिए, टाँगें तोड़ देनी चाहिए। जंगू कहता है कि बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं। तुमने अपनी बहन-बेटी की इज्जत लूटने के लिए नाक कटवाई है।

सड़क से गुजरता तूफानी बैताली को भीटे पर बैठा देख रुक जाता है। मोटरसाइकिल का इंजन बन्द करके सुनता है, फिर मोटरसाइकिल पटरी पर खड़ी करके पास जाता है।

जंगू कहैं कि...

"जयभीम काका! आप ऊँची आवाज़ में क्या गा रहे हैं?"

"अरे, तूफानी बच्चा!" पुस्तिका बन्द करते हुए बैताली बताते हैं- " एक खेला मिला है जंगू का। वही याद कर रहे हैं। समय काटने के लिए।"

"काका, अब समय काटने वाला नहीं, समय बदलने वाला खेला खेलने की जरूरत है।"

"क्या मतलब?" बैताली अपनी खिचड़ी दाढ़ी की खूँटियों पर हाथ फेरने लगते हैं।

"अब जंगू की बहादुरी से काम नहीं चलने वाला। दुनिया बहुत खराब हो चुकी है। जंगू के हाथ इतने बड़े नहीं हैं कि दुनिया को खराब करने वाले शैतानों तक पहुँच सकें। खुद हमारे रहनुमा शैतानों से हाथ मिला चुके हैं। अब जरूरत है कि दुनिया को आमूल-चूल बदल दिया जाय।"

बैताली थोड़ी देर तक तूफानी का मुँह ताकते रह जाते हैं फिर कहते हैं-" इससे अच्छी बात क्या हो सकती है, बच्चा ! इतनी खराब तो दुनिया कभी नहीं रही। दुनिया बदलने वाला खेला दीजिए तो वही खेला जाय।"

"ढूँढ़कर देता हूँ।" बहुत पहले देखा था। उसका एक चौबोला सुनिए-

रात नफरत की काली खतम जल्द हो। एक ऐसी सुबह की यहाँ पौ फटे। जिसमें इन्सां बराबर हों दुनिया के सब, जाति धर्मों की नामोनिशानी मिटे।

सुनकर बैताली के कानों में नगाड़ा, नगड़ची, हरमुनिया, टुनटुनिया - सारे साज एक साथ बज उठे।

"अब तक कहाँ छिपाकर रखा था इसे?" कहने के साथ बैताली तनकर खड़े होते हैं और दाहिना हाथ उठाकर बुलन्द आवाज में आलाप लेते हैं- राऽऽत न-फ-र-त की...

कृषिप्रधान कहे जाने वाले देश भारत का एक आम किसान जिसके पास सौ-दो सौ बीघा जमीन, लाइसेंसी बन्दूकें राइफलें और पुलिस-फौज में नौकरी पाए बेटे नहीं हैं, अपने दुख में अकेला और असहाय एक ऐसा जीव है, जो लगता है पूरी व्यवस्था का देनदार है। राजनीति के लिए वोट बैंक और नौकरशाही के लिए एक दुधारू गाय।

थाने, तहसीलें, अदालतें, गन्ना मिलें, अमीन, पटवारी, वकील, आढ़ती, कर्जे और खर्चे, राजनीति और नौकरशाही, ये सब मिलकर एक ऐसा महाजाल बुनते हैं जिसके निशाने पर किसान ही होता है। यह अगम दरियाव उसी भारतीय किसान के दुखों का है, बेशक उसकी वह ताकत भी यहाँ मौजूद है जो राष्ट्रीय उपेक्षा के आखिरी सिरे पर पड़े रहने के बावजूद उसे बचाए हुए है-उसकी संस्कृति, उसकी मनुष्यता और उसका जीवट।

शिवमूर्ति हमारे समय के ग्रामीण जीवन के समर्थ किस्सागो हैं, और 'अगम बहै दरियाव' उनकी अनुभव-सम्पदा और कथा-कौशल का शिखर है। कल्याणी नदी के कंठ पर बसे बनकट गाँव की इस कथा में समूचे उत्तर भारत के किसानों और मजदूरों की व्यथा समोयी हुई है। इस दुनिया में सब शामिल हैं- अगड़े, पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक सब। और सब इसमें बराबर के हिस्सेदार हैं। जिन्दगी के विविध रंगों, छवियों और गीत-संगीत से समृद्ध इस उपन्यास में 'लोक' की छटा कदम-कदम पर दृश्यमान है, और ग्रामीण जीवन की शान्त सतह के नीचे खदबदाती लोभ लालच, प्रेम-प्यार, छल-प्रपंच और त्याग-बलिदान की धाराएँ भी जो जमाने से बहती आ रही हैं।

कथा-साहित्य में लम्बे समय से अनुपस्थित किसान को यह उपन्यास वापस एक त्रासदी-नायक के रूप में केन्द्र में लाता है। देश के नीति-नियन्ता चाहें तो इस आख्यान को एक 'ग्राउंड रिपोर्ट' की तरह भी पढ़ सकते हैं।

उत्तर भारतीय ग्रामीण जनजीवन की
मर्मस्पर्शी और विचारोत्तेजक कथा !